रिसाले-ए-नूर संग्रहः

भाग 7

तर्क

कुरान की वाकपटुता को समझने की कुंजी

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 7

तर्क

कुरान की वाक्पटुता को समझने की कुंजी

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

TUGHRA BOOKS

न्यु जर्सी

11 10 09 08 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित 26 वर्ल्ड्स फ़ेयर डॉ.
यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1873-1960।

[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]

तर्क: कुरान की वाक्पटुता को समझने की कुंजी / बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी।

पी. सेमी.

सूचकांक शामिल है.

आईएसबीएन 978-1-59784-129-0 (हार्डकवर)

1. कुरान--आलोचना, व्याख्या, आदि 2. कुरान--प्रशंसा 3. कुरान--भाषा, शैली 4. नूरकुलुक--सिद्धांत I. शीर्षक

BP252.N85213 2008

297.8'3--डीसी22

2008021228

कैग्लायन ए.S,.,

इज़मिर - तुर्की द्वारा मुद्रित

विषयसूची

बेदिउज़्ज़मान और तर्क vii

प्रस्तावना 1

परिचय 7

पहला भाग

सत्य का तत्व

प्रथम आधार 11

दूसरा आधार 14

तीसरा आधार 16

चौथा आधार 21

पांचवां आधार 23

छठा आधार 25

सातवां आधार 29

आठवां आधार 32

नौवां आधार 36

दसवां आधार 40

ग्यारहवां आधार 42

बारहवां आधार 44

- पहला मामला........ 50
- दूसरा मामला 54
- तीसरा मामला 57
- चौथा मामला 59
- पांचवां मामला 64
- छठा मामला 66
- सातवां मामला 67
- आठवां मामला 68

दूसरा भाग

वाकपटुता का सार

प्रथम विषय 79

दूसरा मामला 81

तीसरा मामला 83

चौथा मामला 85

पांचवां मामला 86

छठा मामला 88

सातवाँ मामला 92

आठवाँ पदार्थ .... 93 नौवाँ

पदार्थ .... 94 दसवाँ

पदार्थ 96

ग्यारहवाँ मामला 97

बारहवाँ मामला 97

तीसरा भाग

विश्वास का तत्व

विश्वास का तत्व 103

परिचय .... 104 प्रथम

उद्देश्य .... 105 द्वितीय

उद्देश्य 120

परिचय 120

मुहम्मद की नबी होने के कुछ प्रमाणों की व्याख्या 128

परिचय 128

पहला रास्ता .... 129 दूसरा

रास्ता .... 132 तीसरा

रास्ता .... 133 चौथा

रास्ता .... 136 पाँचवाँ

रास्ता .... 144 तीसरा

उद्देश्य 147

परिचय 147

सबसे सामान्य प्रमाणों का सारांश 148

दो अन्य सामान्य प्रमाणों का दूसरा सारांश 150

सूचकांक 151

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची 159

बेदिउज़्ज़मान और तर्क

T उन्नीसवीं सदी का अंत और बीसवीं सदी का आरंभ विश्व इतिहास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण युग है, विशेष रूप से जहां तक इस्लामी जगत का संबंध है।

इस्लामी दुनिया में इस काल के विचारकों - या जाहिर तौर पर विचारशील दिमागों - ने, जिनकी भौतिक शक्ति के मामले में लगभग ग्यारह शताब्दियों से प्रमुखता लंबे समय से खत्म हो रही थी, इस आपदा के कारणों और उसके उपचारों की खोज शुरू कर दी। उन्होंने समस्या को ठीक से पहचानने और उसका समाधान करने के लिए कई दृष्टिकोण प्रस्तावित किए, जिससे ऐसे दृष्टिकोण सामने आए जिन्होंने विचार की कई धाराओं के जन्म का मार्ग प्रशस्त किया।

इन उभरती धाराओं में से, जिसे हम अंधा **पश्चिमीकरण** कह सकते हैं, द्वारा प्रस्तुत समग्र चित्र पूर्व को, सेमिल मेरिक[1] के शब्दों में, पूर्व की ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय स्थितियों पर विचार किए बिना पश्चिम की "स्ट्रेटजैकेट" पहनने के लिए मजबूर करने का प्रयास था। इस प्रवृत्ति या धारा ने इस्लाम के तेरह-शताब्दी लंबे इतिहास की भावना को त्यागने की वकालत की। कुछ मुसलमान, जो विद्वान होने का दावा करते थे, इस बात पर जोर देने में संकोच नहीं करते थे कि विचारों की नई धाराओं का समर्थन किया जाना चाहिए और उनके अनुसार इस्लाम में सुधार किया जाना चाहिए। दूसरी ओर, अन्य मुस्लिम बुद्धिजीवी, जो ऊपर बताए गए दो गुटों के बीच (या परिधि पर) कहीं स्थित थे और जो स्वदेशी लोगों के अधिक प्रतिबिम्ब थे

---

1 सेमिल मेरिक (1916-1987) बीसवीं सदी के तुर्की के जाने-माने विचारकों और विपुल लेखकों में से एक थे। वे आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के अपने विश्लेषणों के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनकी पुस्तकों में उमरंदन उइगर्लिगा (“उमरान से सभ्यता तक”), बु उलके (“यह देश”), कुल्तुरदेन इरफ़ाना (“संस्कृति से आध्यात्मिक ज्ञान तक”), इशिक दोगुदान गेलिर (“पूर्व से प्रकाश आता है”), और येनी बिर दुनियानिन एसिगिंडे शामिल हैं।

(“एक नई दुनिया की दहलीज पर”) सबसे प्रसिद्ध हैं।

दृष्टिकोण और स्थिति, फिर भी स्पष्ट रूप से चारों ओर बहने वाली “हवाओं” के प्रभाव में, कुछ तथाकथित “प्रतिकारक” प्रस्तुत करने का प्रयास किया, हालांकि वास्तव में, यह अत्यधिक संदिग्ध था कि क्या वे प्रतिकारक थे। उनमें से कुछ ने इस्लाम को विचार और विचारधाराओं की नई धाराओं के साथ पहचानने की कोशिश की, जबकि अन्य ने इसे एक राजनीतिक विचारधारा तक सीमित कर दिया। इस प्रकार, वे धर्म और इतिहास की गलत व्याख्या में पड़ गए, और उनमें से कुछ ऐसे भी सामने आए जिन्होंने सुन्ना को त्यागने का आह्वान किया।

हम जिन वर्षों की बात कर रहे हैं, वे ऐसे वर्ष भी थे, जिनमें इस्लाम के भीतर कई मुद्दों पर गरमागरम चर्चाएँ हुईं, जिनका असर आज भी महसूस किया जाता है। जिस तरह पुनर्जागरण के बाद तर्कसंगत और प्रायोगिक विज्ञान के विकास ने ईसाई धर्म और पुराने और नए नियमों की कई सच्चाइयों के बारे में चर्चाओं को जन्म दिया, उसी तरह इस युग ने इस्लाम, कुरान, इस्लामी इतिहास और इस्लामी विज्ञान से संबंधित कई दृष्टिकोणों और बहुआयामी चर्चाओं के द्वार खोले। निश्चित रूप से, इन चर्चाओं का केंद्र बिंदु यह मुद्दा था कि “इस अवधि की समझ के लिए कुरान या इस्लाम को कैसे प्रस्तुत किया जाए।” जबकि इस परिप्रेक्ष्य से बोलने वाले कुछ लोग आधुनिक विज्ञान और तकनीक के प्रभाव में थे और इस प्रकार इस मानदंड के अनुसार इस्लाम और कुरान के सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या की वकालत करते थे, भले ही उन सिद्धांतों को बदलने और विकृत करने का स्पष्ट जोखिम हो, अन्य लोग सामाजिक-राजनीतिक सुधार की परियोजनाओं का प्रस्ताव करने में अत्यधिक उत्साही थे, और कुरान और सुन्ना के नाम पर सुन्ना और इस्लामी इतिहास के विस्तार से मुंह मोड़ लिया। यह वह माहौल था जिसमें बेदीउज्जमां सईद नूरसी, एक बहुत ही महत्वपूर्ण विद्वान ने खुद को पाया जब वह 1907 में ओटोमन राज्य की राजधानी इस्तांबुल पहुंचे। उन्होंने पारंपरिक इस्लामी विज्ञानों का अध्ययन किया, अपने दिल और दिमाग को कुरान और सुन्ना में गहराई से डुबो दिया, जबकि उसी समय उन्होंने प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन करने और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नए विकास का अनुसरण करने के अलावा, जीवित पारंपरिक हलकों से कोई सवाल न पूछने का एक अनूठा, व्यक्तिगत तरीका अपनाया।

"अवंत-गार्डे-वादियों" के सामने, जो स्पष्ट रूप से इस्लाम को विकास में बाधा मानते थे और पश्चिम की वैज्ञानिक और सैन्य प्रगति को धर्म पर इसके "नकारात्मक" दृष्टिकोण से जोड़ते थे, बेदिउज्जमां सईद नूरसी ने घोषणा की, "मैं दुनिया को साबित कर दूंगा कि कुरान एक आध्यात्मिक सूर्य है जिसे बुझाया नहीं जा सकता।" यह ऐसे माहौल में था कि सईद नूरसी ने कहा कि "मैं दुनिया को यह साबित कर दूंगा कि कुरान एक आध्यात्मिक सूर्य है जिसे बुझाया नहीं जा सकता।"

के चारों ओर एक अविनाशी किले के निर्माण की दिशा में काम किया

कुरान, आंतरिक या बाहरी विस्फोटों से विचलित नहीं हुआ, और इस प्रकार ईश्वरीय घोषणा के कार्यान्वयन में एक अथक सेवक बनने का विकल्प चुना, “वास्तव में यह हम ही हैं, जो अनुस्मरण (यानी कुरान) को भेजते हैं, और वास्तव में हम ही इसके संरक्षक हैं” (अल-हिज्र, 15:9)। एक विद्वान के रूप में जिसने अपने समय के लगभग सभी सकारात्मक या प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन किया था, उसने एक हद तक, आधुनिक वैज्ञानिक डेटा और दर्शन के प्रभाव को अपने शुरुआती कार्यों में कुरान की वास्तविकताओं की पुष्टि करने के लिए इस्तेमाल किया, जहाँ वह दूसरों को उनके अपने तर्क का उपयोग करके संबोधित करता है। बाद में, वह जोर देकर कहते हैं, “केवल वही जो कुरान द्वारा पवित्र किया गया है, कुरान के लिए पुष्टि के रूप में कार्य कर सकता है। कुरान को जो कुछ भी इसके अनुरूप नहीं है, उसके साथ प्रमाणित करना इसका मतलब है कि इसे एक हद तक कम करना।” हालाँकि, उन्होंने कभी भी किसी सत्य को तुच्छ नहीं समझा या अनदेखा नहीं किया, जहाँ भी वह पाया गया, पैगंबरी परंपरा के अनुसार: "ज्ञान विश्वासियों की खोई हुई संपत्ति की तरह है। जहाँ भी वे इसे पाते हैं, उन्हें इसे लेने का अधिक अधिकार है।"[2] वे एक प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरु और अपने इतिहास और पूर्वजों के प्रति सम्मान से भरे एक महान चरित्र के अवतार थे, परंपरा से जुड़े थे लेकिन नए विकास के लिए खुले थे, सत्य के प्रति प्रेम से संपन्न थे, नकल के सामने समझौता नहीं करते थे, विचारों और स्थितियों का मूल्यांकन करने में शांत और उत्साही थे, और विश्वास की उच्चतम डिग्री से प्रतिष्ठित थे। उनके इरादे केवल सबसे शुद्ध थे - भगवान की अच्छी खुशी प्राप्त करना और मानवता की सेवा करना।

नूरसी के अनुसार, पिछली कुछ शताब्दियों में इस्लाम के मूल को कुछ हद तक त्याग दिया गया था, जिसके परिणामस्वरूप चीज़ों की सतह पर ज़ोर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुरान, जिसमें अर्थ और विषय-वस्तु में निर्णायक और स्पष्ट दोनों तरह की आयतें और रूपक-कथन हैं, और इसलिए कभी-कभी प्रतीकात्मक भाषा और साहित्यिक कलाओं का उपयोग करता है - जैसे कि उपमाएँ, रूपक और रूपक - क्योंकि यह सभी समय और समझ के स्तरों को संबोधित करता है, इसे इसके मित्र और शत्रु दोनों द्वारा पर्याप्त रूप से नहीं समझा जा सका। इस प्रकार, इस्लाम की कुछ सूक्ष्म आवश्यकताओं को गलतफहमी और अनादर के कारण न तो समझा गया और न ही महसूस किया गया, क्योंकि प्रतीकात्मकता की आलोचनात्मक भाषा को सख्ती से अंकित मूल्य पर लिया गया। यह उन बुनियादी कारणों में से एक था जिसने इस्लाम के वास्तविकीकरण को रोका, जिसके परिणामस्वरूप, इस दुनिया में मुसलमानों को अपमान और अभाव दोनों के साथ दंडित किया गया।

---

2 अल-तिर्मिधि, सुनान, "'इल्म" 19; इब्न माजा, सुनान, "ज़ुहद" 17.

सीधे शब्दों में कहें तो, मुसलमानों को इस्लाम की करुणा से ही बचाया जा सकता है। इसलिए, मुसलमानों को माफ़ी मांगनी चाहिए और अपने धर्म के प्रति सम्मान प्रकट करना चाहिए। इसके बाद, इस्लाम के भीतर मौजूद सच्चे मार्ग को रेखांकित किया जाना चाहिए; जो लोग मामलों को पर्याप्त रूप से नहीं समझते हैं, उनके द्वारा लगाए गए भ्रम को दूर किया जाना चाहिए; धर्म का विरोध करने वालों के तर्कों को अमान्य और अव्यवहारिक साबित किया जाना चाहिए; और इस उद्देश्य की आकांक्षा रखने वालों की सहायता की जानी चाहिए। संक्षेप में, इस्लाम या इस्लामी धारणा और व्यवहार, हालांकि अस्थायी रूप से धूल में ढंके हुए हैं, उन्हें अपनी मूल चमक में बहाल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। और नूरसी की मुहाक़मत ("तर्क") विशेष रूप से इसी इरादे और प्रयास को ध्यान में रखकर लिखी गई थी।

तो फिर इस्लाम और कुरान को किस नजरिए से देखा जाना चाहिए? कुरान द्वारा निर्धारित उद्देश्य और लक्ष्य क्या हैं, और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किस पद्धति का उपयोग किया जाना चाहिए? इसके अलावा, विशेष रूप से प्रायोगिक विज्ञान के तरीकों की इस संदर्भ में क्या प्रासंगिकता है? मुसलमानों के हाथों से विज्ञान क्यों उड़ गया? क्या कुरान स्वयं इस विपत्ति के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार है? कुरान की कुछ आयतों के बारे में अलग-अलग राय के पीछे क्या कारण हैं? अलंकार के तत्व क्या हैं, और कुरान की अलंकार शैली क्या है?

हमें किसी कथन का अर्थ कैसे समझना चाहिए? अंधविश्वास का द्वार कहाँ खुला रह गया है? और सच्चे अर्थ की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? मुद्दों को संभालने में हमारा दृष्टिकोण और सिद्धांत क्या होना चाहिए? अच्छाई और बुराई कहाँ पाई जाती है? उनके पीछे क्या बुद्धि और तर्कसंगतता है? नरक कहाँ है? इत्यादि। अपनी अनूठी शैली में, ऐसे और कई अन्य सवालों के ठोस जवाब देने के अलावा, नूरसी आकस्मिकता और निरपेक्षता के बीच के अंतर की भी जाँच करते हैं; प्रवचन के निर्माण के साथ-साथ इसकी गद्यात्मक विशेषताएँ, ताकत, विशालता, गहनता और प्रभाव; बयानबाजी की अनिवार्यता; ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण; पैगंबरी की पुष्टि; और शारीरिक पुनरुत्थान के इर्द-गिर्द घूमती बहस। विशेष रूप से कुरान को समझने में, रीजनिंग्स वास्तव में "बुद्धि" और "उपायों" की एक पुस्तक है। यह नूरसी की दूसरी कृति, इशारत अल-इजाज़ ("कुरान की चमत्कारिकता के संकेत") का भी एक अद्भुत परिचय है , जो कुरान की व्याख्या के लिए एक शानदार कुंजी है। रीज़निंग ज्ञान के इच्छुक लोगों के लिए एक अपरिहार्य मार्गदर्शिका है जो दशकों के विवाद के जाल के बीच मजबूत समझ हासिल करना चाहते हैं, और खुद को अतिरेक और उदासीनता से मुक्त करना चाहते हैं। आइए रीज़निंग के कुछ अंशों पर एक संक्षिप्त नज़र डालें:

- कुरान की सभी आयतों का उद्देश्य मुख्य रूप से चार बुनियादी, सार्वभौमिक सत्यों को स्थापित करना और उनकी पुष्टि करना है: ब्रह्मांड के निर्माता का अस्तित्व और एकता; पैगंबरी; शारीरिक पुनरुत्थान; तथा उपासना और न्याय।

- अतीत में कोई सैद्धांतिक बात वर्तमान या भविष्य में स्पष्ट और स्थापित हो सकती है। यह एक स्व-सिद्ध तथ्य है कि सृजन में पूर्णता की ओर एक सहज प्रवृत्ति होती है, और इसी के माध्यम से सृजन विकास या क्रमिक पूर्णता के नियम से बंधा होता है।

- जो व्यक्ति किसी विषय में बहुत अधिक व्यस्त रहता है, वह अन्य विषयों के प्रति अधिक असंवेदनशील हो जाता है तथा उन्हें अच्छी तरह समझ नहीं पाता।
- जो लोग हर सत्य को भौतिकता में खोजते हैं, उनकी बुद्धि उनकी भौतिक इन्द्रियों में होती है, जबकि भौतिक इन्द्रियाँ आध्यात्मिक चीजों के प्रति अंधी होती हैं।

- कुरान की विश्वसनीय व्याख्या मुख्य रूप से कुरान और विश्वसनीय रूप से वर्णित हदीस द्वारा की जाती है। • कुरान की व्याख्या में वर्णित हर बात का अनिवार्य

रूप से अनुवाद नहीं किया जा सकता है।

अनिवार्यतः “प्रदर्शनी” होगी।

- आम राय कुरान की नई व्याख्या की मांग करती है। प्रत्येक युग की अपनी अलग विशेषताएं होती हैं और इसलिए उसकी अपनी ज़रूरतें और मांगें होती हैं। समय अपनी व्याख्या जोड़ता है, और नई घटनाओं और विकासों के कारण कई नए अर्थ खोजे जाते हैं।

- प्रसिद्धि बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती है, तथा व्यक्ति को ऐसी चीज़ों का स्वामी दिखाती है जो उसकी नहीं हैं।
- किसी भी चीज़ या व्यक्ति को ईश्वर द्वारा दिए गए गुणों से ज़्यादा अच्छा बताना सकारात्मक कदम नहीं है, न ही इसका मतलब यह है कि आपने उनके लिए कोई अच्छा काम किया है। झूठी कल्पनाओं की भरमार से सच्चाई का एक दाना बेहतर है। हमें किसी चीज़ या व्यक्ति को ईश्वर द्वारा दी गई अच्छाई और उसके गुणों के आधार पर परिभाषित करने से संतुष्ट होना चाहिए। • ज्ञान के हाथों से अज्ञानता के हाथों में जाते समय, एक रूपक अभिव्यक्ति शाब्दिक वर्णन में बदल सकती है और अंधविश्वास का द्वार खोल सकती है।

- जो गिरी को नहीं खोज पाता, वह खोल में ही उलझा रहता है और उसी तक सीमित रहता है। जो सत्य को नहीं जानता, वह भटक जाता है।

सनक और कल्पनाएँ। जो सीधा रास्ता नहीं खोज सकता या ढूँढ़ नहीं सकता

> जो व्यक्ति सही संतुलन नहीं रखता, वह न केवल दूसरों को धोखा देता है, बल्कि खुद भी बहुत धोखा खाता है।

दुर्भाग्य से, हम यह दावा नहीं कर सकते कि द रीज़निंग को उस हद तक पढ़ा गया है, जितना पढ़ा जाना चाहिए था और न ही इसे उस देश में वह ध्यान मिला, जिसके वह हकदार है, जहाँ इसे लिखा और प्रकाशित किया गया था, मुख्यतः इसकी भाषा और विषय-वस्तु की कथित अभेद्यता के कारण। नतीजतन, यह उम्मीद करते हुए कि दुनिया के अन्य क्षेत्रों में इसे समझने वाले बहुत से लोग होंगे, हमने इसकी उचित सराहना करते हुए इसका अनुवाद करने का साहस किया है। इस प्रक्रिया में, अगर हम इस उत्कृष्ट कृति और इसके लेखक के संबंध में गलती कर बैठे हैं या दुस्साहस कर रहे हैं, तो हम सर्वशक्तिमान ईश्वर, इस कृति और इसके लेखक से क्षमा मांगते हैं।

प्रकाशक

एक रुग्ण युग, एक रोगग्रस्त इकाई के लिए नुस्खा,
और एक अक्षम प्रणाली; या
इस्लाम की प्राचीन चमक को दर्शाना; या
बेदिउज्जमां के तर्क

प्रस्तावना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हम उस शाश्वत प्रभु, सर्वज्ञ और दयावान के प्रति गहरी श्रद्धा और समर्पण के ऋणी हैं, जिसने हमें इस्लाम धर्म से नवाजा है और हमें शुद्ध और अद्वितीय शरीयत के रूप में मार्गदर्शन प्रदान किया है।[3] यह शरीयत एक कानून संहिता है जिसकी सच्चाई मानव बुद्धि और ईश्वरीय रहस्योद्घाटन द्वारा पुष्टि की गई है; यह नियमों का एक ऐसा संग्रह है जो इतना सत्य है कि इसकी जड़ें सच्चाई की मिट्टी में गहराई तक पहुँचती हैं, जो मानव व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में पूर्णता की शाखाएँ पैदा करती हैं जो इस दुनिया और परलोक में खुशी का फल देती हैं। शरीयत ने हमें कुरान की कृपा के माध्यम से बौद्धिक और आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त करने में भी मदद की है, जो अपने सभी पहलुओं में एक ईश्वरीय चमत्कार है।

पवित्र कुरान अपने नियमों और सिद्धांतों के माध्यम से सूक्ष्म, सर्वसमावेशी ईश्वरीय नियमों की व्याख्या करता है जो ब्रह्मांड में कार्यरत हैं; यह सृष्टि की एक दिव्य पुस्तक है जिसे भाग्य के हाथ ने बुद्धि की कलम से लिखा है। कुरान में वह सब कुछ है जो मानवता को एक सुव्यवस्थित और सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए चाहिए, और वह सब कुछ है जो उसे अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए चाहिए।

प्रगति।

3 शरिया ईश्वरीय पुस्तक और पैगंबरी परंपराओं (सुन्ना) द्वारा स्थापित नियमों और कानूनों का समूह है जो मानव धार्मिक व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को व्यवस्थित करता है।
(अनुवाद)

सृष्टि के स्वामी पर अनंत शांति और आशीर्वाद हो, जो इस दुनिया के लिए गौरव और सम्मान का स्रोत है। संपूर्ण ब्रह्मांड और उसमें मौजूद सभी प्राणी इस बात के साक्षी हैं कि पैगंबर मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं और वे उनके चमत्कारों के लिए एक साधन और माध्यम के रूप में काम करते हैं, उन महान सत्यों और सिद्धांतों का संदेश देते हैं जिन्हें वे अदृश्य के खजाने से लाए थे। प्रत्येक प्राणी अपनी-अपनी विशेष भाषा में, पैगंबर द्वारा अपनी उपस्थिति से ब्रह्मांड को दिए गए सम्मान का उत्साहपूर्वक स्वागत करता है। शाश्वत संप्रभु पृथ्वी और आकाश की जरूरतों को बोलने का कारण बनता है ताकि प्रत्येक जरूरत पैगंबर के चमत्कारों के गीत गाए जैसे कि वह ब्रह्मांडीय वायलिन पर एक तार हो। इस प्रकार, उसकी सुंदर, रोमांचकारी आवाज स्वर्ग की नीली तिजोरी में गूंजेगी। स्वर्ग उन्हें उनके स्वर्गारोहण की भाषा में बधाई देता है, जैसे कि स्वर्गदूत और चंद्रमा करते हैं। पृथ्वी अपने पत्थरों, पेड़ों और जानवरों की भाषा में उनके चमत्कारों के कारण उनकी प्रशंसा करती है। वातावरण अपने अदृश्य प्राणियों के साथ उनकी पैगम्बरी होने की खुशखबरी देता है, उन्हें छाया प्रदान करता है और अपने बादलों के साथ उनकी रक्षा करता है। पैगम्बर से पहले का समय सत्य के उस सूर्य के उदय होने की खुशखबरी देता है, अन्य पैगम्बरों द्वारा उनकी पुष्टि, और शास्त्रों और द्रष्टाओं की भविष्यवाणियों के साथ।4 पैगम्बर का धन्य युग स्वयं मुहम्मद की पैगम्बरी होने की पुष्टि समाज और राज्य की भाषा में करता है, जो उसने स्थापित की; अर्थात्, अरबों के चरित्र में जबरदस्त परिवर्तन लाकर और इतने कम समय में रेगिस्तानी जीवन से एक शानदार सभ्यता को जन्म देकर। और पैगम्बर के बाद का युग ज्ञान और विज्ञान की भाषा के साथ उनके मार्गदर्शन के लिए उन्हें धन्यवाद देता है, मानवता के इतिहास में उनके द्वारा उत्पन्न परिवर्तनों के माध्यम से मानवता और पैगम्बरी के सर्वोच्च सिंहासन पर उनके आरोहण की घोषणा करता है। अपने विद्वानों के साथ - विशेष रूप से उनमें से सत्यापन करने वालों के साथ और जो स्पष्ट और वाक्पटु वाद-विवाद पर ध्यान देते हैं

4 ईश्वर ने जिन्न को स्वर्ग में चढ़ने और प्रवेश करने की क्षमता के साथ बनाया था, ताकि वे अपने अंतिम दूत, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के आगमन से पहले स्वर्गदूतों की बातचीत को सुन सकें, उनकी बातचीत से कुछ जानकारी प्राप्त कर सकें। इसलिए, वे स्वर्ग में चढ़ गए और स्वर्गदूतों की बातचीत से कुछ जानकारी प्राप्त करने में सक्षम थे, और उन मनुष्यों में से जो उनके संपर्क में थे, उन्हें यह बात बताई। कई द्रष्टाओं ने पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के आगमन की भविष्यवाणी की थी। हालाँकि, उनके आगमन से ठीक पहले, ईश्वर ने स्वर्ग के द्वार जिन्न के लिए पूरी तरह से बंद कर दिए। जब उन्होंने स्वर्ग में प्रवेश करने की कोशिश की, तो उन्होंने पाया कि वे मजबूत पहरेदारों द्वारा संरक्षित हैं, जो उन पर मिसाइलें फेंक रहे हैं। अब अगर कोई जिन्न कुछ समझने में सक्षम है, तो उन्हें वहां पहरे पर तैनात स्वर्गदूतों द्वारा भेजे गए एक उल्कापिंड द्वारा पीछा किया जाता है (और नष्ट कर दिया जाता है)। देखें, कुरान, 67: 5; 72: 8-10। (अनुवाद)

पैगंबर के मार्ग पर चलते हुए - मानवता इस बात की गवाही देती है कि मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो स्वयं एक सूर्य की तरह हैं जो खुद को और दूसरों को प्रकाशित करते हैं, सर्वशक्तिमान द्वारा भेजे गए एक दूत हैं।

एक दोहा:

एक जंजीर जिससे दुनिया के सारे शेर बंधे हैं;
क्या किसी धोखेबाज लोमड़ी के लिए इसे तोड़ना कभी संभव होगा?

अब, यह बेचारा नूरसी, जिसे लोगों ने गलती से और उसकी सहमति के बिना बेदीउज्जमां - युग का बेमिसाल - उपनाम दे दिया है - हालाँकि उसे बिदतुज्जमां - युग का आविष्कार - कहा जा सकता है - इस गरीब राष्ट्र के विकास की कमी पर बहुत दुखी है। अफ़सोस से भरे दिल से वह कहता है: हमने इस्लाम के सार को त्याग दिया है और इसके बजाय इसके खोल पर ध्यान केंद्रित किया है; ऐसा करके हमने खुद को धोखा दिया है। गलतियाँ करने और नैतिक मानकों से कमतर होने के कारण हमें क्या करना चाहिए था

हम इस्लाम को उसका हक और सम्मान देने में असफल रहे हैं।
परिणामस्वरूप, यह हमसे घृणा से दूर हो गया है, तथा हमारे द्वारा इसके चारों ओर बनाई गई सनक और धारणाओं के भंवर में छिप गया है।

ऐसा करने का उसे पूरा अधिकार है, क्योंकि हम उसके वास्तविक मूल्य को पहचानने में असमर्थ रहे हैं। हमने उसके मूल सिद्धांतों को गैर-इस्लामी स्रोतों से प्राप्त नकली सामग्री के साथ मिला दिया है; हमने उसके विश्वास के सिद्धांतों को केवल कहानियों के साथ मिला दिया है, जिससे लोग उसके आलंकारिक, रूपक और रूपक कथनों को इस तरह से समझने में भ्रमित हो गए हैं मानो वे शाब्दिक सत्य के कथन हों। इसी कारण से, इस्लाम ने हमें दुनिया में दुख और दरिद्रता से दंडित किया है। केवल इस्लाम की दया ही हमें बचा सकती है।

तो ऐ मुसलमान भाईयों और बहनों! आइए हम इस्लाम से क्षमा मांगें और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करें। हम सब मिलकर इस्लाम की ओर ईमान के हाथ बढ़ाएं और उससे वफ़ादारी करें। हम सब मिलकर अपने धर्म की अटूट डोर को मजबूती से थामे रहेंगे।

बिना किसी झिझक के मैं कह सकता हूँ कि जो बात मुझे पिछली शताब्दियों के विचारों और दृष्टिकोणों का सामना करने का साहस और उत्साह देती है, तथा जो बात मुझे उन शताब्दियों में प्रचलित सनक और धारणाओं को दूर करने के लिए प्रेरित करती है, वह यह है: मैं पूरे विश्वास के साथ मानता हूँ कि भले ही उसे कुचल दिया गया हो, परन्तु अंततः सत्य फलेगा-फूलेगा; मैं यह भी मानता हूँ कि भले ही उनकी संख्या कम हो और वर्तमान परिस्थितियों की निर्दयता के कारण वे कमजोर पड़ गए हों, परन्तु सत्य के समर्थक एक दिन विजयी होंगे।

4 तर्क : कुरान की वाक्पटुता को समझने की कुंजी

मैं यह भी मानता हूँ कि भविष्य में केवल इस्लाम की सच्चाई ही प्रबल होगी और पूरी दुनिया में उसका पूर्ण प्रभुत्व होगा। भविष्य में सत्य और ज्ञान के सिंहासन पर केवल इस्लाम ही विराजमान होगा। इस विजय के संकेत पहले ही दिखने लगे हैं। अतीत में आठ बाधाएँ थीं जो प्रकाश देने वाली शरीयत को कट्टरता और अंधी नकल के निरंकुश शासन पर विजय पाने से रोकती थीं, और ज्ञान के भ्रामक रूप से चमकते मलबे को दूर करने से रोकती थीं जो मानव अज्ञानता के बंजर भूमि पर हावी थे। इन बाधाओं में से, जिनके कारण इस्लाम का सूर्य ग्रहणग्रस्त हो गया, चार बाधाएँ पश्चिम में पाई गईं: पादरी का अंधानुकरण, अज्ञानता, कट्टरता और चर्च का आधिपत्य। इनमें से तीन बाधाएँ मुस्लिम देशों में प्रमुख थीं: निरंकुशता, आंतरिक मामलों में अव्यवस्था और ऐसी निराशा जो उदासीनता की ओर ले जाती है। आठवीं बाधा, और सबसे बड़ी, हमारे बीच और पश्चिम दोनों में पाई गई: यह इस्लाम के कुछ बाहरी पहलुओं और कई स्थापित वैज्ञानिक तथ्यों के बीच कथित संघर्ष था। उत्साही लोगों के लिए धन्यवाद

और वैज्ञानिक ज्ञान के साहसी प्रयासों से, जिसने मानवता के प्रति अपने प्रेम के कारण, निष्पक्ष जांच और निर्णय से उभरने वाले सत्यों को संगठित किया है, ये बाधाएं नष्ट होने लगी हैं।

निस्संदेह सबसे बड़ी बाधा, जिसके कारण हमें संसार में दुःख भोगना पड़ता है और पश्चिमी लोग परलोक में सुख से वंचित रह जाते हैं, तथा जिसके कारण इस्लाम का सूर्य ग्रहणग्रस्त हो जाता है, वह है इस्लाम के कुछ बाह्य पहलुओं और कुछ स्थापित वैज्ञानिक तथ्यों के बीच कथित संघर्ष।

यह बात कम से कम कहने के लिए अजीब है, क्योंकि कोई चीज उस घटना के साथ कैसे संघर्ष कर सकती है जिसने उसे जन्म दिया है? क्योंकि यह इस्लाम ही है जिसने विज्ञानों का मार्गदर्शन किया है, और उनमें से कई को जन्म भी दिया है। फिर भी इस्लाम और विज्ञान के बीच संघर्ष की भ्रांति हमारे दिमाग पर हावी होती रहती है, जिससे कई लोग निराशा की ओर बढ़ते हैं और कई मुस्लिम लोगों के लिए ज्ञान और सभ्यता के दरवाजे बंद हो जाते हैं। जो लोग कल्पना करते हैं कि इस्लाम विज्ञान के साथ संघर्ष में है, वे एक गलतफहमी के तहत काम करते हैं जो डर से प्रेरित है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग सोचते हैं कि यह विश्वास करके कि दुनिया गोल है, वे कुछ इस्लामी सिद्धांतों का उल्लंघन करेंगे - इस तथ्य के बावजूद कि पृथ्वी का गोलाकार रूप एक स्पष्ट रूप से स्थापित तथ्य है जिसकी पुष्टि भूगोल द्वारा की गई है, एक ऐसा अनुशासन जो ब्रह्मांड में कुछ सबसे अधिक देखी जाने वाली घटनाओं से संबंधित है।

ऐ दोस्त, इस किताब में मेरा उद्देश्य यह है: मैं इस्लाम में सीधा रास्ता दिखाना चाहता हूँ, और उन संदेहों को झूठा साबित करना चाहता हूँ जिन्हें उसके दुश्मनों ने फैलाने की कोशिश की है।

इसके बारे में फैलाना और यह दिखाना कि उन मुसलमानों की सनकें और चिंताएँ कितनी बेबुनियाद हैं जिन्होंने खुद को इस्लाम के कुछ बाहरी पहलुओं की गलत समझ में कैद कर लिया है। मैं इस्लाम के उन वफ़ादार दोस्तों और सच्चाई की तलाश करने वाले विद्वानों की भी मदद करने में सक्षम होने की उम्मीद करता हूँ जो लोगों को सच्चाई की ओर ले जाने की कोशिश करते हैं, जो मुस्लिम दुनिया में विकास के लिए प्रयास करते हैं और जो सीधे रास्ते पर जीत की उम्मीद के साथ खुद को आगे बढ़ाते हैं।

संक्षेप में, मेरा उद्देश्य इस्लाम पर से धूल झाड़कर उसे उसकी मौलिक चमक के साथ प्रदर्शित करना है।

यदि आप पूछें कि मैं उन विषयों की सच्चाई को उजागर करने का प्रयास क्यों करता हूँ जो पहले से ही स्पष्ट हो चुके हैं और सर्वविदित हैं, तो मैं उत्तर में कहूँगा:

यह सच है कि हम सभी एक ही दुनिया और एक ही युग में रहते हैं, लेकिन बौद्धिक रूप से हम में से कई लोग अभी भी मध्य युग में हैं। इस वजह से, कई स्पष्ट सत्य हैं जो अभी भी उनके लिए अस्पष्ट हैं।

परिचय

T उनकी पुस्तक में तीन भाग हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में अद्वितीय है। पहले भाग का उद्देश्य इस्लाम में सत्य के तत्व को स्पष्ट करना है, या आधारों के शीर्षकों और मामलों के उपशीर्षकों के अंतर्गत इस्लाम को उसकी मौलिक चमक में दिखाना है। दूसरे भाग में वाक्पटुता के तत्व की खोज की गई है। तीसरा भाग आस्था के तत्वों के बारे में है और इसमें कुछ जापानी लोगों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब दिए गए हैं।

कुल मिलाकर, ये भाग खगोल विज्ञान और भूविज्ञान जैसे भौतिक विज्ञानों, तथा मानव विज्ञान और समाजशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के दृष्टिकोण से कुरान को समझने की कुंजी प्रदान करते हैं।

पहला भाग

सत्य का तत्व

पहला भाग

सत्य का तत्व

T निम्नलिखित बारह आधार वह सीढ़ी बनाते हैं जिस पर चढ़कर हम अपने लक्ष्य तक पहुंचेंगे।

पहला आधार

यह एक स्थापित पद्धतिगत सिद्धांत है (इस्लामी विज्ञान में) कि जब धार्मिक ज्ञान का कोई भी तत्व, जो कुरान या पैगंबर के सुन्नह पर आधारित बताया जाता है, तर्क के साथ संघर्ष में प्रतीत होता है, तो तर्क का निर्णय - बशर्ते कि वह वास्तविक हो - प्राथमिकता लेता है और, परिणामस्वरूप, संबंधित तत्व की व्याख्या की जाती है।[5]

यह भी एक स्थापित तथ्य है कि कुरान की सभी आयतों में मुख्य रूप से चार बुनियादी, सार्वभौमिक सत्यों को स्थापित करने और उनकी पुष्टि करने का लक्ष्य है: ब्रह्मांड के निर्माता का अस्तित्व और एकता; पैगंबरी; शारीरिक पुनरुत्थान; तथा पूजा और न्याय। यह केवल कुरान ही है जो दर्शन द्वारा सृष्टि के बारे में पूछे गए प्रश्नों का सही और सबसे प्रेरक उत्तर देने में सक्षम है, अर्थात्, "आप कहां से और किसके आदेश से अस्तित्व में आए? आपको कौन निर्देशित करता है? आपका मार्गदर्शक और प्रवक्ता कौन है? क्यों

---

5 वास्तविक तर्क वह है जो इस्लाम के स्थापित सत्यों और आधारभूत सिद्धांतों द्वारा सिखाया और प्रकाशित किया गया है, और जिसे उस व्यक्ति द्वारा कार्यान्वित किया जाता है जो ईश्वर के सृष्टि-संबंधी नियमों और ईश्वरीय धार्मिक संहिता या शरिया में निहित नियमों, दोनों का सटीक ज्ञान रखता है। (अनुवाद)

क्या तुम अस्तित्व में हो और यहाँ तुम्हारा उद्देश्य क्या है? तुम्हारा अंतिम गंतव्य क्या है?"
जब तक कि उन्हें बुनियादी, सार्वभौमिक सत्यों का समर्थन करने के लिए सबूत के रूप में उपयोग नहीं किया जाता है, कुरान द्वारा "प्राकृतिक" तथ्यों का केवल कोष्ठक में उल्लेख किया गया है, और तब केवल यह दिखाने के लिए कि ब्रह्मांड के कामकाज को कैसे समझा जा सकता है कि यह पूरी सृष्टि में प्रदर्शित दिव्य कला के माध्यम से सर्वशक्तिमान निर्माता की ओर तार्किक रूप से ले जाता है। क्योंकि स्पष्ट रूप से ब्रह्मांड में एक शानदार व्यवस्था काम कर रही है। यह व्यवस्था, जो निर्माता के अस्तित्व, ब्रह्मांड के निर्माण के लिए उसके उद्देश्य और उसकी इच्छा के लिए निर्णायक गवाही देती है, पूरे ब्रह्मांड में इतनी स्पष्ट है कि यह अपनी भव्यता और सुंदरता को अत्यंत स्पष्टता के साथ ज्ञान और दर्शन के सामने प्रस्तुत करती है। यह ऐसा है मानो प्रत्येक प्राणी अपने निर्माता की बुद्धि की प्रशंसा करने वाली एक आवाज है; वास्तव में, प्रत्येक प्रजाति इसका संकेत देती है और इसकी गवाही देती है। चूँकि ब्रह्माण्ड की पुस्तक का उल्लेख करने या सृष्टि के तथ्यों का उल्लेख करने में कुरान का मुख्य उद्देश्य निर्माता के अस्तित्व और एकता को साबित करना है, और चूँकि उन तथ्यों में से एक जो पूरे ब्रह्मांड में स्पष्ट है, वह उसका क्रम है, इसलिए जब हम कुरान के पास जाते हैं तो वास्तव में यह मुद्दा नहीं है कि ब्रह्मांड कैसे बनाया गया: हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ब्रह्मांड अपने निर्माता के अस्तित्व का प्रमाण है-

तनाव.

कुरान के सर्वोच्च संग्रह में वर्णित किसी भी ब्रह्मांडीय घटना के निम्नलिखित चार कार्य हैं:

सबसे पहले, यह उस व्यवस्था की आवाज के माध्यम से, जिसका यह एक हिस्सा है, सर्व-प्रतापी निर्माता की भव्यता की घोषणा करता है, तथा सृष्टि के अन्य सभी भागों या तत्वों के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करके।

दूसरे, चूंकि यह एक विशेष विज्ञान का विषय है, इससे पता चलता है कि इस्लाम सभी विज्ञानों का आधार है।

तीसरा, चूँकि यह एक पूरी प्रजाति का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से इस्लाम और ब्रह्मांड में काम करने वाले ईश्वरीय नियमों के बीच मौजूद सामंजस्य को प्रदर्शित करता है। इस सामंजस्य को समझने से इस्लाम को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। चूँकि यह एक ऐसा धर्म है जो अपने सभी पहलुओं में सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियमों के अनुरूप है, इसलिए इस्लाम का सभी धर्मों में एक विशिष्ट स्थान है, और विशेष रूप से उन धर्मों से ऊपर है जो इच्छाओं और सनक के बीच झूलते रहते हैं और अपने अनुयायियों को असहाय छोड़ देते हैं; या जो कभी प्रकाश देते हैं और कभी अपने अनुयायियों को अंधकार में छोड़ देते हैं; या जो तेजी से परिवर्तन और रूपांतरण के संपर्क में आते हैं।

चौथा, चूँकि प्रत्येक ब्रह्माण्डीय घटना सत्य की अभिव्यक्ति है, इसलिए यह मन को सत्य की ओर जागृत, निर्देशित और प्रोत्साहित करती है।

संक्षेप में, यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो धरती पर मौजूद चीज़ों और आकाशीय पिंडों पर विचार-विमर्श करने से कतराते हैं, जिनकी कसमें ईश्वर कुरान में खाते हैं, और जिनकी अहमियत पर जोर दिया गया है। कुरान में प्रत्येक कसम को एक ऐसी छड़ी के रूप में देखा जा सकता है जो उन लोगों पर प्रहार करती है जो उपेक्षा और उदासीनता की गहरी नींद में हैं।

चूँकि यह सत्य है, इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि मार्गदर्शक कुरान, जो वाक्पटुता के शिखर पर खड़ा है और जिसकी तरह कोई भी व्यक्ति कभी भी, चाहे वह एक भी आयत क्यों न हो, अपने लिए सबसे उपयुक्त भाषाई शैली और तर्क का सबसे संक्षिप्त और सीधा तरीका चुनता है। इस कारण से, और क्योंकि अधिकांश लोगों को वैज्ञानिक तथ्यों का विशेषज्ञ ज्ञान नहीं है, यह अपने मुख्य विषयों को बताने और उन्हें सत्य की ओर मार्गदर्शन करने के लिए आम लोगों की भावनाओं और इंद्रिय बोध पर विचार करता है। दूसरे शब्दों में, यह हमें ब्रह्मांड के पूर्ण क्रम के बारे में बताता है, जो उन मामलों की सच्चाई के लिए सबूत का गठन करता है जिन्हें यह स्थापित करना चाहता है, ऐसी शैली में कि यह आम आदमी की नज़र से भी नहीं छूटता। न ही यह उनके लिए अस्पष्ट या भ्रामक है, और यह उन्हें संदेह या अनिश्चितता में नहीं छोड़ता। यदि यह अन्यथा होता, तो सबूत थीसिस से भी अधिक अस्पष्ट और अस्पष्ट होता; स्पष्टतः यह कुरान के मार्गदर्शन, वाक्पटुता और अद्वितीयता के अनुरूप नहीं होता।

उदाहरण के लिए, कुरान में कहा गया है, "हे मानव जाति! पृथ्वी पर विचार करो, क्योंकि यह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हुए अंतरिक्ष में घूमती है; और सूर्य जो गतिशील होते हुए भी अपनी धुरी पर स्थिर है; और सामान्य गुरुत्वाकर्षण के नियम पर, जो आकाशीय पिंडों को एक दूसरे से जोड़ता है; और सृष्टि के वृक्ष के फलों के बीच के संबंधों पर, जिसने अपनी शाखाओं को अनंत अंतरिक्ष में फैला रखा है! इन तथ्यों पर विचार करो और ब्रह्मांड के निर्माता की महानता पर विचार करो! इसके अलावा, पानी की एक बूंद को बुद्धि की आंखों से देखो, जिसमें असंख्य सूक्ष्मजीवों की दुनिया है, ताकि तुम पुष्टि कर सको कि निर्माता कितना शक्तिशाली है।" यदि कुरान इस तरीके से आगे बढ़ता, तो क्या सबूत थीसिस (जिस उद्देश्य को वह आगे बढ़ाता है) की तुलना में अधिक अस्पष्ट और गूढ़ नहीं होते?

क्या यह आम लोगों को ऐसे उदाहरणों का उपयोग करके सच्चाई समझाने का प्रयास नहीं होता जो उनके लिए अज्ञात या अस्पष्ट हैं? क्या यह उन पर कुछ ऐसा थोपने का पांडित्यपूर्ण प्रयास नहीं लगता जो तर्कहीन लगता है और जो उनकी इंद्रिय बोध के अनुरूप नहीं है? हालाँकि, मामले की वास्तविकता यह है कि भाषाई अनुकरण-

कुरान की मौलिकता इतनी अधिक है और इसे इतना अधिक जटिल तथा तर्कहीन बना दिया गया है कि इसकी शुद्ध शैली के विपरीत कोई भी अस्पष्ट या असंगत चीज इसमें स्थान नहीं पा सकती।

यहां उल्लेख करने योग्य एक और बात यह है कि जिस प्रकार चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला कुरान अपनी आयतों के माध्यम से अपने मूल उद्देश्यों को इंगित करता है, उसी प्रकार वह उन आयतों में निहित स्पष्ट अर्थों के माध्यम से उन पर प्रकाश भी डालता है।

यह एक और स्थापित सिद्धांत है कि सत्य या असत्य, या पुष्टि या खंडन, सांकेतिक और आलंकारिक अभिव्यक्तियों के स्पष्ट अर्थ से नहीं निकाला जा सकता। यह उस उद्देश्य से पाया जाता है जिसके लिए उन्हें कहा जाता है या उनका क्या मतलब है। उदाहरण के लिए, अगर हम कहते हैं कि एक लंबे व्यक्ति के पास लंबे हैंडल वाली तलवार है, तो यह तब भी सच है जब उस व्यक्ति के पास तलवार न हो, क्योंकि हमने जो कहा है वह एक आलंकारिक कथन है जो पूरी तरह से उस व्यक्ति की ऊंचाई को इंगित करने के लिए बनाया गया है। इसके अलावा, इस आलंकारिक कथन में से एक शब्द का प्रयोग रूपक के रूप में किया गया है और यह कथन को उसका अर्थ देता है। इसी तरह, ईश्वर के वचन - कुरान की कुछ आयतें -

जिसके सभी भाग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, अन्य छंदों में निहित सत्य के रत्नों की ओर इशारा करते हैं: वे अपने पड़ोसियों के दिलों में छिपे रहस्यों का अनुवाद करते हैं।

संक्षेप में, जो व्यक्ति इस तथ्य पर विचार नहीं करता है और आयतों का उस तरह से मूल्यांकन नहीं कर पाता है जैसा कि किया जाना चाहिए, वह सत्य के सामने उपहास का पात्र बनता है: वह उस दरवेश के समान है जो दैनिक प्रार्थनाओं की उपेक्षा के लिए यह कहकर बहाना बनाने का प्रयास करता है, "कुरान हमें आदेश देता है: 'नमाज़ के लिए आगे मत आओ!'", लेकिन सुविधाजनक रूप से आयत के अंत को छोड़ देता है, "जब तक आप नशे की हालत में न हों, जब तक कि आप यह न जान लें कि आप क्या कह रहे हैं।"

दूसरा आधार

अतीत में कोई सैद्धांतिक बात वर्तमान या भविष्य में स्पष्ट और स्थापित हो सकती है। यह एक स्व-सिद्ध तथ्य है कि सृष्टि में पूर्णता की ओर एक सहज प्रवृत्ति होती है, और इसी के माध्यम से सृष्टि विकास या क्रमिक पूर्णता के नियम से बंधी होती है।

सृष्टि में शामिल, मानव जीवन में प्रगति की प्रवृत्ति होती है जो पूर्णता की ओर इस प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है। प्रगति की ओर यह प्रवृत्ति एक पर आधारित राय और सिद्धांतों के माध्यम से संभव होती है

सदियों के दौरान एक और। प्राप्त परिणामों - तथ्यों के माध्यम से राय और सिद्धांत विकसित होते हैं; फिर स्वयंसिद्ध या सिद्धांत स्थापित हो जाते हैं, और सीखे गए सिद्धांतों को लागू करने के साधनों का आविष्कार किया जाता है।

स्थापित तथ्य और सिद्धांत विज्ञान के बीजों को अंकुरित करते हैं जो समय के गर्भ में सृष्टि की “पसलियों” से निकलते हैं, जहाँ वे अनुभव और प्रयोग के माध्यम से बढ़ते हैं।

यही कारण है कि आज सभी को ज्ञात बहुत सी बातें अतीत में केवल सैद्धांतिक या समझ से परे थीं। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि भूगोल, खगोल विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान और अन्य विज्ञानों के बहुत से मामले आज के बच्चों के लिए अज्ञात नहीं हैं, क्योंकि जो तथ्य और सिद्धांत स्थापित हो चुके हैं, जो साधन ईजाद हो चुके हैं और जो मत एक दूसरे से मजबूत हुए हैं। वे इब्न सीना (एविसेना)6 और उनके जैसे विचारकों और वैज्ञानिकों के लिए भी अज्ञात थे, हालांकि ऐसे लोगों में अपने समकालीनों की तुलना में अधिक क्षमता और दर्शन और विज्ञान में कहीं बेहतर पारंगत थे। कमी इब्न सीना और उनके समकालीनों में नहीं है, बल्कि उस समय में है जिसमें वे रहते थे; हम सभी अपने समय के बच्चे हैं। क्या यह सच नहीं है कि अगर नई दुनिया, जिसकी खोज ने कोलंबस को अपनी प्रसिद्धि दिलाई, अब तक नहीं खोजी गई होती, तो कोई भी साधारण कप्तान, वर्तमान में पुरानी और नई दुनिया को एक दूसरे का पड़ोसी बना सकता था? कोलंबस के पास नेविगेशन का जो ज्ञान था, तथा खतरों के प्रति उसकी हिम्मत और प्रतिरोध था, उसकी जगह एक छोटा जहाज और एक कंपास ले सकता है। निम्नलिखित बिंदु भी विचारणीय हैं:

कुछ मामले ऐसे होते हैं जो समय के साथ पर्याप्त जानकारी और राय एकत्र करने के बाद ही विकसित होते हैं। अगर हम सोचें कि एक बड़ी चट्टान को उठाने के लिए आपसी सहायता की आवश्यकता कैसे होती है, तो हम इस बात को आसानी से समझ सकते हैं। हालाँकि, कुछ अन्य मामलों में आपसी सहायता और सहयोग की कोई भूमिका नहीं होती है; उदाहरण के लिए, लोगों द्वारा एक दूसरे का समर्थन या मदद करना किसी काम का नहीं है ताकि वे खाई को पार कर सकें। कुछ विज्ञानों को विकसित होने के लिए आपसी सहायता और सहयोग की आवश्यकता होती है। इनमें से अधिकांश भौतिक विज्ञान हैं। अन्य विषयों में आपसी सहायता का लगभग कोई उपयोग नहीं है, जैसे

---

6 अबू अली इब्न सिना (एविसेना) (980-1037): इस्लामी परंपरा के स्वर्ण युग के सबसे प्रमुख दार्शनिकों, गणितज्ञों और चिकित्सकों में से एक। पश्चिम में, उन्हें उनके प्रसिद्ध चिकित्सा ग्रंथ अल -क़ानून "द कैनन" के लिए "चिकित्सकों के राजकुमार" के रूप में भी जाना जाता है। लैटिन अनुवादों में, उनके कार्यों ने कई ईसाई दार्शनिकों को प्रभावित किया, जिनमें सबसे उल्लेखनीय थॉमस एक्विनास थे। (अनुवादक)

ईश्वर के बारे में सहज ज्ञान की प्राप्ति या आध्यात्मिक प्रगति। इतिहास के माध्यम से एक के बाद एक सामने लाए गए विचार अपनी प्रकृति को नहीं बदलते हैं, बल्कि तर्कों को जोड़ते हैं और स्पष्टीकरण के लिए काम करते हैं।

यह भी महत्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति किसी विषय में बहुत अधिक व्यस्त रहता है, वह आमतौर पर अन्य विषयों के प्रति अधिक असंवेदनशील होता है और उन्हें अच्छी तरह से समझ नहीं पाता है। इस कारण से, जो लोग भौतिक या भौतिक मामलों में बहुत अधिक व्यस्त रहते हैं, उनके पास आध्यात्मिक मामलों के बारे में पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है या उन्हें केवल सतही समझ होती है। इसलिए, आध्यात्मिक मामलों से संबंधित ऐसे लोगों की राय और निर्णय का कोई महत्व नहीं होता है। यदि कोई रोगी चिकित्सा को इंजीनियरिंग के साथ भ्रमित करता है और चिकित्सक के बजाय इंजीनियर से सलाह लेने का फैसला करता है, तो इसका मतलब है कि उसने कब्र के अस्पताल में जाना पसंद किया है या अपने रिश्तेदारों को अपनी मृत्यु पर संवेदना भेजने के लिए पहले ही निमंत्रण भेज दिया है।

इसी तरह, भौतिकवादियों से संपर्क करने या आध्यात्मिकता के मामलों में उनकी राय लेने का मतलब है कि हृदय, जो विश्वास और आध्यात्मिकता की क्षमता है, गिर जाएगा जबकि बुद्धि, जो आध्यात्मिक क्षमता है, क्षीण हो जाएगी। यह सच है कि जो लोग भौतिकता में हर सत्य की खोज करते हैं, उनकी बुद्धि उनकी भौतिक इंद्रियों में होती है, जबकि भौतिक इंद्रियाँ आध्यात्मिक चीजों के प्रति अंधी होती हैं।

तीसरा आधार

पहले के गैर-इस्लामी, विशेषकर इजरायली, स्रोतों और प्राचीन यूनानी दर्शन से उधार ली गई कुछ बातें शुद्ध इस्लाम के क्षेत्र में घुसपैठ कर गईं और धार्मिक परिधान पहनकर कुछ लोगों के मन में क्रांतियां पैदा कर दीं।

इस्लाम से पहले के अज्ञान के दौर में अरब लोग काफी हद तक अनपढ़ थे। जब सत्य उनके बीच प्रकट हुआ, उनकी क्षमताओं को जगाया, तो उन्होंने देखा कि इस्लाम अपने आप में स्पष्ट था और सत्य प्रकट हो चुका था, जिससे संपूर्ण सत्य का मार्ग खुल गया; परिणामस्वरूप, उनके प्रयास और झुकाव धर्म सीखने पर केंद्रित थे। ब्रह्मांड का उनका अवलोकन वैज्ञानिक जांच के नाम पर नहीं था, बल्कि उनके विश्वास की सच्चाई के लिए सबूत खोजने के उद्देश्य से था। जो चीज उनके प्राकृतिक स्वाद को आकर्षित करती थी और उन्हें प्रेरित करती थी, वह उनका विस्मयकारी प्राकृतिक वातावरण था, और जो चीज उनके प्रतिभाशाली स्वभाव को प्रेरित, सूचित और प्रशिक्षित करती थी, वह थी कुरान। हालाँकि, जब उन्होंने बाद में अन्य लोगों को अपने समुदाय में शामिल करना शुरू किया, तो इन लोगों के साथ आने वाली जानकारी "मुस्लिम" बन गई। विशेष रूप से, धर्मांतरण

वहब इब्न मुनब्बीह7 और काब अल-अहबर8 जैसे कुछ यहूदी विद्वानों की टिप्पणियों ने इस्राएली स्रोतों से कुछ अंशों को अरबों के दिमाग में घुसने और उनके सोचने के तरीके को प्रदूषित करने का कारण बना दिया। इसके अलावा, इन उधारों को लोगों से बिना शर्त स्वागत मिला क्योंकि किताब के लोगों में से ऐसे विद्वानों को बहुत सम्मान मिला क्योंकि उन्होंने धर्म परिवर्तन किया था और मुसलमान के रूप में प्रसिद्धि अर्जित की थी। चूँकि दिखने में ये उधार इस्लाम के मूल सिद्धांतों के विपरीत नहीं थे और आख्यानों के रूप में प्रसारित हुए, इसलिए उन्हें बिना किसी आलोचना के स्वीकार कर लिया गया।

दुर्भाग्यवश, बाद में इन्हें कुछ सत्यों को जानने तथा कुरान की कुछ आयतों को समझने के लिए मानदंड के रूप में स्वीकार कर लिया गया, जिससे अनेक संदेह और गलतफहमियां पैदा हुईं।

इज़राइली स्रोतों से लिए गए इन अंशों का इस्तेमाल कुरान और सुन्ना के कुछ निहितार्थों को समझने के लिए किया जा सकता है। लेकिन इन्हें कुरान की आयतों और पैगंबरी परंपराओं के अर्थ या व्याख्या के रूप में कभी नहीं लिया जा सकता।

बशर्ते वे सत्य हों, उनके लिए द्वितीयक, यहां तक कि तीसरे या चौथे दर्जे के अर्थों में भी जगह मिल सकती है। हालांकि, जो लोग केवल कुरान की आयतों के शाब्दिक अर्थों पर ध्यान केंद्रित करते थे और जिनके पास आयतों को समझने के लिए विश्वसनीय स्रोतों की कमी थी या वे उन्हें नहीं खोजते थे, उन्होंने कुछ कुरान की आयतों और साथ ही कुछ पैगंबरी परंपराओं की व्याख्या इस्राएली कथाओं के प्रकाश में करने का प्रयास किया। इसके विपरीत, कुरान की विश्वसनीय व्याख्या मुख्य रूप से कुरान और विश्वसनीय रूप से वर्णित हदीस ही करते हैं। न तो टोरा और न ही सुसमाचार, जिनके कानूनी नियमों और आदेशों को निरस्त कर दिया गया था और कथाओं को विकृत कर दिया गया था, कुरान की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कुरान की आयतों और पैगंबरी परंपराओं (कुछ में प्रयुक्त शब्दों और छवियों) के सुझावों और अर्थों को अंतर्निहित या आवश्यक अर्थों के रूप में नहीं लिया जा सकता है (जिनके लिए वे शब्द और छवियां संकेत करती हैं) लेकिन, कुछ मामलों में, लोगों ने कुछ सुझावों या अर्थों को गलत माना।

---

7 वहब इब्न मुनब्बीह (654-737?) सबसे शुरुआती मुस्लिम परंपरावादियों में से एक थे। कुछ लोगों के अनुसार, यहूदी परंपराओं में पारंगत, वह यहूदी मूल के थे। वह मुख्य रूप से 'अब्दुल्ला इब्न अब्बास' से प्रभावित थे, जो पैगंबर के सबसे प्रसिद्ध, सबसे जानकार साथियों में से एक थे, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। (अनुवाद)

8 काब अल-अहबर (?–653) पहले यमन के एक यहूदी रब्बी थे। उन्होंने पैगंबर की मृत्यु के बाद इस्लाम स्वीकार कर लिया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। उन्हें इस्राइलियत (इस्राइली स्रोतों से उधार) का वर्णन करने के लिए आलोचना की गई थी। (अनुवाद)

9 जैसा कि आम तौर पर माना जाता है, हदीस पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) द्वारा कही गई बातों, किए गए कामों या मौन स्वीकृति का रिकॉर्ड है। यह पैगंबरी परंपराओं का संग्रह है। (अनुवाद)

अर्थों को सच्चे अर्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया, और इस प्रकार सम्भावनाओं या संभावनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया मानो वे अंतर्निहित या आवश्यक अर्थ हों।

खलीफा मामून के शासनकाल में एक समय ऐसा आया जब प्राचीन यूनानी दर्शन की कुछ कृतियों का अनुवाद किया गया ताकि उस दर्शन को “इस्लामीकृत” किया जा सके। इस प्रकार, वह दर्शन, जो कुछ हद तक विभिन्न प्रकार के मिथकों और अंधविश्वासों पर आधारित है और इस प्रकार एक निश्चित सीमा तक दूषित हो चुका था, मुस्लिम अरबों की शुद्ध सोच के साथ मिल गया और उन विदेशी कृतियों के संबंध में, सत्य की जगह नकल ने ले ली।

कुछ हद तक काल्पनिकता।

हालाँकि अरब लोग इस्लाम के शुद्ध, पर्याप्त स्रोतों से अपने लिए आवश्यक अर्थ और नियम निकालने के लिए पर्याप्त ज्ञानी और बुद्धिमान थे, फिर भी उन्होंने खुद को ग्रीक दर्शन के छात्र बनने के लिए नीचा दिखाया। सौभाग्य से, जिस तरह से मुस्लिम भाषाविदों ने अरबी की मुदर बोली के नियमों को स्थापित करने और लिखने के लिए खुद को लगाया था, जब उस बोली, अरबी भाषा की उत्पत्ति, ने गैर-अरब लोगों के इस्लाम में प्रवेश करने पर भ्रष्टता के संकेत दिखाए, उसी तरह इस्लाम के सावधानीपूर्वक सत्य-खोजी विद्वानों ने यूनानी दर्शन के भ्रष्ट तत्वों और इज़राइली स्रोतों से झूठे उधारों से इस्लाम को शुद्ध करने का प्रयास किया, जब ये इस्लाम के क्षेत्र में रिसने लगे।

उनकी काफी सफलता के बावजूद, उनमें से कुछ तत्व और उधार बने रहे और उन्हें समाप्त नहीं किया गया। इसके अलावा, जब कुरान की व्याख्या पर महान, प्रशंसनीय प्रयास केंद्रित होने लगे, तो उनमें से कुछ जिन्होंने खुद को आयतों के शाब्दिक अर्थों तक सीमित रखा, उन्होंने कुरान में वर्णित कथाओं को इज़राइली स्रोतों में संबंधित सामग्री से उधार लेकर समेटने की कोशिश की, साथ ही प्राचीन यूनानी दर्शन से लिए गए शब्दों में कुछ बौद्धिक प्रश्नों की व्याख्या करने की कोशिश की। उन्होंने देखा कि कुरान और हदीस दिल और बुद्धि दोनों को संबोधित करते हैं और संतुष्ट करते हैं, और प्रकट किए गए संपूर्ण ज्ञान को समाहित करते हैं। इस प्रकार, उन्होंने कुरान और हदीस और इज़राइली रिपोर्टों में विशुद्ध रूप से धार्मिक मामलों के बीच अनुरूपता खोजने का प्रयास किया, जो वास्तव में भ्रष्ट और विकृत थे। चूंकि उन्होंने कुरान और हदीस में कुछ बौद्धिक प्रश्नों के बीच किसी प्रकार की सहमति की भी कल्पना की थी।

10 अबू जाफर अल-मुमिन इब्न हारुन अल-रशीद (786-833) सबसे प्रसिद्ध 'अब्बासी खलीफाओं में से एक थे। उन्होंने 813 से अपनी मृत्यु तक शासन किया। उन्होंने अल-बैत अल-हिक्मा (बुद्धि का घर) की स्थापना की, जहाँ विशेष रूप से यूनानी दर्शन और विज्ञान का अरबी में अनुवाद किया गया। (अनुवाद)

हदीस और प्राचीन यूनानी दर्शन के अलावा, उन्होंने कुरान और हदीस की व्याख्या में भी हदीस को लागू करने का प्रयास किया।

यह वास्तव में गलत तरीका था। कुरान एक चमत्कारी ईश्वरीय वचन है; इसकी नकल नहीं की जा सकती और कोई भी इसके समान एक भी आयत नहीं बना सकता। इसलिए सबसे पहले, इस मामले को इस बिंदु से देखा जाना चाहिए। कुरान की व्याख्या स्वयं कुरान ही करेगा - इसके अपने वाक्य, भाव और वाक्यांश। इसका अर्थ अपने आप में है, जैसे सीप में मोती। यहां तक कि अगर कोई कुरान और यूनानी दर्शन के बीच एक काल्पनिक समझौते के माध्यम से कुरान की सच्चाई और उत्कृष्टता की घोषणा करना चाहता है, तो भी यह व्यर्थ होगा। किताब, जो अपने आप में स्पष्ट है और सभी सत्य को प्रकट करती है, ऐसे तर्कसंगत और रिपोर्ट किए गए ज्ञान से सिद्ध होने की आवश्यकता से बहुत दूर है, जिसे स्वयं कुरान द्वारा सिद्ध और स्वीकार किए जाने की आवश्यकता है। इसके विपरीत, यदि कुरान उस ज्ञान को सिद्ध नहीं करता है, तो इसकी गवाही ध्यान देने योग्य नहीं होगी। प्लीएडेस को धरती पर नहीं, बल्कि आकाश में खोजा जाना चाहिए। इसी तरह, आपको कुरान का अर्थ कुरान में, उसके शब्दों में खोजना चाहिए। इसे अपनी जेब में मत ढूँढ़ो, जहाँ सब कुछ एक साथ मिला हुआ है। आप इसे वहाँ नहीं पा सकते; अगर आपको लगता है कि आपने इसे पा लिया है, तो भी कुरान इसे स्वीकार नहीं करता क्योंकि इस तरह के सत्यापन पर इसकी वाक्-पटुता की मुहर नहीं लगती।

क्रम.

यह वाक्पटुता के स्वीकृत तथ्यों में से एक है कि जिसे हम अर्थ कहते हैं वह वह है जो शब्दों के कानों में जाने पर मन और हृदय में प्रवेश करता है, और फिर आंतरिक बुद्धि द्वारा अवशोषित किया जाता है, जो इसे विचारों के फूलों में खिलने का कारण बनता है। इसलिए, यदि आप कुरान की आयतों और पैगंबर की परंपराओं के अर्थ के लिए उन विचारों को लेते हैं जो अन्य चीजों के साथ आपकी व्यस्तता के कारण आपके दिमाग में उभरे हैं और यदि आप इसमें दर्शनशास्त्र के झूठे तत्वों और कुछ काल्पनिक कथाओं से जो आपने चुराया है उसे जोड़ते हैं, उन्हें कुरान या हदीस के सच्चे अर्थ के रूप में पेश करने का प्रयास करते हैं, तो आपको जो उत्तर मिलेगा वह इस प्रकार है: "आप जो अर्थ के रूप में प्रस्तुत करते हैं वह झूठा है। जो झूठ से असली को पहचानता है वह इसे अस्वीकार कर देगा। कुछ ऐसा जो पूरे चमत्कारी है, जैसा कि कुरान है, जो कोई भी इसे नकली बनाता है उसे अस्वीकार करता है। चूँकि तुमने कुरान की आयतों और पैगम्बरी परंपराओं के क्रम को नष्ट करने का प्रयास किया है, इसलिए आयतें तुम्हारे बारे में शिकायत करेंगी और वाक्पटुता का न्यायाधीश तुम्हारी सनक को तुम्हारी कल्पना में कैद कर देगा। कोई भी सत्य की खोज करने वाला ग्राहक तुम्हारा नकली माल नहीं खरीदेगा। वे तुमसे कहेंगे, 'यह सच नहीं है।

"एक श्लोक का अर्थ मोती है, लेकिन आप जो अर्थ प्रस्तुत करते हैं वह एक कंकड़ है। परंपरा का अर्थ आत्मा की तरह जीवन उत्पन्न करता है, लेकिन आपका अर्थ बहुत साधारण है!"

स्पष्टीकरण हेतु एक उदाहरण

कुर्दों में यह वर्णित है: शहद चुराने वाले एक व्यक्ति को चेतावनी दी गई कि उसकी चोरी पकड़ी जाएगी। इस पर, उसने एक छत्ते को उन मधुमक्खियों से भर दिया जो शहद नहीं देती थीं, और उसमें दूसरे छत्तों से चुराया हुआ शहद जमा कर दिया। जब उससे शहद के बारे में पूछा गया, तो उसने कहा, "यह मेरी मधुमक्खियों द्वारा उत्पादित शहद है," और उसने अपनी मधुमक्खियों से कहा, "तुम भिनभिनाओ और मैं शहद प्रदान करूंगा।"

ऐ क़ुरआन की मनचाही व्याख्या करने वाले! चोरी के इस उदाहरण से खुद को सांत्वना मत दो, इस बहाने से कि तुम अकेले चोरी करने वाले नहीं हो। इसके अलावा, तुम क़ुरआन की आयतों का जो अर्थ लगाते हो, वह शहद नहीं, ज़हर है। तुम जिन शब्दों की व्याख्या करने की कोशिश करते हो, वे उस पूर्ण पुस्तक के शब्द हैं, जो हृदय और विवेक में सत्य की आत्माओं को प्रेरित करती है। वे शब्द फ़रिश्तों की तरह हैं। जहाँ तक पैग़म्बरी परंपराओं का सवाल है, वे सत्य की खान हैं और सत्य को प्रेरित करती हैं।

संक्षेप में, जिस तरह एक अति पर जाना हानिकारक है, उसी तरह विपरीत अति पर जाना भी हानिकारक है; वास्तव में, यह और भी अधिक हानिकारक है। हालाँकि, एक अति पर जाना अधिक दोष है, क्योंकि इससे दूसरे लोग विपरीत अति पर चले जाते हैं। ऐसी अति ने किसी भी व्याख्या के लिए सहिष्णुता का द्वार खोल दिया है, और गलत चीजें शानदार कुरान की सच्चाइयों के साथ मिल गई हैं। इसने कुछ अनुचित आलोचकों और अति पर जाने वाले लोगों को कुरान और पैगंबर की परंपरा पर कुछ भ्रांतियों को शामिल करने का आरोप लगाने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने इस्लाम के इन दो अमूल्य स्रोतों और सच्चाई के वास्तविक स्रोतों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है। अगर कुछ नकली सिक्के कीमती सिक्कों के खजाने में मिल गए हैं, या कुछ सड़े हुए सेब किसी पड़ोसी के बगीचे में गिर गए हैं, तो क्या यह दावा करना उचित या न्यायसंगत है कि पूरा खजाना नकली सिक्कों का है या यह कि बगीचे में केवल सड़े हुए सेब हैं और इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया जाए?

निष्कर्ष

मैं इस आधार से यह निष्कर्ष निकालना चाहूँगा कि: आम राय कुरान की एक नई व्याख्या की मांग करती है। प्रत्येक युग की अपनी विशेषताएं होती हैं।

इसकी अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं और इसलिए इसकी अपनी आवश्यकताएं और मांगें हैं।
समय अपनी व्याख्या जोड़ता है, और नई घटनाएं और विकास कई नए अर्थों की खोज का कारण बनते हैं। अब जो प्रचलित है वह वैज्ञानिक जनमत है। इसलिए, मैं घोषणा करता हूं कि "वैज्ञानिकों की संसद" बुलाई जानी चाहिए जिसमें प्राकृतिक और धार्मिक विज्ञान के विशेषज्ञ शामिल हों।

इस संसद को कुरान की एक नई व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए, तथा शास्त्रीय व्याख्याओं का संदर्भ देना भी नहीं भूलना चाहिए।
उन्हें इनमें स्वीकार्य तत्वों पर काम करना चाहिए, उन्हें गहरा और विकसित करना चाहिए। हम एक संवैधानिक शासन के तहत रह रहे हैं, इसलिए हमें हर मामले में परामर्श के सिद्धांत का पालन करना चाहिए। जनता की राय एक पर्यवेक्षक है। किसी मामले पर विद्वानों की आम सहमति इस्लाम में कानून का स्रोत है। इस प्रकार, यह सिद्धांत मेरी थीसिस की पुष्टि करता है।

चौथा आधार

प्रसिद्धि किसी को ऐसी चीज़ प्रदान करती है जो उसकी अपनी नहीं होती।

यह मानवता की विशेषता है कि किसी ऐसी चीज़ को दिखाने के लिए जिसे महान या मूल्यवान नहीं माना जाता है, उसे ऐसे व्यक्ति के नाम से जाना जाता है जो ऐसी ही चीज़ों के लिए प्रसिद्ध है। दूसरे शब्दों में, किसी भी शब्द, कार्य या व्यवहार को उचित ठहराने या कम से कम बदनाम न करने के लिए, लोग उन्हें किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से जोड़ देते हैं। वे उस एक व्यक्ति को पूरे राष्ट्र से संबंधित कोई अच्छी चीज़ भी बता देते हैं। हालाँकि, वह व्यक्ति उस उपहार को अस्वीकार कर देगा जो गलत तरीके से उसके नाम से जोड़ा गया है। क्योंकि अगर कोई कलाकार जो किसी कला या किसी विशेष कौशल के लिए प्रसिद्ध है और जो दिखने वाली सुंदरता से परे देखने में सक्षम है, उसे कोई ऐसी चीज़ दिखाई जाए जिसमें कोई कलात्मक सुंदरता न हो और उसे बताया जाए कि यह उसका है - एक ऐसा कार्य जिसका अर्थ है दूसरों की नज़र में उस व्यक्ति को गलत ठहराना - तो वह इसे तिरस्कार के साथ अस्वीकार कर देगा। फिर भी, इस नियम के अनुसार कि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए उसके सभी भागों का अस्तित्व होना आवश्यक है, छवि के लिए बहाना खोजने के लिए, लोग उस कलाकृति को उस व्यक्ति के नाम से जोड़ने की कोशिश करते हैं ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि उस व्यक्ति के पास वास्तव में वह सब कुछ है जो उसके नाम से जोड़ा गया है; लोग इस व्यक्ति को असाधारण महानता, शक्ति और बुद्धिमत्ता जैसी असाधारण क्षमताएँ भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार यह व्यक्ति लोगों के मन में एक अलौकिक रूप धारण कर लेता है। यदि आप एक उदाहरण चाहते हैं, तो ज़ालोग्लू रुस्तम[11] की छवि देखें

[11] ज़ालोग्लू रुस्तम एक ईरानी पौराणिक नायक है जिसे रोमन हरक्यूलिस या ग्रीक हेराक्लीज़ के समकक्ष के रूप में देखा जा सकता है। (अनुवाद)

ईरानियों के मन में। चूँकि वह अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्ध था, इसलिए उसके व्यक्तित्व को सभी अनुपातों से बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है; ईरानियों के लिए गर्व की बात है कि लगभग हर चीज को उसके नाम पर थोप दिया गया है। जैसा कि एक झूठ आम तौर पर दूसरे झूठ की ओर ले जाता है, ऐसी महान बहादुरी खुद को अन्य असाधारण प्रशंसनीय उपलब्धियों, एक बहुत ही उच्च, सराहनीय कद और कई अन्य प्रशंसनीय विशेषताओं से भरा जीवन प्रदान करती है। कल्पना की आग के सामने दीवार पर एक भव्य छवि के रूप में प्रतिबिंबित, जिसमें इसे खिलाया गया था, छवि कहती है, "मैं एक व्यक्ति हूं जो मेरे सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करता है; मैं एक व्यक्ति के रूप में प्रकट होने वाले पूरे लोग भी हूं।" इस तरह का दृष्टिकोण अपने आप में कई किंवदंतियों को जोड़ता है और लोगों के बीच प्रसारित होता है, छवि एक राक्षस की तरह अजीब होती जाती है।

ऐसी कहानियों के कारण अन्य कहानियाँ भी सामने आती हैं।

हे तुम जो इस वास्तविकता को उसकी पूरी स्पष्टता में देखना चाहते हो! इस आधार पर ध्यान दो, क्योंकि यहाँ बताई गई वास्तविकता से झूठी मान्यताओं का द्वार खुल जाता है, जबकि सत्यापन का द्वार इसके द्वारा बंद हो जाता है। साथ ही, धर्म के मूल तत्वों के आधार पर नई चीजों का आविष्कार करने और नए विचार विकसित करने का साहस, जैसा कि शुरुआती समय के विद्वानों के शास्त्रीय कार्यों में दर्ज है, इस बंजर भूमि में खो जाता है। अगर आप चाहें तो मोल्ला नसरुद्दीन इफेंडी से पूछें,12

"क्या वे सभी हास्यपूर्ण किस्से और कहावतें जो आपके बारे में कही जाती हैं, वास्तव में आपकी हैं?" वह उत्तर देगा, "वे सभी किस्से और कहावतें बहुत बड़ी हैं। उन सभी को कहने और अनुभव करने में बहुत लंबा जीवन लग जाएगा।

इसके अलावा, मैंने जो कुछ भी कहा और किया है, वह हास्यप्रद और बुद्धिमानीपूर्ण नहीं है। यदि आप इसका चालीसवाँ हिस्सा मुझे दे दें, तो यह पर्याप्त होगा। मुझे बाकी नहीं चाहिए, क्योंकि बाकी मेरी स्वाभाविक और उचित सूक्ष्मता को कृत्रिम में बदल देता है।”

इस प्रकार, इस जड़ से अनेक मिथ्या विश्वास और मिथक खरपतवार की तरह उगते हैं और सत्य की शक्ति को दबाना।

निष्कर्ष

किसी भी चीज़ या व्यक्ति को ईश्वर द्वारा बताए गए से ज़्यादा अच्छा बताना सकारात्मक कदम नहीं है, न ही इसका मतलब यह है कि आपने उनके लिए कोई अच्छा काम किया है। झूठी कल्पनाओं की भरमार से सच्चाई का एक दाना बेहतर है। हमें किसी चीज़ या व्यक्ति को परिभाषित करने से संतुष्ट होना चाहिए

12 मोल्ला नसरुद्दीन या नसरुद्दीन खोदजा तेरहवीं सदी के एक मुस्लिम धार्मिक व्यक्ति थे, जो अपनी बुद्धिमत्ता, महान बुद्धिमता, मजेदार कहानियों और उपाख्यानों के लिए प्रसिद्ध और याद किए जाते थे।
(अनुवाद)

ईश्वर ने उन्हें जो अच्छाई दी है और जो सद्गुण उनमें हैं।

किसी भी ऐसी चीज़ को जो समुदाय में प्रवेश करती है, उसे समुदाय की व्यवस्था को नष्ट नहीं करना चाहिए। किसी चीज़ का सम्मान उसके वंश में नहीं, बल्कि खुद में निहित होता है। फल जड़ों की प्रकृति और गुणवत्ता को प्रदर्शित करते हैं। कोई भी उत्पाद, चाहे वह कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, किसी और के उत्पाद में मिलाने से आमतौर पर बाद वाले के मूल्य को नुकसान पहुँचता है, और यहाँ तक कि उसे जब्त भी किया जा सकता है।

इन सभी मानदंडों के आधार पर, मैं कहता हूँ: लोगों को धार्मिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने या उन्हें निषिद्ध चीजों में लिप्त होने से हतोत्साहित करने के लिए 'अब्दुल्ला इब्न अब्बास13 जैसे प्रतिष्ठित साथियों पर कुछ मनगढ़ंत परंपराओं का आरोप लगाना सरासर अज्ञानता और एक बड़ी गलती है। सत्य इतना "समृद्ध" है कि उसे ऐसे आरोपों की आवश्यकता नहीं है, और इसका प्रकाश दिलों को रोशन करने के लिए पर्याप्त है। कुरान की व्याख्या करने के लिए प्रामाणिक परंपराएँ हमारे लिए पर्याप्त हैं, और हम तर्क के तराजू पर तौले गए सटीक आख्यानों से संतुष्ट हैं।

पांचवां आधार

ज्ञान के हाथों से अज्ञान के हाथों में जाते समय, एक रूपक अभिव्यक्ति शाब्दिक वर्णन में बदल सकती है और अंधविश्वास का द्वार खोल सकती है। इस प्रकार, जब भी अज्ञान का काला हाथ ज्ञान के उज्ज्वल हाथ से एक रूपक या उपमा को हड़प लेता है, तो उसे वास्तविकता के रूप में लिया जा सकता है। साथ ही, जब भी कोई रूपक या उपमा लंबे समय तक जीवित रहती है, तो वह अपनी ताजगी और स्वाद खो देती है। जिस तरह एक सुंदर युवा समय बीतने के साथ बूढ़ा और बदसूरत हो सकता है, उसी तरह एक रूपक या उपमा, जो कभी ताजे पीने के पानी का स्रोत था, समय बीतने के साथ एक भ्रामक मृगतृष्णा बन सकता है।

रूपक की पारदर्शिता सत्य की झलक दिखाती है। लेकिन अगर रूपक को वास्तविकता के रूप में लिया जाए, तो वह सघन हो जाता है और उस सत्य को छिपा देता है जिसे वह प्रदर्शित करना चाहता है। दरअसल, यह परिवर्तन कुछ ऐसा है जो पूरे इतिहास में होता रहा है और इसलिए इसे स्वाभाविक माना जा सकता है। विचार करें कि समय के साथ एक भाषा कैसे बदलती है। चूँकि कई शब्द, अभिव्यक्तियाँ, कथाएँ और अर्थ जो पिछली पीढ़ियों की समझ के लिए थे, धीरे-धीरे पुराने हो गए हैं और अपनी सुंदरता खो चुके हैं-

---

[१३] अब्दुल्ला इब्न अब्बास (619 687) पैगम्बर मुहम्मद के चचेरे भाई थे, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। वे कुरान की व्याख्या में असाधारण रूप से पारंगत थे, साथ ही पैगंबर के सुन्ना और इस्लामी न्यायशास्त्र के विशेषज्ञ भी थे। (अनुवाद)

आकर्षण और आकर्षण के कारण, नई पीढ़ियाँ, जो उन्हें अपनी भूख और स्वाद के अनुकूल नहीं मानतीं, उनमें परिवर्तन करने या उनकी जगह नए गढ़ने का साहस कर लेती हैं। यह केवल भाषा में ही नहीं, बल्कि छवियों, अर्थों और कथाओं में भी होता है। इससे हमें सीख मिलती है कि हमें हर चीज़ का उसके स्वरूप के आधार पर आकलन नहीं करना चाहिए। सत्य की खोज करने वाले को गोताखोर की तरह होना चाहिए, जो समय के प्रभाव से मुक्त हो, अतीत की गहराइयों में गोता लगाने में सक्षम हो, विचारों को तर्क की तराजू पर तौल सके और हर चीज़ के स्रोत की खोज कर सके। मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाने वाली निम्नलिखित घटना है: बचपन में एक बार चंद्रग्रहण हुआ था। मैंने अपनी माँ से इसके बारे में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि एक साँप ने चाँद को निगल लिया था। मैंने पूछा कि मैं तब भी इसे क्यों देख सकता था। उन्होंने समझाया, "आसमान के साँप अर्ध-पारदर्शी होते हैं।"

देखिए कि कैसे एक उपमा को वास्तविकता के रूप में लिया जाता है, जो सच्चाई को छुपाती है। प्राचीन खगोलविदों के लिए "साँप" शब्द का अर्थ एक अस्पष्ट आकृति से था जो चंद्र ग्रहण के दौरान कुछ हद तक साँप जैसा दिखता था। समय के साथ आम लोगों ने विज्ञान के इस शब्द को, एक उपमा को वास्तविकता का वर्णन करने के लिए लिया, और सोचा कि वास्तव में आकाश में एक साँप था जो कभी-कभी चाँद को निगल जाता था!

हे तुम जो मेरे इन उलझे हुए शब्दों से थके नहीं हो! इस आधार पर ध्यान दो! इसे सूक्ष्मदर्शी से देखो। क्योंकि यह कई अंधविश्वासों और झूठी मान्यताओं का स्रोत है। इसलिए, हमें तर्क और बयानबाजी या भाषा विज्ञान के विज्ञान को एक मार्गदर्शक के रूप में अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष

सच्चे अर्थ में सत्य की छाप होती है। धार्मिक मामलों में यह छाप शरिया के उद्देश्यों के भीतर निहित सटीक संतुलन द्वारा निर्मित शुद्ध सुंदरता से बनी होती है। रूपकों का उपयोग करना जायज़ है बशर्ते वे बयानबाजी और भाषा विज्ञान के नियमों के अनुरूप हों। अन्यथा, यह जोखिम है कि हम रूपक को वास्तविकता के रूप में व्याख्यायित या उपयोग करेंगे या इसके विपरीत। यह अज्ञानता की दमनकारी शक्ति को बढ़ाता है। हर चीज़ को रूपक के रूप में मानकर चरम सीमा पर जाना और शब्दों के गूढ़ आयाम में सत्य की तलाश करना और हर आयत की गूढ़ व्याख्या करना, यहाँ तक कि गूढ़वाद के एक स्कूल को जन्म देना, हानिकारक है। दूसरी ओर, गूढ़ व्याख्या करके विपरीत चरम सीमा पर जाना और शब्दों के केवल शाब्दिक अर्थ में सत्य की तलाश करना भी हानिकारक है।

हानिकारक। मध्यम, सुरक्षित रास्ता, जो अति पर जाने से रोकता है, वह शरिया की भावना है, यानी बयानबाजी, तर्क या तर्क, और बुद्धि।

बुद्धि (जो कुरान के पैगंबरी अभ्यास पर आधारित है और इसमें एक तर्कसंगत दृष्टिकोण भी शामिल है) शुद्ध अच्छाई है। तर्कसंगत मानवीय दृष्टिकोण में कुछ गलतियाँ हो सकती हैं, लेकिन यह बुद्धि में निहित महान अच्छाई से बहुत अधिक अलग नहीं होती है। यह कई लोगों द्वारा पुष्टि की गई एक आवश्यक कहावत है कि किसी ऐसी चीज़ को छोड़ना जिसमें बुराई से अधिक अच्छाई हो, उससे भी बड़ी बुराई करना है। चूँकि अतीत में दर्शन अज्ञानता, अंधानुकरण और मन की संकीर्ण क्षमता के कारण अंधविश्वास से प्रदूषित था, इसलिए पिछली पीढ़ियों के विद्वानों ने आग्रह किया कि दर्शन से बचा जाना चाहिए। हालाँकि, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर आधारित रिपोर्ट किए गए ज्ञान से प्रेरित और निहित दर्शन, और जो वैज्ञानिक विकास को भी ध्यान में रखता है, निश्चित रूप से बुराई की तुलना में अधिक अच्छाई लाएगा।

छठा आधार

कुरान की व्याख्या वाली किसी पुस्तक में जो कुछ भी है, वह आवश्यक रूप से कुरान के अर्थ में शामिल नहीं है, न ही स्वयं कुरान की व्याख्या में।

ज्ञान अधिक से अधिक ज्ञान को सक्षम और सशक्त बनाता है। किसी को भी अपनी राय दूसरों पर नहीं थोपनी चाहिए। यह स्वयंसिद्ध वास्तविकताओं में से एक है कि जो व्यक्ति इंजीनियरिंग जैसे विषय में विशेषज्ञ है, वह चिकित्सा जैसे किसी अन्य विषय में बिल्कुल अनभिज्ञ हो सकता है। इस्लामी न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की कार्यप्रणाली का यह स्थापित सिद्धांत है कि जो व्यक्ति प्रशिक्षित और योग्य फ़क़ीह-एक विधिवेत्ता, इस्लामी कानून का विशेषज्ञ-नहीं है, भले ही वह फ़िक़्ह की कार्यप्रणाली का विशेषज्ञ क्यों न हो, उसे फ़क़ीहों में नहीं गिना जाता । ऐसा व्यक्ति फ़क़ीहों के संबंध में केवल एक साधारण व्यक्ति है।

यह जीवन की सच्चाई है कि एक व्यक्ति कई विषयों में पारंगत नहीं हो सकता। असाधारण क्षमता वाला व्यक्ति विज्ञान की अधिकतम चार या पाँच शाखाओं में पारंगत हो सकता है। सब कुछ प्राप्त करने का प्रयास करने का अर्थ है सब कुछ त्याग देना। प्रत्येक विषय-वस्तु और विमर्श की अपनी प्रकृति और रूप होता है, और उसमें विशेषज्ञता का अर्थ है उस विज्ञान की प्रकृति और रूप का मूर्त रूप होना। यदि किसी एक शाखा के विशेषज्ञ अपने अतिरिक्त सामान्य ज्ञान का उपयोग अपने विशेषज्ञता के क्षेत्र को समृद्ध करने के लिए पूरक के रूप में नहीं करते हैं, तो उनके ज्ञान से जो उभर कर आएगा वह विश्वसनीय नहीं होगा, और वास्तव में हास्यास्पद हो सकता है।

स्पष्टीकरण के लिए एक काल्पनिक उदाहरण

मान लीजिए कि कोई चित्रकार है जो किसी दूसरी दुनिया से आया है। उसने इस दुनिया में कभी भी पूरा इंसान या कोई और प्राणी नहीं देखा है; उसने हर प्राणी के सिर्फ़ कुछ हिस्से ही देखे हैं। वह किसी इंसान या किसी दूसरे प्राणी का पूरा चित्र बनाना चाहता है। अगर वह किसी एक हाथ, एक पैर, एक आँख, एक कान या सिर्फ़ एक तरफ़ के चेहरे, नाक या पगड़ी से इंसान का चित्र बनाए या फिर अगर वह घोड़े की दुम, ऊँट की गर्दन, इंसान का चेहरा और शेर का सिर वाला कोई जानवर बनाने की कोशिश करे, तो लोग उसका मज़ाक उड़ाएँगे और कहेंगे, "ऐसा प्राणी हमारी दुनिया में रह ही नहीं सकता।"

यह बात विज्ञान की सभी शाखाओं के लिए सत्य है; इसलिए हमें एक शाखा में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए और अपने सामान्य ज्ञान को एक ऐसे भंडार की तरह बनाना चाहिए जिससे हम उस शाखा के अध्ययन में सहायता कर सकें। यह भी एक वास्तविकता है कि एक ही काम में विभिन्न प्रकार और विभिन्न विषयों पर ज्ञान पाया जा सकता है। क्योंकि विज्ञान एक दूसरे की सहायता करते हैं और एक ऐसा जटिल नेटवर्क बनाते हैं कि काम के मुख्य विषय से संबंधित प्रश्न कभी-कभी उसमें चर्चा किए गए अन्य प्रश्नों से कम महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इस वास्तविकता से अनजान, जब कोई जनवादी, या जिसकी समझ कुरान के शब्दों के शाब्दिक अर्थ तक सीमित और संतुष्ट है, शरिया या कुरान की व्याख्या की किसी पुस्तक में संदर्भित किसी मामले को देखता है, तो वह टिप्पणी कर सकता है, "शरिया या कुरान ऐसा कहता है।" यदि वह व्यक्ति इस्लाम का मित्र है, तो वह निष्कर्ष निकाल सकता है, "जो इसे स्वीकार नहीं करता वह मुसलमान नहीं हो सकता।" यदि कोई दुश्मन है, तो वह कह सकता है (भगवान न करे!), "शरिया या कुरान गलत है।"

ऐ एक अति से दूसरी अति पर जाने वालों, क़ुरआन और शरिया का अर्थ उनके बारे में लिखी गई किताबों से एक जैसा नहीं है। किताब एक दुकान की तरह है; चाहे वह आभूषण की दुकान ही क्यों न हो, उसमें मूल्यवान चीज़ों के साथ-साथ कुछ बेकार चीज़ें भी हो सकती हैं। जिस तरह हम एक घर के निर्माण के लिए ज़रूरी सामग्री एक ही निर्माता से नहीं खरीद सकते, बल्कि हमें कई अलग-अलग सामान बनाने वालों और अलग-अलग निर्माण व्यवसायों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कई अलग-अलग औज़ारों के लिए आवेदन करना पड़ता है, उसी तरह हमें क़ुरआन के अर्थ पर विचार करते समय उचित तरीके से काम करने की उम्मीद करनी चाहिए, जो कि पूर्णता का महल है। अगर आपकी घड़ी टूट गई है और आप उसे ठीक करवाने के लिए दर्जी के पास जाते हैं, तो परिणाम क्या होगा?

एक संकेत

यह आधार इस तथ्य पर आधारित है कि ईश्वर ने पूर्णता की ओर विकास का नियम स्थापित किया है, जो सृष्टि और ब्रह्मांड के जीवन दोनों पर लागू होता है। जब इस नियम का पालन किया जाता है तो वह श्रम विभाजन से प्रसन्न होता है। श्रम विभाजन के इस सिद्धांत के अनुपालन में कार्य करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है; फिर भी हमने इसका पूरी तरह से पालन नहीं किया है।

यह इस प्रकार है:

ईश्वरीय ज्ञान, जो श्रम के विभाजन की मांग करता है, ने मानव स्वभाव में विभिन्न योग्यताएं और प्रवृत्तियां बोई हैं, तथा मानव को विज्ञान की स्थापना और प्रौद्योगिकी के विकास का कर्तव्य निभाने के लिए सक्षम बनाया है। इस कर्तव्य का पालन करना पूरी मानवता पर अनिवार्य है, यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति पर नहीं। लेकिन, मुसलमानों के रूप में, हमने इन योग्यताओं और प्रवृत्तियों का दुरुपयोग किया है, तथा उस उत्साह को कम किया है जो अनुचित, विनाशकारी महत्वाकांक्षाओं और दूसरों से श्रेष्ठ होने की इच्छा के साथ हमारी प्रवृत्तियों को बल प्रदान करता है, जो दिखावे का स्रोत है।

जाहिर है, जो विद्रोह करता है, वह नरक की आग का हकदार है। इसलिए, चूंकि हमने सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के दिव्य नियमों का पालन नहीं किया है, इसलिए हम दंड के रूप में अज्ञानता की नरक की आग भोग रहे हैं। हमें इस पीड़ा से बचाने वाला श्रम विभाजन के नियम का पालन करना है। हमसे पहले की पीढ़ियों ने इसका पालन किया और बाद में ज्ञान के स्वर्ग तक पहुँचे।

निष्कर्ष

किसी गैर-मुस्लिम के लिए मुसलमान बनने के लिए सिर्फ़ मस्जिद में प्रवेश करना ही काफ़ी नहीं है। इसी तरह, सिर्फ़ शरिया की किताबों या कुरान की व्याख्याओं में शामिल होने से, प्राकृतिक विज्ञान या दर्शन, भूगोल, इतिहास आदि से जुड़े मामलों को शरिया या कुरान के मामलों में शामिल नहीं माना जा सकता। साथ ही, सिर्फ़ तभी जब वे अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ हों, कुरान के व्याख्याकार या न्यायविद क्रमशः कुरान या न्यायशास्त्र की व्याख्या में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। इन विज्ञानों की किताबों में कोष्ठक में शामिल मामलों पर उनकी राय को निर्णायक सबूत या फ़ैसला नहीं माना जाना चाहिए। इसके अलावा, वे उधार भी हो सकते हैं। अब, जो लोग उधार लेते हैं, उन्हें इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। लेकिन किसी विज्ञान के बारे में निर्णायक साक्ष्य या निर्णय बनाने के लिए अन्य विज्ञानों के स्रोतों से रिपोर्ट या उधार पर निर्भर रहना, सिर्फ इसलिए कि वे अन्य विज्ञानों के विशेषज्ञों से लिए गए हैं, इसका मतलब है ईश्वर से असहमति जताना।

श्रम विभाजन का नियम, प्रत्येक व्यक्ति को वह कार्य सौंपने का नियम जिसके लिए वह पात्र है या जिसमें वह विशेषज्ञ है।

इसके अलावा, तर्कशास्त्र में यह एक सिद्धांत है कि किसी पाठ से निष्कर्ष उस पाठ के मुख्य विषय और उसके अंतर्निहित अर्थ के बीच के संबंध पर आधारित होता है। पाठ के आगे के अध्ययन और अतिरिक्त स्पष्टीकरण जरूरी नहीं कि उस विज्ञान पर आधारित हों या उससे उत्पन्न हों जो पाठ को जन्म देता है। वे अन्य विज्ञानों से संबंधित हो सकते हैं जिनके साथ पाठ का कुछ संबंध है।

यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि एक सामान्य अर्थ को व्यक्त करने के लिए नियोजित एक अभिव्यक्ति जरूरी नहीं कि उस सामान्य अर्थ से संबंधित किसी विशेष अर्थ के लिए तर्क या प्रमाण का गठन करे या उससे संकेतित हो या उसकी आवश्यकता हो।14 उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध व्याख्याकार कादी बैदावी15 का मानना है कि आयत में वर्णित खड़ी पहाड़ियाँ—[ज़ुल-क़रनैन ने कहा:] “मेरे लिए लोहे के टुकड़े लाओ।” फिर, जब उसने दो खड़ी पहाड़ियों के बीच की जगह को भर दिया, तो उसने कहा: “[आग जलाओ और] अपनी धौंकनी चलाओ!” अंततः, जब उसने इसे [आग की तरह लाल] बना दिया, तो उसने कहा: “मेरे लिए पिघला हुआ तांबा लाओ ताकि मैं इस पर डालूँ” (18:96)—आर्मेनिया और अज़रबैजान के पहाड़ हैं। एक महान व्याख्याकार के इस मत को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार करना अनुचित और अतार्किक होगा इसलिए, बैदावी के पढ़ने को कुरान के अर्थ के अंतर्गत नहीं माना जा सकता। लेकिन इस पढ़ने के कारण इस प्रख्यात व्याख्याकार की आलोचना करना या कुरान की व्याख्या के विज्ञान में उनके गहन ज्ञान और समझ पर संदेह करना भी अन्याय होगा। इसे एक विशेषज्ञ की राय के रूप में स्वीकार करना चाहिए लेकिन यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अन्य राय भी संभव हैं।

---

14 एक अभिव्यक्ति तीन तरीकों से अर्थ व्यक्त कर सकती है: 1. यह वही अर्थ दे सकती है जो यह कहती है। 2. यह एक द्वितीयक अर्थ दे सकती है या उसका संकेत दे सकती है। 3. यह (सीधे या परोक्ष रूप से) निहितार्थ द्वारा एक और अर्थ की मांग कर सकती है। उदाहरण के लिए, वाक्य, "ज़कात गरीब मुसलमानों को दी जाती है," जिसका अर्थ यह है कि यह हमें बताता है कि ज़कात उन मुसलमानों को दी जाती है जो गरीब हैं।
इसका दूसरा मतलब यह है कि ज़कात उन मुसलमानों को नहीं दी जाती जो अमीर हैं। इसका यह भी मतलब निकाला जा सकता है कि जो गरीब नहीं है और मुसलमान नहीं है, उसे ज़कात नहीं दी जा सकती। (अनुवाद)

15 नासिर अल-दीन अबुल-ख़ैर अब्दुल्ला इब्न उमर अल-बैदावी (मृत्यु 1286) कुरान के सबसे महान टीकाकारों में से एक हैं। उन्होंने कुरान की व्याख्या, न्यायशास्त्र, कानून और धर्मशास्त्र सहित कई विषयों पर कई रचनाएँ लिखी हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना कुरान पर उनकी टिप्पणी है, अनवरुत-तंज़िल वा असरारुतु-त'विल ("दिव्य रहस्योद्घाटन की रोशनी और इसके अर्थ के रहस्य")। (अनुवाद)

कुरान और शरिया में मूल सत्य स्पष्ट हैं। वे सितारों की तरह चमकते हैं। उन सत्यों में जो स्पष्टता और शक्ति है, वह मेरे जैसे अयोग्य व्यक्ति को यह कहने के लिए प्रोत्साहित करती है कि कुरान और शरिया का हर सत्य एक निर्णायक वास्तविकता पर आधारित है और उसका परिणाम है, और यह ज्ञान के तराजू पर तौला जाता है।

सातवां आधार

अतिशयोक्ति अव्यवस्था का कारण बनती है। यानी, यह मनुष्यों की विशेषता है कि चूँकि वे किसी चीज़ से मिलने वाले आनंद को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, जो वे वर्णन कर रहे हैं उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं और अपने आख्यानों में अतिशयोक्ति का उपयोग करते हैं, इसलिए वे वास्तविकता को कल्पना के साथ मिला देते हैं। भले ही कोई अच्छा करने का इरादा रखता हो, लेकिन इस तरह से कार्य करना वास्तव में एक बुरा या हानिकारक काम करना है। जिसे वे सुधार कहते हैं वह विकृति बन जाता है, और जिसे वे अच्छा और प्रशंसनीय मानते हैं वह वास्तव में बुरा और अपमानजनक होता है। ऐसा व्यवहार अनजाने में संतुलन और अनुपात से उत्पन्न होने वाली सुंदरता को नष्ट कर देता है। जिस प्रकार, केवल इसलिए कि दवा का स्वाद अच्छा लगता है या अच्छा महसूस होता है, आवश्यकता से अधिक खुराक लेने से कोई लाभदायक चीज़ हानिकारक हो जाती है, उसी प्रकार, प्रोत्साहित करने या हतोत्साहित करने के लिए बढ़ा-चढ़ाकर बात करना, इस तथ्य के बावजूद कि सत्य के लिए इसकी आवश्यकता नहीं है - उदाहरण के लिए, किसी की चुगली करना हत्या के समान पाप है, या खड़े होकर पेशाब करना अवैध यौन संबंध के समान बड़ा पाप है, या कुछ डॉलर के दान को तीर्थ यात्रा करने के समान पुण्य मानना, वास्तव में इसका अर्थ है कि हत्या और अवैध यौन संबंध के अपराधों ने अपनी कुछ मान्यता खो दी है।

उनकी गंभीरता और तीर्थयात्रा का ह्रास हुआ है। इस कारण से, एक उपदेशक को बुद्धिमान और विवेकशील होना चाहिए और तर्कसंगतता का प्रयोग करना चाहिए। इन गुणों से रहित उपदेशकों ने कई धार्मिक सत्यों को कलंकित किया है। उदाहरण के लिए, पैगम्बर के चाँद को विभाजित करने के चमत्कार के बारे में अतिरिक्त रिपोर्ट[16] कि चाँद का एक हिस्सा उनकी जेब में उतरा, केवल इस चमकदार चमत्कार को काला कर देती है, जो साबित करने में सूर्य की तरह उज्ज्वल है

[16] पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने मक्का में उनके पैगंबर होने को अस्वीकार करने वाले लोगों के समूह के सामने अपनी तर्जनी उंगली के इशारे से चाँद को विभाजित किया। यह सबसे प्रामाणिक हदीस स्रोतों जैसे कि सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लिम और सुनन अत-तिर्मिधि द्वारा संबंधित है। आयतें, अंतिम घड़ी निकट आ गई है, और चाँद विभाजित हो गया है। जब भी वे कोई चमत्कार देखते हैं, तो वे घृणा से उससे दूर हो जाते हैं और कहते हैं: "यह एक के बाद एक कई अन्य जादू की तरह है।" (54:1 2) इस चमत्कार का संदर्भ लें। इस चमत्कार के बारे में चर्चा के लिए, देखें, अली उनाल, द कुरान विद एनोटेटेड इंटरप्रिटेशन इन मॉडर्न इंग्लिश, द लाइट, न्यू जर्सी, 2008, पृष्ठ 1082 1083। (अनुवाद)

संक्षेप में, जो कोई भी धर्म और सत्य से प्रेम करता है, उसे हर चीज़ के मूल मूल्य और अनुपात से संतुष्ट रहना चाहिए और अतिशयोक्ति करके उससे आगे नहीं बढ़ना चाहिए। इस तरह की अतिशयोक्ति का अर्थ है ईश्वरीय शक्ति की निंदा करना और सृष्टि में मौजूद सुंदरता और पूर्णता से असंतुष्ट होना; इस तरह के व्यवहार के कारण इमाम अल-ग़ज़ाली17 ने कहा, "यह संभव नहीं है कि वर्तमान ब्रह्मांड से अधिक सुंदर कोई ब्रह्मांड हो सकता है।"

हे मेरे पाठकों! दृष्टान्त या तुलना कभी-कभी प्रमाण के समान ही काम आती है। यदि ऐसा है, तो सुनिए! जिस प्रकार हीरा, सोना, चाँदी, सीसा और लोहा आदि धातुओं में से प्रत्येक का अपना मूल्य और विशेषता होती है तथा प्रत्येक धातु दूसरे से भिन्न होती है, उसी प्रकार धर्म के मूल उद्देश्य भी मूल्य या प्रमाण की आवश्यकता के मामले में एक दूसरे से भिन्न हैं। उनमें से एक मन में अपना स्थान पाता है, दूसरा अंतःकरण में, तथा तीसरा मनुष्य की अंतरतम क्षमताओं में बसता है। जो व्यक्ति दस सेंट की वस्तु के लिए हीरा या सोने का टुकड़ा देता है, उसे मूर्ख और अपव्ययी समझा जाता है और व्यापार से प्रतिबंधित कर दिया जाता है। यदि यह कोई औपचारिक कानूनी निर्णय न भी हो, तो भी ऐसे व्यक्ति को बुद्धिमान व्यापारी के रूप में सम्मान दिए जाने के बजाय धिक्कारा जाता है और मूर्ख स्वप्नदर्शी माना जाता है। इसी तरह, जो लोग धार्मिक सत्यों में अंतर नहीं कर सकते या प्रत्येक को उसका मूल्य और अनुपात नहीं दे सकते, और जो उसके सभी नियमों और आदेशों पर शरिया की छाप को नहीं पहचान सकते, जो उस शानदार, स्वर्गीय कारखाने में हर हिस्से की गति को बाधित करते हैं, वे उस भोले-भाले व्यक्ति के समान हैं जो एक विशाल, अद्भुत रूप से सुव्यवस्थित कारखाने में जाता है और वहां एक छोटा सा पहिया देखता है। उसके सतही दृष्टिकोण से यह छोटा पहिया बड़े पहियों के साथ तालमेल में नहीं लगता; यह संभवतः उतना महत्वपूर्ण या महत्वपूर्ण नहीं हो सकता। उसे न केवल यांत्रिक इंजीनियरिंग का कोई ज्ञान नहीं है, बल्कि वह बहुत अभिमानी भी है। अपने सतही दृष्टिकोण के अनुसार, कारखाने के कामकाज को बेहतर बनाने के लिए, वह उस छोटे पहिये को कुछ अधिक प्रभावशाली चीज़ से बदल देता है। लेकिन

---

17 इमाम अल-ग़ज़ाली, अबू हामिद मुहम्मद (मृत्यु 1111): एक प्रमुख धर्मशास्त्री, विधिवेत्ता और ऋषि जिन्हें अपने समय में (धार्मिक विज्ञान और इस्लाम की पवित्रता और जीवन शक्ति के) पुनरुत्थानकर्ता माना जाता था। यूरोप में अल्गाज़ेल के नाम से जाने जाने वाले वे इस्लाम के बाद के विकास के वास्तुकार थे।
उन्होंने अपने पीछे कई पुस्तकें छोड़ी हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध है इह्या' उलूम अल-दीन ("धार्मिक विज्ञान को पुनर्जीवित करना")। (अनुवाद)

इसका परिणाम यह होता है कि वह कारखाने में नाजुक कार्य संतुलन को नष्ट कर देता है, जिससे बहुत नुकसान होता है।

संक्षेप में, शरीयत के प्रत्येक नियम और आदेश पर उसके लिए एक विशेष मूल्य की मुहर लगी होती है, जिसे शरीयत स्थापित करने वाले ने लगाया है। इस मुहर को ध्यान से पढ़ना चाहिए। प्रत्येक नियम और आदेश, जिसका मूल्य मुहर द्वारा प्रदर्शित होता है, उसे किसी अतिरिक्त मूल्य की आवश्यकता नहीं है। यह उन लोगों द्वारा किसी भी अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन की आवश्यकता से भी दूर है जो अतिशयोक्ति और वाचालता के शौकीन हैं, जो सोचते हैं कि वे उन्हें मूल्यवान बना रहे हैं। ऐसे लोगों को इस बात के प्रति सावधान रहना चाहिए कि सच्चाई की दृष्टि में वे कितने बदसूरत दिखाई देते हैं। उस तरह के एक व्यक्ति ने एक बार लोगों के एक समूह के सामने एक भयानक बात कही थी - शराब पीने से हतोत्साहित करने के इरादे से - लेकिन मुझे इसके बारे में लिखने में भी शर्म आती है। ऐसे लोगों को पता होना चाहिए कि वे इस तरह के कार्यों से शरीयत को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। यदि वे शरीयत के मित्र के रूप में कार्य करना चाहते हैं, तो भी उन्हें अधिक से अधिक मूर्ख मित्र ही माना जा सकता है, तथा ऐसे लोग शरीयत के लिए उसके शत्रुओं से भी अधिक हानिकारक हो सकते हैं।

निष्कर्ष

ऐ अन्यायी लोगों, जो इस्लाम के दायरे से बाहर हैं और दूर से इसकी आलोचना करने की कोशिश करते हैं! धोखा न खाओ, अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करो और सतही विचारों से संतुष्ट मत हो जाओ। जो लोग तुम्हें इस्लाम की आलोचना करने के बहाने मुहैया कराते हैं, उन्हें शरीयत की भाषा में बुरे विद्वान कहा जाता है। अपने असंतुलन और आत्म-प्रतिबंध से उन्होंने जो पर्दा बनाया है, उससे परे धर्म के बाहरी पहलू और कुरान और परंपराओं के शाब्दिक अर्थ पर गौर करो। तुम देखोगे कि इस्लाम का हर सत्य एक चमकते हुए तारे की तरह उज्ज्वल है और यह स्वयंसिद्ध है। ऐसे सत्य शाश्वतता की मुहर लगाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि शरीयत ईश्वर की शाश्वत वाणी से आती है - अतीत में शाश्वत और भविष्य में शाश्वत। लेकिन दुर्भाग्य से, अहंकार, आत्म-केंद्रितता, सत्य को समझने में असमर्थता और खुद को अचूक मानने जैसे कारक लोगों को अपनी गलतियों के लिए दूसरों को दोषी ठहराते हैं।

वे अपने शब्दों या कार्यों को किसी प्रसिद्ध व्यक्ति या किसी मान्यता प्राप्त पुस्तक या यहाँ तक कि धर्म या पैगंबरी परंपरा या अंततः ईश्वरीय नियति के लिए गलत ठहराकर खुद को निर्दोष साबित करना चाहते हैं। भगवान ऐसे दृष्टिकोणों से बचें! अंधकार प्रकाश से नहीं निकलता।

अगर कोई व्यक्ति अपने दर्पण में तारों को भी छिपा ले, तो भी वह आकाश के तारों को नहीं छिपा सकता। वह तारों को सिर्फ अपने से ही छिपा सकता है।

ऐ इस्लाम का विरोध करने वालों! जैसे कोई बच्चा रोने का बहाना ढूँढ़ता है या कोई दुश्मन बदला लेना चाहता है, वैसे ही शरिया के विरोध में होने वाले नकारात्मक परिणामों और गलतफहमी से पैदा होने वाले संदेहों से इस्लाम को कलंकित करने की कोशिश करना बहुत ही अनुचित है। क्योंकि यह लगभग असंभव है कि मुसलमान का हर गुण और हर कार्य इस्लाम से उत्पन्न हो।

(गलती हर किसी की हो सकती है और किसी भी धर्म को उसके कुछ अनुयायियों द्वारा किए गए गलत कार्यों के कारण दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए।)

आठवां आधार

एक प्रतिष्ठान

इस लम्बे आधार-वाक्य से थकिए नहीं, क्योंकि इसका निष्कर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है।
इसके अलावा, यह निराशा को हरा देता है, जो सभी पूर्णता को नष्ट कर देता है, और यह आशा को जीवंत करता है; यह हर मामले में खुशी का खमीर है। यह इस बात की भी खुशखबरी देता है कि भविष्य मुसलमानों का होगा। यह अतीत और भविष्य के बच्चों को मापने के बारे में है।

वर्णमाला को कॉलेजों में पढ़ाया और पढ़ा नहीं जाता। भले ही ज्ञान की एक निश्चित, निरंतर प्रकृति हो, लेकिन इसे अलग-अलग तरीकों से पढ़ाया जाता है। भावनाओं का विद्यालय जिसे हम अतीत कहते हैं, वह विचारों के विश्वविद्यालय जैसा नहीं है जिसे भविष्य कहते हैं। अतीत के बच्चों से मेरा मतलब गैर-मुसलमानों के संबंध में है, जो सोलहवीं शताब्दी से पहले रहते थे। जहाँ तक मुसलमानों का सवाल है, वे इस्लाम की पहली तीन शताब्दियों के दौरान अन्य सभी लोगों से बहुत आगे थे, और बाद की दो शताब्दियों के दौरान वे अधिक उन्नत थे, अधिकांश मामलों में उनका सम्मान किया जाता था। मैं बाद की सात शताब्दियों को अतीत कहता हूँ, और उसके बाद के समय को भविष्य।

आम तौर पर किसी व्यक्ति को या तो तर्क या इंद्रिय-बोध निर्देशित करता है। दूसरे शब्दों में, लोग या तो अपने विचारों और भावनाओं से, या अधिकार और बल से, या ज्ञान और शक्ति से, या मार्गदर्शन या वासनाओं और सनक से निर्देशित होते हैं। हम इस दृष्टिकोण से देखते हैं कि बच्चों में बेदाग लेकिन अप्रशिक्षित प्रवृत्तियाँ और भावनाएँ हावी थीं।

अतीत में ये विचार उनके अज्ञानी विचारों को निर्देशित करते थे। इससे कभी-कभी मतभेद या संघर्ष पैदा होते थे। लेकिन चूँकि भविष्य के बच्चों की प्रबुद्ध राय उनकी भावनाओं पर हावी होगी, इसलिए उम्मीद है कि वे भविष्य में भी ऐसा ही करेंगे।

इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं और वासनाओं से अंधकारमय, हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि भविष्य में कानून प्रबल होगा और मानवता एक निश्चित सीमा तक खुद को प्रकट करेगी। बदले में, यह खुशखबरी देता है कि इस्लाम, जो सच्ची और महान मानवता है, भविष्य के स्वर्ग में और एशिया के बागों और बगीचों पर एक निर्मल सूर्य की तरह चमकेगा।

अतीत में जो चीज आम तौर पर प्रचलित थी और जिसने द्वेष, दुश्मनी और श्रेष्ठ होने की भावना को जन्म दिया, वह थी भावनाएँ, झुकाव और बल। लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए एक शक्तिशाली, आश्वस्त करने वाला भाषण ही काफी था। उस समय, किसी थीसिस को इस तरह से अलंकृत करने की क्षमता कि वह भावनाओं और झुकावों को प्रभावित करे या बयानबाजी या हाव-भाव की शक्ति से उसे आकर्षक बनाए, सबूत के तौर पर काम आती थी। लेकिन खुद की उनसे तुलना करने का मतलब है उस समय के कोनों में लौटना। हर युग का अपना एक अलग चरित्र होता है। हम सबूत मांगते हैं, और थीसिस के मात्र कथन या अलंकरण से धोखा नहीं खाते।

वह स्रोत जिससे स्थापित सत्य उत्पन्न होते हैं, वर्तमान की धरती पर भाप के रूप में बनते हैं जो भविष्य के पहाड़ों पर वर्षा के रूप में बरसते हैं, विचार, तर्क, अधिकार और बुद्धि से मिलकर बना है; और किसी भी थीसिस या दावे को केवल साक्ष्य के माध्यम से ही साबित किया जा सकता है, जो जांच की प्रवृत्ति, सत्य के प्रति प्रेम, व्यक्तिगत हित की तुलना में सार्वजनिक हित को प्राथमिकता और मानवता की सत्य के प्रति जागृति को जन्म देता है।

हम वर्तमान के लोग हैं और भविष्य के उम्मीदवार हैं। थीसिस को अलंकृत करना या उसका मात्र कथन हमारे मन को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हम सबूत मांगते हैं।

अब, हम अतीत और भविष्य के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं का संक्षेप में उल्लेख करते हैं। चूँकि अतीत के देशों में बल, इच्छाएँ, प्राकृतिक अप्रशिक्षित स्वभाव और भावनाएँ काफी हद तक प्रबल थीं, इसलिए निरंकुशता और अधिनायकवाद प्रबल था। दूसरों के मार्ग के प्रति शत्रुता अपने मार्ग के प्रति प्रेम से अधिक लोकप्रिय थी। किसी व्यक्ति के प्रति शत्रुता उस व्यक्ति के शत्रुओं के प्रति मित्रता के रूप में प्रकट होती थी। इसके अलावा, पक्षपात और कट्टरता ने सत्य के प्रकट होने को रोका। चूँकि पक्षपात द्वारा समर्थित मतभेदों ने भयंकर संघर्षों को जन्म दिया, इसलिए सत्य पीछे हट गया और छिप गया। निरंकुशता की बुराइयों में से एक के रूप में, प्रत्येक समूह के मार्ग को बनाए रखने वाली चीज आम तौर पर कट्टरता और/या दूसरों को पथभ्रष्ट या भ्रामक बताकर निंदा करना था। जबकि, चूँकि इन सभी के दृष्टिकोण शरीयत की दृष्टि में निंदनीय हैं, वे धार्मिक भाईचारे, मानवता के बंधन और पारस्परिक सहायता के भी विपरीत हैं।

सामूहिक जीवन की आवश्यकता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जब लोग कट्टरता या उसकी भ्रांतियों को त्यागकर एक साथ लोगों द्वारा अपनाए गए मार्ग पर चल पड़ते हैं, तो उन्हें अपना मार्ग बदलना पड़ता है। हालाँकि, अगर उन्होंने कट्टरता के बजाय सत्य का समर्थन किया होता, मिथ्यात्व के बजाय प्रमाण का अनुसरण किया होता, दूसरों को पथभ्रष्ट कहने के बजाय शरीयत के नियमों और ईश्वर की प्रसन्नता के अनुसार अपने तरीके से प्रेमपूर्वक जीवन जिया होता, और अपने कार्यों को परामर्श के आधार पर किया होता, तो उन्हें अपना मार्ग बदलने की आवश्यकता महसूस नहीं होती। लेकिन जिस तरह सुख के युग और उसके बाद की धार्मिक पीढ़ियों के दौरान सत्य की प्रधानता और प्रमाण, तर्क और परामर्श के प्रयोग के कारण लोगों के मन पर संदेह और शंका का कोई प्रभाव नहीं हुआ, उसी तरह वैज्ञानिक विचार और जांच के प्रयासों से बल पर सत्य, मिथ्यात्व पर प्रमाण, स्वभाव पर तर्क, वासना और सनक पर मार्गदर्शन, कट्टरता या धर्मांधता पर सत्य पर दृढ़ता, द्वेष पर जन भावना, शारीरिक आत्मा की प्रवृत्तियों पर बौद्धिक प्रवृत्तियाँ, भावनाओं पर विचार की जीत होगी। यह कुछ हद तक वर्तमान में और पूरी तरह से भविष्य में होगा। इस्लाम की पहली तीन शताब्दियों में और बाद की दो शताब्दियों में कुछ हद तक स्थिति ऐसी ही थी। छठी शताब्दी के बाद से, सब कुछ धीरे-धीरे बिगड़ने लगा।

विचार के प्रभुत्व का यह एक सराहनीय प्रभाव है कि इस्लाम की सच्चाई का सूरज सनक और कल्पना के बादलों के पीछे से धीरे-धीरे प्रकट होकर हर जगह को रोशन कर रहा है। यहां तक कि जो लोग कुफ्र की दलदल में सड़ रहे थे, वे भी लाभान्वित हो रहे हैं। परामर्श की यह खूबसूरती है कि अपनाए जाने वाले तरीके और अपनाए जाने वाले तरीके सबूतों पर आधारित हैं और तथ्य अपरिवर्तनीय सत्य से बंधे हुए हैं, जिससे हर क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त होती है। इसके परिणामस्वरूप झूठ सच्चाई की आड़ में मार्गदर्शन नहीं कर पाएगा और मन को धोखा नहीं दे पाएगा।

ऐ मुसलमान भाईयों और बहनों! यह दिन हमें खुशखबरी देता है कि हक़ीकत आ गई है और झूठ खत्म हो गया है
(17:81) ने अपना रूप दिखाना शुरू कर दिया है और भविष्य की ओर इशारा करते हुए ऊँची आवाज़ में घोषणा करता है: इस्लाम की सच्चाई, जो इस दुनिया में शाश्वत न्याय का प्रतिनिधित्व करती है, समय पर और मानवता की प्रकृति पर तब तक हावी रहेगी जब तक कि अंत समय निकट नहीं आ जाता। यह सबसे महान, सच्ची मानवता है।

मानव सभ्यता में नए विकास से आई खूबसूरती इस्लाम की सच्चाई की प्रबलता का सूचक है। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि

क्या बौद्धिक ज्ञान के कारण - जो समय के साथ एक दूसरे पर आधारित तर्कपूर्ण विचारों का परिणाम है - इस्लामी सत्यों के कंधों पर जमी सनक और मनमौजीपन की धूल आंशिक रूप से समाप्त हो गई है? इससे पता चलता है कि ये सत्य, जो मार्गदर्शन के आकाश के सितारे हैं, अपनी पूरी चमक के साथ प्रकट होंगे और हर जगह अपनी रोशनी फैलाएंगे, भले ही उनके विरोधी इसके खिलाफ संघर्ष करें।

यदि आप चाहें, तो भविष्य में जाकर देखें कि कैसे वे लोग जो ज्ञान और सच्चे ज्ञान की देखरेख में सत्य के क्षेत्र में त्रिदेव में दिव्य एकता के सत्य की खोज करते हैं, उन लोगों के खिलाफ संघर्ष करने का प्रयास करते हैं जो प्रमाण की तलवार से लैस हैं और दिव्य एकता पर आधारित सच्चे पंथ से लैस हैं - वह सच्चा पंथ जिसकी पुष्टि की गई है -

देखो, कैसे वे पूर्णतया पराजित हो जायेंगे।

मैं कुरान की बुद्धिमानी भरी शैली की कसम खाता हूँ कि जिस चीज ने कुछ ईसाइयों को, कई अन्य लोगों के साथ, गुमराही की घाटियों में फेंक दिया है, वह यह है कि उन्होंने तर्क को खारिज कर दिया है, सबूतों को बाहर निकाल दिया है, और मौलवियों की अंधी नकल की है। इस्लाम को हमेशा अपनी श्रेष्ठताएँ (सभी बाधाओं के बावजूद) प्रकट करने और मानवता के बौद्धिक विकास के अनुसार सत्य को विकसित करने की अनुमति देने वाली चीज यह है कि इस्लाम सत्य पर आधारित है, इसने खुद को सबूतों से सुसज्जित किया है, यह तर्क से परामर्श करता है, और वैज्ञानिक अनुसंधान, ज्ञान या स्वस्थ सोच के बुनियादी सिद्धांतों के साथ संघर्ष नहीं करता है। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि कुरान अपनी कई आयतों में मानवता को अपने विवेक की ओर मुड़ने और अपने तर्क से परामर्श करने के लिए कहता है? कुरान अक्सर कहता है: क्या वे विचार नहीं करते...? तो, धरती पर घूमो और देखो...! क्या वे विचार नहीं करते...? वे तर्क करते हैं और समझते हैं।

वे नहीं समझते। तो फिर सोचो...! तो क्या तुम सोच-विचार कर सावधान नहीं होगे? तो फिर, ऐ समझ रखने वालों, सबक सीखो! वे जानते हैं! वे तर्क नहीं करते, न ही समझते हैं।

मैं कहता हूँ: हे बुद्धि वाले लोगों! अब सीख लो!

निष्कर्ष

तो फिर ऐ समझ रखने वालों, सबक सीखो! सिर्फ़ अपनी आँखों से जो देखते हो, उसी तक सीमित मत रहो! सच्चाई तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।

लेकिन जब आप इसे देखें, तो इसे नुकसान न पहुंचाएं!

नौवां आधार

यह एक ऐसा तथ्य है जिसे समझदार सोच और तर्क वाले लोग मानते हैं कि सृष्टि में जो अच्छा है वह मौलिक, आवश्यक, सर्वव्यापी और प्रमुख है, और जो बुरा है वह व्युत्पन्न है, और मामूली या दूसरे दर्जे का है। हम इस पर विस्तार से इस प्रकार बता सकते हैं:

विज्ञान की एक शाखा है जो सृष्टि की हर प्रजाति का अध्ययन करने के लिए विकसित की गई है या विकसित हो रही है। प्रत्येक प्रजाति की अपनी सामान्य विशेषताएँ होती हैं, और ऐसे सामान्य सिद्धांत होते हैं जो उसके अस्तित्व पर हावी होते हैं और उसके जीवन को नियंत्रित करते हैं; यह कहा जा सकता है कि विज्ञान की वह शाखा जो प्रत्येक प्रजाति का अध्ययन करती है, उन सामान्य सिद्धांतों से बनी होती है। यह कि सिद्धांत सामान्य हैं, उस प्रजाति के जीवन में व्यवस्था की सुंदरता को उजागर करता है। इसका मतलब यह है कि सभी विज्ञान ब्रह्मांड के क्रम की सुंदरता के सच्चे गवाह हैं।

सार्वभौमिक व्यवस्था, अपनी संपूर्ण, जीव-जैसी संरचना के साथ, इस व्यवस्थित सौंदर्य का प्रमाण है। यदि किसी चीज में कोई व्यवस्था नहीं है, तो उसके अस्तित्व के लिए कोई सामान्य नियम या सिद्धांत नहीं हो सकता। कई अपवाद व्यवस्थितता की सुंदरता को नष्ट कर देते हैं। प्रेरण का सिद्धांत (और "प्रकृति के सामान्य नियमों" का अस्तित्व) इस थीसिस को साबित करता है। हालाँकि, कभी-कभी हम इस सार्वभौमिक व्यवस्था को नहीं देख पाते हैं क्योंकि हम पूरे अस्तित्व या यहाँ तक कि किसी प्रजाति को उसकी समग्रता में समझने में असमर्थ होते हैं। इससे सार्वभौमिक व्यवस्था अपने सभी आयामों में खुद को प्रदर्शित नहीं कर पाती है। जबकि, सभी "प्राकृतिक" विज्ञान जो सामान्य नियमों या कानूनों और प्रेरण के सिद्धांत पर आधारित हैं, यह साबित करते हैं कि ब्रह्मांड के निर्माण का मूल और अवलोकनीय उद्देश्य अच्छाई, सुंदरता, सत्य और पूर्णता है। बुराई, कुरूपता और झूठ सतही, व्युत्पन्न और मनगढ़ंत हैं। भले ही वे कभी-कभी प्रबल होते दिखाई दें, लेकिन यह अस्थायी है।

यह एक तथ्य है कि सबसे सम्माननीय और महान रचना मानवता है, और मानवता के बीच सत्य के लोग सबसे प्रतिष्ठित और सम्माननीय हैं। जैसा कि इस्लाम के सत्य इस बात की गवाही देते हैं, वैसे ही भविष्य की घटनाएँ भी इसे साबित करेंगी। यह भी एक तथ्य है कि सामान्य रूप से अस्तित्व और विशेष रूप से मानवता के बीच सबसे परिपूर्ण पैगंबर मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। यह उनके चमत्कारों, परिपूर्ण नैतिकता, असाधारण और अद्वितीय उपलब्धियों से प्रमाणित होता है, जिसकी पुष्टि विद्वानों और निष्पक्ष शोधकर्ताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा की जाती है, और कई लोगों द्वारा भी स्वीकार किया जाता है।

उसके शत्रुओं से।

इन सभी स्थापित तथ्यों या सत्यों के सामने, क्या मानवता के लिए अपने गलत कार्यों और पापपूर्णता के माध्यम से विज्ञान की गवाही को रद्द करना, अस्तित्व के उस क्रम को गलत साबित करना या नष्ट करना संभव है जो प्रेरण के सिद्धांत को जन्म देता है; क्या वे ईश्वर की पूर्ण इच्छा का विरोध कर पाएंगे? क्या यह कभी संभव होगा? मैं सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय, सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-बुद्धिमान के नामों की शपथ लेता हूं कि मानवता आसानी से बुराई, कुरूपता या झूठ को पचा नहीं पाएगी। इसके अलावा, दिव्य बुद्धि ऐसा होने नहीं देगी।

सार्वभौमिक कानून के विरुद्ध आक्रामकता को क्षमा नहीं किया जाता है, तथा इसके उल्लंघन की अनुमति नहीं है। यदि बुराई कई वर्षों तक भी हावी रहे, तो इसका परिणाम कम से कम एक हजार वर्षों तक अच्छाई की जीत के रूप में होगा। इसके अतिरिक्त, परलोक में, अच्छाई हमेशा बुराई को पराजित करेगी तथा उसे अनंत काल तक विलुप्त होने की सजा देगी। यदि ऐसा नहीं होता, तो अस्तित्व के दिव्य नियमों का पालन करने वाली सृष्टि की अन्य प्रजातियाँ अन्यायी, दयनीय मानव-जाति को अपने साथ रहने की अनुमति नहीं देतीं, तथा वे मानव-जाति को उसके अस्तित्व के कर्तव्य से विरत कर देतीं, तथा उसे अस्तित्वहीनता के अंधकार में धकेल देतीं। इसका अर्थ यह होगा कि मानव को दी गई क्षमताएँ तथा वे योग्यताएँ और प्रवृत्तियाँ जिनके द्वारा उन्हें इस दुनिया में संतुष्ट जीवन जीने तथा परलोक में अनंत सुख से पुरस्कृत होने के लिए अनुग्रहित किया गया है, सब व्यर्थ हैं। निरर्थकता या निरर्थकता सार्वभौमिक व्यवस्था और व्यवस्था के विरुद्ध है, जो प्रेरण के सिद्धांत को सक्षम बनाती है, और सर्वज्ञ निर्माता की बुद्धि और सत्यनिष्ठ और भरोसेमंद पैगंबर के निर्णय के विरुद्ध है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। भविष्य में कुछ ऐसे निराधार दावों को समाप्त कर दिया जाएगा, और उनका पूर्ण उन्मूलन परलोक में होगा।

अस्तित्व में सौंदर्य और सत्य की प्रबलता भविष्य में विजयी होगी। यदि हम मर जाते हैं, तो हमारा राष्ट्र टिकेगा। हम चालीस वर्ष की विजय से संतुष्ट नहीं हैं; हम और भी कई वर्ष चाहते हैं। फिर भी, सौंदर्य, अधिकार या सत्य, अच्छाई और पूर्णता की पूर्ण और शाश्वत विजय, चाहे व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर हो, परलोक में होगी, जहाँ मानव जाति, अन्य प्रजातियों की तरह जो इसके समान हैं, अपनी क्षमता और जिम्मेदारी के अनुपात में दंडित या पुरस्कृत की जाएंगी। क्योंकि पूर्ण सत्य और न्याय वहाँ शासन करेंगे और प्रबल होंगे। यह संकीर्ण दुनिया मनुष्यों के सार में मौजूद अनंत क्षमताओं या उनकी इच्छाओं और प्रवृत्तियों के लिए उपयुक्त नहीं है जो अनंत काल के लिए पूर्णता में खिलने के लिए बनाई गई हैं। इस कारण से, उन्हें दूसरी दुनिया में भेजा जाएगा जहाँ वे

पूर्ण हो जाएगा। मानवता का सार बहुत ऊंचा है, प्रकृति बहुत ऊंची है, इसलिए इसके अपराध भी बहुत बड़े हैं। इस वजह से, इसकी शिक्षा और ईश्वरीय सार्वभौमिक नियमों का पालन बहुत महत्वपूर्ण है। यह अन्य प्रजातियों की तरह नहीं है। लेकिन, अन्य प्रजातियों की तरह, इसे भी सृजन के आदेश का पालन करना चाहिए-

ation.

अनंत काल के लिए बनाया गया प्राणी महान, महान और गौरवशाली होता है। इसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता या इसे अपने हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता। यह बेकार नहीं हो सकता; इसे पूर्ण रूप से अस्तित्वहीन नहीं माना जा सकता, न ही यह इससे बच सकता है। स्वर्ग और नर्क दोनों ही अपने निवासियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं; पहला अपनी गर्म, स्वागत करने वाली बाहों के साथ, और दूसरा अपना मुंह खोलकर।

निष्कर्ष

इस्लाम और मुस्लिम विश्व का भविष्य दूर से भी उज्ज्वल दिखाई देता है।
निम्नलिखित चार या पांच अदम्य शक्तियां इस्लाम की विजय के लिए मिलकर काम करती हैं, जो सदियों से हमारी दुनिया में कायम है।

पहली शक्ति इस्लाम की आवश्यक शक्ति है, जो ज्ञान से सुसज्जित है-
बढ़त और सच्ची सभ्यता।

दूसरा है तीव्र अभाव या गरीबी, जिसके निवारण के लिए सभी साधन और पूर्वापेक्षाएँ उपलब्ध हैं।

तीसरा है प्रबल प्रतिस्पर्धा और दृढ़ प्रतिस्पर्धा, साथ ही छिपा हुआ उत्साह जो हमारी दुनिया को दुख में और दुनिया को समृद्धि में उसके साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए देखने से उत्पन्न होता है, जो जागृति और लामबंदी को जन्म देता है।

चौथी है, वचन और कर्म में एकता से युक्त प्राकृतिक क्षमता, जो ईश्वर की एकता में विश्वास करने वालों का सिद्धांत है; तथा प्राकृतिक वातावरण द्वारा सूचित संयम और धैर्य; तथा बौद्धिक ज्ञान जो वर्तमान समय ने जोड़ा है; तथा विकास और सभ्यता के लिए आवश्यक विचारों का आदान-प्रदान और पारस्परिक सहयोग; तथा आधुनिक गतिहीन जीवन द्वारा सांस्कृतिक संदूषण से मुक्ति से उत्पन्न स्वभाव की शुद्धता; तथा गरीबी द्वारा आवश्यक सरल जीवन शैली और प्रयास।

पांचवां कर्तव्य है ईश्वर के वचन को ऊपर उठाना, जिसके लिए वर्तमान समय में भौतिक प्रगति की आवश्यकता है; तथा नवीनीकरण और विकास की ओर सामान्य प्रवृत्ति जो इस्लाम की प्रेरणा और शक्ति, समय की आवश्यकताओं, गरीबी की मजबूरी और आशा से सुसज्जित है।

निराशा की मृत्यु के माध्यम से पुनर्जीवित, एक नकारात्मक शक्ति जो हर लालसा और उद्यम को मार देती है।

इन पाँच शक्तियों के समर्थन के रूप में, आधुनिक सभ्यता की बुराइयाँ इसकी सुन्दरता से अधिक हो जाती हैं - एक ऐसा कारक जो विदेशियों में अशांति पैदा करता है और उस सभ्यता को बूढ़ा बनाता है; आधुनिक, अपव्ययी जीवन के लिए श्रम पर्याप्त नहीं है। ये दो विकास निम्नलिखित दो कारणों से होते हैं:

पहला धर्म कामुकता को नज़रअंदाज़ करते हुए उसके सामने समर्पण और भोग विलास की अनुमति देता है। सभ्यताओं के अंतर्निहित आधार के रूप में धर्म और सद्गुण को महत्व दिया गया है।

दूसरा है जीवन स्तर में अत्यधिक असंतुलन, जो दया की कमी के कारण होता है, जो वासना और अधार्मिक जीवन के प्रति समर्पण से उत्पन्न होता है।

जीवन में धर्म के प्रति उदासीनता ने यूरोपीय सभ्यता के अंदरूनी चेहरे को इस हद तक काला कर दिया है कि इसने कई विद्रोही, अराजकतावादी समूहों को जन्म दिया है। अगर वे धर्म की अटूट डोर और ईश्वरीय जीवन पद्धति की दुर्गम बाधा को मजबूती से थामे नहीं रहते, तो ये विद्रोही, अराजकतावादी समूह अपनी "सभ्य" दुनिया को नष्ट कर देंगे।

अगर ज़कात (पवित्र करने वाला दान) की संस्था को - जो इस्लाम की सच्चाई के कई मूलभूत सिद्धांतों में से सिर्फ़ एक है - सभ्यता की नींव और आपसी मदद और एकता के नियम के रूप में लिया जाए, तो क्या यह इस दुख और साँपों के उस घोंसले के लिए, जीवन स्तर में भयावह असंतुलन का इलाज नहीं होगा? निश्चित रूप से, यह एक आदर्श इलाज है।

यदि यह पूछा जाए कि जिसने यूरोप की श्रेष्ठता सुनिश्चित की है, वह क्यों
यदि मैं अब से ऐसा नहीं करूंगा, तो मेरा उत्तर इस प्रकार है:

सबसे पहले इस पुस्तक की प्रस्तावना का अध्ययन करें, और फिर ध्यान दें कि इसमें क्या लिखा है। इस प्रकार है:

यूरोप की प्रगति के कारण वहाँ की ठंडी जलवायु थी, जिसके कारण लोग आत्मसात करने और त्यागने (प्रमुख सभ्यतागत प्रवृत्तियाँ) दोनों में ही धीमे थे, और जो उन्हें कठिनाइयों के लिए अभ्यस्त बनाती थी; सीमित मात्रा में भूमि और जनसंख्या का उच्च घनत्व, जिसने लोगों को शिक्षा और औद्योगिकीकरण की ओर प्रेरित किया; और जलमार्गों और खनन जैसी गतिविधियों की बहुलता और समुद्र से घिरे होने के कारण आपसी मदद और एकजुटता को बढ़ावा मिला; और इसी तरह के अन्य कारक भी थे। लेकिन आज, दुनिया एक वैश्विक शहर बन रही है जहाँ परिवहन और संचार के विकास के कारण एक ही समुदाय जीवित है। संक्षेप में, चूँकि उनका बोझ भारी है जबकि हमारा हल्का है, हम उन्हें पकड़ लेंगे और उन्हें पीछे छोड़ देंगे, बशर्ते कि ईश्वर हमारी सहायता करे।

अंतिम निष्कर्ष

एक संवैधानिक शासन और स्वतंत्रता इस्लाम और एशिया के लिए सुखद भविष्य के द्वार खोलेगी, बशर्ते कि वे धर्म का पालन करें।

चेतावनी: सभ्यता में जो सुन्दर चीजें पाई जाती हैं, वे
वास्तव में, धर्म के कुछ तत्वों को नया रूप दिया गया है।

दसवां आधार

एक वक्ता को दूसरों द्वारा निकाले गए सभी अर्थों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। दूसरों द्वारा निकाले गए अर्थों के लिए व्यक्ति तभी उत्तरदायी होता है, जब वे अर्थ जानबूझकर निकाले गए हों। अन्यथा, वक्ता को जवाबदेह नहीं ठहराया जा सकता। एक वक्ता केवल अपने इरादों के लिए ही उत्तरदायी होता है।

लेखन और बोलने की कला के नियमों में यह भी शामिल है कि सत्य और असत्य लेखक या वक्ता के इरादे में ही मौजूद होते हैं। जहाँ तक श्रोता द्वारा निकाले गए अर्थों और अर्थों तथा प्रयुक्त शैलियों की जिम्मेदारी का सवाल है, तो ये रीति-रिवाजों या परंपराओं से संबंधित हैं। रीति-रिवाजों या परंपराओं की एक भूमिका होती है और अर्थ व्यक्त करते समय उनका पालन किया जाता है। यदि आलोचना की जा रही रचना एक कहानी है, तो उसके नायकों में दोष और कमियाँ तलाशी जानी चाहिए।

एक वक्ता को रूपों या अर्थों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाता है। क्योंकि वक्ता उनके फल तोड़ने के लिए उनके पास हाथ नहीं बढ़ाते, बल्कि वे उन्हें अपने मुख्य उद्देश्यों की शाखाओं की ओर चढ़ने के लिए इस्तेमाल करते हैं। यदि आप चाहें, तो आलंकारिक या रूपकात्मक विवरणों या विवरणों पर विचार करें। उदाहरण के लिए, तुर्की में उदार लोगों के बारे में कहा जाता है, "फलां व्यक्ति की तलवार की म्यान लंबी है और उसके पास खुद बहुत राख है," जिसका अर्थ है कि जिस व्यक्ति के बारे में बात की जा रही है वह अमीर और उदार है। भले ही इस व्यक्ति के पास तलवार और राख न हो, फिर भी हमने सच बोला है। उन उदाहरणों पर भी विचार करें जो "मान लेते हैं" या "मान लेते हैं" जैसे वाक्यांशों से शुरू होते हैं। चूँकि उनका एक मूल्य है जो सामान्य उपयोग से उत्पन्न होता है, इसलिए इन वाक्यांशों में विचारों के आदान-प्रदान और परामर्श में मध्यस्थ के रूप में कार्य करने की क्षमता होती है। यहाँ तक कि जलाल अल-दीन अल-रूमी[18] और सादी अल-शिराज़ी[19] जैसे बुद्धिमान लोगों के सबसे सटीक, सत्यनिष्ठ व्यक्ति भी ऐसा नहीं करते थे ।

---

18 मौलाना जलाल अल-दीन अल-रूमी (1207-1273): इस्लामी सूफीवाद के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक। चक्करदार दरवेशों के मौलवी संप्रदाय के संस्थापक, अपने मथनावी के लिए प्रसिद्ध, जो छह खंडों में धार्मिक जीवन पर एक महाकाव्य है। पश्चिमी पाठकों के लिए, रूमी सूफीवाद के कवियों में एक शक्तिशाली आवाज हैं। (अनुवाद)

19 सादी अल-शिराज़ी (1215?–1292): फ़ारस के सबसे महान शिक्षाप्रद कवि, गुलिस्तान के लेखक (“रोज़ गार्डन”) और बुस्तान (“ऑर्चर्ड”), जिन्होंने कई बेहतरीन कविताएँ और गीत भी लिखे। (अनुवाद)

उन्हें इस्तेमाल करने में कोई दोष नज़र नहीं आता। अगर यह सत्य आपको दिख गया है, तो इससे अपनी मोमबत्ती जलाएँ, और आख्यानों और कहानियों के कोनों में जाएँ। क्योंकि एक भाग के लिए मान्य कोई भी चीज़ कभी-कभी पूरे के लिए मान्य हो सकती है।

एक अनुस्मारक

तीसरे भाग में कुरान की दृढ़, स्पष्ट और रूपकात्मक अभिव्यक्तियों के बारे में एक बुनियादी सिद्धांत का उल्लेख किया जाएगा। हालाँकि, जैसा कि मुझे लगता है कि यहाँ यह आवश्यक है, मैं इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार करूँगा:

ईश्वर द्वारा अपनी बुद्धिमानी भरी पुस्तक भेजने का मुख्य उद्देश्य लोगों का मार्गदर्शन करना है। सभी मनुष्य एक ही स्तर की समझ के नहीं होते, न ही वे विज्ञान की हर शाखा के विशेषज्ञ होते हैं। इसलिए, ईश्वर अपने शास्त्रों में इस तरह से बोलता है कि हर कोई उसे समझ सके। उच्च स्तर की समझ और विशेषज्ञता वाले लोग किसी भी ऐसी चीज़ से लाभ उठा सकते हैं जो सभी लोगों को संबोधित हो। लेकिन जब कोई काम केवल विद्वानों को संबोधित करता है, तो आम लोगों के लिए चीज़ें मुश्किल हो सकती हैं। इसके अलावा, लोग आसानी से अपनी आदतों को नहीं छोड़ सकते या उन चीज़ों से मुक्त नहीं हो सकते जिनसे वे लंबे समय से परिचित हैं। लोगों को अक्सर अमूर्त चीज़ों से निपटना मुश्किल लगता है, लेकिन रूपकों और उपमाओं के साथ व्यक्त की जाने वाली चीज़ों को समझना आसान लगता है क्योंकि ये रोज़मर्रा की ज़िंदगी के ज़्यादा करीब होते हैं। इस कारण से, सत्य को आम तौर पर परिचित शब्दों या रूपों में प्रस्तुत किया जाता है और इस तरह मार्गदर्शन के लिए प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

हालाँकि, हमें ऐसे रूपों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। चमत्कारी व्याख्या के कुरान ने इस बात पर विचार किया है कि लोग इसे आसानी से कैसे समझ सकते हैं और इस तरह से प्रस्तुत किए जाने के लिए उपयुक्त शैलियों का उपयोग किया है। कुरान ईश्वर का मनुष्यों को एक ऐसे रूप में संबोधित करना है जिसे वे समझ सकते हैं। निम्नलिखित कुरानिक अभिव्यक्तियाँ इसके उदाहरण हैं:

उसने स्वयं को सर्वोच्च सिंहासन पर स्थापित किया है (7:54)।

परमेश्वर का हाथ उनके हाथों पर है (48:10)।

तुम्हारा रब आ रहा है (89:22)

उसने उसे (सूर्य को) गर्म और काले, कीचड़ भरे पानी के सोते में डूबते देखा (18:86)।

सूर्य अपने निर्धारित मार्ग पर चलता है (36:38)।

कुरान ऐसा ही है, और इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि यह ईश्वर का वचन है।

निष्कर्ष

किसी विचार को समझना दो कारणों से कठिन हो सकता है। एक तो यह कि उसमें कुछ ऐसा है जो उसे समझने में मुश्किल हो।
खराब शैली या खराब भाषा में व्यक्त किया गया है। कुरान ऐसी भाषा या शैली से कहीं ऊपर है। एक अलग कारण जो कुरान की कुछ अभिव्यक्तियों को समझने में कठिनाई पैदा कर सकता है वह यह है कि कुरान में गहरे, सूक्ष्म और बहुआयामी अर्थ हैं। चूँकि कुरान का मूल्य अद्वितीय है और इसमें असंख्य कीमती रत्न हैं, इसलिए इसके रहस्यों को आसानी से उजागर नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसके लिए बहुत सावधानी और एकाग्रता की आवश्यकता होती है; इसका कारण और इसका परिणाम यह है कि व्यक्ति कुरान का अध्ययन करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित होता है ताकि उसमें निहित गहरे अर्थों को खोज सके।

एक अनुस्मारक

जैसा कि पैगम्बरीय परम्परा में घोषित किया गया है, प्रत्येक कुरानिक आयत में अर्थ का एक बाह्य और आन्तरिक आयाम होता है, तथा प्रत्येक आन्तरिक और आन्तरिक आयाम का एक बोधगम्य क्षेत्र होता है, तथा प्रत्येक क्षेत्र में उप-क्षेत्र होते हैं।20
इतिहास के दौरान स्थापित धार्मिक विज्ञान इस तथ्य के साक्षी हैं। कुरान की प्रत्येक आयत में अर्थ के प्रत्येक आयाम या श्रेणी में एक विशेष, विशिष्ट गुण है, और इसे खोजा जाना चाहिए। अर्थ की श्रेणियाँ या आयाम भ्रम पैदा नहीं करते हैं, लेकिन अर्थ में कुछ निकटताएँ अस्पष्टता या गलतफहमी को जन्म दे सकती हैं। जिस तरह से हम जिस क्षेत्र में रहते हैं, जहाँ हमें वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए आवश्यक साधन या उपकरण रखने चाहिए, उसे विश्वास के क्षेत्र के साथ भ्रमित करना, जहाँ हम सभी प्रभावों को ईश्वर की पूर्ण इच्छा के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, या तो ईश्वर पर पूर्ण निर्भरता के नाम पर भाग्यवाद का कारण बन सकता है, या सृजन को सृजनात्मकता का श्रेय देने में विचलन पैदा कर सकता है, इसी तरह के परिणाम तब दिखाई दे सकते हैं जब किसी आयत के अर्थ की श्रेणियाँ या आयाम एक दूसरे से अलग न हों।

ग्यारहवाँ आधार

एक शब्द में एक से अधिक निर्णय हो सकते हैं। एक सीप में कई मोती हो सकते हैं। इसी तरह यह भी एक तथ्य है, जिसे विशेषज्ञ ज्ञान वाले लोग महसूस करते हैं, कि एक पाठ में एक से अधिक निर्णय हो सकते हैं। इनमें से प्रत्येक

---

20 इब्न हिब्बन, साहिह, 1:146; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 3:54.

निर्णय अलग-अलग स्रोतों से उत्पन्न होते हैं और अलग-अलग फल देते हैं। जो उनके बीच अंतर नहीं कर सकता, वह उदासीन और रहित रहता है

सत्य। उदाहरण के लिए, एक पैगंबरी परंपरा कहती है, "मैं और दुनिया का अंत इन दो उंगलियों की तरह हैं।"21 यानी, पैगंबर का मतलब था कि उनके बाद कोई पैगंबर नहीं होगा। इस परंपरा में तीन निर्णय हैं:

एक: यह परंपरा सही मायने में पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से संबंधित है। यह निर्णय संचरण की श्रृंखलाओं की विश्वसनीयता पर आधारित है।

दूसरा: इस हदीस में जो अर्थ व्यक्त किया गया है वह सत्य है। यह निर्णय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नबूवत के प्रमाणों पर आधारित है।

हमें इन दोनों निर्णयों को स्वीकार करना चाहिए। जो व्यक्ति पहले को नकारता है, वह घोर पाप करता है और उसे झूठा माना जाता है। जो व्यक्ति दूसरे को नकारता है, वह गुमराही और अंधकार में गिर जाता है।

तीसरा: परंपरा में निहित निर्णय वही है जो हर योग्य व्यक्ति उससे निष्कर्ष निकालता है। जिसके पास परंपराओं से निर्णय निकालने के लिए आवश्यक योग्यता है, वह कहता है, "यही इस पैगंबर के कथन का अर्थ था; यह इस सीप में छिपा मोती है।" यह निर्णय व्यक्तिगत झुकाव या इच्छाओं या सनक के माध्यम से नहीं पहुँचा जा सकता है। यह आवश्यक सिद्धांतों पर स्थापित सच्चे तर्क पर आधारित होना चाहिए।

जो व्यक्ति कुरान और पैगंबरी परंपराओं से निर्णय निकालने के लिए योग्य है (सभी को संबोधित और समझने योग्य स्पष्ट निर्णय[ओं] के अलावा) उसे समान योग्यता वाले किसी अन्य का अनुसरण करने के लिए बाध्य नहीं किया जाता है। इस तीसरे निर्णय में विचारों में मतभेद होते हैं। "फलां कहता है" और "ऐसा कहा जाता है" जैसे वाक्यांश, जो हमें प्रासंगिक पुस्तकों में अक्सर मिलते हैं, इसकी गवाही देते हैं। जो लोग कुरान और पैगंबरी परंपराओं से निर्णय निकालने के लिए आवश्यक योग्यता रखते हैं, वे दूसरों के निर्णय से असहमत होने पर पाप नहीं करते हैं। किसी विशेष तत्व की कमी या व्यक्तिगत निर्णय को स्वीकार न करने से पूरे या सामान्य निर्णय की अमान्यता नहीं होती है। ऐसे कई कथन हैं जिनमें विवादास्पद निर्णय शामिल हैं।

इस कारण हमें हर घर में उसके अपने दरवाज़े से प्रवेश करना चाहिए। हर घर का अपना दरवाज़ा होता है और हर ताले की अपनी चाबी होती है। (अर्थात् हमें हर घर में उसके अपने दरवाज़े से प्रवेश करना चाहिए।)

---

[21] अल-बुखारी, अल-जामी अल-साहिह, "रिकाक़" 39; मुस्लिम, अल-जामी अल-साहिह, "फ़ितन" 132 135; अल-तिर्मिधि, सुनान, "फ़ितन" 39.

(प्रत्येक के गुण-दोष के आधार पर इस तीसरे प्रकार के निर्णय के उदाहरणों को देखना चाहिए और स्वीकार करना चाहिए, तथा उस प्रक्रिया का पता लगाना चाहिए जिसने विद्वान को इस स्थिति तक पहुंचाया।)

निष्कर्ष

पैगंबरी परंपराओं के बारे में बताए गए तीन प्रकार के निर्णय कुरान की आयतों के लिए भी प्रासंगिक हैं। हालाँकि, पहले निर्णय के संबंध में, कुरान की आयतों और पैगंबरी परंपराओं के बीच थोड़ा लेकिन महत्वपूर्ण अंतर है। (इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुरान की हर आयत पूरी तरह से इसका हिस्सा है और इसे ईश्वर ने उतारा है। इनमें से किसी भी आयत का खंडन करने का मतलब अविश्वास है।)

जैसा कि इस आधार की शुरुआत में बताया गया है, एक शब्द में मूल, इच्छित निर्णय के अलावा कई अन्य निर्णय हो सकते हैं। हालाँकि, वे विशेष महत्व के हैं। इनमें से प्रत्येक एक अलग मूल से निकल सकता है और एक अलग फल दे सकता है।

एक अनुस्मारक

अहंकार और आत्म-महत्व कुछ शर्मनाक और घृणित व्यवहारों को जन्म दे सकता है, जैसे कि विरोधी पक्ष का जानबूझकर समर्थन करना, कट्टरता, दूसरों से श्रेष्ठ होने की आकांक्षा, अनुचित पक्षपात, किसी गलत कार्य को सही ठहराने के लिए सत्य का शोषण करना, अपनी इच्छाओं के पक्ष में कमजोरियों को मजबूत मानना, दूसरों की कमियों की ओर ध्यान आकर्षित करके खुद को कितना गुणी दिखाने की कोशिश करना और दूसरों का विरोध करके या उन्हें गुमराह घोषित करके अपनी ईमानदारी और सच्चाई का प्रदर्शन करना। स्वार्थ या अहंकार से पराजित व्यक्ति कई बहाने बना सकता है।

हमें ऐसे नीच रवैये से मुक्ति के लिए ईश्वर की ओर मुड़ना चाहिए और
व्यवहार.

बारहवां आधार

जो गिरी को नहीं खोज पाता, वह खोल में ही उलझा रहता है और उसी तक सीमित हो जाता है। जो सत्य को नहीं जानता, वह सनक में भटक जाता है और

जो व्यक्ति सीधा रास्ता नहीं खोज पाता या पहचान नहीं पाता, वह अतिवाद की ओर चला जाता है।

जिसके पास सच्चा संतुलन नहीं है, वह न केवल दूसरों को धोखा देता है, बल्कि स्वयं भी बहुत बड़ा धोखा खाता है।

किसी पाठ के शाब्दिक अर्थ तक सीमित लोगों के धोखे का एक कारण कथा और उसमें निहित पाठ के बारे में उनकी उलझन है, साथ ही श्रोता या पाठक के मन में पाठ द्वारा इच्छित आधार और अर्थ की निकटता भी है। कृपया इस बिंदु पर ध्यान दें, क्योंकि यह महत्वपूर्ण है।

विचारों में अराजकता को जन्म देने वाला एक महत्वपूर्ण कारण, जो मिथकों, अंधविश्वासों और अतिशयोक्ति को जन्म देता है, सृष्टि में सौंदर्य और भव्यता से असंतुष्टि है। यह अपने अपूर्ण तर्क और ज्ञान से अस्तित्व के क्रम का न्याय करने की कोशिश कर रहा है, और इस तरह इसे नीचा दिखा रहा है। वास्तव में, सृष्टि में व्यवस्था, सौंदर्य, पूर्णता और भव्यता, जिसका प्रत्येक तत्व ठोस तर्क और बुद्धि से देखने पर एक चमत्कार है, सपनों और कल्पना से प्रेरित लोगों की सुंदरता और पूर्णता के साथ तुलना करने पर इतना स्पष्ट है कि वे अपनी असाधारणता को खोए बिना अपनी पूरी भव्यता और चमक में दिखाई देते हैं। यह रोजमर्रा की परिचितता है, जो बहुस्तरीय अज्ञानता की बहन है और सतही विचारों की जननी है जिसने अतिशयोक्ति के शौकीन लोगों को अंधा कर दिया है। ऐसे लोगों की आंखें खोलने के लिए, हिकमत किताब मानव दुनिया में तथ्यों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करने का आदेश देती है, जिसमें भौतिक संरचना भी शामिल है, साथ ही बाहरी दुनिया की जांच भी। यह केवल कुरान की आयतें हैं जो आंखें खोलती हैं। ये श्लोक प्रखर प्रकाश वाले तारे हैं; वे अज्ञानता और सतहीपन के अंधकार को दूर करते हैं, वे रोजमर्रा की परिचितता के पर्दे और शाब्दिक अर्थों तक के प्रतिबंधों को हटा देते हैं, बुद्धि को बाह्य जगत और मानवीय आंतरिक जगत के तथ्यों की ओर, और इस प्रकार सत्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

अतिशयोक्ति को बढ़ावा देने वाली चीज़ है हमारी अपनी प्रवृत्तियों को महसूस करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति का एक हिस्सा यह है कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से असामान्य चीज़ों को देखने और प्रदर्शित करने तथा नई चीज़ों का आविष्कार करने की इच्छा रखता है। इस कारण से, जब वे ब्रह्मांड में आत्माओं को खिलाने और संतुष्ट करने वाले पोषण के हमेशा-मूल स्वाद को महसूस नहीं करते हैं, क्योंकि वे सतही धारणा और रोज़मर्रा की परिचितता से अस्पष्ट हो जाते हैं, तो वे आवरण और बाहरी सतह को उठाने की कोशिश करते-करते थक जाते हैं, और दुर्लभता और "असाधारणता" की भूख के आगे आत्मसमर्पण कर देते हैं। यह मनुष्यों को नवीनता के लिए अतिशयोक्ति का उपयोग करने या असामान्य चीज़ों की माँग करने के लिए प्रेरित करता है। पहाड़ की ढलान से नीचे गिरते हुए एक हिमखंड की तरह, जब अतिशयोक्ति कल्पना के सबसे ऊँचे शिखर से नीचे जीभ तक और फिर एक जीभ से दूसरी जीभ तक लुढ़कती है, तो यह हिमस्खलन की तरह बढ़ती है, जबकि उसी समय कुछ हिस्से इधर-उधर बिखर जाते हैं। अतिशयोक्ति इतनी बढ़ जाती है कि यह न तो दिल में समाती है

न तो संवेदनशील इंद्रियाँ और न ही कल्पना की क्षमता। लेकिन बाद में, एक सत्य-देखने वाली आँख प्रकट होती है और सभी बाहरी हिस्सों को उजागर करती है, जिससे उस अतिशयोक्ति को मूल सत्य में बदल दिया जाता है। इस प्रकार, सत्य आ गया है, और झूठ गायब हो गया है (17:81) का अर्थ खुद को प्रकट करता है।

हाल ही में घटित एक घटना इसका उदाहरण प्रस्तुत कर सकती है:

मैंने लंबे समय से इस्लाम की सच्चाई पर लगे उन दागों को हटाने की कोशिश की है जो अतिवाद के कारण लगे हैं, और उन सच्चाईयों को उनकी पूरी चमक के साथ दिखाने का प्रयास किया है। हाल ही में मैंने स्पष्ट किया है कि इस्लाम किसी भी तरह से इस स्पष्ट, लंबे समय से स्थापित तथ्य का विरोध नहीं करता है कि पृथ्वी गोलाकार है। इसके विपरीत, इस्लाम में ऐसे कई तत्व हैं जो इसका समर्थन करते हैं। ऐसा करके मैं इस्लाम के दुश्मनों की आपत्तियों को खारिज करने और उसके दोस्तों के संदेहों को दूर करने में सक्षम रहा हूँ। इस मामले को मामले अनुभाग में समझाया जाएगा।

लेकिन, लंबे समय से बुरे सपनों के आदी हो चुके शाब्दिकवादियों का दिमाग असंतुष्ट लगता है। ऐसा लगता है जैसे वे अपनी आँखें बंद करके या सूरज पर फूंक मारकर उसे बुझाकर दिन को रात बनाना चाहते हैं।

वे सोचते हैं कि जो व्यक्ति पृथ्वी को गोलाकार मानता है, वह धर्म के अनेक सत्यों का विरोध करता है। इस धारणा के आधार पर उन्होंने मेरी निन्दा की है।
चूँकि उन्हें कुछ उपजाऊ संदिग्ध दिमाग मिल गए हैं, इसलिए वे अपनी बदनामी में इस हद तक चले गए हैं कि उन्होंने उन लोगों को बहुत दु:ख पहुँचाया है जो वास्तव में धार्मिक हैं, साथ ही कुछ लोगों के दिलों में निराशा पैदा की है जो मुस्लिम लोगों की प्रगति के लिए उत्सुकता से प्रयास कर रहे हैं। इसने मुझे एक महत्वपूर्ण सबक दिया है: एक अज्ञानी दोस्त एक दुश्मन जितना ही हानिकारक होता है। इस घटना से पहले, मैंने सत्य की हीरे की तलवार से दुश्मनों के चरम झूठ को तोड़ने की कोशिश की थी। अब मैं इस तलवार का इस्तेमाल ऐसे दोस्तों की चरम सनक के खिलाफ एक निश्चित सीमा तक करने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ। यह एक ऐसा मामला है जो पूर्व में धार्मिक स्कूलों की वर्तमान स्थिति को समझने और यह जानने के लिए महत्वपूर्ण है कि क्या और कैसे उन्हें सुधारा जाना चाहिए। मैं इन शाब्दिकवादियों को आश्वस्त करता हूँ कि उनके प्रयास व्यर्थ हैं। आज तक, उन्होंने आम लोगों की वाहवाही जीतने का लक्ष्य रखा है और हमारी अज्ञानता का कारण बने हैं।

वे चाहते हैं कि हम अज्ञानी बने रहें और वे हमारी अज्ञानता से लाभ उठाते रहें। हालाँकि, अब ऐसा नहीं हो सकता है, और धार्मिक स्कूलों को वास्तव में पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।22

22 बेदीउज्जमां सईद नूरसी यहाँ तुर्की के दक्षिण-पूर्व के कुछ समकालीन विद्वानों की आलोचना करते हैं। (अनुवादक)

एक और बात जिसका ज़िक्र शाब्दिक अर्थों में विश्वास करने वालों के दिमाग़ में उलझन और उनकी कल्पनाओं में अव्यवस्था के बारे में किया जाना चाहिए, वह यह है कि उनका मानना है कि पैग़म्बरों की सच्चाई का सबूत सिर्फ़ उनके चमत्कारों में है। इस वजह से, वे कहते हैं कि हमारे पैग़म्बर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने सभी कार्यों, व्यवहारों और स्थितियों में असाधारण थे।

चूँकि यह वास्तविकता के अनुरूप नहीं है, इसलिए उनके पास उनके बारे में सोचने में कोई व्यवस्था या संतुलन नहीं है। यह दावा ईश्वरीय ज्ञान की सूक्ष्म सच्चाइयों और इस तथ्य के बारे में अनभिज्ञता से उत्पन्न होता है कि, अन्य सभी लोगों की तरह, पैगंबरों ने अस्तित्व में काम करने वाले ईश्वरीय नियमों को प्रस्तुत किया और उनका पालन किया। हमारे पैगंबर का हर कार्य, शब्द और स्थिति उनकी सत्यनिष्ठा को दर्शाती है और सत्य के प्रति उनके समर्पण और इस बात की गवाही देती है कि उन्होंने ईश्वरीय नियमों और प्रथाओं का पालन किया। इस बिंदु पर तीसरे भाग में चर्चा की जाएगी।

ईश्वर पैगम्बरों के हाथों चमत्कार करवाता है ताकि उनकी पैगम्बरी होने का प्रमाण दिया जा सके और लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। प्रत्येक पैगम्बर द्वारा किए गए चमत्कार उसके पैगम्बर होने को साबित करने के लिए पर्याप्त थे। चमत्कार करना या आवश्यकता से परे असाधारणता के उदाहरण दिखाना व्यर्थ होगा और उस जिम्मेदारी का खंडन करेगा जो लोगों को यह परखने का एक साधन है कि उनसे क्या विश्वास करने की अपेक्षा की जाती है। किसी को भी ऐसी चीज पर विश्वास करने के लिए आमंत्रित नहीं किया जाता है जिसे स्पष्ट रूप से नकारा नहीं जा सकता। ऐसा निमंत्रण पैगम्बरों और धर्मों को भेजने में ईश्वरीय ज्ञान के विपरीत होगा, और जो लोगों को उनके द्वारा सिखाई गई बातों को स्वीकार करने या उन पर विश्वास करने के आधार पर परखता है।

पैगम्बरों पर सबसे पहले ईश्वरीय ज्ञान के प्रति समर्पण और आज्ञाकारिता की जिम्मेदारी है, और वह भी दूसरों से अधिक।

हे मेरे इन अस्पष्ट वचनों पर ध्यान देने वाले! तुम्हारे स्वभाव में निहित प्रवृत्तियों के बीज इन बारह आधारों में प्रकट होने वाले सत्यरूपी सूर्य में उगेंगे और फलेंगे-फूलेंगे; यह सूर्य एक साथ गतिशील और स्थिर है।[23]

निष्कर्ष

यह अस्वीकार करना पाप है कि आप पैगम्बर के परिवार से हैं; यह भी पाप है कि आप पैगम्बर के परिवार के वंशज होने का दावा करें, हालांकि आप पैगम्बर के परिवार के वंशज नहीं हैं।

---

[23] यहाँ सईद नूरसी इस तथ्य की ओर संकेत कर रहे हैं कि सूर्य अपने आप में स्थिर और गतिशील है।

प्रणाली, एक तथ्य जिसे आधुनिक खगोल विज्ञान ने 1993 में खोजा था। देखें, एम. बार्टूसिएक, "सूर्य की ध्वनियाँ," अमेरिकन साइंटिस्ट (जनवरी. फरवरी. 1994): 61 68; अली उनाल, "कुरान की शैलियाँ और सूर्य की गति," इस्लामिक पर्सपेक्टिव्स ऑन साइंस, द लाइट, न्यू जर्सी, 2007, पृ. 155 159. (अनुवाद)

इसी तरह, कुरान और पैगंबरी परंपराओं में कुछ जोड़ना या घटाना सख्त मना है। जोड़ना ज़्यादा नुकसानदेह है, क्योंकि यह व्यवस्था को नष्ट करता है और संदेह और गलतफहमियों को जन्म देता है, जबकि अज्ञानता अनजाने में छूट जाने का बहाना हो सकती है। इसी तरह, धर्म से कुछ हटाना या उसमें कुछ जोड़ना जायज़ नहीं है।

आख्यानों के सस्ते सिक्के, पहले के भ्रष्ट धर्मों से उधार लिए गए कचरे और कुछ उपमाओं के मवाद के साथ, इस्लामी पंथ के हीरे, शरीयत के रत्न और इस्लामी जीवन के नियमों के मोतियों का अवमूल्यन किया गया है, जिससे सत्य की खोज करने वालों को हतोत्साहित और विमुख किया गया है।

अंतिम निष्कर्ष

यह सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध होगा यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज को त्याग दे जिसके लिए उसके पास प्रतिभा है और वह ऐसा कुछ करने का प्रयास करे जिसके लिए वह योग्य नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी प्रतिभा को उस कार्य में लगाकर विकसित करे जिसके लिए वह योग्य है, तथा उस शिल्प या नौकरी के नियमों का पालन करे जिसमें वह कुशल है। ऐसी प्रतिभाओं का दुरुपयोग और किसी भी शिल्प या नौकरी के नियमों के विपरीत कार्य करना विकृति और भ्रष्टाचार का कारण बनता है। किसी प्राकृतिक कौशल या क्षमता और किए गए कार्य के बीच कोई भी असंगति भ्रम को जन्म देगी। इस कारण से, बहुत से लोग जो दूसरों पर श्रेष्ठता और प्रभुत्व की आकांक्षा रखते हैं, वे ज्ञान का दुरुपयोग करते हैं, इसे अपने प्रभुत्व को लागू करने के लिए एक बल के रूप में उपयोग करते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि ज्ञान और शिक्षा के लिए प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, सलाह और सौम्यता की आवश्यकता होती है। यद्यपि लोगों से ज्ञान की सेवा करने की अपेक्षा की जाती है, फिर भी कुछ लोग इसका उपयोग अपने निजी हितों के लिए करते हैं। इसके कारण कई सार्वजनिक कार्यालयों पर ऐसे लोगों का कब्जा हो गया है जो योग्य नहीं हैं, जिसके कारण धार्मिक विद्यालयों का लगभग पतन हो गया है। इस प्रकार, हमें विभिन्न प्रतिभाओं वाले लोगों के निर्माण में ईश्वरीय बुद्धि का अनुसरण करना चाहिए, तथा श्रम विभाजन के नियम को लागू करना चाहिए, तथा धार्मिक विज्ञानों पर ध्यान केन्द्रित करने को प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने द्वारा चुने गए विषय का अध्ययन कर सके तथा जिसके लिए उसकी योग्यता हो।

एक अनुस्मारक

धार्मिक शिक्षा के पतन और उसके वास्तविक मार्ग से भटकाव का एक महत्वपूर्ण कारण यह है: अधीनस्थ या साधनात्मक विज्ञान-

तर्कशास्त्र, भाषाविज्ञान और भाषाविज्ञान जैसे विषयों को प्राथमिक, उच्च विज्ञानों (जैसे न्यायशास्त्र, कुरान की व्याख्या और हदीस का अध्ययन) से अधिक महत्व दिया गया है। अरबी ग्रंथों के व्याकरणिक विश्लेषण ने लोगों के दिमाग पर कब्ज़ा कर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप प्राथमिक या बुनियादी विज्ञानों के अध्ययन और ज्ञान को काफी हद तक उपेक्षित किया गया है।

हे विवेकवान भाईयों और बहनों! मेरी राय है कि आप चर्चा की गई पृष्ठभूमि के आधार पर आगे की पंक्तियों में चर्चा किए जाने वाले विषयों की प्रकृति देखना चाहेंगे। लेकिन मैं आपसे थोड़ा और समय मांगता हूँ!

यहाँ मैं कुछ ऐसी बातें प्रस्तुत करना चाहूँगा जो इन मामलों का सार या रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं। फिर मैं आपके अवलोकन के लिए दस मामले प्रस्तुत करूँगा।

मैं कुरान और उन विज्ञानों द्वारा प्रदान किए गए साधनों के माध्यम से आकाश के विज्ञानों तक पहुँचने का प्रयास करूँगा। हम देखेंगे कि सर्वज्ञ निर्माता निरंतर पृथ्वी को अपनी शक्ति के हाथ में एक गेंद की तरह घुमाता रहता है।

हम बुद्धि की आँखों से देखेंगे कि वह इसे पूरी तरह से नष्ट कर सकता है और करेगा तथा इसे एक नए से बदल देगा। फिर, वायुमंडल से यात्रा करते हुए, हम पृथ्वी पर उतरेंगे, जिसे सर्व-दयालु निर्माता ने जीवित प्राणियों, जिसमें मानव जाति भी शामिल है, के लिए एक सोफ़ा या पालने के रूप में बनाया है। उसके बाद, हम ध्यान से देखेंगे कि जिस तरह एक व्यक्ति बचपन से बड़ा होता है और पालने में लेटना बंद कर देता है, उसी तरह मानव जाति अपने पालने को नष्ट कर देगी और अनंत काल की दुनिया में भेज दी जाएगी। इस अवलोकन के बाद, हम समय और स्थान के प्रतिबंधों से परे एक आध्यात्मिक यात्रा करेंगे, और अतीत के दायरे में प्रवेश करेंगे, "बिजली" की ऐतिहासिक धारा के माध्यम से इसके निवासियों के साथ संवाद करेंगे। हम उस पश्चिमी छोर पर जो कुछ भी हुआ था, उसके बारे में जानेंगे जहाँ हर चमकती हुई वस्तु अस्त होती है, और उससे अपने विचारों के लिए एक ट्रेन का निर्माण करेंगे।

इसके बाद, हम भविष्य की ओर लौटेंगे, जहाँ सूरज नए लोगों का स्वागत करने के लिए उगता है, दूर से खुशियों की सुबह का प्रदर्शन और अवलोकन करता है। हम प्रगति की ट्रेन और श्रम और प्रयास के जहाज पर सवार होंगे, जो दोनों ही ईश्वरीय सहायता को आकर्षित करते हैं, और अपने हाथों में दीपक लेकर समय के उस हिस्से में प्रवेश करेंगे जिसकी शुरुआत तो अंधकारमय है, लेकिन भविष्य उज्ज्वल है। अंत में, हम भावी पीढ़ियों से हाथ मिलाएँगे और उनकी खुशी के लिए उन्हें बधाई देंगे।

इस छोटे से चित्र में एक सुंदर दृश्य है; अगले पन्नों में यह शब्दों के माध्यम से आपके सामने प्रस्तुत होगा। यहाँ चिन्हित भूमि पर इस पुस्तक के आगामी अध्यायों के पेड़ उगेंगे।

हे भाइयो और बहनो! अब मैं आपका हाथ थामकर आपको सत्य के खजाने तक ले जाने के लिए कुछ बातें करूंगा, जिससे आपके अंदर से सत्य का खजाना हट जाए।

आपकी आँखों के सामने भ्रम जो आपको स्पष्ट रूप से देखने से रोकते हैं। ये भ्रम आपकी आँखों पर पर्दा डालते हैं और आपको डराते हैं। भले ही वे आपको देखने से पूरी तरह से न रोकें, वे प्रकाश को आग और मोतियों को कंकड़ के रूप में प्रकट करते हैं। इन भ्रमों से बचें। आपके संदेह और गलत धारणाओं का मुख्य स्रोत कुछ विशेष मामले हैं, जिनमें से कई पृथ्वी से संबंधित हैं। ये पैगंबर की परंपरा है जो कहती है कि पृथ्वी एक बैल और एक मछली पर खड़ी है, और माउंट क़ाफ़ की प्रकृति, ज़ुल-क़रनैन की बाधा (कुरान, 18: 93-96), पहाड़ों का मस्तूलों के रूप में कुरान का विवरण (78: 7), यह कथन कि नरक पृथ्वी के नीचे स्थित है, और निम्नलिखित कुरानिक कथनों में वर्णित अन्य मुद्दे जैसे मामले:

वह बर्फ़ से लदे पहाड़ों से आकाश से ओले बरसाता है (24:43);

और सूर्य अपनी स्थिरता के लिए एक निश्चित अवधि तक अपने लिए निर्धारित मार्ग पर चलता है (36:38);

उसने धरती को (रहने लायक़ अण्डे के आकार में) फैलाया है (79:30);

और धरती कैसी फैली हुई है? (88:20)

मैं इन बातों की सच्चाई स्पष्ट करूंगा ताकि धर्म के दुश्मन धर्म के खिलाफ उनका शोषण न कर सकें और धर्म के मित्रों की आंखें खुल जाएं।

पहला मामला

यह बात सभी जानते हैं और निष्पक्ष दिमागों द्वारा स्वीकार की जाती है कि सत्यापन करने वाले मुस्लिम विद्वान स्पष्ट रूप से या परोक्ष रूप से इस बात पर सहमत हैं कि पृथ्वी गोलाकार है। यदि आपको अभी भी संदेह है, तो आप शारहुल-मकासिद और शारहुल-मवाकिफ से परामर्श कर सकते हैं, जिसमें मध्य युग के महान मुस्लिम धर्मशास्त्री, साद अल-दीन अल-तफ्ताज़ानी [24] और सैय्यद शरीफ अल-जुरजानी[25] पृथ्वी को गेंद की तरह अपने हाथों में पकड़ते हैं और इसके बारे में अवलोकन करते हैं।

---

24 शारह अल-मकासिद, 'आलम अल-कुतुब, बेरूत, 1998, 3:177–189. साद अल-दीन अल-तफ्ताज़ानी (मृत्यु, 1390): तैमूर के शासन के दौरान समर-कंद के तर्कशास्त्र, बयानबाजी, व्याकरण, धर्मशास्त्र और न्यायशास्त्र के एक प्रसिद्ध विद्वान। उनकी शारह अल-अक़ैद अल-नसाफ़िया ("अल-नसाफ़ी द्वारा पंथ की पुस्तक की व्याख्या") मुस्लिम धर्मशास्त्र के मूल कार्यों में से एक है। (अनुवाद)

25 शारह अल-मवाकिफ, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 7:145–147. सैय्यद शरीफ अल-जुरजानी (मृत्यु, 1413): पंद्रहवीं सदी के प्रमुख धर्मशास्त्रियों में से एक। उन्होंने 1374 में इस्तांबुल का दौरा किया और 1377 में वापस आने पर उन्हें शिराज में पढ़ाने का काम दिया गया। शारह अल-मवाकिफ उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। (अनुवाद)

यदि आप किसी अन्य स्रोत की तलाश कर रहे हैं, तो आप इमाम फख्र अल-दीन अल-रज़ी द्वारा कुरान पर की गई विस्तृत व्याख्या की जांच कर सकते हैं,26
मफतिह अल-ग़ैब, और उस महान इमाम ने जो कुछ तुम्हें बताया है उस पर ध्यान दो।

यदि आप अभी भी उनके स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं हैं और पृथ्वी को गोलाकार आकार में फिट नहीं कर सकते हैं, तो एर्ज़ुरम के इब्राहिम हक्की से संपर्क करें।27
आप इमाम अल-ग़ज़ाली से भी मिल सकते हैं और उनसे पूछ सकते हैं कि क्या पृथ्वी के गोलाकार आकार के बारे में मुस्लिम विद्वानों में कोई असहमति है।
वह निश्चित रूप से तुमसे कहेगा, “यदि तुम इसके गोलाकार आकार को स्वीकार नहीं करते, तो यह गलत और निंदनीय है।” क्योंकि उसने अपने समय से ही हम पर यह निर्णय भेजा है: “जो कोई भी धर्म की रक्षा के बहाने इस निर्विवाद तथ्य को नकारता है कि पृथ्वी गोलाकार है, वह धर्म के विरुद्ध एक भयानक अपराध करता है। क्योंकि यह वफ़ादारी नहीं, विश्वासघात है।”28

अगर तुम पढ़ना-लिखना नहीं जानते और इसलिए तुम उन्हें पढ़ नहीं सकते, तो समकालीन विद्वान हुसैन अल-जिसरी29 को सुनो। वह धरती के गोलाकार होने से इनकार करने वालों को ऊंची आवाज में धमकाते हैं और सत्य की ताकत के साथ घोषणा करते हैं, "जो कोई भी धर्म की रक्षा के बहाने धरती के गोलाकार होने से इनकार करता है और दावा करता है कि उसका इनकार धर्म पर आधारित है, वह मूर्ख मित्र है और धर्म को एक बड़े दुश्मन से भी ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।"30

[26] मफतिह अल-ग़ैब, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 2003, 31:48. मुहम्मद इब्न उमर फ़ख़र अल-दीन अल-रज़ी, (मृत्यु, 1210): कुरान के सबसे प्रसिद्ध टीकाकारों में से एक और अपने समय के सबसे उत्कृष्ट विद्वान जो धार्मिक और तर्कसंगत विज्ञान दोनों में पारंगत थे। मफ़तिह अल-ग़ैब कुरान पर उनकी स्मारकीय टिप्पणी का नाम है।

(अनुवाद)

27 इब्राहीम हक्की (1703-1780) अठारहवीं सदी के ओट-टोमन तुर्की के सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। वे पूर्वी तुर्की के इर्ज़ुरम और सिर्ट में रहते थे।
वह एक विपुल, विश्वकोश सूफी मार्गदर्शक और लेखक थे, जिन्होंने धर्मशास्त्र, नैतिकता, गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा जैसे कई विषयों पर लिखा। उनका मारीफतनामे ("ज्ञान की पुस्तक") बहुत प्रसिद्ध है और अभी भी व्यापक रूप से पढ़ा जा रहा है। इस पुस्तक के तीसरे खंड में, एर्ज़ुरम के इब्राहिम हक्की ने पृथ्वी और आकाशीय पिंडों के गोलाकार आकार पर विस्तार से चर्चा की है। (अनुवाद)

[28] तहफ़ुत अल-फ़लासिफ़ा, ("द इनकोहेरेंस ऑफ़ द फिलॉसॉफ़र्स"), दार अल-मा'आरिफ़, काहिरा 1972, पृष्ठ। 80.

[29] हुसैन अल-जिसरी (1845-1909) का जन्म और मुख्य रूप से लेबनान में ही रहा। वह इस्लामी विज्ञान में पारंगत थे और प्राकृतिक विज्ञान में उनकी रुचि थी। उन्होंने एक मदरसा स्थापित किया जहाँ दोनों तरह के विज्ञान पढ़ाए जाते थे। धार्मिक और समकालीन मुद्दों पर उनके विचार सैद नूरसी से काफी मिलते-जुलते थे। (अनुवाद)

30 रिसाले-ए हमीदिया (तुर्की अनुवाद) बहार यायिनलारी, इस्तांबुल, 1980, 365-367।

यदि सत्य, जो बहुत समय से सोया हुआ है, इस ऊंची आवाज से तुम्हारे भीतर न जागे, और तुम्हारा हृदय न खुले, तो इब्न हुमाम31 और फख्रुल इस्लाम32 **जैसे विद्वानों का** हाथ पकड़ो, और इमाम अल-शफीई33 के पास जाओ।
उससे पूछो: “शरीयत में पाँच निश्चित समय पर नमाज़ पढ़ने का आदेश है। लेकिन दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिनके देश में कभी-कभी देर शाम या रात की नमाज़ के लिए समय नहीं होता। दूसरे देशों में ऐसे लोग भी हैं जहाँ सूरज लगातार कई दिनों तक नहीं उगता या लगातार कुछ दिनों तक अस्त नहीं होता। वे रोज़ा कैसे रखते हैं?” उससे फिर पूछो, “नमाज़ के दौरान काबा की ओर मुड़ना अनिवार्य है। लेकिन हम खड़े या बैठे हुए ही काबा की ओर मुड़ सकते हैं। हम नमाज़ के दूसरे कामों जैसे रुकू और सजदा करते समय काबा की ओर कैसे मुड़ सकते हैं?”

यकीन मानिए इमाम अल-शफीई पहले और दूसरे मामले को अक्षांशों के गोलाकार आकार और देशांतरों के अण्डाकार आकार के साथ समझाएंगे।34 वह इस तरह के ठोस तरीके से बात करेंगे, जो उनके पास मौजूद तर्कसंगत सबूतों को प्रदर्शित करते हैं। वह नमाज़ के सभी कामों के दौरान काबा की ओर मुड़ने के मामले के बारे में कहेंगे, "नमाज़ के दौरान हम जिस दिशा में जाते हैं वह प्रकाश की एक लंबवत रेखा है जो आकाश को सर्वोच्च दिव्य सिंहासन से जोड़ती है और आकाश के माध्यम से प्रवेश करती है।

---

31 कमाल अल-दीन मुहम्मद इब्न अब्द अल-वाहिद इब्न हुमाम अल-सिवसी अल-इस्कंदरी (1388-1457) प्रमुख मुस्लिम विद्वानों में से एक थे। वे एक ऐसे परिवार से थे जो तुर्की के सिवास से मिस्र के इस्कंदरिया (अलेक्जेंड्रिया) में आकर बस गए थे। वे एक विधिवेत्ता (फ़कीह) और परंपरावादी (मुहद्दिथ) **दोनों के रूप में प्रसिद्ध थे** । उनकी रचनाओं में फ़तह अल-कादिर शामिल है, जिसमें उन्होंने अल-हिदाया पर विस्तार से लिखा है, **जो इमाम बुरहान अल-दीन अबू अल-हसन अल-मार्जिनानी** (1117-1196) **द्वारा हनफ़ी** फ़िक़्ह पर सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है , जिसमें लंबे व्याख्यात्मक नोट्स हैं। (अनुवाद)

32 फ़ख्र अल-इस्लाम अबुल-हसन अली इब्न मुहम्मद अल-पज़दावी (1009-1089) फ़िक़्ह के हनफ़ी स्कूल में **सबसे प्रमुख कानूनी सिद्धांतकारों या पद्धतिविदों** (उसुलीयुन) **में से एक थे।**
वे ट्रांसोक्सानिया में रहते थे। उसुल अल-दीन (“धर्म के मूल सिद्धांत”) उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है। (अनुवादक)

33 इमाम अल-शफ़ीई, मुहम्मद इब्न इदरीस (मृत्यु 820): शफ़ीई स्कूल ऑफ लॉ की स्थापना की। वे इस्लामी न्यायशास्त्र, हदीस भाषा और कविता में पारंगत थे। उन्होंने अल-उम्म ("आधार"), अल-रिसाला ("पद्धति की पुस्तक") और अहकाम अल-कुरान ("कुरान के निर्णय") लिखे। (अनुवाद)

34 यानी धरती अंडे के आकार की है, जो पूर्व से पश्चिम तक गोलाकार है और उत्तर से दक्षिण तक अंडाकार है। ध्रुवीय या ऐसे ही क्षेत्रों में, जहाँ दिन और रात हमारे सामान्य दिनों और रातों से बहुत लंबे होते हैं या नमाज़ का समय नहीं होता, वहाँ सुबह और शाम के संकेत नियमित रूप से दिखाई देते हैं और लोग उन्हें जानते हैं। वहाँ रहने वाले लोग दूसरे क्षेत्रों में नमाज़ के समय को ध्यान में रखते हुए समय का अनुमान भी लगा सकते हैं, जहाँ हर दिन चौबीस घंटे का होता है और वे रोज़ा रखते हैं या नमाज़ अदा करते हैं। (अनुवाद)

पृथ्वी की सतह से लेकर उसके केंद्र तक।"35 यदि तुम्हारी आँखों पर पड़ा पर्दा हटा दिया जाए, तो तुम्हारी दृष्टि की किरणें नमाज़ के सभी कार्यों को उस दिशा में एकत्र कर देंगी जिस ओर हम नमाज़ के दौरान मुड़ते हैं।

हे भाइयो और बहनो! मैं देख रहा हूँ कि तुम धर्म के विरुद्ध अपने दावों के बारे में निश्चित नहीं हो; तुम अपने विवेक को आश्वस्त नहीं कर सकते, और तुम्हारी सनकें केवल तुम्हारी कल्पना में ही स्थान पा सकती हैं। इसलिए अपने पूर्वाग्रहों को त्याग दो, और यदि पृथ्वी तुम्हारे हृदय में स्थान नहीं पा सकती, जो सत्य के लिए बंद है, लेकिन सनक और भ्रम के लिए खुला है, तो अपना दृष्टिकोण व्यापक करो। इस घर, पृथ्वी के निवासियों से पूछो, क्योंकि वे अपने घर को जानते हैं। वे तुम्हें बताएंगे, "पृथ्वी, जो इस विशाल अंतरिक्ष में हमारा पालना और वाहन है, पागल नहीं है, अव्यवस्थित तरीके से घूम रही है; यह अन्य खगोलीय पिंडों की तरह ईश्वर के उन्हीं नियमों से बंधी है, यह अपने आप कार्य करके उनका उल्लंघन नहीं कर सकती। (वे गोलाकार हैं, जैसे अन्य सभी ग्रह पिंड हैं।)" वे पृथ्वी के गोलाकार आकार के एक और प्रमाण के रूप में मानचित्र भी फैलाएंगे। 36

एक संकेत

ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के ईश्वरीय नियमों ने यह निर्धारित किया है कि यह अतिथिगृह - पृथ्वी, जो मेवलेवी दरवेश की तरह परमानंद में घूमती है - ग्रहों की पंक्ति में खड़ी हो और सूर्य की आज्ञा का पालन करे। क्योंकि अपने मित्र - आकाश - के साथ मिलकर उन्होंने ईश्वर से कहा है, "हम स्वेच्छा से आज्ञाकारिता में आए हैं" (41: 11)।37 आज्ञाकारिता और उपासना तब बेहतर होती है जब सामूहिक रूप से की जाती है। संक्षेप में, ब्रह्मांड के निर्माता ने पृथ्वी को अपनी इच्छानुसार बनाया है। उसने इसे किसी की इच्छा के अनुसार नहीं बनाया है, न ही उसने किसी एक व्यक्ति के विवेक को इसके लिए इंजीनियर बनने दिया है।

---

35 अर्थात्, वह पृथ्वी के गोलाकार आकार और आकाश के गोलाकार स्वरूप की ओर संकेत करता है, जो क्षितिज पर पृथ्वी से मिलते हुए प्रतीत होते हैं। (अनुवाद)

36 पृथ्वी के मानचित्रों पर भी, जो द्वि-आयामी हैं, पृथ्वी के हिस्से उनके वास्तविक आकार के अनुपात में आकार के नहीं दिखते हैं। मानचित्र बनाने वाले पृथ्वी को जिस हिस्से से देखते हैं, वह बड़ा दिखाई देता है, जबकि अन्य हिस्से छोटे दिखाई देते हैं। यदि हम मानचित्र बनाते समय भूमध्य रेखा से पृथ्वी को देखें, तो मध्य भाग अपने वास्तविक आकार के अनुपात में काफी बड़े दिखाई देंगे, जबकि उत्तर और दक्षिण की ओर स्थित हिस्से ध्रुवों की ओर छोटे और छोटे दिखाई देंगे। (अनुवाद)

37 क़ुरआन कहता है, " और उसने आकाश की ओर निर्देश किया, जबकि वह बादल के समान था, और उसे और धरती को आदेश दिया, "तुम दोनों स्वेच्छा से या अनिच्छा से आओ!" उन्होंने कहा, "हम स्वेच्छा से आज्ञापालन करने आए हैं।" (41:11)

एक अनुस्मारक

विश्वास की दुर्बलता तथा कुतर्क की प्रवृत्ति को दर्शाने वाले दृष्टिकोणों में से एक है यह मूर्खतापूर्ण कथन, "यह धर्म के विरुद्ध है, यद्यपि यह एक स्थापित तथ्य है।" जो कोई भी यह मानता है कि जो बात निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुकी है, वह धर्म के विरुद्ध हो सकती है, जो स्वयं शुद्ध सत्य का अवतार है तथा जिसमें प्रत्येक सत्य समाहित है, उसके मन में या तो कुतर्क है, या उसके हृदय में विद्रोह को जन्म देने वाले संदेह हैं, या वह धर्म का नया अनुयायी है तथा अपने भ्रामक विचारों के अनुसार उसकी आलोचना करने के लिए स्वतंत्र होना चाहता है।

दूसरा मामला

यह संदिग्ध है कि क्या यह कथन कि धरती बैल और मछली पर टिकी हुई है, निश्चित रूप से पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - से संबंधित है।
इस कारण से, हम धार्मिक रूप से इसे पैगंबरी परंपरा के रूप में स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं हैं। भले ही यह पैगंबरी परंपरा हो, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इसमें वर्णित बैल और मछली का शाब्दिक उपयोग किया गया था। आप पाँचवें और ग्यारहवें आधार से परामर्श कर सकते हैं। आप देखेंगे कि कैसे कल्पनाएँ शाब्दिक लोगों को सच्चाई से विचलित करती हैं।

इस परंपरा की तीन महत्वपूर्ण व्याख्याएं हैं, जो सभी इस प्रकार हैं:

सही:

पहला: ईश्वरीय सिंहासन के धारकों को कभी-कभी बैल, गिद्ध, मनुष्य या किसी अन्य उपाधि से पुकारा जाता है। ये वास्तव में देवदूत हैं।
इसलिए, विचाराधीन परंपरा में वर्णित बैल और मछली इन स्वर्गदूतों को संदर्भित कर सकते हैं। अन्यथा, एक बैल की पीठ पर ईश्वरीय सिंहासन और पृथ्वी को रखना, एक ऐसा जानवर जो आत्मनिर्भर नहीं है, ब्रह्मांड के आदेश के विपरीत है। इसके अलावा, हम शरिया से सीखते हैं: अस्तित्व की हर प्रजाति के लिए एक फ़रिश्ता नियुक्त किया गया है; यह फ़रिश्ता उस प्रजाति के मामलों का प्रबंधन करता है। फ़रिश्ते को उस प्रजाति के नाम से पुकारा जाता है जिसके लिए वह ज़िम्मेदार है और वह अपने रूप के साथ फ़रिश्तों की दुनिया में प्रकट होता है। एक भविष्यवाणी परंपरा है: "सूर्य हर शाम ईश्वरीय सिंहासन के सामने उगता है, खुद को सजदा करता है, और उसे वापस लौटने की अनुमति दी जाती है।"38

सूर्य के लिए जिम्मेदार देवदूत को "सूर्य" कहा जाता है, और वह सूर्य के आकार का है। इसलिए, जिस सूर्य का उल्लेख पैगंबरी परंपरा में ऊपर जाने के रूप में किया गया है

---

[38] अल-बुखारी, अल-जामी अल-साहिह, "तफसीर सुरा या-सिन" 1; “39; मुस्लिम, अल-जामी अल-साहिह, "ईमान" 250।

ईश्वरीय सिंहासन के सामने वास्तव में यह देवदूत है। धर्मशास्त्र का अध्ययन करने वाले दार्शनिक एक अलग जीवित और बोलने वाली आध्यात्मिक इकाई का उल्लेख करते हैं जो सृष्टि की हर प्रजाति की सहायता के लिए आती है और उस प्रजाति के नाम पर ईश्वर से मदद मांगती है। शरीयत में इन संस्थाओं को पहाड़ों का देवदूत, समुद्र का देवदूत, बारिश का देवदूत आदि कहा जाता है। लेकिन उनका किसी भी चीज़ या किसी भी घटना पर कोई रचनात्मक प्रभाव नहीं होता है। वह जो बिना किसी हस्तक्षेप, मदद या किसी और चीज़ के योगदान के हर चीज़ और हर घटना को बनाता है, वह अकेला ईश्वर है।

सृष्टि में ईश्वर के अलावा किसी का कोई योगदान नहीं है। हालाँकि, लोगों को यह न लगे कि ईश्वरीय शक्ति का हाथ कुछ “निम्न” या स्पष्ट रूप से परेशान करने वाली चीज़ों और घटनाओं में शामिल है, इसलिए ईश्वर अपनी गरिमा और भव्यता के सामने एक पर्दा के रूप में स्पष्ट साधनों और कारणों का उपयोग करता है। लेकिन शुद्ध सत्य और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में, जो कि पंथ का अनिवार्य रूप से संबंध या उद्देश्य है, सब कुछ अपनी पारलौकिक सुंदरता और पवित्रता में मौजूद है।

यहाँ दिव्य शक्ति बिना किसी आवरण के काम करती है। यही वह है जो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ नियति और आदेश देता है।

इस परंपरा का एक और अर्थ है। बैल कृषि के लिए सबसे महत्वपूर्ण पशु है। मछली कई लोगों, खासकर तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की आजीविका का मूल साधन है। अगर कोई हमसे पूछे कि राज्य को क्या टिकाए रखता है, तो हम जवाब दे सकते हैं, “राज्य कलम और तलवार पर निर्भर करता है।” अगर हमसे पूछा जाए कि सभ्यता को क्या टिकाए रखता है, तो हम जवाब दे सकते हैं, “यह विज्ञान, कौशल और अर्थव्यवस्था के बल पर टिका रहता है।” या अगर वे पूछें कि मानवता किस पर टिकी है, तो हम जवाब दे सकते हैं, “यह ज्ञान और श्रम पर टिका रहता है।” पैगंबर, जो सृष्टि के गौरव हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, का यही मतलब हो सकता था जब उन्होंने कहा, “पृथ्वी बैल और मछली पर टिकी है।” अगर जिसने उनसे पूछा कि पृथ्वी किस पर टिकी है, वह विज्ञान को समझने में असमर्थ था-

यदि कोई व्यक्ति उत्तर देता, तो उसे उसकी समझ के स्तर के अनुसार सबसे उपयुक्त उत्तर दिया जाता। अर्थात्, हमारे पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, इस व्यक्ति को प्रतीकात्मक रूप से उत्तर दे रहे होंगे - जिसका अर्थ है कि अधिकांश लोग या तो खेती और कृषि द्वारा जीवन यापन करते थे, जिसके लिए बैल अपरिहार्य थे, या मछली पकड़ कर। चूँकि आबादी का एक बड़ा हिस्सा समुद्र के किनारे रहता था और उनकी मूल आजीविका मछली थी, इसलिए उनकी दुनिया मछली पर ही टिकी हुई है। यह अरबों की कहावत की तरह है, "सारा शिकार जंगली गधे के पेट में है।" चूँकि जंगली गधे कुछ अरब शिकारियों का प्राथमिक लक्ष्य थे, इसलिए वे ऐसा कहने का मतलब यह था कि जो व्यक्ति जंगली गधे का शिकार करता है, उसे दूसरे शिकार का पीछा करने की ज़रूरत नहीं है।

56 तर्क : कुरान की वाक्पटुता को समझने की कुंजी

सृष्टि के गौरव - जिन पर शांति और आशीर्वाद हो - जिन्होंने मजाक करते समय भी हमेशा सच बोला, उनका उत्तर अत्यंत महत्वपूर्ण है।
उन्होंने वह उत्तर दिया जो ज़रूरी और उचित था ताकि प्रश्न पूछने वाला व्यक्ति समझ सके। यह बयानबाज़ी का नियम है कि कभी-कभी पूछने वाले को ऐसा उत्तर मिलता है जिसकी उसे उम्मीद नहीं होती। उत्तर इस तरह से दिया जाना चाहिए कि वह पूछने वाले के लिए उपयोगी और समझने योग्य हो। यह ज़रूरत को भी पूरा करना चाहिए और गलतफहमी या आगे के संदेह या भ्रम को जन्म नहीं देना चाहिए। जब कुछ लोगों ने पैगंबर से - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - नए चाँद के बारे में पूछा, तो सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कुरान में उत्तर दिया, वे तुमसे नए चाँद के बारे में पूछते हैं। कहो: "वे लोगों के लिए (समय अवधि निर्धारित करने के लिए) और हज के लिए निर्धारित समय (चिह्न) हैं।" (2: 189)

चर्चा के अंतर्गत परम्परा का एक तीसरा महत्वपूर्ण अर्थ भी है। वृषभ (बैल) और मीन (मछली) राशि चक्र के दो ज्योतिषीय चिह्न हैं।
भले ही ये संकेत काल्पनिक हों, लेकिन ब्रह्मांड में काम करने वाले दैवीय नियम, जिनमें गुरुत्वाकर्षण का नियम भी शामिल है, इन पर केंद्रित हैं। इस प्रकार, यह कहना कि पृथ्वी राशि चक्र के इन चिह्नों पर खड़ी है, एक वैज्ञानिक वास्तविकता को इंगित करता है। इस तरह की अभिव्यक्ति, उस समय इस्तेमाल की गई जब उस समय के विज्ञान ने सोचा था कि ये संकेत वास्तव में आकाश में मौजूद थे, वर्तमान में अधिक महत्व प्राप्त करता है, क्योंकि खगोल विज्ञान अब मानता है कि वे पृथ्वी की वार्षिक कक्षा से संबंधित हैं।

ऐसा बताया जाता है कि पैगम्बर से दो बार पृथ्वी की स्थिति के बारे में पूछा गया था। एक उत्तर में उन्होंने कहा कि यह मछली पर है। दूसरी बार पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह बैल पर है। जब उन्होंने कहा कि पृथ्वी मछली पर है, तो आकाश में व्याप्त गुरुत्वाकर्षण के नियम की किरणें या धागे मीन राशि पर केन्द्रित होकर प्रतिच्छेदित हो गए और पृथ्वी, जो कुंभ राशि को छोड़ रही थी, इस नियम पर अडिग रही और नियत अवधि तक सृष्टि के वृक्ष की शाखा पर फल की तरह लटकी रही या पक्षी की तरह उतरी। परिक्रमा करते हुए पृथ्वी वृषभ राशि पर पहुंच गई और इस प्रकार पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा कि पृथ्वी बैल पर है।

इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए, हम कह सकते हैं कि परंपरा को शाब्दिक रूप से लेना, जैसा कि कुछ स्वप्नदर्शी करते हैं, इसका अर्थ केवल शाश्वत सत्य को बेतुका मानना है।
दिव्य बुद्धि, और ब्रह्मांड के चमत्कारी क्रम को नष्ट करना,
जो सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता का साक्ष्य देता है।

तीसरा मामला

इसका सम्बन्ध कफ़ पर्वत से है।

एक संकेत

किसी चीज़ के अस्तित्व को जानना और उसकी पुष्टि करना उसकी प्रकृति और पहचान को जानने से अलग है। हमें इन दोनों बिंदुओं को एक दूसरे से अलग करना चाहिए, क्योंकि ऐसी कई चीज़ें हैं जिनके बारे में मनुष्य कल्पना कर सकता है कि वे अस्तित्व में नहीं हैं, हालाँकि उनका अस्तित्व स्पष्ट है। आप सातवें आधार से परामर्श कर सकते हैं।

इसके अलावा, ऐसे कई ग्रंथ हैं जिनके अर्थ के बारे में कई व्यक्तिगत विचार प्रस्तुत किए गए हैं। आप ग्यारहवें आधार से परामर्श कर सकते हैं।

एक अनुस्मारक

इन दो बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए, हम कफ़ पर्वत के मामले की जांच कर सकते हैं। क़ुरआन और सही पैगम्बरी परंपराओं में कफ़ का एकमात्र संकेत यह आयत (50:1) है: कफ़। क़ुरआन की कसम सबसे शानदार है।

इस आयत में वर्णित कफ़ का मूल संदर्भ अरबी वर्णमाला का एक अक्षर है। इसका स्थान दुनिया के पूर्व में नहीं बल्कि मुंह के उस हिस्से में है जो उस व्यंजन की ध्वनि का उच्चारण करता है। इसलिए, इसका कफ़ पर्वत से कोई लेना-देना नहीं है। कफ़ पर्वत का संकेत न होने का एक और तर्क यह है कि शरिया के एक महान विद्वान अल-क़राफ़ी39 ने निर्णायक रूप से इसे खारिज कर दिया है

ऐसे पहाड़ का अस्तित्व। आप चौथे आधार से परामर्श कर सकते हैं

इब्न अब्बास से जो रिपोर्ट मिली है, उसके बारे में कफ़ नामक पहाड़ के अस्तित्व के बारे में। इब्न अब्बास ने जो कुछ भी कहा, वह जरूरी नहीं कि पैगंबर की रिपोर्ट हो, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। न ही हम दूसरों से जो कुछ भी उद्धृत करते हैं, उसे सच मानने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि अपनी युवावस्था के दौरान, इब्न अब्बास ने कुछ चीजों को स्पष्ट करने के लिए इज़राइली स्रोतों से मदद ली थी (जो अन्यथा उनके लिए स्पष्ट नहीं थीं)।

यदि आप कुछ सूफ़ी विद्वानों द्वारा कफ़ पर्वत के बारे में दिए गए वर्णन के बारे में पूछें, तो मैं इसका उत्तर इस प्रकार दूंगा:

---

39 शिहाब अल-दीन अबुल-अब्बास अहमद इब्न इदरीस अल-क़राफ़ी (?–1285) मिस्र में रहते थे। न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) और धर्मशास्त्र (कलाम) दोनों में पारंगत, वे फ़िक़्ह के मालिकी स्कूल के सबसे उत्कृष्ट विद्वानों में से एक थे । उन्होंने प्रकाशिकी पर भी लिखा। किताबुल-इस्तिबसार फ़िमा तुद्रिकुहुल-अबसार ("आँखें क्या समझती हैं, इस बारे में अंतर्दृष्टि की पुस्तक") प्रकाशिकी पर उनकी पुस्तक है। (अनुवाद)

प्रतीकों या काल्पनिक या “आदर्श” रूपों की दुनिया वह जगह है जहाँ सूफ़ी यात्रा करते हैं। वे अपने शरीर से वैसे ही दूर होते हैं जैसे हम अपने कपड़ों से दूर होते हैं; इस प्रकार, वे इस अजूबों की दुनिया में आध्यात्मिक यात्रा करने में सक्षम होते हैं। **इस दुनिया** में कफ़ को उसी तरह देखा जाता है जैसा वे इसका वर्णन करते हैं। जिस तरह आकाश अपने सितारों के साथ दर्पण में प्रतिबिंबित होता है, उसी तरह हमारे भौतिकता की दुनिया में एक छोटी सी चीज़ - एक मानसिक या आध्यात्मिक वास्तविकता मूर्त रूप में - काल्पनिक रूपों की दुनिया में एक ऊंचे पेड़ की तरह बन जाती है। हमें इन दो दुनियाओं की वास्तविकताओं को एक दूसरे के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए। जो मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी के शब्दों का वास्तविक अर्थ समझता है, वह इसकी पुष्टि करेगा। आम लोग कफ़ को पृथ्वी के चारों ओर पहाड़ों की एक श्रृंखला के रूप में कल्पना करते हैं जिसमें कई महान चोटियाँ शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से लाखों मील दूर है। वे आकाश के किनारे को छूते हैं। लोग अपनी कल्पना की यात्रा के अनुसार वर्णन करते हैं। यदि आप उनकी कल्पनाओं का मूल्य देखना चाहते हैं, तो आप तीसरे आधार को एक दीपक के रूप में उपयोग कर सकते हैं, और इसके साथ इस अंधकार में प्रवेश कर सकते हैं।

अगर आप इस मामले पर मेरे निजी विचार के बारे में पूछें: मुझे पूरा यकीन है कि कफ़ मौजूद है लेकिन मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता कि यह क्या है। अगर मुझे इसकी प्रकृति के बारे में कोई विश्वसनीय और विश्वसनीय रूप से वर्णित पैगंबरी परंपरा मिलती है, तो मैं यकीन करूँगा कि पैगंबर ने जो कहा वह निश्चित रूप से सच है, और लोगों द्वारा विकसित की गई कल्पनाओं को नज़रअंदाज़ करते हुए यह समझने की कोशिश करूँगा कि उनका क्या मतलब था।

क्योंकि कभी-कभी ऐसा होता है कि हम किसी कथन का अर्थ उसके वक्ता के वास्तविक अर्थ के अलावा अन्य अर्थ निकाल लेते हैं।

पर्वत श्रृंखलाओं के रूप में वर्णित कफ़ हिमालय हो सकता है, जिसमें कंचनजंगा (8,586 मीटर) (और K2 या दपसांग, केचु या केतु) की दूसरी सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला शामिल है, जो अतीत में सभ्य और असभ्य लोगों को अलग करती थी। कुछ लोग कहते हैं कि पुरानी दुनिया के कई पहाड़ इसी श्रृंखला से फैले हुए हैं। इसलिए यह सोचा जा सकता है कि यह विचार कि कफ़ पूरी दुनिया को घेरने वाली एक पर्वत श्रृंखला है, इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि हिमालय कई पर्वत श्रृंखलाओं की "माँ" थी।

कफ़ के प्रति एक और दृष्टिकोण यह हो सकता है कि प्रतीकों या काल्पनिक या "आदर्श" रूपों की दुनिया भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच एक मध्यवर्ती क्षेत्र है।

---

[40] मुहीउद्दीन इब्न अल-अरबी (1165-1240): सबसे महान और सर्वाधिक प्रसिद्ध सूफ़ी गुरुओं में से एक।
अस्तित्व की पारलौकिक एकता के उनके सिद्धांत, जिसे अधिकांश लोग अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के रूप में गलत समझते हैं, ने उन्हें अंतहीन विवादों का लक्ष्य बना दिया। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं फुसुस अल-हिकम और अल-फ़ुतुहात अल-मक्कियाह। (अनुवाद)

अदृश्य दुनिया। प्रतीकों या काल्पनिक रूपों की दुनिया आकार में भौतिक दुनिया से मिलती जुलती है और इसमें निहित अर्थों में अदृश्य दुनिया से मिलती जुलती है। जो कोई भी चाहे वह इस दुनिया में ठोस आध्यात्मिक खोज या सच्चे सपनों की खिड़की से या कल्पना की शक्ति से प्रवेश कर सकता है। उस दुनिया के अस्तित्व के लिए बहुत सारे सबूत हैं; हमारी दुनिया के अर्थ वहाँ अलग-अलग रूप लेते हैं। इसलिए कफ़

जो इस दुनिया में है, वह उस असाधारण कफ़ का बीज हो सकता है जो उस दुनिया में मौजूद है।

ईश्वर की प्रभुता असीम है और उसे हमारे छोटे से क्षेत्र तक सीमित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, कफ़ के कई असाधारण पहलू हो सकते हैं। हालाँकि हमारे क्षेत्र में लाखों मील की दूरी शामिल नहीं है, फिर भी यह सोचना अनुचित नहीं है कि कफ़ कोई पारदर्शी और अदृश्य चीज़ है या यह आकाश के किनारे को छूती है, जो एक कसी हुई या सीधी लहर है।

स्पष्टीकरण का एक और तरीका: ऐसा क्या है जो कफ़ को क्षितिज के साथ फैली हुई पर्वत श्रृंखला होने से रोकता है? क्षितिज शब्द का अरबी मूल उफ़ है, और हो सकता है कि इसी मूल से कफ़ की उत्पत्ति हुई हो। क्योंकि हम जहाँ भी देखते हैं, हमें एक घेरा दिखाई देता है, जो संकेंद्रित वृत्तों की एक श्रृंखला से बना होता है। हम क्षितिज से परे नहीं देख सकते, और उससे परे जाने का काम कल्पना की शक्ति पर पड़ता है। कल्पना की शक्ति देखती है कि क्षितिज के साथ पहाड़ों की एक श्रृंखला है जो दुनिया को घेरती है और आसमान को छूती है। चूँकि धरती और क्षितिज गोलाकार हैं, इसलिए भले ही यह श्रृंखला लाखों मील तक फैली हो, इसे पहाड़ों की एक एकल, जुड़ी हुई श्रृंखला के रूप में देखा जाता है।

चौथा मामला

यह वह अवरोध है जो ज़ुल-क़रनैन ने बनाया है (क़ुरान, 18:92-98)।

जैसा कि पहले कहा गया है, किसी चीज़ के अस्तित्व को जानना और उसकी पुष्टि करना उसकी प्रकृति और पहचान को जानने से अलग है। इसके अलावा, किसी भी लेखन, लेख या पुस्तक में कई निर्णय हो सकते हैं। इनमें से कुछ निर्णय स्पष्ट, स्थापित और प्राथमिक महत्व के होते हैं, जबकि अन्य अनुमानात्मक या अस्पष्ट होते हैं। यदि किसी जानकार व्यक्ति से बहुत पहले लिखी गई किसी पुस्तक में चर्चा किए गए विषय के बारे में पूछा जाए और जिसे समय के साथ आंशिक रूप से बदल दिया गया है, तो उत्तर दो में से एक या दोनों रूप लेगा। या तो यह प्रश्नकर्ता के प्रश्न के उद्देश्य और शर्तों के अनुरूप होगा, या यह उस तरह का होगा जो आगे की अंतर-सम्बन्धी चर्चा को जन्म देता है।

प्रश्नकर्ता द्वारा किया गया एक रचनात्मक प्रयास। इसलिए, वास्तविकता से सहमत होने और प्रश्नकर्ता को आश्वस्त करने के अलावा (कि पूछे गए शब्दों में उसके प्रश्न का उत्तर दिया गया है), एक उचित उत्तर समस्या के अन्य पहलुओं को भी हल कर सकता है, जिसकी प्रश्नकर्ता ने प्रश्न पूछते समय उम्मीद नहीं की थी। भले ही उत्तर हमेशा प्रश्नकर्ता के प्रश्न पूछने के उद्देश्य के अनुरूप न हो, लेकिन मामले के बारे में अपने ज्ञान के अनुसार उत्तर लागू करके, उसे वास्तव में सही उत्तर मिला। इसके अलावा, यदि उत्तर देने वाला व्यक्ति उन परिस्थितियों को ध्यान में रखता है जिनमें प्रश्न पूछा गया है, तो उत्तर में निहित जीवन शक्ति के आधार पर उत्तर कई अन्य उद्देश्यों में योगदान देगा।

कुरान में उत्तर इसी प्रकार के हैं।

हमें कुरान के किसी भी कथन में पाए जाने वाले स्पष्ट निर्णयों और जो स्पष्ट नहीं हैं, के बीच अंतर करना चाहिए, बिना यह भूले कि स्पष्ट निर्णयों पर विश्वास करना अनिवार्य है। ज़ुल-क़रनैन के बारे में प्रश्न के कुरान के उत्तर में स्पष्ट बिंदुओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। इस उत्तर (18:83-98) के अनुसार, ज़ुल-क़रनैन एक ऐसा व्यक्ति था जिसे ईश्वर की पुष्टि और सहायता प्राप्त थी। ईश्वर की अनुमति और मार्गदर्शन से, उसने कुछ असभ्य लोगों के हमलों और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए दो पहाड़ों के बीच एक बाधा बनाई - गोग और मागोग उन दो "कबीलों" के नाम हैं जो भ्रष्टाचार और अव्यवस्था में लिप्त थे। जब ईश्वरीय आदेश आएगा, तो बाधा को नष्ट कर दिया जाएगा। ये और कुछ अन्य स्पष्ट सत्य जो ज़ुल-क़रनैन के कुरान के विवरण में मौजूद हैं, निश्चित रूप से पुष्टि की गई मानी जानी चाहिए। उनमें से किसी का भी इनकार करने का मतलब अविश्वास है। लेकिन जो कुछ वर्णित है और उसके अर्थों का अनुमान लगाया जा सकता है, उसके बारे में कुरान स्पष्ट नहीं है। इस नियम के अनुसार कि किसी सामान्य अर्थ को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किया गया कथन आवश्यक रूप से उस सामान्य अर्थ से संबंधित या उससे संबंधित या उससे अपेक्षित किसी विशेष अर्थ के लिए तर्क या प्रमाण नहीं होता है, और इस नियम के अनुसार कि किसी कथन में जो कुछ भी उसके अंतर्निहित और आवश्यक अर्थ के संबंध में स्पष्ट रूप से कहा गया है, वह उसके लिए पर्याप्त है, यह कहा जा सकता है कि कुरान यहाँ आवश्यक रूप से विस्तार से कुछ भी संकेत नहीं करता है। लेकिन चूँकि यह इसे स्पष्ट रूप से अस्वीकार नहीं करता है, इसलिए हम इसका अध्ययन और टिप्पणी कर सकते हैं।

इसका मतलब यह है कि स्पष्ट अर्थ और स्पष्ट अर्थ द्वारा स्थापित स्पष्ट, प्रत्यक्ष सत्य के अलावा सभी व्याख्याएं, व्याख्याएं और विश्लेषण केवल अनुमानात्मक सुझाव हैं। उन्हें अन्य संकेतों द्वारा पुष्टि की आवश्यकता होती है। व्याख्याकार उनके बारे में तर्क कर सकते हैं। उन्हें दिया जा सकता है

भिन्न अर्थ। उनके बारे में सत्यापन करने वाले विद्वानों के बीच मतभेद यह दर्शाते हैं कि स्पष्ट, मूल अर्थों के अलावा अन्य अनुमान और अर्थ अनुमानात्मक हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, कुछ लोगों ने आयतों से भिन्न, परस्पर विरोधी निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया, मानो उत्तर प्रश्नकर्ता के उद्देश्य के अनुसार ही आना चाहिए; उन्होंने प्रश्न पूछने के पीछे की त्रुटि या छिपे हुए उद्देश्य पर विचार नहीं किया या उन आयतों से अर्थ निकालने के पीछे की त्रुटि या छिपे हुए उद्देश्य पर विचार नहीं किया जो प्रश्नकर्ता को उकसाने वाले स्रोतों के अनुसार उत्पन्न हुई थीं। उन्होंने मूल अर्थ में अपनी व्यक्तिगत व्याख्याएँ और कुछ ऐसे व्यक्ति या घटनाएँ जोड़ दीं जिन्हें वे कुरान के विवरण के अनुरूप मानते थे। यहाँ तक कि यह भी पर्याप्त नहीं था; उन्होंने इन्हें इस तरह प्रस्तुत किया मानो वे मूल, स्पष्ट अर्थ हों। शाब्दिक अर्थवादियों ने ऐसी व्याख्याओं और अनुमानों को मूल अर्थ का हिस्सा मान लिया, जबकि सत्यापन करने वाले विद्वानों ने उन्हें हानिरहित कहानियाँ माना और उनकी आलोचना नहीं की। हालाँकि, बाइबल के वर्तमान संशोधित संस्करणों पर आधारित या उनसे उधार ली गई कुछ व्याख्याओं और निष्कर्षों को स्वीकार करना इस्लाम के पंथ और पैगम्बरों की पापहीनता के विपरीत है। लूत और डेविड जैसे पैगम्बरों के बारे में बाइबल में वर्णित कहानियाँ, उन पर शांति हो, मेरी कही गई बातों की गवाही देती हैं।

चूँकि माध्यमिक या व्याख्यात्मक मामलों में निगमनात्मक तर्क की अनुमति है, जहाँ कुरान और सही पैगंबरी परंपरा चुप है, और ईश्वर की मदद पर भरोसा करते हुए टिप्पणी करना जायज़ है, मैं कहता हूँ: कुरान और हमारे पैगंबर का ज़ुल-क़रनैन, गोग और मागोग से जो मतलब था, और ज़ुल-क़रनैन ने जो अवरोध खड़ा किया, वह बिल्कुल सच है, और इन पर विश्वास करना अनिवार्य है। कुरान और हमारे पैगंबर ने जो कुछ भी कहा और जिसका मतलब था, उस पर विश्वास करना धर्म के मूल सिद्धांतों में से एक है।

हालाँकि, जब कुरान और पैगंबर ने जो कहा है वह स्पष्ट नहीं है, तो हमें टिप्पणी करने की अनुमति है। इसलिए, चर्चा के तहत मामलों के बारे में, मैं निम्नलिखित कहता हूँ:

मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूँ जो दावा करते हैं कि ज़ुल-क़रनैन सिकंदर महान थे। सबसे पहले, यह नाम इस पर फिट नहीं बैठता। कुरान के कुछ व्याख्याकार दावा करते हैं कि वह एक राजा थे, जबकि कुछ के अनुसार, वह एक फ़रिश्ता थे, अन्य कहते हैं कि वह एक पैगम्बर थे, और कुछ ऐसे भी हैं जो सोचते हैं कि वह एक संत थे। कुरान में यह निश्चित है कि ज़ुल-क़रनैन वह व्यक्ति थे जिन्हें ईश्वर ने पुष्टि और शक्ति दी थी और जिन्होंने कुछ सभ्य और असभ्य लोगों के बीच एक दीवार खड़ी की थी

लोगों में भी बाधा के बारे में मतभेद हैं। कुछ अंतर-

प्रचारकों का कहना है कि यह चीन की महान दीवार थी। कुछ अन्य लोग इसे कुछ पहाड़ों के बीच खोजते हैं, और फिर भी कुछ अन्य मानते हैं कि यह एक अवरोध था जो समय के साथ गायब हो गया। जहाँ भी और जो भी था या है, यह निश्चित है कि यह कुछ बर्बर, लूटपाट करने वाली जनजातियों के हमलों को पीछे हटाने के लिए एक बड़ी बाधा थी।

गोग और मागोग की जनजातियों के बारे में व्याख्याकारों के बीच अलग-अलग विचार हैं। कुछ व्याख्याकारों के अनुसार, वे दो जनजातियाँ थीं जो नूह के बेटे याफास के वंशज थे, जबकि कुछ अन्य का मानना है कि वे कुछ मंगोलियन और मंचूरियन जनजातियाँ थीं, या दो जनजातियाँ थीं जो उत्तर-पूर्वी एशिया में रहती थीं। अभी भी कुछ ऐसे हैं जो इस विचार को मानते हैं कि वे एक बड़ी सेना थीं जिन्होंने दुनिया को अराजकता में बदल दिया, जबकि कुछ अन्य मानते हैं कि वे ईश्वर के मानव और गैर-मानव प्राणियों में से कुछ प्राणी हैं जो पृथ्वी की सतह पर या उसके नीचे रहते हैं और जो अंतिम दिन से पहले दुनिया को बड़ी अराजकता में डाल देंगे। ऐसे अलग-अलग विचारों के बावजूद, सभी व्याख्याकार इस बात पर सहमत हैं कि गोग और मागोग दो बर्बर जनजातियाँ हैं जो सभ्य दुनिया के अंत का संकेत देती हैं।

इस बारे में कई राय हैं कि बाधा कैसे आई या खत्म हो जाएगी। कुछ के अनुसार, यह समय के अंत से पहले नष्ट हो जाएगी, जबकि अन्य कहते हैं कि इसके नष्ट होने के संकेत पहले ही दिखाई दे चुके हैं, और भविष्य में इसे पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाएगा। कुछ और लोग भी हैं जो मानते हैं कि यह बहुत पहले ही नष्ट हो गई थी। जिस आम बात पर सभी सहमत हैं वह यह है कि बाधा के नष्ट होने का मतलब है पृथ्वी की दाढ़ी में एक सफेद बाल का आना और मानव जाति के बुढ़ापे का संकेत।

जब आप इन सभी व्याख्याओं पर विचार करते हैं, तो यह निष्कर्ष निकालना संभव है कि चीन की महान दीवार का अवरोध के अर्थ या पहचान में हिस्सा हो सकता है। हज़ारों किलोमीटर तक फैली यह दीवार दुनिया के सात अजूबों में से एक है, और, कम से कम इसके निर्माण की शुरुआत में या किसी अवधि के दौरान, इसे ईश्वर द्वारा पुष्टि और मजबूत किए गए किसी व्यक्ति द्वारा बनाया गया होगा। उस समय इसे दुनिया के सभ्य लोगों को बर्बर लोगों की विनाशकारी शक्ति से बचाने के लिए बनाया गया था। अवरोध का विनाश दुनिया के अंतिम विनाश के संकेतों में से एक है। इसका पूरी तरह से गायब होना कुछ अलग है। पैगंबर ने अपनी दो उंगलियों को एक साथ रखा और घोषणा की, "मैं और दुनिया का अंत इन दो उंगलियों की तरह हैं,"41 जिसका अर्थ है कि वह पैगंबरों में से अंतिम थे, और सबसे महान पैगंबरों में से एक थे।

---

[41] अल-बुखारी, अल-जामी अल-साहिह, "रिकाक़" 39; मुस्लिम, अल-जामी अल-साहिह, "फ़ितन" 132 135; अल-तिर्मिधि, सुनान, "फ़ितन" 39.

दुनिया के अंत के संकेत। तो, खुशी के युग के बाद बाधा का विनाश - पैगंबर के युग - एक संकेत क्यों नहीं होना चाहिए कि समय का अंत निकट है? बाधा का विनाश पृथ्वी के चेहरे पर एक झुर्री का संकेत देता है, जो इसकी बुढ़ापे का संकेत देता है। बाधा के विनाश और दुनिया के अंतिम विनाश या दुनिया के जीवनकाल में प्रलय के बीच एक समय अवधि हो सकती है जो देर दोपहर और शाम के बीच के समय की तरह है; वह समय अवधि सैकड़ों या हज़ारों साल तक चल सकती है। इसी तरह, गोग और मागोग द्वारा होने वाली उथल-पुथल और विनाश मानव जाति के बुढ़ापे में बुखार हो सकता है।

बारहवें आधार के आरंभ में की गई टिप्पणी चिंताजनक है-
कथा और पाठ को ध्यान से पढ़ने से आपके लिए एक द्वार खुल जाएगा। यह इस प्रकार है:

कुरान ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख कुछ महत्वपूर्ण सबक देने के लिए करता है, और इन घटनाओं में से कुछ ऐसे बिंदु चुनता है जो जीवन के नाभिक की तरह हैं और जो इसके एक या कुछ मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। हालाँकि एक कहानी की आग और रोशनी और उससे मिलने वाला सबक साथ-साथ नहीं होते (यानी, कहानी के साथ सबक का उल्लेख नहीं किया जाता बल्कि उससे अनुमान लगाया जाता है), फिर भी शैली उन्हें एक-दूसरे के बगल में खड़े करीबी दोस्त के रूप में दिखा सकती है, और मन उन्हें ऐसा ही देख सकता है। लेकिन चूँकि एक घटना सबक सिखाने के लिए बयान की जाती है, इसलिए विवरण महत्वपूर्ण नहीं है। हमें विवरण पर विचार किए बिना सबक लेना चाहिए। इसके अलावा, जब आप दसवें आधार से परामर्श करते हैं, तो आप देखेंगे कि एक रूपक दूसरे के लिए एक द्वार खोलता है। वाक्य, उसने (ज़ुल-क़रनैन) इसे (सूर्य को) गर्म और काले, मैले पानी के झरने में डूबते देखा (18: 86), शाब्दिक अर्थों को खारिज करता है।

यह याद रखना चाहिए कि अरबी भाषा के माध्यम से प्रकट किए गए कई दिव्य सत्यों और प्रमाणों की कुंजी संक्षिप्त, आलंकारिक या रूपक शैलियों पर आधारित अलंकारिक वाक्पटुता है। उन्हें समझने की कुंजी ईश्वरीय वाणी के कथनों के बारे में लोगों द्वारा की जाने वाली अटकलें नहीं हैं। यदि आप चाहें, तो दसवें आधार के निष्कर्ष से परामर्श करें, जिससे आप अमृत प्राप्त कर सकते हैं। यह भी संभव है कि बाधा, जिसकी सटीक पहचान और स्थान हमें अज्ञात है, दुनिया में कहीं हो सकती है, और प्रलय के दिन दुनिया के विनाश तक जीवित रहेगी।

एक संकेत

घर को टिकाऊपन के लिए नहीं बनाया जाता, न ही उसका कोई उपयोग होता है। घर इसलिए बना होता है क्योंकि उसमें लोग रहते हैं, लेकिन आम तौर पर वह अपने निवासियों से ज़्यादा समय तक जीवित रहता है। इसी तरह,

किला एक निश्चित अवधि तक बिना किसी उपयोग के नहीं रहता; यह इसलिए बना रहता है कि लोग इसमें शरण लें, लेकिन यह आमतौर पर उन लोगों से ज़्यादा समय तक टिका रहता है जो इसमें शरण लेते हैं। ऐसी बहुत सी इमारतें हैं जो रहने या शरण लेने के लिए बनाई गई थीं, लेकिन वे खाली और बेकार पड़ी हैं। (इसलिए, हालाँकि ज़ुल-क़रनैन ने बर्बर लोगों के हमलों के खिलाफ़ अवरोध बनाया, लेकिन इसके इस्तेमाल के खत्म हो जाने पर इसे नष्ट करने की ज़रूरत नहीं है। यह संभव है कि यह दुनिया के विनाश तक बचा रहे।) इस वास्तविकता से अनभिज्ञता या लापरवाही ने कई तरह की कल्पनाओं और गलतफ़हमियों को जन्म दिया है।

एक अनुस्मारक

ज़ुल-क़रनैन और कुछ प्रासंगिक मामलों के बारे में मैंने जो विस्तृत व्याख्या की है, उसका कारण यह है कि मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि किसी कथन के सटीक अर्थ को उसकी व्याख्याओं से, किसी निश्चित बात को किसी अनुमान से, किसी चीज़ के अस्तित्व को उसकी प्रकृति से, किसी निर्णय को (स्रोत ग्रंथों में ही) दूसरों की व्याख्याओं से, किसी कथन के मूल अर्थ को उस अर्थ से संबंधित बिंदुओं से, तथा किसी घटना पर उसके घटित होने की संभावना को ध्यान में रखकर विचार करने की आवश्यकता है।

पांचवां मामला

नरक धरती के नीचे है। अहल अल-सुन्नाह वल-जमाआ, यानी मुसलमानों में सुन्नी बहुसंख्यक, इसके सटीक स्थान के बारे में निश्चित नहीं हैं।

हालांकि, वे आम तौर पर स्वीकार करते हैं कि नरक पृथ्वी के नीचे है। इसके आधार पर, मैं कहूंगा कि अन्य क्षेत्रों की तरह, पृथ्वी भी सृष्टि के विशाल वृक्ष के फलों में से एक है, जो स्वर्ग में तुबा वृक्ष जैसा दिखता है। फल के नीचे वृक्ष की सभी शाखाएँ हैं। ईश्वर का प्रभुत्व अनंत है, और सृष्टि के वृक्ष ने अपनी शाखाएँ हर जगह फैला रखी हैं। इसलिए, नरक उन शाखाओं में से एक पर स्थित है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि यह पृथ्वी के नीचे पृथ्वी से सटा हुआ है या उससे कुछ दूरी पर है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, आग, विभिन्न रूपों में, ब्रह्मांड के एक बड़े हिस्से में फैली हुई है। यह दर्शाता है कि नरक, आग का स्रोत जो अनंत काल तक मानव जाति के साथ रहेगा, एक दिन अपना पर्दा फाड़ देगा, मानव जाति को इसका सामना करने के लिए तैयार होने के लिए कहेगा, और अपने सभी भय के साथ सामने आएगा। मैं आपका ध्यान निम्नलिखित बिंदु की ओर आकर्षित करना चाहूँगा:

धरती के नीचे का मतलब धरती का अंदरूनी हिस्सा है, उसका केंद्र। इसका मतलब है कि धरती अपने अंदर जहन्नम के पेड़ जक्कुम का बीज रखती है। एक दिन ऐसा आएगा जब यह बीज अंकुरित होकर खिलेगा। धरती जो अंतरिक्ष में घूमती है, इस बीज से ऐसी चीज़ को जन्म देगी कि भले ही उसमें पूरी जहन्नम न समाए, लेकिन जहन्नम का कुछ हिस्सा ज़रूर होगा और वह हिस्सा क़यामत के बाद जहन्नम बन जाएगा और यही बाग़ियों का ठिकाना होगा।

भले ही अब नरक तक नहीं पहुंचा जा सकता, लेकिन गणित और भूविज्ञान हमें वहां ले जाएंगे। पृथ्वी के केंद्र की ओर हर 33 मीटर नीचे उतरने पर गर्मी 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाती है। इस प्रकार, चूंकि पृथ्वी की त्रिज्या 6,000 किलोमीटर है, इसलिए माना जाता है कि केंद्र का तापमान लगभग 200,000 डिग्री सेल्सियस है। यह गर्मी, पृथ्वी की सतह पर मौजूद गर्मी से दो सौ गुना अधिक तीव्र है, जो अधिकतम 1,000 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकती है, यह पैगंबरी परंपरा के साथ सहमत है जो कहती है, "नरक की गर्मी हमारी गर्मी से दो सौ गुना अधिक तीव्र है।"42 इसके अलावा, नरक का कुछ हिस्सा ठंड से जलता है। आग की एक डिग्री है जिसे नार-ए-बैदा (सफेद आग) कहा जाता है। यह अपने आस-पास गर्मी नहीं छोड़ती; बल्कि, यह गर्मी को अवशोषित करती है, और आसपास की हवा को ठंडा कर देती है।

एक अनुस्मारक

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि अनंत काल की दुनिया को इस दुनिया के तराजू पर नहीं मापा जा सकता। यदि आप धैर्य रखते हैं, तो आप इस पुस्तक के तीसरे भाग के अंत में परलोक से परिचित हो जाएँगे।

एक संकेत

ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था की गवाही से, जो विज्ञान द्वारा प्रमाणित है; आगमनात्मक तर्क का मार्गदर्शन (अर्थात्, व्यक्तियों और प्रजातियों में देखी गई मृत्यु और पुनरुद्धार की घटनाएं अंतिम सार्वभौमिक मृत्यु और पुनरुद्धार का संकेत देती हैं); मानव सार का संकेत; मानव महत्वाकांक्षाओं की असीमता का संकेत; हर दिन और हर वर्ष देखे जाने वाले पुनरुत्थान के असंख्य उदाहरणों की याद; यह तथ्य कि सृष्टि में कुछ भी व्यर्थ नहीं है; इस वास्तविकता का ज्ञान कि प्रत्येक-

---

42 समान परंपराओं के लिए, अल-बुखारी, वही देखें । मुस्लिम, वही, "स्वर्ग" 29; अल-तिर्मिधि, सुनान, "जहन्नम" 7.

किसी भी चीज़ का निर्माण किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया जाता है; असीम ईश्वरीय दया का प्रदर्शन; और सबसे महत्वपूर्ण बात, पैगम्बर की निर्णायक घोषणाएँ, जिन्होंने हमेशा सच बोला; और चमत्कारी कुरान का मार्गदर्शन -
इन सभी (वैज्ञानिक, तर्कसंगत और धार्मिक) प्रमाणों से आठ दरवाजे और दो खिड़कियां निकलती हैं जो तर्क के दृष्टिकोण से स्वर्ग में अनुभव की जाने वाली शाश्वत खुशी की ओर खुलती हैं।

छठा मामला

यह एक स्थापित तथ्य है कि अवतरित कुरान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक चमत्कार है। इसकी चमत्कारिकता या अद्वितीयता मुख्य रूप से इसकी वाक्पटुता की बेजोड़ डिग्री में निहित है। वाक्पटुता शैली के कुछ तत्वों पर आधारित है, जिसमें विशेष रूप से रूपक, रूपक और भाषण के अन्य अलंकार शामिल हैं। जो व्यक्ति कुरान को इन तत्वों की दूरबीन से नहीं देखता, वह इसके गुणों को नहीं देख सकता। क्योंकि ईश्वर, जिसने अरबी भाषा की शैली के माध्यम से कुरान में सभी ज्ञान प्रवाहित किए हैं, वह मनुष्यों की भावनाओं, संवेदनाओं और समझ के स्तरों पर विचार करता है। ऐसा होने के कारण, कुरान के व्याख्याकारों को कुरान का पूरा सम्मान करना चाहिए और इसलिए, उन चीजों के आधार पर इसकी व्याख्या करने का प्रयास नहीं करना चाहिए जो वाक्पटुता की छाप नहीं रखती हैं। क्योंकि यह सबसे स्पष्ट और उज्ज्वल सत्यों में से एक के रूप में स्थापित किया गया है कि जिस तरह कुरान का अर्थ या विषयवस्तु पूरी तरह से सत्य है, उसी तरह इसमें पूरी तरह से वाक्पटु शैली और शब्द भी हैं, जो अर्थ के रूप या मूर्त रूप हैं। इस कारण से, जो कोई भी व्याख्या करते समय अपने विचारों को इस स्रोत पर आधारित नहीं करता है, वह कुरान को उसका हक देने के संबंध में "तौलने और मापने में धोखा देने वाले धोखेबाजों" में से एक बन जाएगा। मैं कुछ महत्वपूर्ण उदाहरणों का उल्लेख करूँगा:

पहला: हमने पहाड़ों को मस्तूल बना लिया (78:7) (अल्लाह सबसे अच्छा जानता है।)
कविता में अलंकारिक शैली से ऐसा आभास होता है कि पृथ्वी अंतरिक्ष के सागर में चलने वाला एक जहाज है।43 इसे पहाड़ों द्वारा स्थिर बनाया गया है, जो इसके मस्तूल हैं, और इस प्रकार यह हवा में संतुलित है। इसलिए, पहाड़ उस जहाज के मस्तूल हैं।

दूसरा, धरती के पेट में होने वाले कंपन को पहाड़ों के ज़रिए नियंत्रित किया जाता है। पहाड़ धरती के छिद्रों की तरह हैं।

---

43 चूँकि अंतरिक्ष ईथर से भरा है, जो एक व्यापक गैस जैसा तरल पदार्थ है, सैद नूरसी इस शब्द का उपयोग करते हैं, " अंतरिक्ष का महासागर।" (अनुवाद)

पेट में अशांति है, तो धरती पहाड़ों से सांस लेती है और बाहर छोड़ती है और उसका गुस्सा रुक जाता है। इसका मतलब है कि धरती की शांति और मौन पहाड़ों के माध्यम से कायम रहता है।

तीसरा, पृथ्वी के सुधार का आधार मानवता है, और मानव जीवन का आधार वायु, जल और मिट्टी का संरक्षण है, जो जीवन के स्रोत हैं। पहाड़ ही हैं जो इसे सुरक्षित रखते हैं।

पहाड़ जलाशय होने के कारण पानी को फिल्टर करने और उसकी ताज़गी को बनाए रखने का काम भी करते हैं। चूंकि वे हवा में घुली हानिकारक गैसों को सोखकर गर्मी और ठंड को संतुलित करते हैं, इसलिए वे हवा को शुद्ध करने में सक्षम होते हैं। इसके अलावा, वे मिट्टी के स्रोत भी हैं और मिट्टी को समुद्र और दलदलों के हमलों से भी बचाते हैं।

चौथा, धरती के लिए यह उपमा यह विचार देती है कि यदि कोई व्यक्ति कल्पना के गुब्बारे में ऊपर उड़ता है और पहाड़ों की श्रृंखलाओं को नीचे देखता है, तो वह कल्पना कर सकता है कि धरती खानाबदोशों के तंबू हैं और पहाड़ उनके ध्रुव हैं। यदि आप जिस बिंदु पर चढ़े हैं, वहां से आप ज्ञान और विज्ञान की दूरबीन से नीचे धरती, मानवता के पालने और आकाश, उठे हुए गुंबद को देखते हैं, और पहाड़ों की श्रृंखलाओं के साथ बने क्षितिज से सीमित आकाश को धरती पर स्थापित तम्बू के गुंबद के रूप में कल्पना करते हैं और पहाड़ों के मस्तूलों से जकड़े हुए हैं, तो कोई भी आप पर दोष नहीं लगाएगा।

आठवें प्रकरण में सम्मिलित किये जाने वाले “एक अनुस्मारक” अनुभाग में कुछ अन्य उदाहरण दिये जायेंगे।

सातवां मामला

लोगों के मन को भ्रमित करने तथा कुरान की प्रामाणिकता पर संदेह उत्पन्न करने के लिए कुछ लोगों ने केवल शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित बातों पर आपत्तियां रखी हैं:

> उसने (ज़ुल-क़रनैन ने) उसे गर्म और काले, कीचड़ भरे पानी के एक सोते में डूबते देखा (18:86)।

> और धरती को भी हमने बिछा दिया है जैसे कि वह बिछौना हो। (सूरा 51:48)
>
> और धरती भी कैसी फैली हुई है (88:20)
>
> और उसके बाद उसने धरती को अण्डे के आकार में फैलाया (79:30)।

वास्तव में, ऐसी आपत्तियों का उत्तर देने की कोई आवश्यकता नहीं है। कुरान के महान व्याख्याकारों ने ऐसी अभिव्यक्तियों में निहित रत्नों को प्रकाश में लाया है। बिना किसी अतिरिक्त स्पष्टीकरण की आवश्यकता छोड़े, उन्होंने हमें वह सिखाया है जो हमें जानना चाहिए।

जो लोग पहले के समय में रहते थे वे रोते थे और मुझे भी रुलाते थे।
हाय! क्या कोई ऐसा है जो मेरे रोने से नरम पड़ जाएगा?

जो पहले से ही ज्ञात है, उसे सिखाने का प्रयास करना व्यर्थ है, खासकर यदि ज्ञात वस्तु अवलोकनीय हो। इसलिए इसमें कुछ विशिष्ट और उल्लेखनीय बिंदु होने चाहिए ताकि इसे सिखाना या बताना व्यर्थ न हो। इसलिए, अगर यह कहा गया होता: देखो कि कैसे पृथ्वी को उसके गोलाकार आकार के बावजूद जीवित प्राणियों के लिए एक बिस्तर बनाया गया है और कैसे इसे समुद्र के बढ़ने से बचाया गया है; कैसे, अपनी कथित स्थिरता के बावजूद, सूर्य हमारी आजीविका प्राप्त करने में हमारी सेवा करने के लिए अपना मार्ग बनाता है; कैसे सूर्य, जो हमसे लाखों मील दूर है, “गर्म और काले, कीचड़ भरे पानी के झरने” में डूबता है, तो उल्लिखित छंदों में ध्यान देने योग्य कोई बिंदु नहीं होता। ये बिंदु (जिन्हें कुछ तथाकथित आधुनिकतावादी आलोचना का लक्ष्य बनाते हैं) वास्तव में वाक्पटुता के पहलू हैं।

आठवां मामला

एक संकेत

एक कारक, बल्कि प्राथमिक कारक, जो शाब्दिकवादियों को खतरे में डालता है, वह यह है कि वे एक संभावना को तथ्य के रूप में लेते हैं। उदाहरण के लिए, वे कहते हैं, "ईश्वरीय शक्ति ऐसा कर सकती है। इसके अलावा, तर्क के अनुसार, उनकी महानता के लिए ऐसा करना अधिक उपयुक्त है। इसलिए, ऐसा होना चाहिए।" यह सरासर मूर्खता है। हे बेचारे! क्या तुम्हारा तर्क इस हद तक विकसित हो गया है कि वह ब्रह्मांड को माप और इंजीनियर कर सकता है? तुम अपने सीमित तर्क से, अपने सभी भागों और विशेषताओं के साथ सार्वभौमिक प्रणाली को कैसे समझ सकते हो और इसकी समग्र सुंदरता को कैसे देख सकते हो? ये ऐसे लोग हैं, जो अगर आधा मीटर लंबी सुनहरी नाक होती, तो उसे लोगों के लिए अधिक सुंदर और उपयुक्त मानते, क्योंकि समग्र दृष्टिकोण से रहित, वे अपने विचारों को केवल वस्तु तक ही सीमित रखते हैं।

एक और विनाशकारी बात जो उनके आश्चर्य का कारण बनती है, वह है उनकी यह गलत धारणा कि जो कुछ वे घटित होने का अनुमान लगाते हैं, वह उनके विपरीत है।

ज्ञान की निश्चितता। इस कारण, वे उन विषयों के बारे में संदेह महसूस करते हैं जो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं; वे सोफिस्ट और (वैज्ञानिक) अज्ञेयवादियों से मिलते जुलते हैं। उनके विचार के अनुसार, हमें उदाहरण के लिए, वान झील या माउंट सुफ़न के अस्तित्व पर संदेह करना चाहिए, क्योंकि उनके अनुसार, उनका वास्तविक अस्तित्व उनके कथित गैर-अस्तित्व को नकारता नहीं है। वे यह भी देखते हैं कि वान झील गुड़ की झील में बदल सकती है और सुफ़न पर्वत चीनी से ढके शहद का ढेर बन सकता है। फिर, चूँकि उन मित्रों और उनके जैसे लोगों के अनुसार, वह समुद्र और पहाड़ पृथ्वी के गोलाकार होने से सहमत नहीं हैं और यात्रा पर निकल पड़े हैं, इसलिए उनके लिए ठोकर खाकर समुद्र में गिरना संभव है। इस कारण से, हम यह पुष्टि नहीं कर सकते कि वे अपने स्थान पर बने हुए हैं। हे बेचारे! हम अपनी पाँच बाह्य इंद्रियों से जो कुछ देखते हैं, उसके बारे में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं हो सकती। यदि आप किसी देखे गए तथ्य को नकारते हैं, तो मैं आपको सलाह देने के बजाय, आपकी "मृत्यु" पर अपनी संवेदना व्यक्त करूँगा। क्योंकि हर किसी के पास जो स्पष्ट ज्ञान है, वह मर चुका है और आप में कुतर्क फिर से पनप गया है।

तीसरी आपदा, जो शाब्दिक अर्थों में विश्वास करने वालों को भ्रमित करती है, वह यह है कि वे अपनी कल्पना में संभव किसी चीज़ को तर्कसंगत रूप से संभव होने के साथ भ्रमित करते हैं। लेकिन कल्पना में संभव कोई चीज़ किसी ठोस आधार पर नहीं होती है, और सबसे स्पष्ट सत्य के बारे में भी संदेह पैदा करती है, जिससे सवाल और कहावतें पैदा होती हैं, जैसे कि, "ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए?", "ऐसा हो सकता है!" यह तर्क की कमी, दिल में कमज़ोरी, दिमाग में बीमारी और इस धारणा से उत्पन्न होता है कि किसी भी सत्य का कोई सबूत नहीं है। इसके विपरीत, तर्कसंगत संभावनाएँ या किसी चीज़ का तर्कसंगत या उचित रूप से संभव होना किसी मामले के अस्तित्व और गैर-अस्तित्व दोनों के बारे में संदेह महसूस करना है, जिसका कोई आधार नहीं है।

वास्तविक साक्ष्य। मनमौजी या काल्पनिक संभावनाएँ किसी को यह कहने पर मजबूर करती हैं, "यह संभव है कि यह चीज़ वैसी न हो जैसी कि उस तथ्य से दिखाई गई है। क्योंकि तर्क सब कुछ समझने में असमर्थ है। इसके अलावा, हमारा तर्क मानता है कि ऐसा हो सकता है।"

नहीं! यह आपका तर्क नहीं है, बल्कि आपकी सनक और कल्पना है जो आपको यह सोचने पर मजबूर करती है कि कुछ वैसा ही हो सकता है जैसा आप दावा करते हैं। तर्क सबूत का अनुसरण करता है।
यह सच है कि तर्क हर चीज़ का वजन नहीं तौल सकता, लेकिन यह भौतिक अस्तित्व का वजन आसानी से तौल सकता है, जिसमें खास तौर पर वे चीज़ें शामिल हैं जो आँखों से बच नहीं सकतीं, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों। हम उन चीज़ों के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं जिनका मूल्यांकन तर्क नहीं कर सकता।

एक अनुस्मारक

जिन लोगों का मैं उल्लेख करता हूँ या आलोचना करता हूँ, उन्हें शाब्दिकवादी या केवल बाह्य दृष्टि से देखने वाले लोग कहते हैं, वे या तो इस्लाम के शत्रु हैं, जो इसे दूर से सतही दृष्टि से देखते हैं, इसकी सुन्दरता को समझ नहीं पाते, या फिर वे इसके अज्ञानी मित्र हैं, जो इसकी सहायता करने का प्रयास करते हुए इसे हानि पहुँचाते हैं।

चौथी आपदा उन लोगों द्वारा उत्पन्न की जाती है जो रूपक के सभी पहलुओं में सत्य की खोज करते समय अतिवादी हो जाते हैं। यह एक और कारक है जो उन्हें अंधकार में डाल देता है। यह सच है कि हर रूपक में सत्य का एक दाना होता है और होना भी चाहिए; यह वह सत्य है जिसमें रूपक उत्पन्न होता है और पनपता है। दूसरे शब्दों में, सत्य एक बाती है जिसे प्रकाश उत्पन्न करने के लिए जलाया जाता है, जबकि रूपक तेल का दीपक है जो इसे खिलाता है। प्रेम हृदय में है, और तर्क मन में है। उन्हें हाथों या पैरों में नहीं खोजा जा सकता।

एक और आपदा जो आँखों को अंधा कर देती है और वाक्पटुता को ढक देती है, वह है बाहरी अर्थों तक सीमित रहना। जो लोग खुद को बाहरी अर्थों तक सीमित रखते हैं, वे सत्य की खोज के लिए कभी रूपकों की ओर नहीं मुड़ते; अगर वे मुड़ते भी हैं, तो वे केवल उस अभिव्यक्ति को देखते हैं जिसमें रूपक होता है। इस कारण से, केवल उनके शब्दों के बाहरी पहलुओं के आधार पर कुछ कुरान की आयतों और पैगंबरी परंपराओं की व्याख्या करना उनकी सुंदरता या वाक्पटुता को सामने नहीं ला सकता है। ऐसे लोग सोचते हैं कि रूपक का उपयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई सत्य तर्कसंगत रूप से स्वीकार्य नहीं होता। फिर भी, जो सत्य को स्पष्ट रूप से समझने से रोकता है और रूपक के उपयोग की ओर ले जाता है, वह केवल तर्क से जुड़ा नहीं है। मानवीय इंद्रियों या समझने के अन्य सामान्य या विशेष साधनों से संबंधित कोई भी चीज़, जैसे कि संबोधन से संबंधित या भाषण या लेख से उत्पन्न होने वाली, रूपक के उपयोग का कारण बन सकती है। यदि आप चाहें, तो स्वर्गीय दलाईल अल-इजाज़ (“अद्वितीयता के संकेत”), अध्याय 221 में प्रवेश करें। आप देखेंगे कि कैसे महान प्रतिभाशाली 'अब्द अल-काहिर अल-जुरजानी44 ऐसे लापरवाह लोगों को गंभीर रूप से फटकार लगाते हैं।

छठी आपदा जो ज्ञात को अज्ञात बना देती है, वह है जब कुछ

लोग किसी ऐसी चीज़ को ज़रूरी मान लेते हैं जो आकस्मिक हो या जिसका उल्लेख किसी शब्द को अतिरिक्त अर्थ देने के लिए किया गया हो। इसलिए, वे यह नहीं देख पाते कि इस जोड़ का क्या मतलब है और सत्य के सूर्य को उसकी धुरी से हटा देते हैं। मुझे आश्चर्य है

---

44 अबू बकर 'अब्द अल-कादिर अल-जुरजानी (400-471) एक प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान, साहित्यिक सिद्धांतकार और व्याकरणविद थे। वे ईरान में रहते थे। वे इल्म अल-बलाघा (वाक्पटुता और बयानबाजी) और इल्म अल-बयान (रूपक भाषा से निपटने वाली बयानबाजी) की दो विद्याओं में पारंगत थे। असरार अल-बलाघा ("वाक्पटुता के रहस्य") और दलाईल अल-इजाज ("अद्वितीयता के संकेत") उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ थीं। (अनुवाद)

क्या ऐसे लोग कभी अरबों की साहित्यिक शैली पर विचार करते हैं। उदाहरण के लिए, वे कहते हैं, "पहाड़ हमारे सामने आए, और फिर हमें छोड़ गए। वे हमारे सामने आए, और फिर हमसे दूर चले गए। और समुद्र ने सूरज को निगल लिया। और इसी तरह।" जैसा कि अल-सक्काकी द्वारा अल-मिफ़्ताह में कहा गया है ,45 अरब कभी-कभी कल्पना की शक्ति का उपयोग करते हैं, यह मानते हुए कि वास्तविकता के तत्व स्थान बदलते हैं, और इस प्रकार अपने शब्दों में एक सूक्ष्म सुंदरता या रहस्य जोड़ते हैं।

कुरान से दो महत्वपूर्ण उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

> वह आकाश से बर्फ़ से लदे पहाड़ों से ओले बरसाता है (24:43)।

> और सूर्य अपनी गति से चलता है, और अपनी गति को स्थिर रखने के लिए एक निश्चित अवधि तक अपने विश्राम-स्थान तक पहुँचता है (36:38)।

ये दोनों पद ध्यान देने योग्य हैं। क्योंकि शाब्दिक अर्थ में जम जाना वाक्पटुता को उसके अधिकार से वंचित करना है। दोनों में से पहले पद में रूपक इतना सुंदर और गर्म है कि यह बर्फ की तरह जमी हुई हर चीज को पिघला देता है और शाब्दिकता के पर्दे को फाड़ देता है। दूसरे पद की वाक्पटुता इतनी उज्ज्वल और उपयुक्त है कि यह सूरज को भी रोक देती है।

पहले श्लोक में एक रूपक है जो कि शीशे के समान है , जो कि क्रिस्टल की तरह साफ है और चांदी से बना है (76:15-16)। जन्नत के बर्तन न तो कांच के बने हैं और न ही चांदी के। कांच और चांदी के बीच का अंतर एक रूपक को दर्शाता है।
कांच पारदर्शिता का प्रतीक है, और चांदी सफेदी और चमक का। इसलिए, स्वर्ग के बर्तनों की पारदर्शिता और चमक को व्यक्त करने के लिए, कुरान इन शब्दों का उपयोग करता है जो सभी लोगों के लिए परिचित हैं। यह प्रयोग उन तत्वों में से एक है जो लोगों को स्वर्ग के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसी तरह, बर्फ से लदे पहाड़ों से ओले गिरने के वाक्यांश में एक समान रूपक है। यह रूपक एक सुखद, आनंददायक प्रतिस्पर्धा पर आधारित है जिसे कल्पना की शक्ति आकाश और पृथ्वी के बीच कल्पना करती है।

जिस तरह धरती बर्फ से ढकी रहती है या अपने पहाड़ों और रंग-बिरंगे बगीचों, घास के मैदानों या बागों से खुद को सजाती है, उसी तरह आसमान भी मानो होड़ में लगा हो, पहाड़ों जैसे दिखने वाले बादलों के समूह अलग-अलग या साथ में खड़े होते हैं और रंग-बिरंगे बगीचों और बागों से धरती को सजाते हैं। अगर हम बादलों के इन अलग-अलग समूहों को एक दूसरे के रंग-बिरंगे बागों के रूप में वर्णित करें, तो यह एक अलग बात होगी।

---

45 अबू याकूब यूसुफ इब्न अबू बक्र अल-सक्काकी (?–1229) अरबी भाषा और वक्तृत्व कला के अग्रणी विद्वानों में से एक थे। मिफ्ताह अल-उलुम (“विज्ञान की कुंजी”) और अल-मिफ्ताह फ़िन-नहव वत-तस्रीफ़ वाल-बयान (“व्याकरण, विभक्ति और वाक्यविन्यास और शैली की कुंजी”) उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से हैं। (अनुवाद)

पहाड़ या जहाज़ या ऊँट या आसमान के बगीचे, हम कोई ग़लत तुलना नहीं कर रहे हैं। गरज उन यात्रियों (बादलों) का कप्तान या चरवाहा है जो वायुमंडल में हैं। वह उन्हें चलाने के लिए बिजली को अपने पहिये या डंडे की तरह इस्तेमाल करता है। गरज से आसानी से उड़ाए जाने वाले बादल क़ियामत के दिन ऊन के पहाड़ों की तरह हैं। ऐसा लगता है जैसे आसमान भाप के कणों को गरज के साथ हथियार उठाने के लिए बुलाता है, और उन्हें हुक्म के साथ तितर-बितर कर देता है “आराम से रहो!” बादल अक्सर पहाड़ों की शक्ल ले लेते हैं और उनके जैसे दिखाई देते हैं; उसी तरह वे भी बर्फ़ या ओलों की तरह सफ़ेद और ठंडे हो जाते हैं, बर्फ़ से ढके पहाड़ों की तरह दिखाई देते हैं।

इससे हम यह समझ सकते हैं कि बादल और पहाड़

ऐसे दोस्त जिन्हें एक दूसरे के करीब होने की ज़रूरत है। कुरान, इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए, उन्हें कभी-कभी दूसरे के रूप में दिखाता है। इसके अलावा, जब वे ब्रह्मांड की किताब के सांसारिक पृष्ठ पर हाथ मिलाते हैं और एक दूसरे को गले लगाते हैं, तो वे प्रकट पुस्तक-कुरान के कई स्थानों पर भी हाथ मिलाते हैं। हम अक्सर देखते हैं कि, जैसे पहाड़ आकाश के सागर में बादलों के लिए घाट होते हैं, वैसे ही बादल पहाड़ों की चोटी के चारों ओर लंगर डालते हैं।

जहाँ तक आयत का सवाल है, " और सूर्य अपनी व्यवस्था की स्थिरता के लिए अपने विश्राम स्थल तक एक निश्चित अवधि के लिए अपने लिए निर्धारित मार्ग पर चलता है" (36:38), शब्द " भागता है " एक शैली को इंगित करता है और एक वास्तविकता को व्यक्त करता है। संकेतित शैली इस प्रकार है:

मानो यह लोहे की जगह सोने से बना एक शानदार बख्तरबंद जहाज हो, सूरज आसमान के सागर में तैरता है; यह सागर ईथर से बना है और इसे एक कसी हुई या सीधी लहर के रूप में वर्णित किया गया है। भले ही सूरज अपनी कक्षा में स्थिर दिखाई देता हो, लेकिन यह “पिघला हुआ सोना” सागर में तैरता है।

हालाँकि, यह तैरना वास्तविक नहीं है; हम इसे तैरते हुए देखते हैं और यह एक वास्तविकता को इंगित करता है। फिर भी, सूर्य दो तरह से चलता है, लेकिन चर्चा के तहत श्लोक उन्हें इंगित नहीं करता है। श्लोक में सूर्य को दौड़ते हुए (तैरते हुए) के रूप में उल्लेख करने का कारण शानदार व्यवस्था और इस तथ्य पर जोर देना है कि एक अपरिवर्तनीय या स्थिर प्रणाली है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि श्लोक में इसके चलने का प्राथमिक या द्वितीयक स्थान है; यहाँ जिस बात पर जोर दिया जा रहा है वह है व्यवस्थितता, व्यवस्था।

दूसरा, सूर्य अपने क्रांतिवृत्त में घूमता है, और इस गति के कारण, उसके "सोने" के हिस्से - ग्रह - भी घूमते हैं। यह वास्तविक गति चर्चा के तहत उसके दूसरे आलंकारिक गति का तंत्र है।

तीसरा, बुद्धिमत्ता की मांग है कि सूर्य को अपने सिंहासन पर, जिसे क्रांतिवृत्त कहते हैं, विश्व के विस्तृत अंतरिक्ष में यात्रा करनी चाहिए, तथा उसके साथ उसके यात्रा करने वाले सोल होने चाहिए।

सूर्य को ग्रह कहा जाता है। क्योंकि ईश्वरीय शक्ति ने हर चीज़ को गतिशील बनाया है और किसी भी चीज़ को गतिहीन या जड़ता के लिए अभिशप्त नहीं किया है। इस प्रकार, ईश्वरीय दया ने सूर्य को जड़ता में नहीं बांधा, जो मृत्यु का भाई और अस्तित्वहीनता का चचेरा भाई है। इसलिए, सूर्य स्वतंत्र है, और ईश्वरीय कानून का पालन करते हुए स्वतंत्र रूप से यात्रा कर सकता है, बशर्ते कि वह दूसरों की स्वतंत्रता का उल्लंघन न करे।

चर्चित आयत में शब्द ' रन' की ओर मुड़ते हुए , यह सूर्य की स्पष्ट लेकिन लाक्षणिक गति को इंगित करता है; जो इस वाक्यांश को जीवन देता है (यानी, जो हमें यह समझने में मदद करता है कि यह वास्तव में क्या दर्शाता है) वह वाक्यांश है ली-मुस-तक़रीन, जिसका अर्थ है "इसकी [इसकी] प्रणाली की स्थिरता के लिए।"

संक्षेप में, इस अभिव्यक्ति के पीछे दैवीय उद्देश्य व्यवस्था और स्थिर व्यवस्था को दर्शाना है। यह व्यवस्था सूर्य की तरह ही उज्ज्वल है।

इसलिए, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि यह व्यवस्था सूर्य की गति से उत्पन्न होती है या पृथ्वी की परिक्रमा से। इसलिए हमें इस आयत पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है कि व्यवस्था का असली कारण सूर्य की गति है या पृथ्वी की। उदाहरण के लिए, क्रिया □□□ में अक्षर “□) alif)” शब्द को आसान उच्चारण प्रदान करता है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि इस □ का मूल □ है या कोई और अक्षर। किसी भी मामले में, यह □ है और उच्चारण में आसानी जोड़ता है।

एक संकेत

शब्दों के शाब्दिक अर्थ में कैद हो जाना न केवल वाक्पटुता की गर्मजोशी और सुंदरता के विपरीत है, बल्कि यह मानवीय तर्क को उस दिव्य ज्ञान को देखने और पुष्टि करने से भी रोकता है जो सार्वभौमिक व्यवस्था की उत्कृष्टता के लिए जिम्मेदार है, जबकि यह मानवीय तर्क ही है जो उस ज्ञान की गवाही देता है। आइए एक उदाहरण देते हैं:

अगर आप चाहते हैं कि दूर से एक पहाड़ आपके सामने चार तरफ से हो, तो आपको अपने चारों ओर चार चक्कर लगाने होंगे। लेकिन अगर आप सोचते हैं या चाहते हैं कि यह विशाल पहाड़ दूरी तय करे और आपके पास आए और फिर आपके चारों ओर घूम जाए, तो यह निश्चित रूप से हास्यास्पद है और ब्रह्मांड में व्यवस्था के खिलाफ एक अपराध है। यह वही है जिसका अर्थ है शब्दों के शाब्दिक अर्थ में कैद होना, बिना यह देखे या स्वीकार किए कि कुरान रूपकों या अलंकारों का उपयोग करता है। सृष्टि में कोई बर्बादी या निरर्थकता नहीं है, और कुरान इसे दर्शाता है, अपने भावों में सबसे सीधा रास्ता चुनता है। इसलिए, सबसे सीधा और समझने योग्य तरीका अपनाने के लिए

एक स्थायी तरीके से, कुरान को एक ऐसी आयत में रूपकों का उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए जो वास्तविकता को व्यक्त करती है, और ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड के निर्माण के दिव्य उद्देश्य का सबूत प्रदान करती है।

एक अनुस्मारक

अगर आप चाहें तो पहले और दूसरे आधार पर वापस जाएँ। आप देखेंगे कि शाब्दिक अर्थों में विश्वास करने वालों के दिमाग में जो बात उलझन पैदा करती है, वह है ग्रीक दर्शन से उनका लगाव।

वे कुरान को समझने के लिए उस दर्शन को आधार बनाते हैं। एक उदाहरण जो उनके रवैये पर एक बूढ़ी औरत को हंसा सकता है जिसने अपना बेटा खो दिया है: अपने ज्ञान और सच्चे और झूठे के बीच अंतर करने की सावधानी के बावजूद, हमारे क्षेत्र के किसी व्यक्ति ने कहा, "ब्रह्मांड में चार मूल तत्व हैं, और फ़रिश्ते उनसे निर्मित चमकदार प्राणी हैं।" वह मुस्लिम दार्शनिकों की इस राय का खंडन करने के लिए ऐसा कहता है कि फ़रिश्ते बिल्कुल पदार्थ से मुक्त हैं, और वह दावा कर रहा है कि फ़रिश्ते चार तत्वों से निर्मित (एक तरह के) प्रकाश के शरीर हैं। वह व्यक्ति और उसके जैसे लोग सोचते हैं कि इस्लाम उनसे यह मानने की माँग करता है कि अस्तित्व चार तत्वों, अर्थात् वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी पर स्थापित है। हालाँकि, यह केवल प्राचीन दर्शन का एक विचार है, इस्लाम का नहीं। इसके अलावा, यह आवश्यक नहीं है कि हर चीज़ जिसका धर्म से किसी तरह का संबंध है, अनिवार्य रूप से उसका हिस्सा हो। इस्लाम के अनुकूल किसी भी चीज़ को अनिवार्य रूप से उसका हिस्सा मान लेना इस्लाम के सार और आवश्यक प्रकृति के बारे में अज्ञानता है। इस्लाम के चार मूल स्रोत अर्थात् कुरान, सुन्नाह, सर्वसम्मति (विद्वानों की) और सादृश्य, न तो ऐसी चीजों को उत्पन्न करते हैं और न ही उन्हें बनाते हैं।

संक्षेप में, अस्तित्व के चार बुनियादी सार्वभौमिक तत्वों की स्वीकृति प्राचीन दर्शन की उपज है, शरिया की नहीं। दुर्भाग्य से, जब से उस दर्शन की खामियाँ अतीत के प्रसिद्ध विद्वानों की शब्दावली में आ गईं, तब से शाब्दिकवादियों ने उन्हें संदर्भ के रूप में इस्तेमाल किया है। हालाँकि, हमारे पास कोई सबूत नहीं है कि जिन विद्वानों ने चार सबसे व्यापक तत्वों का उल्लेख किया था, उनका मानना था कि सारा अस्तित्व केवल उन्हीं से बना है। चार अन्य बुनियादी तत्व हैं, जिनका उल्लेख आधुनिक विज्ञान जीवित जीवों के निर्माण के संबंध में करता है: हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और कार्बन।

यदि आप स्वतंत्र विचारक हैं, तो देखें कि कैसे प्राचीन दर्शन और विज्ञान ने मन को कुछ त्रुटियों की दीवारों के भीतर कैद कर दिया है और उन्हें गलत रास्ते पर फेंक दिया है।

हालाँकि, नए वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने उस जेल की दीवारों को गिरा दिया है।

यह स्पष्ट है कि कुरान की आयतों में चमत्कारों के पहलुओं के खजाने की कुंजी कुरान की वाक्पटु भाषा है। इसे यूनानी दर्शन में नहीं खोजना चाहिए।

हे भाइयों और बहनों! अब जबकि रहस्यों को उजागर करने की हमारी जिज्ञासा हमें इतनी दूर ले आई है, तो चलिए इस पुस्तक के दूसरे भाग की ओर चलते हैं, जिसमें वाक्पटुता और चमत्कार की कुंजी निहित है, भले ही मैं जानता हूँ कि आप थक गए हैं। इसकी शैली में अस्पष्टता या इसके परिधान की निर्धनता से आपको डरने की अनुमति न दें। उनकी आवश्यक सुंदरता और मूल्य तथा उनके अर्थ की सूक्ष्मता आपके द्वारा उनका अध्ययन करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

दूसरा भाग

वाकपटुता का सार

दूसरा भाग

वाकपटुता का सार

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

शाश्वतता और सारा प्रभुत्व ईश्वर का है, और उसी की ओर से सभी आशीर्वाद और आशीर्वाद हैं; और आशीर्वाद उसके पैगंबर पर है।

इस भाग में वाक्पटुता के सार से संबंधित कुछ बातों को समझाया जाएगा।

पहला मामला

(कुरान की चमत्कारिकता, जो पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का सबसे बड़ा और स्थायी चमत्कार है, मुख्य रूप से इसकी वाक्पटुता में निहित है। यह पहलू बिना किसी परिवर्तन के कुरान के संरक्षण में सबसे महत्वपूर्ण कारक रहा है, और इसका तात्पर्य है कि, विशेष रूप से समय के अंत में, लोगों को समझाने के लिए वाक्पटुता सबसे विश्वसनीय साधन होगी।)

इस्लाम की शुरुआती शताब्दियों में अरबों के साथ कई अन्य लोगों के घुलने-मिलने के परिणामस्वरूप, मुदरी बोली, जो अरबी की सबसे विकसित और परिष्कृत बोली थी और कुरान में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा थी, बदल गई। इसके अलावा, वाक्पटुता का अर्थ की तुलना में शब्दों में अधिक महत्व दिया जाने लगा, जिसमें विचारों की नदियाँ बहती हैं।

विचारों और भावनाओं की नदियाँ अर्थों की रचना या व्यवस्था में अपना स्वाभाविक मार्ग खोजती हैं। अर्थों की रचना तर्क के सिद्धांतों पर आधारित होती है। तर्क का स्रोत सत्यों में होता है जो एक दूसरे पर आधारित होते हैं और एक दूसरे की पुष्टि करते हैं, साथ ही उन विचारों में भी जो इन सत्यों की ओर ले जाते हैं। ऐसे सत्यों की ओर ले जाने वाले विचार अस्तित्व में मौजूद चीज़ों की प्रकृति के सबसे सूक्ष्म बिंदुओं में प्रवेश करते हैं। प्रकृति के सबसे सूक्ष्म बिंदु ब्रह्मांड की पूर्ण व्यवस्था की श्रृंखला की कड़ियाँ हैं। ब्रह्मांड की पूर्ण व्यवस्था में एक संपूर्ण, अमूर्त सौंदर्य है जो अस्तित्व की सभी सुंदरता का स्रोत है। यह अमूर्त सौंदर्य वाक्पटुता का "प्राकृतिक" उद्यान है जिसे साहित्यिक योग्यता और शैली कहा जाता है। यह उद्यान बुलबुलों की धुनों में बना है - जिन्हें कवि कहा जाता है - जो सृष्टि के बगीचों में घूमते हैं और फूलों के प्रेमी हैं। बुलबुलों की धुनों या गीतों को जो आध्यात्मिक, प्रभावी स्वर देता है वह अर्थों की रचना है।

दुर्भाग्य से, कुछ गैर-अरब लोग, जो अरब साहित्यकारों में शामिल होने की आकांक्षा रखते थे, ने भ्रम पैदा कर दिया। क्योंकि, जिस तरह लोगों का स्वभाव उनकी भावनाओं का स्रोत होता है, उसी तरह, एक भाषा उन भावनाओं और भावनाओं को दर्शाती है। हर व्यक्ति का अपना एक स्वभाव होता है।

इसी तरह, हर भाषा में वाक्पटुता की एक ऐसी क्षमता होती है जो दूसरों से अलग होती है। यह अरबी के लिए विशेष रूप से सच है क्योंकि यह सख्त व्याकरणिक नियमों पर आधारित है। इस प्रकार इसकी वाक्पटुता की क्षमता उन भाषाओं से बहुत अलग है जो इसके जैसी नहीं हैं। चूँकि जो लोग मूल रूप से अरब नहीं थे, लेकिन अरब साहित्यकारों में गिने जाने की आकांक्षा रखते थे, वे अर्थ से ज़्यादा शब्दों को महत्व देते थे, और शब्दों के प्रति लगाव के कारण विचार अपने सामान्य मार्ग पर नहीं चल पाते या वाक्पटुता के फूल नहीं खिल पाते, इस तरह वाक्पटुता अपनी आवश्यक शुद्धता खो देती है।

जिन विदेशियों का उल्लेख किया गया है, उन्हें सुंदर ढंग से लिखने और बोलने तथा शब्दों के शाब्दिक अर्थ सीखने की अधिक आवश्यकता महसूस हुई। शब्दांकन सतही विचारों के लिए अधिक आसान और अधिक आकर्षक लगता है, तथा लोकलुभावनवाद के साथ अधिक मेल खाता है; इसलिए इन विदेशियों ने शब्दों पर अपना ध्यान केंद्रित किया।
अर्थ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अधिक और गहन देखभाल और अध्ययन की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि जो विदेशी ऐसा करने में असमर्थ थे, वे शब्दों के अर्थ में ही उलझे रहे।

अर्थ को अवधारणा के चरण में छोड़ दिया गया, फिर शब्दों के बाद उसे घसीटा गया। इससे परस्पर विरोधी विचार उत्पन्न हुए। अंत में, शब्दांकन को अर्थ से अधिक ध्यान मिला और यद्यपि शब्दों को अर्थ की सेवा करनी चाहिए, लेकिन शब्दांकन विषय के साथ स्थिति उलट हो गई-

अर्थ को अपने आप में समाहित करना। शब्दों को जितना अधिक महत्व दिया गया और जितना अधिक ज्ञान कृत्रिम शैलियों के माध्यम से दिखाया गया, उतना ही अधिक लोग अर्थ से दूर होते गए। उदाहरण के लिए, आप अल-हरीरी द्वारा मकामात में प्रवेश कर सकते हैं ,46 और देख सकते हैं कि कैसे साहित्यिक प्रतिभा का उनका खिताब शब्दों के प्रति उनके आकर्षण से उत्पन्न हुआ; इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने उन लोगों को प्रोत्साहित किया जो शब्दों के शौकीन थे। इस बीमारी का इलाज पेश करने में सक्षम होने के लिए, वाक्पटुता के प्रख्यात विद्वान, 'अब्द अल-काहिर ने अपने दलाईल अल-इजाज़ ("अद्वितीयता के संकेत") और असरार अल-बलाख़ा का एक तिहाई हिस्सा भरा।

("वाक्पटुता के रहस्य") उपचार के साथ। शब्दों पर ध्यान केंद्रित करना एक बीमारी है, लेकिन जो लोग इससे पीड़ित हैं, उन्हें पता नहीं है कि वे इससे पीड़ित हैं।

एक अनुस्मारक

जिस तरह शब्दों का शौक एक बीमारी है, उसी तरह रूप, शैली, उपमा और तुकबंदी पर अत्यधिक ध्यान देना भी एक बीमारी है; और इन सबके लिए अर्थ की बलि दी जाती है। हमारे समय में, कई साहित्यकारों ने एक बढ़िया बात या तुकबंदी के लिए विचित्र चीजों के बारे में लिखा है। मैं मानता हूँ कि शब्दों में कलात्मकता होनी चाहिए, लेकिन केवल इस तरह से कि अर्थ की पूर्ति हो। शैलियाँ यथासंभव आकर्षक होनी चाहिए, लेकिन अर्थ और भाषण या लेखन के उद्देश्य के दायरे में रहनी चाहिए। साहित्यिक कलाओं का उपयोग निश्चित रूप से किया जाना चाहिए, लेकिन इस शर्त पर कि वे सत्य का समर्थन करें और उसे नुकसान न पहुँचाएँ।

दूसरा मामला

एक शब्द तब जीवंत हो उठता है और विकसित होता है जब अर्थ को एक रूप दिया जाता है और कल्पना की शक्ति के माध्यम से निर्जीव चीजों में वाणी फूंकी जाती है।

अस्तित्व में आना और विलुप्त हो जाना, या जन्म और मृत्यु, एक के बाद एक होते रहते हैं। इस निरंतर चक्र में दो चीजें जो एक साथ मौजूद हैं, उन्हें आमतौर पर दूसरे के अस्तित्व का कारण माना जाता है। इससे उत्पन्न होने वाले किसी भी कल्पित या गलत विचार आम तौर पर इस धारणा (दो चीजों के संयोग) का परिणाम होते हैं। कल्पनाएँ और कल्पनाओं से उत्पन्न होने वाले दोष आम तौर पर सनक (गलत समझी गई धारणाओं से उत्पन्न) पर आधारित होते हैं। हालाँकि, वाणी का जादू जो

46 अबू मुहम्मद कासिम इब्न अली अल-हरीरी (1024-1122) इराक के बसरा में रहते थे। वे अरबी भाषा और साहित्य के विद्वान थे। वे मुख्य रूप से अपनी कहानियों के संग्रह, मकामात ("असेंबलीज़") की परिष्कृत शैली और बुद्धि के लिए जाने जाते हैं। (अनुवाद)

कल्पना में उत्पन्न होने वाला यह शब्द मृत रूपों में प्राण फूंकता है और उन्हें एक दूसरे से बात करने के लिए प्रेरित करता है। यह शब्दों को प्रेम या शत्रुता से जीवंत कर सकता है।
वाणी का जादू अर्थों को रूपों में ढाल देता है, उन्हें जीवन प्रदान करता है, तथा उनमें प्राणशक्ति की ऊष्मा भर देता है।

यदि आप एक उदाहरण चाहते हैं, तो निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ें, जिन्हें ध्वनि से भरा घर के रूप में वर्णित किया जा सकता है:

> अपना वचन तोड़ना प्रत्यक्ष वास्तविकता पर पर्दा डाल देता है और मुझे बताता है कि धोखा नहीं खाना चाहिए;
> अतः आशा और निराशा मेरे सीने में एक दूसरे से लड़कर इसे नष्ट कर देती हैं।

देखिए किस तरह कवि के शब्द जादू की तरह होते हैं, जो आशा और निराशा को रूप देकर उनमें जान फूंक देते हैं, और वचन तोड़ने पर उनके बीच दुश्मनी और लड़ाई पैदा कर देते हैं, जो एक शर्मनाक बात है। ऐसा लगता है जैसे कोई सपने में या किसी स्क्रीन पर यह संघर्ष देख रहा हो। सच में, एक जादुई शब्द व्यक्ति को सोने और सपने देखने के लिए प्रेरित करता है।

एक अन्य उदाहरण के रूप में, वर्षा के प्रति पृथ्वी के प्रेम और उसके विलाप को देखें:

> धरती बारिश से शिकायत करती है कि देर क्यों हो रही है;
> यह पिछली बारिश से बची नमी को ऐसे सोख लेता है जैसे किसी प्रेमी के होठों को सोख लेता है।

क्या यह दोहा हमें धरती को मजनूं और बादलों को लैला के रूप में नहीं सोचने पर मजबूर करता है?47

एक अनुस्मारक

एक दोहे को खूबसूरत बनाने वाली बात यह है कि इसमें मौजूद छवियाँ वास्तविकता के कितने करीब हैं। क्योंकि जब लंबे समय तक बारिश नहीं होती है, तो धरती नमी को सोख लेती है, और एक ऐसी आवाज़ निकालती है जो लगभग आह जैसी होती है। जो इसे देखता है, वह बारिश की कमी और धरती की इसकी तीव्र आवश्यकता के बारे में सोचता है, और बारिश और धरती के बीच के रिश्ते पर विचार करता है। फिर, वह उनके बीच होने वाले आपसी प्रेम और बातचीत की कल्पना करता है।

एक संकेत

प्रत्येक कल्पना में वास्तविकता का बीज निहित होना चाहिए, जैसा कि ऊपर दिए गए दोहे में विद्यमान है।

---

[47] मजनूं और लैला प्राच्य साहित्य में प्रसिद्ध प्रेमी हैं। (अनुवाद)

तीसरा मामला

भाषण का आकर्षक परिधान या साँचा शैली के करघे पर बुना जाता है। भाषण की सुंदरता उसकी शैली में निहित है।

किसी विषय पर ध्यान केंद्रित करने या उससे जुड़ाव के कारण कल्पना में कुछ प्रवृत्तियाँ प्रकट होती हैं। ये प्रवृत्तियाँ कुछ ऐसे रूप लेती हैं जो अपने आप में विशिष्ट होते हैं; जब ये एक साथ आते हैं तो वे विभिन्न तुलनाओं, उपमाओं और रूपकों के लिए एक द्वार खोलते हैं। इस प्रकार, इन सभी तुलनाओं, उपमाओं और रूपकों से बनी या उनसे व्युत्पन्न शैलियाँ भाषण के साँचे और वह करघा हैं जिस पर इसका आकर्षक परिधान बुना जाता है।

जब इच्छाशक्ति, जिसे हम बुद्धि की तुरही कह सकते हैं, बोलती है, तो मन के अंधेरे कोनों में छिपे अर्थ नग्न होकर कल्पना की ओर बढ़ते हैं और रूप धारण करने लगते हैं। हर कोई वहाँ जो रूप पाता है, उसे ग्रहण कर लेता है या कम से कम अपने सिर पर दुपट्टा लपेट लेता है और पैरों में जूते पहन लेता है। अगर उन्हें पहनने के लिए कुछ भी नहीं मिलता है, तो वे अपनी छाती पर कोई पदक या बटन लगा लेते हैं और चले जाते हैं, हमें दिखाते हैं कि उन्हें किसके दिमाग में प्रशिक्षित किया गया है।

अगर हम किसी शब्द की शैली का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें जो बेतरतीब ढंग से नहीं बोला गया है, बल्कि किसी व्यक्ति के स्वभाव से निकला है, तो यह उस व्यक्ति को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करेगा जिसने इसे पहना है। अगर आप उनकी आवाज़ या साँस के आधार पर और उनके लिखने या बोलने के तरीके के आधार पर यह समझने की कोशिश करते हैं कि कोई व्यक्ति कैसा है, और अगर आप कल्पना कर सकते हैं कि वे किस तरह की चीज़ें करते हैं या कैसे करते हैं, तो कल्पना करने का "स्कूल" आपको दोषी नहीं ठहराएगा। अगर आपकी कल्पना किसी ऐसी बीमारी से ग्रस्त है जो आपको यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या ऐसा करना वास्तव में संभव है, तो आप अस्पताल में पहुँच सकते हैं, जिसे बुद्धिमान डॉक्टर बुसैरी48 ने निम्नलिखित दोहे में बनाया है और पश्चाताप और आँसुओं के साथ उनके द्वारा लिखे गए नुस्खे का उपयोग करते हैं:

> और उन आँखों से आँसू बहाओ जो निषिद्ध दृश्यों से भरी हुई हैं और पश्चाताप
> के उपवास पर कायम रहो।

या यदि आपको प्यास लगी है और आप देख सकते हैं कि अर्थ का पेय किस प्रकार शैली की बोतल के अनुकूल है, और आप इसे पीना चाहते हैं, तो आप जा सकते हैं

---

48 मुहम्मद इब्न सईद अल-बुसिरी (बुसैरी) (1212-1296) का जन्म और मुख्य रूप से मिस्र में ही निवास था। उन्होंने इस्लामी विज्ञान और भाषा और साहित्य दोनों का अध्ययन किया। उन्हें मुख्य रूप से उनके क़सी-दत अल-बुर्दा ("क्लोक की स्तुति") के लिए जाना जाता है, जिसे उन्होंने हमारे पैगंबर मुहम्मद की प्रशंसा में लिखा था, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। (अनुवाद)

एक शराब बनाने वाले से पूछिए कि एक वाक्पटु शब्द क्या है। उस शराब बनाने वाले की कला उसे इस प्रकार बोलने के लिए प्रेरित करेगी:

> एक वाक्पटु शब्द का अर्थ ज्ञान के बर्तनों में किण्वित होता है, और ज्ञान के बड़े बैरल में रखा जाता है, जिसे समझ के फिल्टर के माध्यम से आसुत किया जाता है। प्यालेवाले, जो अच्छे स्वाद और अच्छी अभिव्यक्ति वाले दयालु लोग होते हैं, शराब के प्याले बाँटते हैं, और मन इस भेंट का हिस्सा बनते हैं। इस तरह, वे अर्थ लोगों की आंतरिक दुनिया की गहराई में जाते हैं और भावनाओं को उत्तेजित करते हैं।

अगर आपको ऐसे शराबियों की बातें पसंद नहीं आती हैं, तो आप उस खबर पर ध्यान दे सकते हैं जो हुपु ने शेबा की रानी से पैगंबर सुलैमान के पास लाई थी। सुनिए कि कैसे वह पक्षी, जिसने सुलैमान के लिए जल इंजीनियर के रूप में काम किया, उस महान व्यक्ति का वर्णन करता है जिसने कुरान को उतारा और आकाश और पृथ्वी को सबसे सुंदर तरीके से बनाया, बिना किसी और चीज की नकल किए: "मैंने एक ऐसा समुदाय पाया जो ईश्वर के सामने सजदा नहीं करता, जो आकाश और पृथ्वी में छिपी हुई चीजों को प्रकाश में लाता है" (27:24-25)। देखें कि हुपु ने इंजीनियरिंग की अपनी कला से संबंधित ईश्वर का उल्लेख उनके गुण के साथ कैसे किया।

एक संकेत

शैली से मेरा मतलब शब्द का रूप है। दूसरे लोग उसी चीज़ का वर्णन करने के लिए दूसरे शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं। शैली का लाभ यह है कि यह अलग-अलग कथनों को एक साथ जोड़कर एकता बनाती है। नियम के अनुसार, "कुछ अपने सभी भागों के अस्तित्व के माध्यम से स्थापित होता है," शैलियाँ केवल एक भाग को भी गति में लाकर पूरे को गति में लाती हैं। जब लेखन या भाषण का कोई अंश अपने एक हिस्से में भी शैली की सिद्धि को प्रदर्शित करता है, तो पाठक या श्रोता उस शैली को पूरी तरह से महसूस कर सकता है, भले ही वह धुंधली हो।

उदाहरण के लिए, जहाँ भी "लड़ाई" शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, वह एक खिड़की के माध्यम से, युद्ध के मैदान और उस पर लड़ाई को प्रदर्शित करता है। ऐसे कई शब्द हैं जो समान हैं। उन्हें छवि के छायाकार के रूप में वर्णित किया जा सकता है-

इनेशन.

एक अनुस्मारक

शैली के कई प्रकार और स्तर हैं। वे कभी-कभी इतने सुंदर होते हैं कि वे सुबह की हवा से भी अधिक धीरे-धीरे बहते हैं। कभी-कभी वे

आधुनिक राजनयिकों की योजनाओं की तुलना में ये योजनाएँ अधिक गुप्त हैं। उनकी समझ के लिए राजनयिक की बोधगम्यता से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है।

उदाहरण के लिए, टिप्पणीकार ज़माख़शरी49 ने कुरान की उस आयत में एक चुनौती देखी जो अविश्वासियों द्वारा पुनरुत्थान को अस्वीकार करने का वर्णन करती है: "इन हड्डियों में जीवन कौन देगा, जब वे सड़ चुकी होंगी?" (36:78) वास्तव में, विद्रोही लोग खुद का बचाव करने का प्रयास करते हैं और यहां तक कि निर्माता के आदेशों के खिलाफ संघर्ष भी करते हैं।

चौथा मामला

एक शब्द अपनी शक्ति अपने तत्वों के आपसी सहयोग से और उनके मूल विषय की ओर मुड़ने से प्राप्त करता है। शब्द के सभी तत्वों को उक्ति में व्यक्त सिद्धांत के अनुरूप होना चाहिए:

हमारे कथन अलग-अलग हैं, लेकिन आपकी सुंदरता एक है;
प्रत्येक कथन उस सौंदर्य को इंगित करता है।

किसी शब्द का मूल विषय एक तालाब की तरह होना चाहिए, जिसके तत्व सभी दिशाओं से उसमें बहने वाली धाराएँ या नदियाँ हों, ताकि मन भ्रमित न हो।

एक संकेत

जब किसी शब्द के सभी तत्व उसके मूल स्वरूप की ओर संकेत करते हैं या उसकी ओर मुड़ जाते हैं

इसके उच्चारण का विषय या उद्देश्य, व्यवस्था और सामंजस्य का परिणाम है, जो इसकी सुंदरता का निर्माण करता है। यदि आप चाहें, तो ईश्वर के वचन - कुरान पर विचार करें। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित आयत को देखें जो लोगों को नरक की आग से दूर रखती है और दिखाती है कि यह कितनी भयानक है:

यदि तेरे रब की यातना की एक साँस भी उन्हें छू जाए (21:46)

देखिये कि इस आयत के सभी तत्व किस प्रकार मूल बिन्दु को पूरा करते हैं, तथा यह दर्शाते हैं कि नरक की सजा की छोटी सी मात्रा कितनी तीव्र है तथा लोगों पर इसका कितना प्रभाव पड़ता है।

---

[49] अबुल-कासिम जरुल्लाह महमूद इब्न उमर अल-ज़माखशरी (1075-1144) इस्लाम के मुताज़िलाइट विद्वान थे, जो कुरान के सबसे प्रसिद्ध व्याख्याकारों में से एक थे। वे क्वारज़्म में रहते थे। कुरान की उनकी व्याख्या जिसे अल-कशशाफ़ कहा जाता है , आयतों के गहन भाषाई विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध थी। (अनुवाद)

शब्द “अगर लेकिन” (ला-इन), जो एक सशर्त खंड शुरू करते हैं और सुदृढ़ीकरण रखते हैं, अनिश्चितता को दर्शाते हैं और इसलिए (दंड की) तुच्छता को दर्शाते हैं। क्रिया मास्सा का अर्थ है थोड़ा छूना, जो भी तुच्छता को दर्शाता है।
नफ़हतुन (एक साँस) हवा का झोंका मात्र है। बिना किसी निश्चित उपपद के इस्तेमाल किए जाने के कारण, यह भी हल्कापन पर जोर देता है। नफ़हतुन के अंत में दोहरा एन (तन्विन) अनिश्चितता को दर्शाता है और यह बताता है कि यह हल्का और महत्वहीन है। विभाजक मिन (से) एक भाग या एक टुकड़ा को दर्शाता है, इस प्रकार पौ-सिटी को दर्शाता है। 'अदहब (पीड़ा या दंड) शब्द नक़ल (अनुकरणीय दंड) और 'इकाब (भारी दंड) की तुलना में अर्थ में हल्का है , और एक हल्की सजा या यातना को दर्शाता है। (उदाहरण के लिए) अल-क़ह-हर (सर्व-प्रधान) या अल-जब्बार (सर्व-मजबूर) के बजाय , अर-रब्ब (प्रभु, प्रदाता, पालनकर्ता) का उपयोग, स्नेह का सुझाव देते हुए , भी हल्कापन व्यक्त करता है। चूंकि पूरा खंड व्यक्त करता है कि यह सबसे कम मात्रा है, इसके सभी भाग उस अर्थ को पुष्ट करते हैं।

अंत में, इस खंड का अर्थ है कि यदि पीड़ा या दंड की ऐसी हल्की सांस का भी यह प्रभाव पड़ता है, तो व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि ईश्वरीय दंड कितना गंभीर होगा। हम इस छोटे खंड में देखते हैं कि इसके भाग एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं और अर्थ को जोड़ते हैं। पद के आगे के भाग में, वे निश्चित रूप से चिल्लाते हैं: "ओह, हम पर हाय! हम वास्तव में गलत काम करने वाले थे!" यह भी पद के अर्थ या मूल बिंदु को जोड़ता है।

यदि दण्ड का हल्का सा स्पर्श भी इस स्तर का है, तो ईश्वर हमें उससे पूरी तरह बचाए!

एक अनुस्मारक

यह आपके लिए एक उदाहरण है। आप इस पर अपना खुद का फीता बुन सकते हैं। कुरान की सभी आयतों में सुंदरता, सामंजस्य और अनुपात का एक ही स्तर है। उद्देश्य कभी-कभी एक दूसरे के भीतर दिखाई देते हैं और एक दूसरे का अनुसरण करते हैं। प्रत्येक आयत के अर्थ एक दूसरे के साथ-साथ हैं, एक दूसरे के साथ हस्तक्षेप किए बिना। ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि सतही दृष्टिकोण कई चीजों को एक दूसरे के साथ भ्रमित करता है।

पांचवां मामला

जिस प्रकार एक भाषण उस मूल विचार को व्यक्त करने के लिए रचा जाता है जिसके लिए वह लिखा गया है, उसी प्रकार उसके अर्थ की सुन्दरता और गहराई भी द्वितीयक या अतिरिक्त अर्थों और उद्देश्यों को उस शैली की सहायता से निर्धारित करने में निहित है जिसमें संकेत, अप्रत्यक्ष संदर्भ, सुझाव आदि जैसी साहित्यिक कलाएं समाहित हों।

संकेत और संकेत। अपने सभी तत्वों के साथ, यह शैली कल्पना की क्षमता को विभिन्न दिशाओं में ले जाने के लिए प्रेरित करती है, और दिल या दिमाग के दूर के कोनों में प्रशंसा की भावनाएँ जगाती है। संकेत, सुझाव और संकेत मुख्य ध्यान केंद्रित करने के लिए नहीं हैं; वे मूल उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं बनाए गए हैं। इस कारण से, एक वक्ता को इस बात के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है कि उसके मन में कौन से संकेत, सुझाव और संकेत आए हैं। यदि आप चाहें, तो निम्नलिखित दोहे लिखें, जहाँ देखने लायक चीजें हैं।

उस बूढ़े आदमी की दाढ़ी के भीतर देखो, जो अपनी पीठ पर बैठा है
तेज घोड़ा, एक जवान औरत के सामने जवान दिखना चाहता है:

उसने कहा, "आप बूढ़े हो गए हैं और आपकी दाढ़ी सफेद हो गई है।"
मैंने उत्तर दिया, "यह समय की घटनाओं से उत्पन्न धूल है।"

आप कुछ अन्य दोहे भी देख सकते हैं:

मेरी दाढ़ी जो सफ़ेद बालों से चमक रही है, उससे तुम भयभीत न हो जाओ;
क्योंकि यह विचारशील विचारों और परिपक्वता की मुस्कान है।

एक और:

जवानी की रात में तुम्हारी आँखें गहरी नींद में चली गईं;
वे बुढ़ापे की सुबह तक जाग नहीं सकते थे।

दूसरा:

ऐसा लगा जैसे सुबह ने मेरे घोड़े की आँखों पर तमाचा मारा हो;
मेरा घोड़ा अपना बदला लेने के लिए उस तक पहुंचने के लिए दौड़ा; वह वहां पहुंचा और खुशी से उसे नीचे गिरा दिया।

दूसरा:

मेरा दिल वैसे ही सरसराता है जैसे चलते समय उसकी बेल्ट सरसराती है;
लेकिन उसका हृदय उसके कंगन जैसा है, जो अपनी जगह पर स्थिर है।

ऊपर दिए गए दोहे में कवि कह रहा है कि उसका दिल एक औरत के लिए प्यार से धड़कता है लेकिन उसके दिल में उसके लिए कोई प्यार नहीं है। वह यह भी बताता है कि उसकी कमर पतली है और कलाइयाँ मोटी और गोल हैं।

एक और दोहा:

बाढ़ ने अपना भार ग़ाबत के रेगिस्तान पर डाला,
मानो कोई यमनी व्यापारी कपड़े का बोझ लेकर गुजरा हो।

अगर शाम को कोई यमनी व्यापारी किसी गांव में आता है और गांव वाले उससे रंग-बिरंगे कपड़े खरीदते हैं, तो अगली सुबह हर कोई अलग रंग के कपड़े पहनकर बाहर निकलेगा। गांव का चरवाहा भी अपने सिर पर रूमाल बांधता है। इसी तरह, जब बाढ़ रेगिस्तान पर अपना बोझ डालती है, तो प्राकृतिक प्रक्रियाओं का नतीजा, जिसे अदृश्य जैव रसायन की तरह देखा जा सकता है, यह होता है कि सुंदर फूलों के लिए रंग-बिरंगे कपड़े सिल दिए जाते हैं। यहां तक कि कैक्टस, जिसे फूलों का चरवाहा माना जा सकता है, लाल हो जाता है।

एक और:

> वफ़ादारी खींच ली गई है (एक गुफा में) और गायब हो गई है, और अन्याय
> गरजकर बह निकला है;
> यही कारण है कि कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है।

अगर आप आगे नहीं जाना चाहते हैं, तो आप इस पुस्तक के पहले भाग के अंत में देख सकते हैं। आपको इस मामले के कई उदाहरण मिलेंगे। संक्षेप में, कुरान की आयतों की चमत्कारिकता की कुंजी अरबी वाक्पटुता है; यह प्राचीन यूनानी दर्शन नहीं है। या आप पहले मामले के अंत में दिए गए संकेत को देख सकते हैं जो पहले मामले में बारहवें आधार में शामिल है।

भाग। ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के दिव्य नियमों ने निर्धारित किया है कि यह अतिथिगृह - पृथ्वी, जो मौलवी दरवेश की तरह परमानंद में घूमती है - ग्रहों की पंक्ति में खड़ी हो और सूर्य की आज्ञा का पालन करे। क्योंकि अपने मित्र - आकाश के साथ - उन्होंने ईश्वर से कहा: "हम स्वेच्छा से आज्ञाकारिता में आए हैं।" (41:11)50 आज्ञाकारिता और उपासना तब बेहतर होती है जब सामूहिक रूप से की जाती है। अब, ऊपर दिए गए उदाहरणों पर विचार करें। उनके अर्थों के अलावा, उनमें कई अर्थ भी निहित हैं।

छठा मामला

किसी शब्द या वाणी के फल उसके अर्थ की विभिन्न परतों में मौजूद होते हैं, साथ ही उसके अर्थसूचक और अर्थसूचक दोनों अर्थों में भी। रसायन शास्त्र से परिचित लोग जानते हैं कि जब सोने जैसी कोई कीमती धातु प्राप्त होती है, तो अयस्कों से भरी मिट्टी के ढेर को फैक्ट्री में बड़े कंटेनरों में उबाला जाता है और बनने वाले पदार्थ को प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में कई फिल्टर से गुजारा जाता है। इसी तरह, एक शब्द के कई अलग-अलग अर्थ होते हैं, जो अलग-अलग समझ को जन्म देते हैं। ये अर्थ और समझ इस प्रकार बनते हैं:

---

50 फुटनोट 37 देखें।

कुछ भाव और संवेदनाएँ हृदय (या मन) में कुछ बाह्य कारणों के परिणामस्वरूप प्रकट होती हैं। वे कुछ प्रवृत्तियों को जन्म देती हैं। बुद्धि या बुद्धि इन प्रवृत्तियों से उत्पन्न कुछ अर्थों को देखकर उन्हें अपनी ओर खींच लेती है। कुछ अर्थ, जो वाष्प के रूप में होते हैं, संघनित होकर बुद्धि के भीतर बूंद-बूंद करके गिरते हैं, जबकि कुछ खुले में रह जाते हैं। कुछ बूँदें ठोस हो जाती हैं और बुद्धि उन्हें वाणी में समाहित कर लेती है। ठोस हो जाने वालों में से कुछ में विशेष लक्षण होते हैं और बुद्धि उन्हें विशेष रूप दे देती है। शेष, जिनमें विशेष लक्षण नहीं होते, बुद्धि उन्हें कोष्ठक में ले लेती है। जो बूँदें ठोस नहीं हुई हैं, उन्हें संकेतों और संकेतों के पीछे रख देती है और जो अर्थ वाष्पित नहीं हुए हैं, उन्हें वक्ता के हाव-भावों के हवाले कर देती है। इस प्रकार, भाषण के भागों और उसके मूल और/या सामान्य अर्थ, उसके अर्थ, विषय-वस्तु, संकेत, भाषण के कारण बनने वाले कारक, भाषण के मूल और द्वितीयक उद्देश्य, कोष्ठकीय अर्थ और भाषण में निहित अन्य सभी तत्वों का स्रोत इन सभी फिल्टर में है। आप उन्हें अपने दिल में इस प्रकार देख सकते हैं:

जब आपकी प्रेमिका अपनी सुंदरता का आकर्षण और बिजली आपकी आँखों के झरोखे से आपके दिल में बिखेरती है, तो प्रेम नामक आग प्रज्वलित होती है।
भावनाएँ जागृत होती हैं, और जो इच्छाएँ और प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं, वे ऊपरी मंजिल पर कल्पना के तल में छेद बना देती हैं और मदद माँगती हैं।
कल्पना के भण्डार में पंक्तिबद्ध खड़े होकर और जिस प्रियतम से वे परिचित हैं, उसके सौंदर्य का स्मरण होते ही तुरन्त चित्र बनाना आरम्भ कर देते हैं, कल्पनाएँ कामनाओं की सहायता के लिए दौड़ पड़ती हैं। वे एक साथ दौड़ते हुए कल्पना के भण्डार से जीभ तक उतर आती हैं।

फिर, मिलन के मीठे जल की इच्छा को पीछे छोड़कर, अपने दाहिनी ओर विरह की पीड़ा को, अपनी बाईं ओर सम्मान, वर्णन और लालसा को, अपने सामने उस प्रियतम की सुन्दरता को, जिससे दया और अनुग्रह की याचना की जाती है, तथा अपने हाथों में स्तुति के हार और स्तुति के मोतियों को उपहार के रूप में रखकर, वे उस अग्नि को बुझाने के लिए, जिसे ऐसी अग्नि के रूप में वर्णित किया जा सकता है, "जो हृदयों में गहराई तक प्रवेश करती है," वे उसके गुणों और सौन्दर्य की गणना करके मिलन की याचना करने लगते हैं।

देखें कि कितने सारे गौण अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ की परतों के अतिरिक्त स्वयं को स्पष्ट कर देते हैं! अगर हिम्मत है तो मन में झाँक कर देखें

इब्न फ़रीद51 और अबू तैयब52 की आँखों से देखें और देखें कि निम्नलिखित दोहे उनके मन में क्या है, उसका अनुवाद कैसे करते हैं:

तिरछी नज़र से मैंने उसके गाल पर गुलाब लगाया है;
मेरी नज़र को उस गुलाब को तोड़ने का अधिकार है जिसे उसने लगाया है।

एक और:

वह चिकित्सक जिसने मेरी आँखों और मेरे शरीर के आंतरिक अंगों की जाँच की,

हलअता की पहली आयत और तब्बत की तीसरी आयत पढ़ी। 53

एक और:

तुम्हारे होठों पर पड़े तिल ने मुझे तुम्हारे लिए जलने से रोका, पता नहीं क्यों;

जबकि मेरा दिल तुम्हारे प्रति लगाव के कारण टूट गया है।

एक और:

मेरा हृदय कांटेदार वृक्ष से प्रज्वलित आग में है;
लेकिन मेरी आँखें सुन्दरता के बगीचे में आराम कर रही हैं।

देखो, कैसे आँखें सौंदर्य को देखती हैं, जबकि हृदय जल रहा है, और देखो कि कैसे दोहे प्रियतम की उदासीनता, वियोग की पीड़ा, मिलन की इच्छा और उत्साह को दर्शाते हैं, तथा सौंदर्य की प्रशंसा के साथ-साथ भावनाओं को भी उत्तेजित करते हैं।

एक संकेत

जिस प्रकार सरकारी विभाग में प्रत्येक अधिकारी को उसकी क्षमता, कार्य, पद और सेवा के वर्षों के अनुसार वेतन दिया जाना चाहिए

---

51 उमर इब्न अली इब्न अल-फरीद (1181-1235) एक मुस्लिम अरब सूफी कवि थे। उनका जन्म काहिरा में हुआ था, कुछ समय तक मक्का में रहे और काहिरा में ही उनकी मृत्यु हुई। उन्हें सबसे महान सूफी कवियों में से एक माना जाता था। नज़्म अल-सुलुक ("सूफी मार्ग पर यात्रा की कविता") और हमरीया ("शराब की स्तुति"), जो आध्यात्मिक आनंद के बारे में है, उनकी दो उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।

(अनुवाद)

52 अबू तैय्यब अहमद इब्न अल-हुसैन अल-मुतनब्बी (905-965) का जन्म इराक के कुफा में हुआ था। वे अरबी भाषा के सबसे प्रसिद्ध कवियों में से एक हैं। उन्हें अपनी कविता, विद्वत्ता और साहस पर बहुत गर्व था। (अनुवाद)

53 हलअता क़ुरआन की 76वीं सूरा है । इसकी पहली आयत कहती है: "क्या मनुष्य के जीवन में कभी ऐसा समय आया जब वह एक ऐसी चीज़ थी जिसका ज़िक्र नहीं किया गया और जिसे याद नहीं किया गया?" तब्बत 111वीं सूरा है और इसकी तीसरी आयत कहती है: "वह जलने वाली आग में जाएगा ताकि जल जाए।" (अनुवाद)

सेवा, इसी तरह भाषण में विभिन्न पदों से उत्पन्न होने वाले अर्थों पर भी भाषण के मूल उद्देश्य और उस उद्देश्य में उनके योगदान के साथ प्रत्येक के संबंध के अनुसार ध्यान दिया जाना चाहिए। इस तरह इस विभाजन में न्याय एक व्यवस्था को जन्म दे सकता है, व्यवस्था अनुपात को जन्म देती है, अनुपात पारस्परिक सहायता और एकजुटता को जन्म देता है, और पारस्परिक सहायता और एकजुटता भाषण की सुंदरता और उत्कृष्टता के लिए एक उचित माप प्रदान कर सकती है। अन्यथा, जिनका काम सफाई करना या काम चलाना है या जो बचकाने स्वभाव के हैं, वे अपने दिए गए उच्च पद के कारण घमंडी हो जाते हैं और अनुपात और एकजुटता को नष्ट कर देते हैं, जिससे भ्रम पैदा होता है। इसलिए, भाषण में प्रत्येक तत्व की क्षमता पर विचार किया जाना चाहिए। क्योंकि उनकी व्यक्तिगत सुंदरता के बावजूद, आंख या नाक जैसे घटक चेहरे को बदसूरत बना सकते हैं यदि वे मानक से बड़े या छोटे हैं।

एक अनुस्मारक

एक मार्शल शायद वही काम न कर पाए जो एक आम सैनिक करता है, जैसे कि टोही का काम, और एक महान विद्वान शायद वही उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल न कर पाए जो एक छात्र कर सकता है; हर कोई अपने-अपने क्षेत्र में महान होता है। इसी तरह, कभी-कभी ऐसा होता है कि कई अर्थों में से एक महत्वहीन लगने वाला अर्थ सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है और इस तरह उसका महत्व बढ़ जाता है। ऐसे व्यक्ति का कर्तव्य निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है:

भाषण में मूल तत्व या तो इतना स्पष्ट हो जाता है कि वह किसी का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाता या भाषण के मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए बहुत कमजोर हो जाता है। या शायद उस तत्व को सुनने या स्वीकार करने के लिए कोई श्रोता नहीं होता; या शायद वह वक्ता की स्थिति या परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होता; या वह भाषण देने में वक्ता की आवश्यकता या इरादे की पूर्ति नहीं करता; या शायद वह वक्ता के चरित्र या सम्मान के अनुरूप नहीं होता; या शायद वह भाषण के मुख्य उद्देश्य या उसके द्वितीयक अर्थों और प्रयोजनों के लिए विदेशी प्रतीत होता है; या शायद वह उद्देश्य के संरक्षण या आवश्यक तत्वों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त नहीं होता। परिणामस्वरूप, इनमें से प्रत्येक कारक कुछ परिस्थितियों में वरीयता प्राप्त कर सकता है। लेकिन यदि वे सभी एक दूसरे के अनुरूप मौजूद हों, तो वे भाषण के मूल्य को सर्वोच्च स्तर तक बढ़ा देते हैं।

नतीजा # परिणाम

कुछ अर्थ ऐसे होते हैं जो हमेशा लटके रहते हैं, उनका कोई खास रूप या स्थान नहीं होता। इंस्पेक्टर की तरह वे हर विभाग में घुस जाते हैं। कुछ लोग किसी शब्द को अपने लिए खास बना लेते हैं, जबकि दूसरे, हवा की तरह बहते हुए—कोई दूसरा शब्द उन्हें अपनी ओर खींच लेता है। कुछ शब्द दूसरों को अपनी ओर खींच लेते हैं। वे कभी-कभी किसी वाक्य या संक्षिप्त विवरण में समा जाते हैं। जब आप उस वाक्य या विवरण की जांच करते हैं, तो उनमें से कोई भी अर्थ उभर कर आ सकता है। उन अर्थों में वियोग, तड़प, आत्म-गौरव या पछतावे का दर्द शामिल हो सकता है।

सातवां मामला

वाकपटुता का जीवन या वाणी का ज्ञान प्रकृति में काम करने वाले नियमों को अपना मार्गदर्शक मानने में निहित है। यानी, ऐसे नियम हैं जिन पर प्रकृति के रूप में या प्रकृति में प्रकट होने वाले सभी सत्य निर्भर हैं।

ये नियम अपरिवर्तनीय हैं, जबकि उनके प्रभाव या परिणाम उनकी पहचान या प्रकृति के साथ बदलते हैं। (अर्थात, वर्तमान वर्ष में एक पेड़ के फूल, पत्ते और फल अन्य वर्षों की तरह पहचान में समान नहीं होते हैं, लेकिन वे प्रकृति में समान होते हैं।) वाक्पटुता इन नियमों को मन में उठने वाले अर्थों पर लागू करके जीवन पाती है, उनके प्रभावों से होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए। इसका मतलब है कि वाक्पटुता, एक दर्पण की तरह, बाहरी दुनिया से परावर्तित सत्य की किरणों को धारण करती है और प्रदर्शित करती है। यह ऐसा है मानो यह सृष्टि और प्रकृति की नकल करना चाहता है

कल्पना की कला और शब्दों की कढ़ाई। भले ही कोई शब्द या भाषण सत्य के समान न हो, लेकिन उसे सत्य से और बाहरी दुनिया में उसके द्वारा आकार दिए जाने वाले क्रम से सहायता प्राप्त करनी चाहिए, और सत्य के बीज से विकसित होना चाहिए।

इसका मतलब है कि किसी शब्द या भाषण में उन बुनियादी सत्यों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए जो प्रकृति के रूप में प्रकट होते हैं, बीज के रूप में जिनसे उगना है। हालाँकि, हर बीज अपने आप में एक अंकुर, पौधा या पेड़ बन जाता है। गेहूँ का बीज पेड़ नहीं बन सकता।

इस कारण यदि वाणी के दर्शन पर विचार न किया जाए तो वाक्पटुता से केवल अंधविश्वास ही उत्पन्न होता है, तथा कल्पना से केवल भ्रम ही उत्पन्न होता है।

एक संकेत

वाणी की तरह व्याकरण का भी एक दर्शन है। यह दर्शन प्रकृति की तरह सृष्टिकर्ता की बुद्धि को प्रदर्शित करता है। व्याकरण का दर्शन व्याकरण की पुस्तकों में बताए गए शब्दों के बीच के संबंध पर आधारित है। उदाहरण के लिए,

अरबी में, किसी भी परिवर्तनीय शब्द को केवल उस संशोधक द्वारा संशोधित किया जाता है जो उसके ठीक सामने रखा जाता है। प्रश्नवाचक कण, हाल, उस क्रिया से तुरंत जुड़ना चाहता है जिसे वह संशोधित करता है। विषय के रूप में कार्य करने वाला शब्द शक्तिशाली है और स्वर चिह्न यू को उपयुक्त बनाता है, जो भी शक्तिशाली है।

संक्षेप में, भाषाओं में कार्यरत नियम प्रकृति में कार्यरत नियमों के प्रतिबिम्ब हैं।

एक अनुस्मारक

व्याकरण से संबंधित वर्णित संबंधों में ज्ञान बहुत मूल्यवान है, भले ही यह वाक्पटुता या शैलियों के ज्ञान जितना स्पष्ट नहीं है।

कम से कम, इसने पारंपरिक, रिपोर्ट किए गए धार्मिक विज्ञानों, जैसे कि न्याय-विवेक, का नेतृत्व किया है, जो मूल रूप से स्पष्ट और अंतर्निहित रहस्योद्घाटन पर आधारित हैं -

कुरान और सुन्नत के सिद्धांतों के माध्यम से तर्कसंगत विज्ञान के रूपों में निगमन और आगमन जैसे सिद्धांतों के माध्यम से विकसित हुए हैं।

आठवां मामला

भाषण के अर्थ एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, समर्थन करते हैं और एक दूसरे में जोड़ते हैं, यहाँ तक कि इसके भागों के आवश्यक अर्थों के माध्यम से एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान करते हैं और एक दूसरे में बदल जाते हैं, जो या तो उस भाषण के उद्देश्य या उसके संभावित अर्थों में से एक को अवशोषित करते हैं। खुले में छोड़े गए अर्थ वास्तविकता में बदल जाते हैं, जिसमें मूल अर्थ समाहित होता है। शब्द या भाषण को अस्तित्व देने वाला अर्थ शक्ति प्राप्त करता है और अन्य घटकों की मदद करता है। इसे इसके संभावित अर्थों से भी मदद मिलती है। इस कारण से, एक भाषण के कई अर्थ होते हैं, और अर्थों के बीच आदान-प्रदान और संबंध इसी बिंदु से उत्पन्न होते हैं। इस तथ्य की अनदेखी करने वाला व्यक्ति वाक्पटुता का एक महत्वपूर्ण तत्व खो देता है।

एक संकेत

अगर, अरबी भाषा में, कोई चीज सवारी करने के लिए सवारी के रूप में काम आती है, तो यह अला (पर) प्रस्ताव के योग्य है (जैसा कि अंग्रेजी वाक्यांशों में, " घोड़े पर ," **और** " ट्रेन पर"); अगर इसमें कुछ और है और यह कंटेनर के रूप में काम करता है, तो यह प्रस्ताव फी (में) की मांग करता है (जैसा कि अंग्रेजी वाक्यांशों में, " कमरे में " **और** "डिश में ")। अगर कोई चीज एक उपकरण के रूप में काम करती है, तो यह प्रस्ताव बी (साथ) को अपने पास खींचती है, जैसे कि "मैं चढ़ गया

वहाँ रस्सी के साथ ।" जब कोई चीज किसी और चीज या घटना के लिए जगह के रूप में कार्य करती है, तो यह उसके पहले पूर्वसर्ग फी (में, पर, या पर) लेती है; जब इसका अर्थ किसी ऐसी दिशा से होता है जिसकी ओर कोई और चीज मुड़ती है या निर्देशित होती है, या किसी गंतव्य की ओर जाती है, जिसके लिए कोई अन्य चीज जा रही है, तो उसे या तो इला या हत्ता (के लिए, के लिए) की आवश्यकता होती है। यदि यह किसी घटना का इरादा या कारण है, या यदि यह किसी उद्देश्य को व्यक्त करता है, तो इसका उपयोग ली (के लिए) के साथ किया जाता है, जैसा कि यह है, "सूर्य अपने विश्राम स्थान के लिए एक अवधि के लिए इसके लिए नियुक्त पाठ्यक्रम चलाता है

इसकी प्रणाली की स्थिरता (36: 38)।"

एक अनुस्मारक

इनमें से जो भी अर्थ आपके उद्देश्य से अधिक जुड़ा हुआ हो, उसे अपने भाषण में प्राथमिकता दें और अन्य भागों से उसका समर्थन करवाएं।
अन्यथा, आपकी शैली भव्यता से रहित हो जाएगी।

नौवां मामला

वाक्पटुता का उच्च स्तर जो सरल मस्तिष्कों और मानव की स्वतंत्र इच्छा को विस्मित कर देता है और उन्हें अनुकरण करने में असमर्थ बना देता है, क्योंकि इसमें एक दूसरे के भीतर उद्देश्य होते हैं और एक दूसरे से जुड़े हुए लक्ष्यों को इंगित करता है, एक ही परिणाम की ओर मुड़े हुए कई आवश्यक तत्वों को समाहित करता है और इसमें कई शाखाएं होती हैं जो अलग-अलग फल देती हैं।

मूल उद्देश्य से उत्पन्न होने वाले उप-उद्देश्य एक दूसरे का समर्थन करते हैं ताकि समीपता के अधिकारों को पूरा किया जा सके, जिससे वाणी को भव्यता और व्यापकता मिलती है। ऐसा लगता है जैसे जब एक प्रकट होता है, तो दूसरे भी प्रकट होते हैं। मूल उद्देश्य सभी दिशाओं (दाएं, बाएं, सामने, पीछे, आदि) को अलग करता है और उनके बीच संबंधों पर विचार करता है, अन्य सभी उद्देश्यों को वाणी के किलेबंद किले में रखता है। इस प्रकार, ऐसा लगता है जैसे यह अपनी सहायता के लिए कई बुद्धि को नियुक्त करता है, और उद्देश्यों की सभा में प्रत्येक उद्देश्य एक ऐसा भाग है जिसकी ओर सभी विवरण मुड़ जाते हैं। जिस तरह चित्रकार अपने संकेंद्रित चित्रों से बनी पेंटिंग में एक काला बिंदु जोड़ता है, वह एक चित्र में आंख बन जाता है, दूसरे में सौंदर्य बिंदु, तीसरे में मुंह, और इसी तरह, वाक्पटु भाषण में भी समान विशेषताएं होती हैं।

एक बहुत ही वाक्पटु भाषण भी, एक से अधिक आधारों से शुरू होने वाले सादृश्य की तरह, जो विभिन्न परिणाम उत्पन्न करता है, कई उद्देश्यों पर विचार करता है जो एक दूसरे के संबंध में एक साथ कारण और प्रभाव दोनों हो सकते हैं। यह ऐसा है जैसे वक्ता स्थायित्व के नाम पर एक वंश वृक्ष की ओर इशारा करता है

और इन उद्देश्यों का गुणन। उदाहरण के लिए, दुनिया सुंदर और व्यवस्थित है; इसलिए, इसका निर्माता बुद्धिमान है। वह व्यर्थ में सृजन नहीं करता, न ही वह बर्बाद करता है, न ही वह भ्रष्ट करने की क्षमता छोड़ता है। इसका मतलब है कि वह लगातार व्यवस्था को पूर्णता तक ले जाएगा। वह मानवता को अस्तित्वहीनता की निंदा नहीं करेगा, जिसका अर्थ है शाश्वत अलगाव और निराशा का कारण बनता है, पूर्णता को रोकता है, और सहनशीलता से परे है। इसलिए शाश्वत खुशी होगी। मानवता और जानवरों के बीच अंतर, जिनकी चर्चा इस पुस्तक के तीसरे भाग में दूसरे उद्देश्य के परिचय में की गई है, इसका एक अच्छा उदाहरण है।

अत्यधिक वाक्पटु भाषण की तीसरी विशेषता यह है कि इससे उत्पन्न एक अनिवार्य परिणाम अनेक अन्य परिणाम उत्पन्न करता है तथा यह विभिन्न मूलों पर आधारित होता है।
यद्यपि प्रत्येक मूल इस मुख्य, प्राथमिक रूप से इच्छित परिणाम से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ नहीं हो सकता, फिर भी कम से कम वह इसमें योगदान तो देता ही है। मूलों के भेदों के बावजूद, वाणी मूल परिणाम में सन्निहित मूल उद्देश्य को इंगित करती है तथा उसे श्रेष्ठ बनाती है।

एक भाषण अपनी शक्ति और शक्ति सार्वभौमिक अस्तित्व के अंतर्निहित सत्य के साथ अपने संबंध से प्राप्त करता है, जिसे ब्रह्मांड का जीवन, सार्वभौमिक जीवन या मामलों का सार्वभौमिक आचरण भी कहा जाता है। इस पुस्तक के तीसरे भाग में तीसरे उद्देश्य में "सबसे सामान्य प्रमाणों का सारांश (शारीरिक पुनरुत्थान के लिए)" एक निश्चित सीमा तक इसका एक उदाहरण है। इसके अलावा, दूसरे उद्देश्य में चौथे तरीके में शामिल "संकेत, मार्गदर्शन और अनुस्मारक" और इसमें शामिल तर्क भी इसके उदाहरण प्रदान करते हैं।

यदि आप क़ुरआन की शिक्षा देने वाले दयालु की वाणी को देखें, तो आप देखेंगे कि यह सत्य इसकी सभी आयतों में चमकता है। इसलिए, उन लोगों पर अफ़सोस है जो अपने आपको केवल उनके बाहरी पहलुओं और प्रत्यक्ष अर्थों तक सीमित रखते हैं, और इस ईश्वरीय वाणी के इस पहलू को अज्ञानतापूर्वक दोहराव मानते हैं!

वास्तव में वाक्पटु भाषण के बारे में उल्लेख करने योग्य चौथी बात यह है कि इसमें ऐसी क्षमता और शब्द-विन्यास होता है कि इसमें ऐसे बीज होते हैं जो कई अंकुरों में विकसित हो सकते हैं, और यह कई निष्कर्षों को जन्म देता है, जिसमें कई अर्थ और पहलू होते हैं। इस क्षमता के साथ, एक वाक्पटु भाषण कई अर्थों को उत्पन्न करने की अपनी शक्ति को प्रकट करता है और अपने उत्पादों को प्रदर्शित करता है। हालाँकि, यह उन सभी अंकुरों और पहलुओं को उस मूल विषय पर केंद्रित करता है जिसके लिए इसे अभिप्रेत किया गया है। यह अपनी खूबियों और खूबसूरती को भी संतुलित रखता है और अपने प्रत्येक अंकुर को एक अलग लक्ष्य पर भेजता है, अपने प्रत्येक पहलू को एक अलग कर्तव्य के लिए नियुक्त करता है।

उदाहरण के लिए, पैगंबर मूसा (उन पर शांति हो) के बारे में कुरान की कथा में कई लाभ हैं। यहाँ इससे कहीं अधिक लाभ है

तफ़ारीक आसा नामक अरब वृक्ष की प्रसिद्ध प्रजाति , एक ऐसा वृक्ष जो जैसे-जैसे टुकड़ों में विभाजित होता है, वैसे-वैसे अधिकाधिक लाभ प्रदान करता है। कुरान ने इसे अपने "उज्ज्वल हाथ" में लिया है और इसे कई उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया है। यह कथा के प्रत्येक पहलू का इतने शानदार ढंग से उपयोग करता है कि वाक्पटुता में सबसे उन्नत लोग भी इसकी वाक्पटुता के आगे झुकने से खुद को रोक नहीं पाते।

हे भाइयो और बहनो! इस खंड में मैंने जो वाक्पटुता से समझाने की कोशिश की है, वह भले ही अस्पष्ट हो, लेकिन एक ऐसे ऊंचे, भव्य वृक्ष का चित्रण करती है जिसकी शाखाएँ एक दूसरे से उलझी हुई हैं, जिसके भाग एक दूसरे से सामंजस्य रखते हैं और जो विविध फल देता है। यदि आप चाहें तो छठे मामले का अध्ययन कर सकते हैं। हालाँकि यह भ्रामक है, लेकिन यह इस मामले का एक उदाहरण प्रदान कर सकता है।

एक अनुस्मारक और एक बहाना

हे भाइयो और बहनो! मुझे पता है कि पुस्तक का यह भाग आपको अस्पष्ट लग रहा है। लेकिन मुझे इसे संक्षिप्त और संक्षिप्त रखना चाहिए। तीसरे भाग में इसे कुछ हद तक स्पष्ट किया जाएगा।

दसवाँ मामला

प्रवाह का अर्थ है जटिलता और अस्पष्टता के माध्यम से दंभ और श्रेष्ठता की खोज से बचना, और इस प्रकार गलत धारणा या भ्रम पैदा न करना, तथा प्राकृतिक क्रम का अनुकरण करना, स्पष्ट और बोधगम्य होना, स्पष्टीकरण और वर्णन में मूल बिंदु से विचलित न होना, तथा उद्देश्य और उस तक पहुंचने के लिए अपनाए जाने वाले मार्ग की स्पष्टता होना।

दिखावटी या दिखावटी भावुकता और किसी के शब्दों को अन्य शब्दों और भावनाओं के साथ मिला देने से प्रवाह को हानि पहुँचती है।

हमें अव्यवस्थित विवरण और बकवास से भी बचना चाहिए, और सावधान रहना चाहिए-
यह सुनिश्चित करें कि तर्क और अर्थ एक दूसरे की पुष्टि करते हैं।

पुनः, हमें कल्पना शक्ति के माध्यम से प्रकृति का विद्यार्थी बनना चाहिए, ताकि प्रकृति में कार्यरत दैवी नियम हमारी कलाकृति में प्रतिबिम्बित हो सकें।

इसके अतिरिक्त, हमारी अवधारणाएँ बाहरी दुनिया के अनुरूप होनी चाहिए।
मान लीजिए कि हमारी अवधारणाएं हमारे मन से निकलकर बाहरी दुनिया में रूप ले सकती हैं, तो इस दुनिया को उन्हें स्वीकार करना चाहिए और इनकार नहीं करना चाहिए।

उनकी उत्पत्ति के बारे में बताते हुए कहा, “ये मेरे हैं, या ये मेरे जैसे दिखते हैं, या ये मेरी अपनी उपज हैं।”

हमें बिना दाएं-बाएं भटके दृढ़ संकल्प के साथ उद्देश्य की ओर बढ़ना चाहिए, ताकि किनारे पर खड़े लोग हमें अपने उद्देश्य से विचलित न कर सकें। बल्कि किनारे पर खड़े लोगों को अपनी सुंदरता और संपदा से मुख्य उद्देश्य में योगदान देना चाहिए।

इसके अलावा, जिस धुरी के चारों ओर भाषण घूमता है और उद्देश्य का अनुसरण किया जाता है, उसी प्रकार मूल और गौण उद्देश्यों के सामान्य मिलन बिंदु स्पष्ट होने चाहिए।

ग्यारहवाँ मामला

किसी भाषण की सफलता और सुदृढ़ता उसके मुख्य विषय या थीसिस को उसके सभी तत्वों, जिस आधार पर यह आधारित है, तथा उसे समझाने के लिए इस्तेमाल किए गए साधनों के साथ साबित करने की क्षमता में निहित है। किसी बात को अधिक स्पष्ट रूप से समझाने के लिए, मूल बिंदु या मुख्य विषय को साबित करने के लिए इस्तेमाल की गई सामग्री भ्रष्ट नहीं होनी चाहिए, तथा निष्कर्ष को स्पष्ट रूप से और आसानी से रखा जाना चाहिए। जिस आधार पर निष्कर्ष आधारित है, वह इतना सशक्त और शक्तिशाली होना चाहिए कि उन्हें स्रोत और ठोस तर्क के रूप में संदर्भित किया जाना चाहिए, तथा उनमें संदेह को दूर करने और किसी भी संभावित प्रश्न का उत्तर देने के लिए आवश्यक उपकरण होने चाहिए।

भाषण एक फलदार वृक्ष की तरह होता है। इसमें हर हमले से बचाने के लिए कांटे या संगीनें होती हैं। यह ऐसा आभास देता है कि यह लंबी चर्चाओं के बाद निकाला गया निष्कर्ष है और तर्क-वितर्क के कई सावधानीपूर्वक कार्यों के बाद प्राप्त किया गया निष्कर्ष है। शैतानी सनक या संदेह इसे चुराने के लिए नहीं पहुँच सकते, न ही इसे दुर्भावनापूर्ण दृष्टि से देख सकते हैं। वक्ता इस वृक्ष के सभी पक्षों पर विचार करता है और इसके चारों ओर एक दीवार खड़ी कर देता है। उसने हर बिंदु पर एक रक्षक भी रखा है जिसके माध्यम से भाषण मुख्य विषय के चारों ओर एक स्पष्ट घेरा बनाकर और कोई अस्पष्ट बिंदु न छोड़ने की पूरी कोशिश करके या बचाव के अन्य तरीकों से हमलों के लिए खुला रह सकता है। इसके अलावा, वक्ता ने भाषण को इस तरह से सुसज्जित किया है कि इसमें किसी भी संभावित प्रश्न का उत्तर देने की क्षमता है।

बारहवाँ मामला

एक भाषण उस सीमा तक सुस्पष्ट होता है कि वह अपने भीतर निहित प्रत्येक मौलिक भाग और प्रत्येक विचार को आवश्यक सहायता देने में सक्षम हो, तथा

उसे सबसे उपयुक्त शैली में ढालें। यदि भाषण कहानी के रूप में है, तो वक्ता या लेखक को नायक की भूमिका निभानी चाहिए। यदि आप नायक की ओर से दूसरों के विचारों और भावनाओं का वर्णन करते हैं, तो आपको नायक को मूर्त रूप देना चाहिए या उसे अपने हृदय में अतिथि बनाना चाहिए या अपनी ज़ुबान से बोलना चाहिए। लेकिन यदि आप अपनी संपत्ति का निपटान करते हैं (यदि आप मुख्य पात्र की भूमिका लेते हैं), तो आपको कहानी के प्रत्येक तत्व पर उसकी क्षमता और स्थान के अनुसार विचार करना चाहिए, उसकी क्षमता के अनुसार शैली की पोशाक को काटना और सिलना चाहिए। इससे प्रत्येक गौण उद्देश्य उसके लिए सबसे उपयुक्त शैली की पोशाक में प्रकट हो सकेगा।

शैली अधिकांशतः तीन प्रकार की होती है:

पहली शैली सरल, सीधी है, जैसे सैयद शरीफ अल-जुरजानी और नासिर अल-दीन अल-तुसी की शैली।54

दूसरी अलंकृत शैली है, जैसे अब्दुल काहिर की दला'इल अल-इजाज़ ("अद्वितीयता के संकेत") और असरार अल-बलाघा की उज्ज्वल, शानदार शैली
(“वाक्पटुता के रहस्य”).

तीसरी शैली उन्नत या ऊंची है, जैसे कुछ शानदार मंदिर।
अल-सक्काकी, अल-ज़मखशारी और इब्न सिना (एविसेना) की रचनाएँ।

यदि आप धर्मशास्त्र और कार्यप्रणाली के बारे में लिखते हैं, तो आपको त्याग नहीं करना चाहिए-
उन्नत या भव्य शैली अपनाएं, जिसमें तीव्रता, भय और उत्साह हो।

अगर आप श्रोताओं को प्रभावित करना चाहते हैं और भाषण देने की शैली का इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो अलंकृत शैली को न छोड़ें, जिसमें प्रोत्साहन, हतोत्साह, चमक और विशद वर्णन शामिल हैं। लेकिन आपको दिखावटीपन से बचना चाहिए।

यदि आप तर्कशास्त्र, गणित, भाषा विज्ञान और मानवीय संबंधों के विज्ञान जैसे साधन विज्ञानों में शामिल या चर्चित विषयों पर लिखते और बोलते हैं, तो सरल, सीधी शैली को प्राथमिकता दें।

निष्कर्ष में, भाषण की पर्याप्तता ऐसी शैली से बचने में निहित है जो उद्देश्य, या जिस अवसर पर इसे कहा जाता है, या जिस श्रोता को संबोधित किया जाता है, की आवश्यकताओं के साथ असंगत है। जब आप भाषण के कद के अनुकूल शैली को काटना और सिलना चाहते हैं, तो आपको इस बात पर विचार करना चाहिए कि आप क्यों और किस उद्देश्य से बोल रहे हैं या लिख रहे हैं, माध्यमिक

---

54 नासिर अल-दीन अल-तुसी (1201-1280) उस समय के सबसे महान वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, गणितज्ञों, खगोलविदों, धर्मशास्त्रियों और चिकित्सकों में से एक थे और एक विपुल लेखक थे। इसके अलावा, उन्होंने फ़ारसी में कविताएँ भी लिखीं। उनका जन्म वर्तमान मशहद के पास तुस में हुआ था। उन्होंने मरघेह में जो वेधशाला बनवाई थी, वह 1262 में चालू हो गई। उन्होंने ज्यामिति, बीजगणित, अंकगणित, त्रिकोणमिति, चिकित्सा, तत्वमीमांसा, तर्कशास्त्र, नैतिकता और धर्मशास्त्र जैसे विभिन्न विज्ञानों पर एक या कई ग्रंथ लिखे। (अनुवाद)

आप जिस उद्देश्य को लक्षित कर रहे हैं, जिस श्रोता वर्ग को संबोधित कर रहे हैं, और जिन परिस्थितियों में आप बोल रहे हैं; आपको अपने विचार और ध्यान को गौण मुद्दों पर देकर मुख्य मार्ग से अलग नहीं होना चाहिए, और अपना "धन" बर्बाद नहीं करना चाहिए। जिस तरह एक भाषण अपने उद्देश्य, कला और जिस अवसर पर कहा जाता है, उसके माध्यम से अर्थ को प्रदर्शित करता है, शैली भी अर्थ को इंगित करती है, और अर्थ, कला और जिस अवसर पर भाषण कहा जाता है, ये सभी शैली में योगदान करते हैं।

यदि आप चाहें, तो आप धर्मशास्त्र और कुरान की व्याख्या जैसे उच्च विज्ञानों में शामिल या चर्चित विषयों पर लिखी गई रचनाओं के परिचय देख सकते हैं। भले ही हर परिचय में वाक्पटुता की एक जैसी डिग्री न हो, लेकिन उनमें से प्रत्येक रचना के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

निष्कर्ष

वे कहते हैं कि हमें बोलने वाले के बारे में नहीं, बल्कि जो कहा जा रहा है उस पर ध्यान देना चाहिए। लेकिन मैं कहता हूँ कि वाक्पटुता के लिए इन सभी बिंदुओं पर विचार करना ज़रूरी है: कौन कहता है? किससे कहा जाता है? किस अवसर पर कहा जाता है? किस अधिकार से कहा जाता है? किस उद्देश्य से कहा जाता है?

एक संकेत

वाक्पटुता के लिए यह आवश्यक है कि भाषण या लेखन के मुख्य उद्देश्य को कभी-कभी विशिष्ट रूप से और कभी-कभी संकेतात्मक रूप से संदर्भित किया जाए, और जो कुछ भी कहा या लिखा जाए, वह उसी की ओर प्रवाहित होना चाहिए।

मुख्य उद्देश्य के लिए दंत चिकित्सा संदर्भ का कोई उपयोग नहीं है।

साहित्यिक उपकरणों, जैसे उपमा, रूपक और रूपक का प्रयोग अपने लिए नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनका प्रयोग तब किया जाना चाहिए जब शैली की आवश्यकता हो।

स्पष्टीकरण

जब निश्चितता के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो कण इन्ना (निश्चित रूप से, निश्चित रूप से) बाहरी दुनिया में एक ठोस वास्तविकता को इंगित करने वाले शब्दों में सबसे सटीक और निर्णायक है और प्रकृति में प्रासंगिक कानून के साथ एक वैचारिक प्रस्ताव को जोड़ता है। यही कारण है कि कुरान अक्सर इसका उपयोग करता है।

एक अनुस्मारक और एक बहाना

हे भाइयो और बहनो! मेरी उलझन भरी शैली आपको इस पुस्तक में बताए गए सत्यों से विचलित न करे। जो व्यक्ति विज्ञान की एक शाखा का विशेषज्ञ है, उससे सभी शाखाओं का विशेषज्ञ होने की अपेक्षा नहीं की जाती। साथ ही, अभिकेन्द्रीय बल अपकेन्द्रीय बल से अधिक होता है, और कान जीभ की तुलना में मन के अधिक निकट होते हैं और तर्क से संबंधित होते हैं। इसके अलावा, हृदय, जो शब्दों का उद्गम है, जीभ से दूर है और जीभ के लिए विदेशी है। इसके अलावा, जीभ आमतौर पर हृदय की भाषा को समझने में असमर्थ होती है। यदि विशेष रूप से हृदय कुएं के तल से बोलता है, तो जीभ इसे सुन नहीं सकती है और इसलिए इसकी व्याख्या नहीं कर सकती है।

संक्षेप में, वर्णन करने से समझना आसान है। हालाँकि, मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप
मेरी अस्पष्ट शैली के लिए क्षमा, और महान हृदय क्षमाशील होते हैं।

आप इस पुस्तक के प्रथम भाग को प्राथमिक और दूसरे भाग को द्वितीयक आधार मान सकते हैं, तथा अंतर्ज्ञान को विद्युत धारा की तरह उनमें प्रवाहित होने देते हुए, अंतिम भाग को पढ़ना शुरू कर सकते हैं, जो विश्वास के कुछ मामलों के बारे में है।

तीसरा भाग

विश्वास का तत्व

तीसरा भाग

विश्वास का तत्व

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद - उन पर आशीर्वाद और शांति हो, उसके रसूल हैं।

यह उच्च घोषणा न केवल इस्लाम का आधार है, बल्कि यह आकाश में लहराने वाला सबसे ऊंचा और सबसे चमकदार झंडा भी है।
विश्वास, जो कि एक प्रतिज्ञा है जो हमने अनंत काल में ईश्वर को दी थी और जिसके माध्यम से हम ईश्वर से बंधे हैं, इस पवित्र घोषणा में सारगर्भित है। और इस्लाम, जो कि जीवन का शुद्ध जल है, उसका स्रोत इस शुद्ध झरने में है। यह घोषणा एक शाश्वत "शाही फरमान" है जो उन लोगों के हाथों में दिया गया है जिन्हें मानव जाति के बीच अनंत सुख के महल में नियुक्त किया गया है जिसका उन्हें वादा किया गया है। यह हृदय का प्रकाशमान मानचित्र भी है, जो कि ईश्वर, अनंत काल के राजा द्वारा मनुष्यों को दी गई आध्यात्मिक क्षमता है, ताकि वे उसे जानें और उसे ज्ञात करें, और उस पर विश्वास करें, और एक खिड़की के रूप में जो अदृश्य दुनियाओं को खोलती है। इसके अलावा, यह एक धाराप्रवाह वक्ता है, जो पूरे ब्रह्मांड के लिए विवेक का रहस्यमय, वाक्पटु भाषण प्रस्तुत करता है, और जीभ के निपटान में एक शाश्वत आदेश है, जो विश्वास का एक वाक्पटु संदेशवाहक है, जो ब्रह्मांड के लिए शाश्वत संप्रभु की घोषणा करता है।

एक संकेत

इस महान घोषणा के दोनों भाग एक दूसरे के लिए सच्चा साक्ष्य और प्रमाण हैं। ईश्वर का अस्तित्व और एकत्व, या दिव्यता, इस बात का पूर्व प्रमाण है कि ईश्वर का अस्तित्व और एकत्व, या दिव्यता, ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के लिए पूर्व प्रमाण है।

संदेशवाहक; ईश्वरत्व उस व्यक्ति की मांग करता है जो ईश्वर को दूसरों को ज्ञात कराए; और पैगम्बर मुहम्मद, जो अपने सभी आयामों और संपूर्ण व्यापकता में संदेशवाहक का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने व्यक्तित्व, जीवन और मिशन के साथ ईश्वरत्व के लिए एक उत्तरवर्ती प्रमाण हैं।

एक अनुस्मारक

इस्लामी आस्था की सच्चाई को उनके सभी पहलुओं के साथ प्रासंगिक इस्लामी किताबों में विस्तार से बताया गया है। इसलिए वे सभी के लिए समझने के लिए पर्याप्त स्पष्ट हैं। चूँकि जो पहले से ही स्पष्ट और स्पष्ट है उसे दिखाने का प्रयास करना दर्शकों को मूर्ख बनाने के समान माना जा सकता है, इसलिए मैं इस्लामी आस्था के केवल कुछ तत्वों की व्याख्या करूँगा। बाकी के लिए मैं पाठकों को विद्वानों की रचनाओं का संदर्भ देता हूँ।

परिचय

यह सर्वविदित है कि कुरान के चार मूल उद्देश्य हैं, या वह चार प्रमुख सत्यों की स्थापना का प्रयास करता है: परमेश्वर की एकता का अस्तित्व

सृष्टिकर्ता, नबूवत, शारीरिक पुनरुत्थान, उपासना और न्याय।

सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्थापित करने वाले प्रमाणों में से एक पैगंबर मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। वास्तव में, ईश्वर का अस्तित्व और एकता इतनी स्पष्ट है कि इस पर चर्चा या प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। लेकिन चूंकि बहुत से लोग इस सबसे स्पष्ट सत्य के बारे में संदेह में हैं, और चूंकि कुछ जापानी लोगों (इस्तांबुल का दौरा करने वाले) ने मुझसे इसके बारे में पूछा, इसलिए मैं इस सत्य के बारे में लिखने के लिए बाध्य महसूस करता हूं। वे पूछते हैं: जिस देवता को आप हमें कहते हैं, उसके अस्तित्व का सबसे स्पष्ट प्रमाण क्या है। अस्तित्व किससे बनाया गया है - गैर-अस्तित्व से, या पदार्थ से, या उस देवता के सार से?

एक संकेत

चूँकि ईश्वर के प्रमाण और उसके ज्ञान की निशानियाँ अनगिनत हैं, इसलिए उसे केवल कुछ शब्दों में वर्णित करना असंभव है। इसलिए मैं इस मामले को स्पष्ट रूप से समझाने में अपनी असमर्थता के लिए क्षमा चाहता हूँ।

एक अनुस्मारक

मेरा इरादा यह है कि मैं सही, संतुलित तर्क का रास्ता दिखा सकूं, ताकि लेख के अंत में प्राप्त सत्य स्पष्ट रूप से सामने आ सके।

अन्यथा, संदेहवाद, जो परिणाम को देखने की इच्छा से समर्थित है

लेख के प्रत्येक भाग में, तथा जिसका विरोध मानव मस्तिष्क की इस अक्षमता के कारण होता है कि वह भाषण या लेखन के प्रत्येक भाग में इच्छित परिणाम को प्रदर्शित नहीं कर पाता, सत्य को संदेहों और सनक में छिपा देगा।

पक्षपातपूर्ण और जानबूझकर विरोध या आत्म-केंद्रितता जैसे कुछ नकारात्मक कारकों के प्रभाव में, मनुष्य अपने निराधार संदेह और सनक को वास्तविकता पर आधारित करके खुद को बहाने बनाने की प्रवृत्ति रखते हैं। इसके अलावा, वे बहाने ढूँढ़ते हैं। साथ ही, ग्राहक आमतौर पर किसी चीज़ में दोष या खामियाँ ढूँढ़ता है जिसे वह खरीदना चाहता है। ये सभी कारक किसी को सच्चाई को देखने या स्वीकार करने से रोकते हैं। यदि आप ऐसी बाधाओं से नहीं रुके हैं, तो आप फिर भी शांतिपूर्ण हृदय से मेरी बात सुनने का प्रयास कर सकते हैं।

पहला उद्देश्य

जबकि हर परमाणु जिसका कभी ब्रह्मांड के निर्माण या संरचना में स्थान रहा है और होगा, अनंत संभावनाओं के बीच लटका हुआ है कि वह कहाँ, कब और कैसे जाएगा और कैसे बसेगा, परमाणु अचानक एक निश्चित दिशा का अनुसरण करता है, और अपना सटीक स्थान पाता है, जिससे आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते हैं। यह पूर्ण, सर्वव्यापी ज्ञान, इच्छा और शक्ति वाले एक के अस्तित्व की गवाही देता है। इस गवाही के माध्यम से, हृदय के भीतर निर्माता में विश्वास का दीपक भी प्रज्वलित होता है, क्योंकि यह क्षमता अदृश्य दुनिया का प्रतीक है। जैसा कि प्रत्येक परमाणु स्वयं निर्माता की घोषणा करता है, यह अन्य सभी परमाणुओं के साथ अपने संबंधों के माध्यम से उनकी बुद्धि को भी दर्शाता है जो विशेष चीजों के यौगिकों या रचनाओं के साथ-साथ अस्तित्व के कई अन्य तत्वों के साथ संबंध बनाते हैं। ये संबंध कई उद्देश्यपूर्ण और लाभकारी परिणाम देते हैं, और अस्तित्व के शानदार, अविनाशी संतुलन की सेवा करते हैं। यह हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि निर्माता के अस्तित्व के प्रमाण ब्रह्मांड को बनाने वाले परमाणुओं की तुलना में बहुत अधिक हैं।

अगर आप पूछें कि हर कोई ईश्वर को अपनी बुद्धि या विवेक की आँखों से क्यों नहीं देख पाता, तो मैं जवाब दूँगा कि उसे उसकी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण नहीं देखा जा सकता। ऐसी बहुत सी भौतिक चीज़ें हैं जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण मनुष्य की दृष्टि के दायरे से बाहर हैं या जो मनुष्य को अंधा बना सकती हैं। सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता भौतिक होने से बिल्कुल मुक्त है, तो उसे कैसे देखा जा सकता है?

> ब्रह्माण्ड की रेखाओं पर विचार करो, क्योंकि वे सर्वोच्च
> क्षेत्र से तुम्हारे लिए पत्र हैं।

घटनाओं और चीजों की उन शृंखलाओं को देखो जिनसे शाश्वत कढ़ाई करने वाला समस्त विशाल ब्रह्माण्ड को सजाता है; ज्ञान की आंखों से देखो, ताकि उच्चतम क्षेत्र से निर्बाध श्रृंखला में तुम्हारे पास आने वाले अक्षर तुम्हें विश्वास की निश्चितता की पराकाष्ठा तक पहुंचा सकें।

एक संकेत

मानव विवेक, भरोसा करने की वजह से और मदद के लिए सहज आग्रह के कारण निर्माता को नहीं भूलता। भले ही मन कभी-कभी काम करना बंद कर देता है, कुछ समय के लिए छुट्टी ले लेता है, लेकिन विवेक कभी नहीं भूलता। यह हमेशा दो कामों में व्यस्त रहता है, जो इस प्रकार हैं:

विवेक का सहारा लेने पर पता चलता है कि जिस तरह दिल शरीर में जीवन भरता है, उसी तरह ईश्वर का ज्ञान (मा'रिफेतुल्लाह) जो दिल में जीवन का स्रोत है, मनुष्य की अनंत प्रवृत्तियों और महत्वाकांक्षाओं को उनकी क्षमता के अनुपात में जीवन प्रदान करता है। विवेक उनका विस्तार करता है, उन्हें मूल्य प्रदान करता है और उनमें आनंद पैदा करता है।

यह मानवीय विवेक की मदद के लिए सहज अनुरोध है।

इसके अतिरिक्त, जीवन पर एक के बाद एक आने वाली उथल-पुथल, कठिनाइयों, पीड़ाओं और विपत्तियों के विरुद्ध मनुष्य के लिए भरोसे का एकमात्र बिन्दु सृष्टिकर्ता का ज्ञान है।

अगर मनुष्य उस सर्वज्ञ निर्माता पर विश्वास नहीं करते जो हर काम को बुद्धिमानी और व्यवस्थित तरीके से करता है, और इसके बजाय आँख मूंदकर हर काम को संयोग मान लेते हैं, तो वे खुद को अकेलेपन, भय, चिंता और डर की नारकीय स्थिति में पाएंगे, जिसमें उन्हें एहसास होगा कि आपदाओं का सामना करने में उनके पास कितनी कम शक्ति है। भले ही वे सबसे सम्मानित प्राणी हैं, लेकिन वे अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक दुखी होंगे।

यह ब्रह्मांड की भव्य व्यवस्था के सार का भी खंडन करता है। इसलिए मनुष्य के लिए एकमात्र शरण या भरोसा का बिंदु ईश्वर का ज्ञान और मान्यता है।

चूँकि ये दो बिंदु, अर्थात् भरोसा करने का बिंदु और मदद के लिए आंतरिक अनुरोध, ब्रह्मांड के क्रम में बुनियादी तत्वों और आवश्यक वास्तविकताओं में से हैं, इसलिए निर्माता का अस्तित्व मानव विवेक में उनकी खिड़कियों के माध्यम से खुद को प्रकट करता है। भले ही मानवीय तर्क न देख पाए

उसे, विवेक हृदय के माध्यम से देखता है, जो उसकी खिड़की है।

परमेश्वर के ज्ञान की ओर ले जाने वाले मार्ग

सृष्टिकर्ता के ज्ञान तक पहुंचने के लिए चार सीढ़ियां या मार्ग हैं, जो कि वह सर्वोच्च बिंदु है जिस तक मनुष्य पहुंच सकता है:

पहला तरीका विद्वान सूफियों का है, जो शुद्धिकरण पर आधारित है।
आत्मा का परिष्कार, हृदय का परिष्कार, तथा अंतर्ज्ञान या आंतरिक अवलोकन।

दूसरा तरीका धर्मशास्त्रियों का है। यह दो तर्कों पर आधारित है।
पहला यह कि ब्रह्मांड का अस्तित्व संभव है, लेकिन आवश्यक नहीं है।
ऐसा इसलिए है क्योंकि यह समय और स्थान में समाहित है, या आकस्मिक या आकस्मिक है। इसलिए कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसने इसके अस्तित्व की इच्छा की और इसे अस्तित्व में लाया। दूसरा तर्क यह है कि ब्रह्मांड कालातीत या बिना शुरुआत वाला नहीं है; इसकी एक शुरुआत है, और इसके लिए एक कालातीत व्यक्ति के अस्तित्व की आवश्यकता है जिसने इसे अस्तित्व में लाया।

ये दोनों ही तरीके कुरान से लिए गए हैं, लेकिन मानवीय विचार
उन्हें अपने स्वयं के रूप दिए हैं और इसलिए उन पर विस्तार से चर्चा की है।

तीसरा रास्ता बुद्धिमान लोगों या विश्वासी दार्शनिकों का है। यह रास्ता विवाद और सनक या संदेह के हमले के लिए खुला है।

चौथा रास्ता कुरान का है, जो सबसे सीधा और सबसे स्पष्ट रास्ता है, जो कुरान की बेजोड़ वाक्पटुता को दर्शाता है और जिसका अनुसरण हर कोई कर सकता है। निम्नलिखित तर्क इस सीढ़ी के दो सबसे महत्वपूर्ण चरणों की व्याख्या करता है:

पहला कुरानिक तर्क

पहला तर्क सहायता, उपकार और उद्देश्यपूर्णता का है। कुरान की सभी आयतें जो चीज़ों के लाभों और उनके द्वारा किए जाने वाले उद्देश्यों का उल्लेख करती हैं, वे इस तर्क को इंगित करती हैं या इसमें शामिल हैं। यह तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि पूर्ण सार्वभौमिक व्यवस्था उपकार और उद्देश्यपूर्णता को ध्यान में रखती है। जो कुछ भी मौजूद है वह कई लाभों और उद्देश्यों को पूरा करता है और इसमें बुद्धिमत्ता के कई उदाहरण हैं। यह स्पष्ट रूप से संयोग या संयोग के दावों को खारिज करता है और नकारता है।

हर कोई ब्रह्मांड के क्रम या इसके अस्तित्व के उद्देश्यों के माध्यम से सृष्टिकर्ता तक पहुँचने में सक्षम नहीं हो सकता है; यह भी संभव है कि वे इस क्रम या इन उद्देश्यों को समझने में सक्षम न हों। लेकिन यह एक तथ्य है कि मानव विचार और इतिहास के दौरान एक दूसरे का समर्थन करने वाले अन्वेषणों ने विज्ञान की नींव रखी है, जिनमें से प्रत्येक ब्रह्मांड की पुस्तक के एक हिस्से या अस्तित्व की एक प्रजाति की जाँच करता है, और

उस प्रजाति से संबंधित सामान्य नियम और सिद्धांत शामिल हैं। जहाँ कोई व्यवस्था नहीं है, वहाँ सामान्य नियमों और सिद्धांतों को निकालना या खोजना असंभव है। इसलिए, चूँकि ऐसे नियम और सिद्धांत हैं जो हर प्रजाति के अस्तित्व और जीवन में प्रभावी हैं, इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि ब्रह्मांड के हर कोने में एक विशिष्ट व्यवस्था है। सामान्य नियमों और सिद्धांतों पर आधारित विज्ञान ब्रह्मांड के पूर्ण क्रम के प्रमाण हैं।

वस्तुओं और प्राणियों की श्रृंखलाओं से जुड़े लाभ और प्रयोजनों को दर्शाकर तथा दिनों, महीनों, ऋतुओं, वर्षों, शताब्दियों और युगों के दौरान होने वाले परिवर्तनों और क्रांतियों की श्रृंखला में बुद्धिमत्ता के उदाहरणों को दर्शाकर, विज्ञान सृष्टिकर्ता के सार्वभौमिक उद्देश्य और बुद्धिमत्ता की ओर संकेत करता है और उसकी गवाही देता है, तथा उन उल्काओं के रूप में कार्य करता है जो संदेहों और सनक के शैतानों को नष्ट कर देते हैं।

एक संकेत

परिचितता के कारण अज्ञानता और सतही विचार उत्पन्न होते हैं। उद्देश्यपूर्ण विरोध और सत्य को स्वीकार न करने के कारण हठ के लिए दूसरों को चुप कराने का रवैया, सनक और संदेह का घोंसला है जो तर्क के मार्ग को अवरुद्ध करता है। यदि आप ऐसी परिचितता से बच जाते हैं और सत्य को स्वीकार न करने के कारण हठ के नाम पर सरासर विरोध से अपनी आत्मा को शुद्ध कर लेते हैं, तो आप अपनी आत्मा को यह विश्वास नहीं दिला पाएंगे कि सूक्ष्म जानवर के रूप में काम करने वाला चमत्कारी तंत्र उन चीजों का उत्पाद है जिन्हें आप प्राकृतिक कारण और नियम कहते हैं। स्पष्ट रूप से, ये कारण या नियम अंधे, बेजान और अचेतन हैं, और उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि उन्हें क्या करना चाहिए और कहाँ, कब, क्यों और कैसे करना चाहिए। न ही उनके पास स्वतंत्र इच्छा है। यदि आप उन्हें रचनात्मकता का श्रेय देते हैं, तो आपको यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक परमाणु में प्लेटो की तुलना में बहुत अधिक चेतना और बुद्धि है और गैलीलियो की तुलना में बहुत अधिक ज्ञान है, और विश्वास करें कि प्रत्येक परमाणु सभी अन्य परमाणुओं के साथ सीधे संवाद करता है, और परमाणुओं में आकर्षण और प्रतिकर्षण की शक्तियां, अपने आप ही एक चैनल बनाती हैं, जिसके माध्यम से वे मिलते हैं। यदि आपकी आत्मा ऐसी अकल्पनीय चीजों की संभावना पर विचार कर सकती है, तो क्या आपको वास्तव में एक अच्छी तरह से काम करने वाले दिमाग से संपन्न इंसान माना जा सकता है? इसके बजाय, आपको यह सोचना चाहिए कि जिसे आप प्राकृतिक कारण और नियम कहते हैं, वह ईश्वर के कार्यों या उनके कार्यों से पहले बनाए गए आवरणों का परिणाम या विवरण है; नियम, जिनका नाममात्र अस्तित्व है, उन्हें सक्रिय प्राकृतिक शक्तियों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए

ब्रह्मांड में रचनात्मक प्रभाव.

एक अनुस्मारक

एक बार फिर देखिए: क्या आपको कोई दरार दिख रही है? (67: 3)

ब्रह्मांड में चारों ओर नज़र घुमाओ, तुम्हें कहाँ कोई दोष या दरार नज़र आती है? जिसकी आँखें ठीक हैं, उसे कुछ भी नज़र नहीं आएगा। अगर तुम चाहो तो कुरान की ओर मुड़ो।
आप इसमें सहायता, उपकार और उद्देश्यपूर्णता के तर्क को सबसे उत्तम तरीके से पा सकते हैं। क्योंकि कुरान हमें ब्रह्मांड पर चिंतन करने का आदेश देता है और चीजों के लाभों और ईश्वर की असंख्य नेमतों का उल्लेख करता है। सभी प्रासंगिक आयतें सहायता, उपकार और उद्देश्यपूर्णता के तर्क का दर्पण हैं।

दूसरा कुरानिक तर्क

सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व और एकता के लिए कुरान का दूसरा बुनियादी तर्क सृष्टि या उत्पत्ति का है। इसका सारांश इस प्रकार है:

प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक प्रजाति के सभी सदस्यों को प्रत्येक को सौंपे गए कार्य या उद्देश्य और प्रत्येक को दी गई क्षमता के अनुसार अस्तित्व दिया गया है। इसके अलावा, कोई भी प्रजाति अतीत की अनंतता तक फैली श्रृंखला की कड़ी नहीं है, क्योंकि उनका अस्तित्व आकस्मिक या आकस्मिक है, निरपेक्ष नहीं। एक इच्छा है जो उनके अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के बीच चुनाव करती है, और एक शक्ति है जो उन्हें अस्तित्व देती है। अस्तित्व स्पष्ट रूप से समय-रहित नहीं है, बल्कि समय और स्थान में समाहित है, और इसलिए इसकी एक शुरुआत है।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

सत्य अपने विपरीत नहीं हो सकता, न ही उसका स्वरूप बदल सकता है। मौजूदा प्रजातियों के बीच कोई मध्यस्थ प्रजाति नहीं हो सकती। एक प्रजाति का दूसरी प्रजाति में रूपांतरण का अर्थ है स्थापित सत्य का पूर्ण रूप से रूपांतरण, जो असंभव है।

एक संकेत

प्रत्येक प्रजाति अलग-अलग अस्तित्व में आई है और उसका एक मूल पूर्वज है।
प्राणीशास्त्र, भूविज्ञान और वनस्पति विज्ञान जैसे विज्ञान इस तथ्य की गवाही देते हैं। इसके अलावा, न तो भौतिक कारण, न ही प्रकृति, न ही कोई अन्य "कानून", माना हुआ, नाममात्र या वास्तविक, अस्तित्व में आने वाली चीजों में कोई रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। प्रत्येक प्रजाति और प्रजाति का प्रत्येक सदस्य सर्वशक्तिमान द्वारा बनाया गया है।

बुद्धिमान निर्माता, व्यक्तिगत रूप से और पृथक रूप से। सर्व-महान निर्माता ने हर चीज़ के माथे पर “संयोगिता” और “शुरुआत होने” या “समय और स्थान में समाहित होने” की मुहरें लगाई हैं।

एक अनुस्मारक

यह दावा करना कि पदार्थ शाश्वत है और कणों या परमाणुओं की गति ही सभी प्रजातियों की उत्पत्ति है, सृष्टिकर्ता के प्रति अनभिज्ञता या उदासीनता पर निर्भर है, या सत्य की खोज करते समय अज्ञानता की झूठी स्थिति में फंसने का परिणाम है, या कुछ उद्देश्यों के कारण जानबूझकर विरोधाभासी रुख को अपनाना है। यदि कोई व्यक्ति जिसने इस भ्रांति को स्वीकार कर लिया था, सत्य को पाने के बाद इसका पुनर्मूल्यांकन कर सकता है, तो वह समझ सकता है कि उसने कितना झूठा, असंभव प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था।

एक अनुस्मारक

सृष्टि के द्वारा ही मानवता महान है; यही कारण है कि हम हमेशा सत्य को पकड़ना चाहते हैं और सुख की खोज करना चाहते हैं। सत्य की खोज करते समय मनुष्य अनजाने में ही अपने हाथों में मिथ्यात्व या पथभ्रष्टता पा लेते हैं; या जब वे सत्य की खोज करते-करते थक जाते हैं, तब उनकी आत्मा किसी पथभ्रष्ट या विमुख दृष्टि या नज़र के कारण कोई अनुचित या असंभव बात स्वीकार करने के लिए विवश हो जाती है। इस बिंदु पर ध्यान दें। आप देखेंगे कि मानव चेतन प्रकृति उन लोगों को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करती है जो ब्रह्मांड के पूर्ण क्रम की उपेक्षा करके अस्तित्व की उत्पत्ति की व्याख्या करते समय पदार्थ और गति को शाश्वतता का श्रेय देते हैं; और जो हर एक वस्तु और संपूर्ण सृष्टि में अद्भुत, चमत्कारी कला और कढ़ाई के बावजूद यह मानते हैं कि सब कुछ संयोग या संयोग है; और जो लोग ठोस विचार और तर्क और निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बावजूद भौतिक कारणों और जिन्हें वे नियम कहते हैं, उन्हें रचनात्मकता का श्रेय देते हैं; और जो लोग सोचते हैं कि चीजों और घटनाओं में नियमितता के कारण प्रकृति को अस्तित्व का श्रेय देने में उन्हें सांत्वना मिली है, भले ही उनके विवेक का निर्णय विपरीत हो। वे अपनी चेतन प्रकृति के विपरीत कार्य क्यों करते हैं, इसका कारण यह है कि जब वे सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ रहे होते हैं, तो झूठी सनकें और धारणाएँ उन पर दोनों तरफ से हमला करती हैं। चूँकि वे मार्ग के अंत में प्रतीक्षा कर रहे सत्य तक पहुँचने के उद्देश्य से आगे बढ़ते हैं, वे उन सनकियों और धारणाओं पर केवल एक नज़र डालते हैं। इसलिए, वे अपनी भ्रष्ट या सड़ी हुई प्रकृति को नहीं देख पाते। यदि वे

यदि वे इस बात से अवगत होते, तो वे ऐसे विचारों को स्वीकार नहीं करते, न ही उन पर दृष्टि डालने के लिए भी स्वयं को नीचा करते।

अंतरात्मा या मानव चेतना प्रकृति ऐसे दावों को अस्वीकार करती है और ठोस तर्क उन्हें असंभव मानता है। लेकिन जनवाद और विरोध और विवाद की लत किसी को उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकती है, जबकि इसका मतलब यह है कि कोई यह दावा करता है कि प्रत्येक अणु में सबसे बुद्धिमान की बुद्धि मौजूद है

दार्शनिकों और वैज्ञानिकों तथा सबसे प्रतिष्ठित शासकों की प्रशासनिक क्षमता और बुद्धिमत्ता, तथा सभी परमाणु एक दूसरे के साथ निरंतर परामर्श और संचार में रहते हैं। यह इसकी मूल विशेषता है

झूठ। जब लोग किसी चीज़ को तिरछी नज़र से देखते हैं या उसके बारे में अपूर्ण दृष्टिकोण रखते हैं या जब वह चीज़ उनकी नज़र के कोने पर आती है, तो वे यह दावा कर सकते हैं कि झूठ सच है। लेकिन अगर वे उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उसे सीधे और अच्छी तरह से जाँचते हैं, तो वे उसका असली स्वरूप देख पाएँगे।

एक संकेत

पदार्थ को बदलते रूप और गति से अलग नहीं माना जा सकता जो समय के साथ प्रकट और गायब हो जाती है। इसलिए यह शाश्वत नहीं है; यह समय में समाहित है। फिर यह कितना हास्यास्पद है कि ऐसे लोग हैं जो-

वे निर्माता के अस्तित्व और शाश्वतता को स्वीकार नहीं करते, जिसका अस्तित्व ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने और इसके अस्तित्व में बने रहने के लिए अत्यंत आवश्यक है, फिर भी, उसी समय, वे पदार्थ को शाश्वतता और रचनात्मकता का श्रेय दे सकते हैं, जो निर्जीव, अचेतन और ज्ञान और इच्छा-शक्ति से पूरी तरह रहित है। यह कितना अजीब है कि कुछ लोग, जो मानवता के सदस्य होते हुए भी, ब्रह्मांड को, जो अपने सभी भागों और अपनी संपूर्णता में अद्भुत है, निर्माता को नहीं दे सकते, जिसके पास पूर्णता के सभी गुण हैं, बल्कि वे इसे निर्जीव, अचेतन और अंधे संयोग और परमाणुओं की गति को देते हैं, जो भी निर्जीव, अंधे और अचेतन हैं।

स्पष्टीकरण

अपने सार के संबंध में, ये प्रजातियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं।
न तो रूप और न ही बल, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे परमाणुओं की गति से उत्पन्न होते हैं, न ही कोशिकाओं के नाभिक, इस आवश्यक अंतर के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। क्योंकि ये सभी सार के लिए आकस्मिक हैं; वे स्वयं सार के अंतरों के परिणाम हैं। इससे पता चलता है कि

सभी प्रजातियाँ अपनी भिन्नताओं के साथ अलग-अलग अस्तित्व में लाई गईं

एक निर्माता द्वारा, जो जो चाहता है, जैसे चाहता है, करता है। यदि आप सृजन या उत्पत्ति के तर्क के बारे में और स्पष्टीकरण चाहते हैं, तो आप कुरान के स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं, जहाँ आप हर सत्य को पा सकते हैं, चाहे वह खिलते हुए फूलों के रूप में हो या कलियों के रूप में या बीजों के रूप में।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

यदि आप पूछते हैं कि "प्रकृति" क्या है, जो कि अक्सर पूछा जाने वाला प्रश्न है, और यदि आप पूछते हैं कि वे कौन सी चीजें हैं जिन्हें वे "प्रकृति की शक्तियां" कहते हैं, जिनके कारण सब कुछ संभव है, तो मेरा उत्तर इस प्रकार है:

ईश्वर के पास अपने नियमों का एक संग्रह या समूह है जिसे "ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के नियम" कहा जाता है, जो वास्तव में ईश्वर के द्वारा भौतिक दुनिया को बनाने, विनियमित करने और उसमें मौजूद हर चीज़ और उसके "सदस्यों" और "अंगों" के कार्यों को व्यवस्थित करने के कार्य हैं। सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के नियमों का यह समूह एक अमूर्त दिव्य मुद्रण मशीन की तरह है, लेकिन वे इसे प्रकृति कहते हैं। जिसे वे "प्रकृति के नियम" कहते हैं, वे ईश्वर के कार्य या उनके प्रभावों का योग हैं; और जिसे वे "बल" कहते हैं, वे उनके कार्यान्वयन के तरीके हैं। उनके निष्पादन की नियमितता या मन में एक सामूहिक, काल्पनिक शरीर का निर्माण जो उनके निष्पादन के कारण होता है, या उनके निष्पादन की निरंतर, तेज़ गति जिसे देखा नहीं जा सकता है, लोगों को कानूनों के इस समूह और उनके कार्यान्वयन के प्रभावों को बाहरी अस्तित्व का श्रेय देने का कारण बनता है। जिसे वे प्रकृति कहते हैं, वह यह कल्पित बाहरी अस्तित्व है।

एक संकेत

वे जिन चीज़ों को प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियाँ कहते हैं, वे अस्तित्व की उत्पत्ति नहीं हो सकतीं, न ही उन्हें स्वस्थ मन या सत्य द्वारा इस रूप में स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को न मानने की हठधर्मिता और उसके कार्यों की नियमितता जो ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए जिम्मेदार हैं, कुछ लोगों को ईश्वरीय शक्ति के इन अद्भुत कार्यों का श्रेय प्रकृति को देने के लिए प्रेरित कर सकती है। हालाँकि, प्रकृति वास्तव में एक प्रिंट है; यह प्रिंटर नहीं है; यह एक धुन है, संगीतकार नहीं; यह एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं; यह प्राप्तकर्ता है, एजेंट नहीं; यह एक आदेश है, वह नहीं जो आदेश देता है। यह ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित नियमों का एक संग्रह है, न कि एक शक्ति।

एक रोशनी

अगर कोई प्राणी किसी दूसरे ग्रह से इस दुनिया में आता है और इस दुनिया से पूरी तरह अनभिज्ञ होता है, तो वह सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था या मानवीय सामाजिक कार्यों को नियंत्रित करने वाले कानूनों को आध्यात्मिक मार्गदर्शक या अदृश्य शासक के रूप में देख सकता है जो समाज में संघर्ष और विद्रोह को रोकता है। इसी तरह, अगर ऐसा कोई व्यक्ति किसी सैनिक या सैनिकों की टुकड़ी के व्यवस्थित, बार-बार किए जाने वाले कार्यों या आंदोलनों को देखता है, तो वह सोच सकता है कि टुकड़ी के सदस्यों के बीच अदृश्य रस्सियाँ हैं जो उन्हें एक-दूसरे से जोड़ती हैं; क्या हम ईमानदारी से कह सकते हैं कि यह अजीब है? इसी तरह, क्या लोग एक बेडौइन या एक प्राकृतिक कवि की आलोचना करते हैं जो लोगों को जोड़ने और उनके कार्यों को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था को अपने मन में एक शारीरिक अस्तित्व देता है, जिसे वह आध्यात्मिक संप्रभु मानता है? इसलिए, यदि ईश्वरीय नियमों या ईश्वरीय कृत्यों के नियमों का संग्रह ब्रह्मांड के चमत्कारिक ढंग से व्यवस्थित संचालन के लिए जिम्मेदार है - और ईश्वर की विशेष व्यवस्थाओं के अलावा इनके कोई अपवाद नहीं हैं, जिन्हें लोगों की नज़र में उनके पैगम्बरों की नबूवत साबित करने के लिए चमत्कार के रूप में या उनके संतों को सम्मानित करने के लिए चमत्कार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है - यदि ईश्वरीय कृत्यों के नियमों या कानूनों के उस संग्रह को कुछ कल्पनाओं में एक निकाय में शामिल किया गया है, तो हमें इसे अजीब नहीं मानना चाहिए। वास्तव में अजीब बात यह है कि कुछ लोग इसे सर्वज्ञ, सर्व-इच्छुक और सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता और दुनिया के स्वामी के कार्यों का श्रेय देते हैं।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

मानवता आमतौर पर किसी चीज को उसकी समग्रता में या संपूर्ण इकाई के रूप में देखने या उसका अध्ययन करने में असमर्थ होती है। यह हर चीज को अलग-अलग हिस्सों में बांटकर या फिर उसकी जांच करके देखता है। मानवता पहले एक हिस्से पर ध्यान केंद्रित करती है और फिर दूसरे हिस्सों पर जाती है। इसके अलावा, मनुष्य का मूल्य उसके आदर्शों की प्रकृति और महानता और उन्हें साकार करने के लिए उसके प्रयासों के अनुपात में होता है। वे आमतौर पर अपनी आकांक्षाओं और उन चीजों में खोए रहते हैं जिनमें वे व्यस्त रहते हैं। यही कारण है कि तुच्छ चीजों और कार्यों को महान व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है। यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि महानता किसी को तुच्छ चीजों में व्यस्त रहने की अनुमति नहीं देती है। इसके अलावा, मनुष्य जिस चीज में व्यस्त रहता है उसका मूल्यांकन करने के मानकों को पहले खुद में खोजता है और अगर वह खुद में नहीं पाता है, तो वह अपने जैसे दूसरों में भी उसे खोजता है। भले ही वे अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के बारे में सोचें, जो किसी भी सृजित प्राणी जैसा नहीं है

वैसे भी, वे खुद में या दूसरों में पाए जाने वाले विशेष मानकों के अनुसार उसका न्याय करने का प्रयास करते हैं। हालाँकि, सर्व-महान निर्माता को कभी भी मनुष्यों के दृष्टिकोण से "देखा" या आंका नहीं जा सकता है। उसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं है। उसकी शक्ति, ज्ञान और इच्छाशक्ति हर चीज को घेरती है और उसमें प्रवेश करती है। यहाँ तक कि सूर्य पर भी विचार करें, जो ईश्वर द्वारा बनाए गए असंख्य स्वर्गीय पिंडों में से एक भौतिक पिंड है, जिसका पदार्थ या भौतिक होने से कोई लेना-देना नहीं है, वह अपने प्रकाश की पहुँच के विशाल विस्तार के भीतर हर चीज में प्रवेश करता है। हमारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके साथ हम सर्व-महान निर्माता के ज्ञान, इच्छाशक्ति और शक्ति को तौल सकें या तुलना कर सकें।

वे एक साथ हर एक चीज़ में प्रवेश करते हैं और उसे घेर लेते हैं, चाहे वह कितनी भी बड़ी या छोटी क्यों न हो। जिस तरह वे पूरे ब्रह्मांड में प्रवेश करते हैं और उसे घेर लेते हैं, उसी तरह वे एक ही समय में उसके सभी अलग-अलग हिस्सों में भी प्रवेश करते हैं और उसे घेर लेते हैं। इसलिए, किसी भी सृजित इकाई से अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की तुलना करना पूरी तरह से ग़लत है। फिर भी, इस ग़लती में पड़कर, प्रकृतिवादी रचनात्मकता को भौतिक कारणों या जिसे वे प्रकृति और प्राकृतिक शक्तियाँ कहते हैं, को मानते हैं; मुताज़िलियों का मानना था कि जीवित प्राणी अपने कार्यों के निर्माता हैं; मुस्लिम परिभ्रमणशील दार्शनिकों ने दावा किया कि ईश्वरीय ज्ञान व्यक्तिगत छोटी इकाइयों या अस्तित्व के कणों को शामिल नहीं करता है; पारसी दो अलग-अलग देवताओं में विश्वास करते थे, एक अच्छाई का निर्माता और दूसरा बुराई का निर्माता। वे इसे सर्व-महान निर्माता की असीम भव्यता और गरिमा के लिए अनुचित मानते थे कि वह उन चीज़ों में खुद को व्यस्त रखे जिन्हें वे छोटा और महत्वहीन मानते हैं। इस गलत धारणा ने उन्हें मोहित कर लिया। हे भाइयों और बहनों! कुछ विश्वासी अनजाने सुझावों के रूप में ऐसी गलत धारणाओं के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं।

एक संकेत

आप कह सकते हैं: "अस्तित्वहीनता से सृजन का प्रमाण स्वयं सृजन है या किसी अस्तित्वहीन चीज़ को अस्तित्व देना है, और किसी अस्तित्वहीन चीज़ को अस्तित्व देना किसी अस्तित्वहीन चीज़ को अस्तित्वहीन बनाने का भाई या बहन है। लेकिन हम अस्तित्वहीनता से सृजन या किसी अस्तित्वहीन चीज़ को अस्तित्वहीन बनाने की संभावना को नहीं समझ सकते।" मैं इस प्रकार उत्तर दूंगा:

आपकी नासमझी एक भ्रामक तुलना से उत्पन्न होती है। क्योंकि आप ईश्वर द्वारा अस्तित्व की रचना को अस्तित्वहीनता से, उसके पहले कुछ भी न होने से, सृजित कार्यों की नकल के रूप में समझते हैं। कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो अस्तित्वहीन हो।

किसी ऐसी चीज़ को अस्तित्व देने में सक्षम होना जो अस्तित्व में नहीं है या किसी ऐसी चीज़ को अस्तित्वहीन बनाना जो अस्तित्व में है। सचेतन, जीवित प्राणी जो कर सकते हैं वह है नकल करना या भागों को एक साथ लाकर एक नई रचना या एक पूर्ण इकाई बनाना, या पूरे को भागों में विभाजित करना।

चूँकि मनुष्य ने कभी भी ईश्वरीय शक्ति के समान कुछ नहीं देखा है

ब्रह्मांड में, वे ईश्वर द्वारा अस्तित्व की रचना को गैर-अस्तित्व से या किसी ऐसी चीज को समाप्त करने के लिए प्रेरित करने को नहीं समझ सकते जो अस्तित्व में है। मनुष्यों के तर्कसंगत तर्क और उनके द्वारा निकाले गए निष्कर्ष अवलोकनों पर आधारित हैं। वे सृष्टिकर्ता के कार्यों और कृतियों को सृजित कृतियों और कृतियों के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, और उनके बीच भ्रामक तुलना करते हैं। हालाँकि, उन्हें सृष्टिकर्ता के कार्यों और कृतियों को उसकी असीम शक्ति के विचार से देखना चाहिए।

एक संकेत

किसी व्यक्ति के कार्यों के बारे में सोचते समय हमें उसके गुणों को ध्यान में रखना चाहिए; हमें उसके कार्यों को उस व्यक्ति के व्यक्तिगत गुणों के परिप्रेक्ष्य से देखना चाहिए। यदि हम ईश्वर के कार्यों और कृत्यों को सृजित गुणों (शक्ति, क्षमता और ज्ञान) के परिप्रेक्ष्य से देखें, तो हम केवल गलत निष्कर्ष पर ही पहुंचेंगे। अस्तित्वहीनता से सृजन की असंभवता और किसी अस्तित्वहीन वस्तु को अस्तित्वहीन बनाने की कल्पना करने का एक कारण यह गलत दृष्टिकोण है।

हर दिन हम अस्तित्वहीनता से सृजन के असंख्य उदाहरण देखते हैं। (यह कि भौतिक कारणों का अस्तित्वहीनता से सृजन में कोई योगदान है, हमें धोखा नहीं देना चाहिए, क्योंकि जीवन देने में उनका कोई योगदान नहीं है, जो कि विशुद्ध रूप से सृष्टिकर्ता का उपहार है। इसके अलावा, हर दिन कई ऐसी चीजें होती हैं, जिनके कारणों को विज्ञान नहीं समझा सकता है।) इन तथ्यों के बावजूद, जो लोग अस्तित्वहीनता से सृजन को असंभव मानते हैं, वे ईश्वरीय सत्ता और उसके गुणों और कार्यों की तुलना निर्मित वस्तु से करते हैं, और वह देखना चाहते हैं जो अनिवार्य रूप से अदृश्य है।

एक अनुस्मारक

अगर हम पदार्थ को अस्तित्वहीनता से सृजन के नजरिए से नहीं बल्कि पुनरुत्पादन या पदार्थ से अस्तित्व बनाने के नजरिए से देखें, तो पदार्थ से निर्मित या अस्तित्व में लाई गई चीजों का सबसे स्पष्ट उदाहरण प्रकाश है। प्रकाश में काम करने वाले अद्भुत नियम

प्रकाश का अस्तित्व और आँखों की रोशनी या दृष्टि की क्रियाविधि ईश्वरीय शक्ति की पूर्णता को दर्शाती है। इस प्रकार, यदि हम सृजन के कार्य को ईश्वरीय शक्ति की पूर्णता के दृष्टिकोण से देखें, तो हम बहुत सी ऐसी चीजों को आसानी से स्वीकार कर सकेंगे जिन्हें हम सतही तौर पर भी नहीं समझ पाते।

एक अनुस्मारक

जिस तरह तर्कशास्त्र में सिद्धांत आधारों से उत्पन्न होते हैं, जो सार्वभौमिक रूप से सत्य नियम या सिद्धांत होते हैं, उसी तरह निर्माता के कार्यों में भी "आधार" उसकी कला में छिपे बिंदुओं को देखने और समझाने के लिए पर्याप्त होते हैं। यह अस्तित्वहीनता से सृजन को प्रमाणित करता है।

स्पष्टीकरण

क्या तर्क सृष्टि की संपूर्ण व्यवस्था और सुव्यवस्था द्वारा प्रदर्शित कला से अधिक सुंदर, अधिक सूक्ष्म, अधिक बेजोड़ या अधिक असंभव कुछ सोच सकता है? निश्चित रूप से नहीं। विज्ञान इस व्यवस्था के लाभों को इसके सभी भागों और उनके अस्तित्व के उद्देश्यों के साथ दर्शाता है, इस प्रकार यह साबित करता है कि सृष्टि में कुछ भी व्यर्थ या उद्देश्यहीन नहीं है।

यह प्रत्यक्ष तथ्य सृष्टि में निर्माता की कला और बुद्धि की गवाही देता है, और तर्क के पास उसके अस्तित्व को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ता। जब तर्क को ऐसी स्पष्ट वास्तविकताओं के ज्ञान के बिना अपने आप पर छोड़ दिया जाता है, विशेष रूप से दुष्ट-आदेश देने वाली आत्मा के प्रभाव में, तो यह ऐसी स्पष्ट वास्तविकताओं को भी नकार देता है।

वह सर्व-पवित्र सत्ता, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है और उन्हें स्थिर रखा है, जिसने हर चीज़ को व्यवस्थित किया है और उन्हें अपने आदेशों के अधीन बनाया है, वह चीज़ों को आसान क्यों नहीं बना सकता? यह दावा करना सरासर भ्रांति है कि जो शक्ति पहाड़ को उठा सकती है, वह स्याही की बोतल को हिला या उठा नहीं सकती। संक्षेप में, जिस तरह कुरान की आयतें एक-दूसरे की व्याख्या करती हैं, उसी तरह ब्रह्मांड की पुस्तक, या इसकी "आयतें" भी उस कला और ज्ञान की व्याख्या करती हैं जो इसकी पंक्तियों के नीचे स्थित है।

एक संकेत

आप कहते हैं: कुछ सूफियों के शब्दों में ईश्वरीय सत्ता, या मिलन, या अवतार के साथ जुड़ाव और निकटता का भाव है। ये सर्वेश्वरवाद या अद्वैतवाद जैसे विचारों के समान प्रतीत होते हैं।

उत्तर: सत्यनिष्ठ विद्वान सूफियों के द्वारा कहे गए ऐसे शब्द आध्यात्मिक आनंद और रूपक की स्थिति में कहे जाते हैं। इसलिए, उन्हें व्याख्या की आवश्यकता होती है। चूँकि ये लोग दिव्य सत्ता के अस्तित्व की अभिव्यक्तियों में डूबे रहते हैं, इसलिए वे जिस प्रमाण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उसमें परिणाम देखते हैं। अर्थात्, ब्रह्मांड की खिड़कियों से देखने पर, वे स्वयं को अस्तित्व में आने और जाने के मार्गों में निर्माता की अभिव्यक्तियों से पूरी तरह से घिरा हुआ पाते हैं; वस्तुओं के परदे से परे के क्षेत्रों में केंद्रित होकर, वे वस्तुओं में केवल दिव्य उपहारों का प्रवाह देखते हैं; और अस्तित्व के दर्पणों में देखते हुए, वे केवल दिव्य गुणों और नामों की अभिव्यक्तियों को देखते हैं।

अपने अवलोकनों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्दों के अभाव में, वे व्यापक दिव्यता और व्यापक जीवन जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं। जिन लोगों को मामले की पर्याप्त जानकारी नहीं है, जो अपने शब्दों को केवल उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, वे इन शब्दों पर अपनी सनक और अनुमान लगाते हैं। सत्यापन करने वाले, विद्वान सूफियों के पारलौकिक अवलोकन और दृष्टिकोण भौतिकवादी अनुकरणकर्ताओं की धारणाओं से असीम रूप से श्रेष्ठ हैं। इन दो असीम रूप से भिन्न दृष्टिकोणों और दृष्टिकोणों को एक दूसरे के समान या निकट मानना प्रगति के इस युग में तर्क की मृत्यु की घोषणा है। सच्ची मानवता ऐसे दृष्टिकोणों के सामने सत्यापन और प्रगति की भाषा में कहने के लिए बाध्य महसूस करती है, "नहीं, भगवान की कसम, नहीं! आकाश में चमकने वाले प्लीएडेस को पृथ्वी के तल से कैसे खोजा जा सकता है? उज्ज्वल, भेदने वाले प्रकाश की तुलना अंधेरे के पर्दों से कैसे की जा सकती है?"

एक संकेत

सत्यापित करने वाले विद्वान सूफियों का सिद्धांत, जिसे लाक्षणिक रूप से अस्तित्व की एकता कहा जाता है, वास्तव में, साक्षी की एकता है (ईश्वरीय सत्ता का अस्तित्व और पूर्ण एकता जो संपूर्ण सृष्टि में प्रकट होती है और जिसकी गवाही एक संपूर्ण, एकीकृत इकाई के रूप में दी जाती है और जिसके सभी भाग एक दूसरे से जुड़े होते हैं)। अपने शाब्दिक अर्थ और विषय-वस्तु में अस्तित्व की एकता कुछ प्राचीन दार्शनिकों का झूठा सिद्धांत है।

एक अनुस्मारक

सूफियों के प्रमुख ने कहा है, "जो कोई ईश्वरीय सत्ता के साथ सामीप्य या मिलन (उसके साथ) या अवतार (उसका) दावा करता है, उसने ऐसा नहीं किया है।"

ईश्वर के ज्ञान में सबसे कम हिस्सा।” कोई ऐसी चीज़ जो आकस्मिक है, जिसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो उसके अस्तित्व को उसके न होने से ज़्यादा पसंद करता है, वह अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के साथ एक कैसे हो सकती है? सच तो यह है कि आकस्मिक सत्ता ईश्वरीय सत्ता की कुछ अभिव्यक्तियों को धारण करती है। लेकिन यह किसी भी तरह से सूफ़ियों के साक्षी की एकता के सिद्धांत और भौतिकवादियों के सत्ता की एकता के सिद्धांत के बीच संबंध का सबूत नहीं है, जिसमें से बाद वाला सर्वेश्वरवाद या अद्वैतवाद के बराबर है। क्योंकि भौतिकवादियों के सिद्धांत के अनुसार, पदार्थ आवश्यक है और अस्तित्व का मूल है। इस कारण से, इस सिद्धांत को बनाए रखने वाले भौतिकवादी ईश्वरत्व की सच्चाई को समझने से बाधित होते हैं। चूँकि वे पदार्थ में खोए हुए हैं, वे भटक जाते हैं और हर चीज़ का श्रेय पदार्थ को देते हैं, पदार्थ को सृष्टि का ईश्वरीय गुण मानते हैं। लेकिन सटीक, विद्वान सूफ़ी पूरी तरह से अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं और आकस्मिकताओं को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं। इसलिए ये दोनों सिद्धांत एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। उन्हें एक दूसरे के समान या एक दूसरे के करीब मानने से ज़्यादा बुरा या निंदनीय कुछ नहीं हो सकता।

एक रोशनी

मान लीजिए कि पृथ्वी कांच के छोटे-छोटे, बहुरंगी, बहुरंगी टुकड़ों से बनी है, तो इनमें से प्रत्येक टुकड़ा अपने आकार, रंग और आकार के अनुसार सूर्य की अभिव्यक्ति प्राप्त करता है। लेकिन इनमें से किसी एक टुकड़े में परावर्तित सूर्य सूर्य के समान नहीं है और न ही परावर्तित प्रकाश सूर्य के प्रकाश के समान है। इसी तरह, अगर बहुरंगी फूलों के रंग, जो (एक सिद्धांत के अनुसार) सूर्य के प्रकाश के स्पेक्ट्रम में रंगों को दर्शाते हैं, बोलने में सक्षम होते, तो प्रत्येक कहता, "सूर्य मुझसे मिलता जुलता है," या "मैं स्वयं सूर्य हूँ।"

ऐसी छवियाँ संतों के लिए जाल हैं; वे
भगवान के बगीचे में उज्ज्वल चेहरों के प्रतिबिंब हैं।

साक्षी की एकता के लोगों का मार्ग उन संतों का मार्ग है जो अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता की अभिव्यक्तियों में डूबे और मदमस्त रहते हैं। सबसे सुरक्षित मार्ग विद्वान संतों का है जो, भले ही वे दिव्य की अभिव्यक्तियों के साथ परमानंद में चले जाते हैं, ईश्वर के आवश्यक गुणों, विशेषताओं और नामों की अभिव्यक्तियों के बीच संतुलन बनाए रख सकते हैं, और स्पष्ट रूप से निर्माता और निर्मित के बीच अनंत असमानता को देख सकते हैं।

जो मनुष्य स्वयं अपने स्वरूप को नहीं समझ सकता, वह शाश्वत, सर्वव्यापी को कैसे समझ सकता है? वह तो वह है जो वस्तुओं को बिना किसी पूर्व-अनुकरण के अस्तित्व में लाता है, तथा प्रत्येक वस्तु को एक सटीक आनुपातिक रूप प्रदान करता है; जो समय के भीतर अस्तित्व में लाया गया है, वह उसे कैसे समझ सकता है?

एक अनुस्मारक

पिछले नोट्स निर्माता के अस्तित्व के प्रमाणों का सारांश हैं। यदि आप उसकी एकता के प्रमाणों के बारे में सुनना चाहते हैं, तो वे अनंत हैं। यहाँ, मैं उनमें से केवल एक का उल्लेख कर सकता हूँ, जो कुरान की एक आयत में व्यक्त किया गया है, यदि आकाश और पृथ्वी में ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता होते, तो दोनों (उन क्षेत्रों में से) निश्चित रूप से बर्बाद हो जाते (21: 22)। इस आयत से प्राप्त प्रमाण को रोकथाम का प्रमाण कहा जाता है। ईश्वरत्व के लिए पूर्ण स्वतंत्रता अपरिहार्य है।

एक रोशनी

यह तथ्य कि विद्यमान वस्तुओं और प्राणियों में अनेक मूलभूत समानताएं हैं; तथा यह कि ये सभी प्राणी, वस्तुएं और ब्रह्मांड को बनाने वाले तत्व बिना किसी भ्रम के एक साथ विद्यमान हैं; तथा यह कि ये सभी प्राणी, वस्तुएं और तत्व पूर्ण सुव्यवस्था प्रदर्शित करते हैं, पूर्ण एकजुटता के साथ एक दूसरे की सहायता करते हैं, तथा उस केंद्र बिंदु के चारों ओर घूमते हैं जिस पर ब्रह्मांड का क्रम आधारित है - ये सभी, निर्माता, शाश्वत और सर्वज्ञ एक की एकता के स्पष्ट प्रमाण हैं।

प्रत्येक चीज़ में एक निशानी है जो इस बात का प्रमाण देती है कि वह एक है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के पन्ने - वे असीम आयाम हैं;
समय के भीतर घटित घटनाओं के माध्यम से लिखी गई पंक्तियाँ - वे अनगिनत रचनाएँ हैं।

सर्वोच्च संरक्षित टैब्लेट के प्रेस पर मुद्रित,
ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु एक सार्थक, मूर्त शब्द है।

उपरोक्त छंद में, होजा तहसीन सापेक्ष अनन्तता और बहुलता की बात कर रहे हैं; वे वास्तविक अनन्तता की बात नहीं कर रहे हैं।

एक संकेत

पूर्णता के जितने भी गुण हैं, वे सब महिमा के रचयिता में हैं। सृष्टि में जो भी पूर्णता दिखाई जाती है, वह उसकी पूर्णता की एक धुंधली छाया है।

उनमें पूर्णता, सौंदर्य और अनुग्रह के गुण हैं जो सभी अवधारणाओं और तौर-तरीकों से परे हैं। ब्रह्मांड में देखे गए सभी अनुग्रह के उदाहरण उनकी असीम संपदा और उदारता की ओर इशारा करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अस्तित्व के सभी उदाहरण उनके अस्तित्व को इंगित करते हैं; पुकार का उत्तर देना और प्रार्थना करना उनके अस्तित्व की परम आवश्यकता का उत्तर है, और सभी सौंदर्य उनकी सुंदरता को इंगित करते हैं। इसके अलावा, महिमा के निर्माता किसी भी दोष या कमी से असीम रूप से मुक्त हैं। वे उन सभी दोषों से असीम रूप से मुक्त हैं जो सृजन की अंतर्निहित क्षमताओं की अपर्याप्तता और ब्रह्मांड की आकस्मिक प्रकृति से उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं से उत्पन्न होते हैं।

उसके समान कोई चीज़ नहीं; उसकी महिमा महान है।

दूसरा उद्देश्य

परिचय

आप पूछते हैं: आप कहते हैं कि घोषणा-ए-गवाही का दूसरा हिस्सा - मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है; और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं - पहले हिस्से की सच्चाई का गवाह है, और पहला हिस्सा दूसरे हिस्से की सच्चाई का गवाह है। क्या यह वास्तव में ऐसा है?

उत्तर: हाँ, ऐसा ही है। ईश्वर के ज्ञान की ओर ले जाने वाले मार्गों में सबसे सुरक्षित और सच्चा मार्ग, जो कि पूर्णता का "काबा" है, सबसे मजबूत और सबसे उज्ज्वल मार्ग है जिसे मदीना अल-मुनव्वरा के पवित्र निवासी ने बनाया था, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। वह निवासी, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, सही मार्गदर्शन की भावना है, उनका दिल वह दीपक है जो अदृश्य दुनिया को रोशन करता है। उनकी सच्ची जीभ, जो उनके दिल का अनुवादक है, निर्माता के अस्तित्व और एकता के प्रमाणों में सबसे स्पष्ट और सच्चा है। उनका अस्तित्व और उनके शब्द दोनों ही प्रकाश फैलाने वाले प्रमाण हैं। पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, निर्माता, पैगंबरी की संस्था या मिशन, पुनरुत्थान और परलोक और सत्य के सबसे निर्णायक और निर्विवाद प्रमाण हैं।

एक अनुस्मारक

उस पवित्र व्यक्ति, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सच्चाई को साबित करने के लिए निर्माता के अस्तित्व और एकता के प्रमाणों का उल्लेख करना आवश्यक नहीं है।

एक प्रतिष्ठान

हमारा पैगम्बर निर्माता के लिए एक प्रमाण है। इसलिए हमें इस प्रमाण का विश्लेषण कुछ विशेष, आवश्यक दृष्टिकोणों से करना चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हे ईश्वर! मुहम्मद पर कृपा और शांति प्रदान करें, जो आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता के साक्षी हैं।

हे सत्य के प्रेमी! यदि आप विवेक या मानव चेतना की खिड़की से देखना चाहते हैं, तो पहले जानबूझकर विरोध करने की प्रवृत्ति न अपनाएँ, जिससे हृदय की क्षमता प्रदूषित और जंग खा जाती है। इसके अलावा, अपनी सनक और कल्पनाओं पर ध्यान न दें, न ही उस समुदाय द्वारा दी जाने वाली किसी चीज़ की उस समुदाय के प्रत्येक सदस्य से अपेक्षा करें। समुदाय के प्रत्येक सदस्य से कुछ अपेक्षा करना परिणाम के इनकार या अस्वीकृति का कारण बनता है। यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर बारीकी से ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, आपको अपने दिल के आईने को बचकानी प्रवृत्तियों और दुश्मनी से शुद्ध करना चाहिए, जो दोनों ही बहाने ढूँढ़ने और उनमें शरण लेने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही, ग्राहक की नज़र से न देखें जो सिर्फ़ दोष और कमियाँ ही देखता है। इसके अलावा, जब आप तौलें, तो सही तौलें; सही तरीके से तुलना करें। इसके अलावा, सत्य के चमकते हुए प्रकाश को सबूत और मार्गदर्शन के रूप में लें, जिसमें आपके रास्ते के सभी संकेत शामिल हैं, ताकि आप निराधार संदेह और सनक के अंधेरे को दूर कर सकें जो दिखाई दे सकते हैं।

अंत में, ध्यानपूर्वक ध्यानपूर्वक सुनिए और मेरी बात पूरी होने से पहले कोई आपत्ति मत कीजिए। मैं जो कुछ भी कहूँगा, वह सिर्फ़ एक वाक्य है। जब मैं सब कुछ कह चुका होऊँगा, तो आप अपनी आपत्तियाँ बता सकते हैं, अगर आपको कोई आपत्ति है तो।

एक अनुस्मारक

इस प्रमाण का एक आयाम सामान्य रूप से पैगम्बरत्व है; दूसरा आयाम मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरत्व है।

एक संकेत

निर्माता बिना किसी उद्देश्य के कुछ भी नहीं करता; उसके हर कार्य में बुद्धिमत्ता के कई उदाहरण हैं। ब्रह्मांड में हर चीज़ में एक व्यवस्था है, यहाँ तक कि सबसे महत्वहीन चीज़ों में भी। किसी भी चीज़ की उपेक्षा नहीं की जाती

सृष्टि में, और मानवता को अनंत काल तक पहुँचने के लिए एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है। ये सभी वास्तविकताएँ पैगम्बरत्व की संस्था की आवश्यकता को प्रदर्शित करती हैं।

यदि आप चाहते हैं कि इस तर्क को समझाया जाए, तो सुनिए:

आप देख सकते हैं कि सृष्टि में एक व्यवस्था है, जिसमें मानवता की दुनिया भी शामिल है, साथ ही जानवरों की दुनिया में भी, जिनकी कई प्रजातियों के सदस्यों को मानवता की सेवा में रखा गया है क्योंकि मानवता को यही कारण दिया गया है। निम्नलिखित तीन बिंदुओं में जानवरों पर मानवता की श्रेष्ठता पैगंबर की आवश्यकता का प्रमाण है:

पहला तथ्य यह है कि विचार की शुरुआत ही क्रिया का अंत है और क्रिया की शुरुआत ही विचार का अंत है। यानी क्रियाएँ विचारों को जन्म देती हैं, जो बदले में क्रियाओं को जन्म देती हैं। मानवता में कारणों और प्रभावों के चक्रों के बीच संबंध देखने की क्षमता है। इस संबंध के प्रकाश में, यह नए संयोजनों और नए विचारों और व्यवहार के रूपों या नियमों के साथ-साथ उन नियमों पर पहुँचता है जिन्हें हम कानून कहते हैं जो कारण और प्रभाव के लिए जिम्मेदार प्रतीत होते हैं। यह प्रगति और विकास का तंत्र है।

विज्ञान उन संयोजनों का विश्लेषण करने की क्षमता है, या उन व्यक्तिगत तत्वों और कारणों और प्रभावों का पता लगाने में सक्षम होना है, जो उन्हें बनाते हैं या उन्हें जन्म देते हैं, और उन नियमों को जो जिम्मेदार प्रतीत होते हैं। इन नियमों के आधार पर, मानवता नई चीजों का विकास या उत्पादन कर सकती है। हालाँकि, इसकी क्षमता सीमित है, और इसकी योग्यताएँ दोषपूर्ण हैं। इस प्रकार, इन दोषपूर्ण और सीमित क्षमताओं और योग्यताओं के साथ, मानवता की सभी ज़रूरतों को पूरा करने की इच्छा, और मानवता की जन्मजात अज्ञानता और शक्तिहीनता, साथ ही कल्पनाएँ, सनकें, संदेह और सनकें जो इसे लगातार परेशान करती हैं, हमें नबी के मार्गदर्शन की पूरी ज़रूरत होती है। नबी के ज़रिए ही ब्रह्मांड की संपूर्ण व्यवस्था, इसमें जो कुछ भी है और इसमें जो कुछ भी होता है, उसे पर्याप्त रूप से समझा जा सकता है। मानव जीवन का संतुलन और व्यवस्था इस सार्वभौमिक व्यवस्था को समझने की क्षमता पर निर्भर करती है।

दूसरा बिंदु यह है कि मानवता को महान क्षमता से सुसज्जित किया गया है और इसकी महत्वाकांक्षाएं और प्रवृत्तियां लगभग असीमित हैं, विचार और अवधारणाएं मुश्किल से नियंत्रित की जा सकती हैं, और वासना और क्रोध की क्षमताएं हैं जो मूल रूप से प्रतिबंधित नहीं हैं, लेकिन जिनके लिए शिक्षा या प्रशिक्षण और संयम की आवश्यकता है। मानव अस्तित्व के इस आवश्यक आयाम के लिए पैगम्बरत्व की भी आवश्यकता है।

एक संकेत

भले ही किसी व्यक्ति को ऐसा जीवन दिया जाए जो लाखों वर्षों तक आनंद और मौज-मस्ती में रहे, भले ही उन्हें अपनी इच्छानुसार सब कुछ नियंत्रित करने की अनुमति दी जाए, लेकिन इस सांसारिक जीवन की मानवीय इच्छाओं और क्षमताओं को संतुष्ट करने में असमर्थता के कारण, वे आहें भरते रहेंगे और पछताते रहेंगे और और अधिक की कामना करते रहेंगे। यह असंतोष दर्शाता है कि मानवता में शाश्वत जीवन की एक सहज प्रवृत्ति है और इसे अनंत काल के लिए बनाया गया है ताकि यह एक अप्रतिबंधित क्षेत्र में अपनी अप्रतिबंधित क्षमता को सक्रिय कर सके।

एक अनुस्मारक

अस्तित्व में अर्थ या उद्देश्य के बिना कुछ भी नहीं है, और सब कुछ वास्तविकता पर आधारित है। यह इस तथ्य को इंगित करता है कि इस सीमित दुनिया में, जहाँ सुख दुख के साथ मिश्रित है और कई बाधाएँ हस्तक्षेप करती हैं; इस दुनिया में जहाँ ईर्ष्या और आपसी गलतियां कभी कम नहीं होती हैं, मानवता के लिए उन पूर्णता को महसूस करना संभव नहीं है जिनकी ओर वह सहज रूप से निर्देशित है।

इसलिए, वहाँ एक और अधिक विस्तृत क्षेत्र होना चाहिए, जहाँ कोई भी चीज़ किसी अन्य चीज़ में बाधा न डाले, ताकि मानवता अपने सांसारिक जीवन को पूर्णता के मार्ग पर व्यवस्थित कर सके और सार्वभौमिक व्यवस्था में योगदान दे सके, ताकि वह उस विशाल, शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत खुशी अर्जित कर सके।

एक अनुस्मारक और एक संकेत

हालाँकि यह यहाँ विषय नहीं है, मैंने पुनरुत्थान का संकेत दिया है। मैं यहाँ इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि मनुष्य की जन्मजात क्षमता अनंत काल की ओर निर्देशित है। मानवता के सार और इसकी क्षमता की प्रकृति के साथ-साथ इसे विकसित करने के लिए क्या आवश्यक है, इस पर विचार करें। फिर, कल्पना की क्षमता पर जाएँ जो मानव सार का सबसे सरल और छोटा सेवक है। पूछें, "हे आदरणीय कल्पना की क्षमता! मेरे पास आपके लिए खुशखबरी है। आपको दुनिया में एक लाख साल का खुशहाल जीवन दिया जाएगा। आप अपनी इच्छानुसार दुनिया की हर चीज़ को नियंत्रित कर पाएँगे। लेकिन इस जीवन के बाद, आपको जीवन में वापस आए बिना अनंत काल के लिए गैर-अस्तित्व में भेज दिया जाएगा।"

आपको क्या लगता है कि इसका उत्तर क्या होगा? क्या यह आपकी खुशखबरी को खुशी-खुशी स्वीकार करेगा या आहें भरकर पछताएगा? यकीन मानिए मानवता का सार अपनी अंतरात्मा की गहराई में विलाप करेगा और कहेगा, "हाय! हाय मेरे लिए कि कोई नहीं है

शाश्वत खुशी!” यह कल्पना की क्षमता को फटकार लगाएगा और उससे कहेगा: “इस क्षणभंगुर जीवन से संतुष्ट मत हो!”

हे भाइयो और बहनो, देखो! यदि यह क्षणिक सुख, भले ही वह लाखों वर्षों तक रहे, कल्पना की क्षमता को संतुष्ट नहीं कर सकता, जो मानव सार के सेवकों में से एक है, तो यह मानव सार को कैसे संतुष्ट कर सकता है, जिसके पास कल्पना की क्षमता से कहीं अधिक महान और अधिक महत्वपूर्ण कई सेवक हैं? एकमात्र चीज जो इसे संतुष्ट कर सकती है वह है शाश्वत सुख जो पुनरुत्थान में निहित है।

जानवरों पर मानवता की श्रेष्ठता के संबंध में उल्लेख करने लायक तीसरी बात है मनुष्य के स्वभाव में संतुलन, उसकी प्रकृति में उत्कृष्टता और चीजों को बेहतर या अधिक सुंदर बनाने की उसकी प्रवृत्ति। मानवता में अपने मूल स्वभाव के अनुरूप जीने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। उसे जानवरों की तरह नहीं जीना चाहिए और न ही जीना चाहिए। उसे अपने मूल सम्मान के अनुरूप जीवन जीना चाहिए। इस जन्मजात प्रवृत्ति के कारण ही मानवता को अपने निवास स्थान, कपड़े और भोजन को बेहतर बनाने और सजाने तथा विज्ञान और शिल्प का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। किसी व्यक्ति के लिए ऐसे सभी विज्ञानों या शिल्पों के बारे में पर्याप्त ज्ञान होना संभव नहीं है। इसलिए, मनुष्यों को एक साथ रहने, एक-दूसरे के साथ सहयोग करने और अपने उत्पादों का आपस में आदान-प्रदान करने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की संतुष्टि के लिए न्याय और कुछ नियमों के अस्तित्व की आवश्यकता होती है, क्योंकि मानवता की इच्छाएँ, क्षमताएँ और क्षमताएँ जन्म से प्रतिबंधित नहीं होती हैं, और इसलिए वे आक्रामकता और अन्याय का कारण बन सकती हैं। कोई भी व्यक्ति या बुद्धि इस न्याय या इन नियमों की प्रकृति को स्थापित करने में असमर्थ है, क्योंकि मानवता न तो स्वयं अपना निर्माता है और न ही उसके पास अपने, अपने पर्यावरण और अपने भविष्य के बारे में सच्चा, सर्वव्यापी या सार्वभौमिक ज्ञान है। इसलिए एक सार्वभौमिक मन या बुद्धि होनी चाहिए जिसके पास यह ज्ञान हो। यही ईश्वरीय रूप से प्रकट धर्म है। ऐसी शक्ति भी होनी चाहिए जो मनुष्यों की आत्माओं और विवेक पर हावी हो सके और इस प्रकार आवश्यक न्याय और नियमों को लागू कर सके।

इस शक्ति में दूसरों पर किसी प्रकार की श्रेष्ठता अवश्य होगी। यह शक्ति पैगम्बरी की संस्था है, जिसकी स्थापना स्वयं ब्रह्माण्ड के रचयिता ने की है। उसी ने पैगम्बरों को चुना और उन्हें अनेक मामलों में प्रतिष्ठित बनाया।

एक पैगम्बर मनुष्य के मन और आत्मा में सृष्टिकर्ता की महानता को स्थापित करता है। वह जिस दिव्य रूप से प्रकट धर्म का संचार करता है, उसके लिए नियमित पूजा की आवश्यकता होती है, जो लोगों को सृष्टिकर्ता की महानता को निरंतर और अधिकाधिक महसूस करने में सक्षम बनाती है। पूजा विचारों और भावनाओं को सृष्टिकर्ता की ओर निर्देशित करती है,

जो बदले में, उसकी आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। सृष्टिकर्ता के प्रति आज्ञाकारिता, जो सार्वभौमिक, शानदार व्यवस्था का सर्वोच्च रचयिता भी है, मानव जीवन में परिपूर्ण सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित करती है। यह परिपूर्ण सार्वजनिक व्यवस्था ईश्वर की बुद्धि पर आधारित है। ईश्वर की बुद्धि का सार यह है कि ब्रह्मांड में कुछ भी उद्देश्यहीन और अर्थहीन नहीं है। सार्वभौमिक व्यवस्था, सौंदर्य और सामंजस्य इस बुद्धि की गवाही देते हैं।

अगर आपने ऊपर बताए गए तीन बिंदुओं के आधार पर जानवरों पर इंसानियत की श्रेष्ठता को समझा है, तो आप समझ गए होंगे कि पैगम्बरियत इंसानी वजूद का केंद्र बिंदु है और इंसानी ज़िंदगी इसी के इर्द-गिर्द घूमती है। इसके अलावा, इन तीन बिंदुओं पर भी गौर करें:

सबसे पहले, व्यक्तियों में पर्याप्त ज्ञान, सटीक दृष्टिकोण और अपने अस्तित्व के सभी पहलुओं और आयामों में खुद को जानने की क्षमता का अभाव होता है, और उनमें अपने जीवन को उचित तरीके से जीने की क्षमता का अभाव होता है जो उनके व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन दोनों में उनकी खुशी को सक्षम करेगा। इसके अलावा, वे सनक, कल्पना और गलतियों से पीड़ित होते हैं, और अक्सर अपने शारीरिक आवेगों से हार जाते हैं जिसके लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। इसलिए, मनुष्यों को एक आदर्श मार्गदर्शक और शिक्षक की सख्त जरूरत है; यह मार्गदर्शक एक पैगंबर है।

दूसरे, मनुष्य द्वारा बनाए गए कानून और व्यवस्थाएँ मानवता की चिरस्थायी ज़रूरतों और अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर सकतीं, न ही उसकी जन्मजात आक्रामकता को उचित रूप से प्रतिबंधित कर सकती हैं, न ही उसकी क्षमताओं को उचित रूप से प्रशिक्षित कर सकती हैं, या विकास या प्रगति के लिए उसकी क्षमता और स्वभाव को सही ढंग से निर्देशित कर सकती हैं। यह बाद की बात संपूर्ण सृष्टि की पूर्णता प्राप्त करने की प्रवृत्ति में अंतर्निहित है। मानवीय कानून और व्यवस्थाएँ लगभग बेजान हैं और टिकती नहीं हैं। भले ही वे इतिहास के दौरान मानवता के संचित ज्ञान और अनुभवों पर आधारित हों, लेकिन वे मानवता में क्षमता के बीजों को ठीक से विकसित करने या अच्छे फल देने में असमर्थ हैं। इस कारण से, मानवता को एक दिव्य कानून की सख्त ज़रूरत है, जो उसे आध्यात्मिक और बौद्धिक और शारीरिक रूप से, इस दुनिया और अगले दोनों में खुश रहने में सक्षम बनाए। इस कानून को मानवता को उसकी क्षमताओं की प्राप्ति के माध्यम से मानवीय पूर्णता की प्राप्ति के मार्ग पर भी मार्गदर्शन करना चाहिए। यह पैगंबर ही हैं जो हमें यह जीवंत, जीवन देने वाला, शाश्वत दिव्य कानून लाते हैं।

संभावित आपत्ति: हम देखते हैं कि जो लोग ईश्वरीय नियमों का पालन नहीं करते हैं, धर्म को स्वस्थ व्यवस्था प्राप्त हो सकती है।

जवाब: अगर उनके रास्ते में कोई व्यवस्था है तो वह ईश्वरीय धर्म और धार्मिक नेताओं के मार्गदर्शन और प्रभाव के कारण है। कभी भी कोई समुदाय पैगंबर के मार्गदर्शन से पूरी तरह से वंचित नहीं रहा है, इसलिए भले ही बहुत से लोग ईश्वरीय मार्गदर्शन को अस्वीकार करते हैं-

धर्म और आस्था के बीच कोई संबंध नहीं है, वे धर्म से अप्रभावित नहीं रह पाते।
किसी भी समुदाय में देखी जाने वाली किसी भी स्वीकार्य, स्थायी व्यवस्था का मूल स्रोत या जड़ें ईश्वरीय मार्गदर्शन में होती हैं। ईश्वरीय मार्गदर्शन के साथ असंगत अन्य पहलुओं के संबंध में, अधार्मिक लोगों या ईश्वरीय धर्म का पालन न करने वालों की व्यवस्था ढहने के लिए बाध्य है, भले ही ऐसा आदेश कुछ लोगों को किसी प्रकार की सांसारिक खुशी प्रदान करता हुआ प्रतीत हो। इसके अलावा, एक अच्छी व्यवस्था वह होनी चाहिए जो मानवता के एक बड़े हिस्से को सच्ची, स्थायी खुशी प्रदान करे। एक ऐसी व्यवस्था जो दुनिया में एक छोटे से अल्पसंख्यक को केवल एक स्पष्ट, क्षणिक, सतही खुशी प्रदान करती है, जबकि दूसरों को अधीनता और अपमानजनक दुख में डालती है, उसे एक अच्छी, स्वीकार्य व्यवस्था नहीं माना जा सकता है।

तीसरा, मानव व्यवहार या नैतिक मानकों में कोई भी अति मानवीय क्षमता को नष्ट कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप उद्देश्यहीनता और घमंड पैदा होता है।
उद्देश्यहीनता और घमंड ईश्वरीय सार्वभौमिक ज्ञान के बिल्कुल विपरीत हैं, जो स्पष्ट रूप से ब्रह्मांड में सबसे छोटी से लेकर सबसे बड़ी हर चीज में उद्देश्य और लाभ की खोज करने के लिए देखा जाता है।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

कानून और उसके पालन को प्राथमिकता देने के बहाने, जिसे इतनी सारी आपदाओं के बाद मानवता के ध्यान में लाया गया है और लगातार जनमत को उकसाया गया है, विधर्मी लोग यह मान लेते हैं कि ईश्वरीय कानून की कोई आवश्यकता नहीं है और इसे मानव निर्मित कानूनों से प्रतिस्थापित करना संभव है।

यह पूरी तरह से गलत धारणा है। क्योंकि दुनिया बूढ़ी हो गई है और इस तरह की धारणा को साबित करने के लिए अभी भी कुछ नहीं है। इसके विपरीत, हालांकि हमारी पुरानी दुनिया में कुछ सुंदरता का विकास होता है, लेकिन नए दोष और बुराई और भी बदतर और अधिक भ्रामक रूपों में दिखाई देते हैं। जिस तरह ज्ञान के नियम सरकार के नियमों से स्वतंत्र नहीं हैं, उसी तरह मानव जीवन के क्रम को भी ईश्वरीय कानून और सद्गुणों के नियमों की आवश्यकता होती है जो मानवीय विवेक पर हावी होते हैं।

विज्ञान। इसके अलावा, शिक्षा और मानव व्यवहार की नई प्रणालियाँ, जिन्हें ईश्वरीय कानून की कोई आवश्यकता नहीं मानी जाती, तीन बुनियादी मानवीय क्षमताओं - बुद्धि, इच्छा और क्रोध - को ठीक से प्रशिक्षित करने या उन्हें क्रमशः ज्ञान, शुद्धता और संयम या शिष्टता में विकसित करने में पूरी तरह से असमर्थ हैं, न ही उन्हें इस तरह बनाए रखने में। नतीजतन, मानवता को ईश्वरीय न्याय के संतुलन से लैस पैगंबर की सख्त जरूरत है, जो मानव स्वभाव और विवेक को प्रभावित और भेदता है।

एक संकेत

मानवता के बीच प्रकट हुए हज़ारों पैगम्बरों ने हज़ारों चमत्कारों के ज़रिए पैगम्बर होने का अपना दावा साबित किया। ये चमत्कार, जो एक अकाट्य प्रमाण और एक बिल्कुल सच्ची आवाज़ हैं, पैगम्बरी के मिशन और संस्था की घोषणा और स्थापना करते हैं। वे सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता के प्रमाण के रूप में भी कार्य करते हैं।

एक अनुस्मारक

प्रत्येक विज्ञान के अपने सिद्धांत और नियम होते हैं जिन पर वह आधारित होता है और प्रत्येक विज्ञान अस्तित्व की व्यवस्थितता पर आधारित होता है। लेकिन उस व्यवस्थितता के लिए

अस्तित्व में, कोई कानून या विज्ञान नहीं होता। दूसरे, कुछ सुख और प्रेम जीवन के लिए नियुक्त बुनियादी उद्देश्यों और लाभों में पाए जाते हैं, जैसे कि खाना, पीना और विवाह। (उदाहरण के लिए, विवाह का मूल उद्देश्य प्रजनन है, लेकिन अपने जीवनसाथी के प्रति प्रेम और अपने बच्चों के प्रति प्रेम द्वारा प्रदान किए गए सुख इस उद्देश्य में शामिल सुख हैं।) यदि हम जीवन के इस एक तथ्य में ईश्वरीय कृपा देख सकते हैं, तो हम आसानी से समझ सकते हैं कि अस्तित्व में कुछ भी बेकार या बाहरी नहीं है, और हम यह समझ सकते हैं कि पैगंबरी, जिस पर अस्तित्व या सृजन के सबसे बुनियादी उद्देश्य केंद्रित हैं, मानव जीवन और अस्तित्व के लिए अपरिहार्य है। यदि पैगंबरी नहीं होती, तो मानवता एक अराजक दुनिया से आती और यह दुनिया एक अराजक दुनिया होती।

पूर्ण अराजकता में फेंक दिया गया।

एक अनुस्मारक

हे भाइयो और बहनो! यदि नबूवत, जो कि निर्माता के अस्तित्व के दो प्रमाणों में से छोटा प्रमाण है, अर्थात् नबूवत की संस्था और मुहम्मद की नबूवत, आपके मन के पृष्ठ पर अंकित हो गई है, तो हम बड़े प्रमाण की ओर आगे बढ़ सकते हैं, अर्थात मुहम्मद की नबूवत - उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

एक संकेत और एक अनुस्मारक

यह बड़ा प्रमाण बिल्कुल सत्य है। क्योंकि, यदि आप पैगम्बरों के जीवन और कार्यों का अध्ययन करें, जिन्हें मानवता के गौरव की सूची में सबसे ऊपर दर्ज किया गया है, और पैगम्बरत्व के अर्थ और मिशन पर विचार करें,

जो कि उनके बीच मूलभूत सामान्य बिंदु है, समय के साथ विकसित विचारों के प्रभावों से परे,55 तो आप निम्नलिखित वास्तविकता को आसानी से समझ सकते हैं:

सृष्टिकर्ता और सृष्टि के अधिकार ईश्वरीय कृपा और उदारता के प्रकाश हैं, तथा अस्तित्व में अमूर्त सुन्दरता की किरणें हैं। सभी नबियों ने अपने कार्यों में मूल सिद्धांतों के रूप में इन्हें अपनाया और सख्ती से इनका पालन किया। इसके अलावा, अपने लोगों के साथ उनका व्यवहार, उनके बारे में उनके लोगों का दृष्टिकोण, उनकी पूर्ण परोपकारिता और निस्वार्थता, और कई अन्य कारक सभी ने साबित कर दिया कि वे नबी थे। नबी होने के लिए आवश्यक गुण (सत्यता, बुद्धि, विश्वसनीयता, ईश्वरीय संदेश का संचार, पापहीनता, और शारीरिक और मानसिक दोषों से मुक्ति) पैगंबर मुहम्मद में सबसे पूर्ण रूप में पाए गए, जो अरब प्रायद्वीप में उस समय प्रकट हुए जब मानव जाति अपनी परिपक्वता की दहलीज पर थी, और मानवता के लिए सभी उच्च विज्ञानों के अद्वितीय स्रोत और शिक्षक बन गए। यह अनिवार्य रूप से हमें इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि पैगंबर मुहम्मद निस्संदेह एक पैगंबर थे। इन प्रमाणों के अलावा, सभी प्रमाण, जिनमें उनके चमत्कार भी शामिल हैं, जो सभी पूर्ववर्ती नबियों की नबी होने की पुष्टि करते हैं, वे भी मुहम्मद की नबी होने की पुष्टि करते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

कुछ प्रमाणों की व्याख्या
मुहम्मद की पैगम्बरी

परिचय

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का हर कार्य और स्थिति जो उनके मिशन से जुड़ी है, उनकी पैगम्बरियत को साबित करती है। उनके कार्यों में उनकी पूर्ण निश्चितता, आपत्तियों के प्रति उनकी उदासीनता - यह तथ्य कि उन्होंने अपने विरोधियों की आपत्तियों पर कोई ध्यान नहीं दिया - और उनकी निडरता स्पष्ट रूप से उनकी सच्चाई और ईमानदारी को प्रदर्शित करती है। इसके अलावा, उन्होंने जो कुछ भी किया वह सच्चाई की भावना के अनुसार किया।

इस महान व्यक्ति को अपने मिशन की सच्चाई पर पूर्ण विश्वास था, और इसलिए उन्होंने अपने विरोधियों की आपत्तियों पर कोई ध्यान नहीं दिया, सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया

55 जब हम बाइबिल के वर्तमान संस्करणों की खिड़की से नबूवत और नबियों पर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं कि इसमें नबूवत की सच्ची धारणा को खोजना कितना कठिन है, और कैसे कई नबियों के चरित्र निराधार बदनामी से घिरे हुए हैं। (अनुवाद)

उन्होंने अपने संदेश को संप्रेषित करने में किसी भी प्रकार का भय, संकोच या चिंता नहीं दिखाई, यहां तक कि सबसे खतरनाक परिस्थितियों में भी वे अडिग आत्मविश्वास के साथ काम करते रहे। उन्होंने हमेशा सही बातें कही और सही काम किया; उन्होंने हमेशा दूसरों को जो भी बताया, उसका पालन करने में सबसे आगे रहे और उन्होंने अपने संदेश को अपने जीवन में स्थापित किया। उनकी सभी बातों और कार्यों में गंभीरता, सामंजस्य और निरंतरता, और उनके जीवन और उनके संदेश दोनों में सही संतुलन उनके उद्देश्य की सत्यता के अन्य अकाट्य प्रमाण हैं।

एक संकेत

उनके अपने समय और आने वाली शताब्दियों में उनके संदेश की अभिव्यक्तियाँ - शानदार इस्लामी सभ्यता, उसके सभी पहलुओं के साथ - ने मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी की घोषणा एक ही, सामंजस्यपूर्ण और सच्ची भाषा में की है। आगे की पंक्तियों में, हम इस भाषा के कुछ पहलुओं को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

चार बुनियादी तरीके हैं जो हमें सामान्य रूप से पैगम्बरी के मिशन या पद और विशेष रूप से पैगम्बर की पैगम्बरी को समझने और पुष्टि करने में मदद करते हैं। एक और पाँचवाँ तरीका है, लेकिन चूँकि यह जाना जाता है और इसके बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, इसलिए इस किताब में इसका सिर्फ़ ज़िक्र किया जाएगा।

पहला रास्ता

पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के उत्कृष्ट चरित्र या व्यक्तित्व को जानने के लिए हमें निम्नलिखित चार बिंदुओं पर विचार करना चाहिए:

पहला बिंदु: जैसा कि प्रसिद्ध अरबी कहावत में कहा गया है, "जन्म से ही आँखों का काजल से काला होना, आँखों को काजल से काला करने के समान नहीं है," कोई भी सतही या कृत्रिम चीज़ किसी वास्तविक और मौलिक चीज़ का विकल्प नहीं हो सकती। इसलिए, दिखावा स्थायी और प्रेरक नहीं हो सकता है, और किसी का स्वभाव या चरित्र बहुत कम समय में इसे प्रकट कर देता है।

दूसरा बिंदु: ईमानदारी और गरिमा ही चरित्र की उत्कृष्टता को सत्य की भूमि से जोड़ती है। नसों में रक्त के प्रवाह की तरह, ईमानदारी और विश्वसनीयता ही वह चीज है जो ईमानदारी को बनाए रखती है और अच्छे चरित्र के सभी आयामों को व्यवस्थित करती है। जब ईमानदारी, ईमानदारी और विश्वसनीयता खो जाती है, तो चरित्र "सूख जाता है।"

तीसरा बिन्दु: एक दूसरे के साथ संगत और सुसंगत चीजें एक दूसरे को आकर्षित करती हैं और एक दूसरे के प्रति आकर्षित होती हैं, जबकि प्रतिकारक और विरोधाभासी चीजें एक दूसरे के प्रति आकर्षित होती हैं।

चीजें एक साथ रहना पसंद नहीं करतीं। यह सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों के लिए सच है।
नैतिक क्षेत्र.

चौथा बिन्दु: जो निर्णय पूरे के लिए दिया गया है या मान्य है, वह उसके सभी भागों के लिए मान्य नहीं हो सकता। (हालाँकि यह एक आम तौर पर सत्य तथ्य है, लेकिन पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) इसके अपवाद हैं। अर्थात् पैगम्बर मुहम्मद का कोई भी कार्य या स्थिति उनकी पैगम्बरियत के विपरीत नहीं है।)

इन चार महत्वपूर्ण सामान्य नियमों पर विचार करते हुए, हम पैगंबर के व्यक्तित्व, आचरण और कार्यों को देख सकते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। जैसा कि उनके दुश्मनों ने भी पुष्टि की है और स्वीकार किया है, सबसे प्रशंसनीय, प्रशंसनीय गुण और सद्गुण इस व्यक्ति में मिले और ऐसा चरित्र बना कि, इस नियम के अनुसार कि घृणित और विरोधाभासी तत्व एक साथ रहना पसंद नहीं करते हैं, जैसे स्वर्ग के फ़रिश्ते धरती के शैतानों के साथ रहना पसंद नहीं करते हैं, वैसे ही पैगंबर का चरित्र भी सबसे उत्कृष्ट गुणों, जैसे ईमानदारी, भरोसेमंदता और सम्मान से बना था, कभी झूठ बोलने या धोखा देने के लिए नहीं गिरा। बल्कि, वह इस तरह के व्यवहार से पूरी तरह दूर रहे। इस चरित्र की भावना, जिससे यह अपना जीवन प्राप्त करता है, पूर्ण सत्य है; पैगंबर मुहम्मद हमेशा सच बोलते और काम करते थे। एक सदा चमकती हुई ज्योति की तरह, यह उनकी पैगम्बरी होने का प्रमाण है।

एक अनुस्मारक

हे भाइयो और बहनो! क्या आपको नहीं लगता कि अगर कोई व्यक्ति सिर्फ़ अपने साहस के लिए प्रसिद्ध है, तो वह अपने साहस से अर्जित सम्मान को धूमिल न करने के लिए आसानी से झूठ बोलने के लिए नीचे नहीं गिरेगा? तो फिर, जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में सभी श्रेष्ठ गुणों को समाहित किए हुए है, वह झूठ बोलने के लिए कैसे नीचे गिर सकता है?

एक संकेत और एक अनुस्मारक

आज हम देखते हैं कि सत्य और झूठ के बीच की दूरी दो अंगुलियों के बीच की दूरी से ज़्यादा नहीं है। दोनों एक ही बाज़ार में बिकते हैं। हालाँकि, सत्य और झूठ के बीच की दूरी इतिहास के किसी भी दौर में सुख के युग, पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के युग से ज़्यादा नहीं थी। सत्य ने अपनी खूबसूरती को उस युग में सबसे ज़्यादा दिखाया और पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को, जिनमें यह विशेषता सबसे ज़्यादा थी, सम्मान के उच्चतम बिंदु तक पहुँचाया। सत्य ने उनके ज़रिए इतिहास की सबसे बड़ी क्रांति को साकार किया और अपने और झूठ और असत्य के बीच की दूरी को इतना बड़ा कर दिया जितना कि सत्य ने किया था।

सुदूर पूर्व और सुदूर पश्चिम के बीच की सीमा। यह सबसे कीमती चीज थी और इसकी सबसे ज्यादा मांग थी। दूसरी ओर, यह ऐसी चीज थी जो सबसे बड़े उद्यम को भी मुर्दा बना देती है, झूठ अपनी पूरी कुरूपता में प्रदर्शित होता था और झूठ बोलने वाले मुसलीमा जैसे लोगों को सबसे निचले दर्जे पर पहुंचा देता था। जहर होने के कारण मुसलमानों के बीच इसका बाजार में हिस्सा खत्म हो गया।

उस समय के अरब मुसलमान, जो अपने सम्मान के प्रति बहुत सावधान थे, ने झूठ को पूरी तरह से नकार दिया, जिससे कोई लाभ नहीं होता था, और सत्य का पीछा करते थे, मानो वे एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हों। अन्य लोगों को सत्यता के अर्थ में उनके न्याय और पैगंबर के साथियों के न्याय को स्वीकार करना पड़ा। यही कारण था कि पैगंबर के साथियों को पैगंबर की परंपराओं के सच्चे कथावाचक के रूप में माना जाता था।

मार्गदर्शन और संकेत

इतिहास, जिसमें विशेष रूप से पैगंबर मुहम्मद की जीवनी शामिल है, इस बात पर एकमत है कि पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिनके जीवन को पूरी तरह से दर्ज किया गया है, और इतिहास में उपलब्ध सबसे बड़े विवरण में जाना जाता है, चालीस वर्ष की आयु से पहले उन्होंने एक छोटा सा झूठ नहीं बोला, जिस उम्र में उन्हें पैगंबर नियुक्त किया गया था, और उन्हें मुहम्मद द ट्रस्टवर्थ के रूप में जाना जाता था। इसके अलावा, वह कभी भी धोखे में नहीं पड़े; उन्होंने अपनी युवावस्था के दौरान अपनी पवित्रता को अधिकतम सीमा तक बनाए रखा, जब शारीरिक इच्छाओं का अनुभव सबसे अधिक भड़काऊ डिग्री तक होता है; वह हमेशा सबसे उदात्त चरित्र के लिए जाने जाते थे, और उनके पास होने के रूप में स्वीकार किया जाता था; वह अपने सभी कार्यों में पूरी तरह से संतुलित थे। उनके बारे में इतिहास में ऐसा कुछ भी दर्ज नहीं है जो इन तथ्यों का विरोध करता हो। जब कोई व्यक्ति चालीस वर्ष की आयु तक पहुँचता है, तो उनका एक स्थापित चरित्र बन जाता है, जिसमें बाद में बहुत कम अवलोकनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं। इसलिए, जो यह स्वीकार नहीं करता है कि चालीस वर्ष की आयु के बाद पैगंबर मुहम्मद ने जो महान क्रांति की, वह पूर्ण सत्य पर आधारित थी, उन्हें खुद को दोषी मानना चाहिए।

ऐसे व्यक्ति के मन में अवश्य ही कोई सोफिस्ट पल रहा होगा। यहां तक कि सबसे खतरनाक परिस्थितियों में भी, जैसे कि जब वह मदीना प्रवास के दौरान अपने सबसे करीबी दोस्त अबू बकर के साथ थावर की गुफा में शरण लिए हुए थे, और जब भागने का कोई स्पष्ट संकेत नहीं था, तब भी पैगंबर ने सबसे अधिक आत्मविश्वास और सुरक्षा की भावना के साथ काम किया। उनका यह रवैया ही उनके मिशन में उनकी अत्यधिक निश्चितता और उनकी अडिगता को दर्शाता है।

ईश्वर पर उनका भरोसा, जिसने उन्हें पैगम्बर बनाकर भेजा था; यह बात ही उनके पैगम्बर होने के दावे की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है।

दूसरा रास्ता

जब हम अतीत के रूप में ज्ञात समय के विभाजन में प्रवेश करते हैं, तो हमें निम्नलिखित चार बिंदुओं पर विचार करना चाहिए:

पहला यह कि जो लोग विज्ञान की किसी शाखा में विशेषज्ञता रखते हैं और आधार रखते हैं
इस विषय पर उनकी थीसिस उस शाखा में श्रेष्ठता प्रदर्शित करेगी।

दूसरा यह है, हे भाइयो और बहनो! यदि तुम लोगों को मानव स्वभाव का कुछ ज्ञान है, तो तुम स्वीकार करोगे कि एक अल्प-प्रसिद्ध व्यक्ति भी चिंता या बेचैनी के कारण किसी तुच्छ विषय पर लोगों के समूह से झूठ नहीं बोल सकता। और फिर भी एक व्यक्ति ऐसा है जो अशिक्षित है, लेकिन उसका बड़ा यश और सम्मान है, जो एक बहुत बड़ा कार्य करते हुए और अपने शत्रुओं से सुरक्षा की आवश्यकता होने पर भी बड़ी सभाओं (और पूरे इतिहास) के सामने महान उद्देश्यों के बारे में सरलता से बोलता है, और जो बहुत हठ के बावजूद भी बिना किसी चिंता या संकोच के कार्य करता है। इसके अलावा, ऐसा व्यक्ति जो इतनी शुद्ध ईमानदारी और महान गंभीरता के साथ घोषणा करता है, उसमें कोई विरोधाभास नहीं पाया जा सकता। इसके अलावा, वह ऐसा इतनी तीव्रता और उच्च तरीके से करता है कि यह उसके विरोधियों को परेशान कर देता है।

क्या ये सब उसकी सच्चाई को सूर्य की रोशनी में नहीं दिखाएंगे?

तीसरी बात यह है कि कई तरह के ज्ञान ऐसे हैं जो बेडौइन लोगों के लिए सिर्फ़ सैद्धांतिक अर्थ और मूल्य के हैं, जबकि सभ्य दुनिया में वे आम तौर पर जाने जाते हैं। इसलिए, बेडौइन लोगों की स्थिति का अध्ययन करने और जानने के लिए आपको अपने मन में रेगिस्तान में जाने की ज़रूरत है। अगर आप चाहें तो इस मामले में इस किताब के पहले भाग में दिए गए दूसरे आधार से सलाह ले सकते हैं।

चौथा यह है कि यदि कोई अनपढ़ व्यक्ति विशेषज्ञों या विद्वानों के बीच चर्चित विषयों पर अपना मत प्रकट करता है, जिन विषयों पर वे सहमत हैं उन पर उनसे सहमत होता है, तथा जिन विषयों पर वे असहमत हैं उन पर सत्य की व्याख्या और स्थापना करता है, तथा बाद में उसका खंडन नहीं किया जाता है, तो इससे उसकी श्रेष्ठता और एक सर्वज्ञ द्वारा उसका उपदेश होना प्रकट होता है।

इन तथ्यों के आधार पर हम कहते हैं: ऐसा लगता है कि अनपढ़ होने के बावजूद, पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने अपनी सक्रिय, उन्मुक्त आत्मा के साथ अतीत की सभी गहराइयों में प्रवेश किया था, पिछले नबियों की अवस्थाओं और रहस्यों को सीखा था जैसे कि वह उन सभी के साथ रहते थे, और पूरी दुनिया के सामने उन सभी बुनियादी सिद्धांतों को समझाया था जिन पर विश्वास किया जा सकता है।

ये सभी स्थितियाँ और रहस्य आधारित थे। उन्होंने इन्हीं सिद्धांतों को अपने मिशन का आधार या प्राथमिक आधार बनाया, और उन्हें उनके सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं तक स्पष्ट किया। इसके अलावा, पैगंबर ने उन सच्चाइयों की पुष्टि की जो शास्त्रों में पाई जाती हैं जो पिछले पैगम्बरों को भेजी गई थीं, और उन गलतियों और झूठों को सही किया जो समय के साथ उनमें घुस गए थे। यह उनकी पूर्ण सत्यनिष्ठा और पैगम्बरी होने का प्रमाण है।

पिछले नबियों (उन पर शांति हो) की नबूवत के सभी प्रमाण मुहम्मद (उन पर शांति हो) की सच्चाई और नबूवत के भी प्रमाण हैं। उनके चमत्कारों को उनके चमत्कार भी माना जा सकता है। अगर आप इस पर थोड़ा गौर करेंगे तो आप इसे समझ जाएंगे।

एक संकेत

हे भाइयो और बहनो! कभी-कभी सत्य की जगह शपथ ले लेती है। तो सुनो:

> मैं उस ईश्वर की शपथ लेता हूँ जिसने पैगम्बर पर कुरान की कथाएँ (पूर्ववर्ती पैगम्बरों और उनकी जाति के इतिहास के मूल पहलू) अवतरित कीं, तथा उनकी आत्मा को अतीत की गहराइयों और भविष्य की ऊंचाइयों तक ले गया, तथा उनके लिए रहस्यों को स्पष्ट कर दिया, कि पैगम्बर का अत्यंत सावधान और पैनी दृष्टि धोखे और भ्रमित होने से मुक्त है, तथा उनका मिशन पूर्णतः सत्य है, तथा लोगों को धोखा देने और भ्रमित करने से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

तीसरा रास्ता

हमें खुशी के युग से संबंधित निम्नलिखित चार बिंदुओं और एक निष्कर्ष पर विचार करना चाहिए:

पहला बिंदु: इस बात पर विचार करें कि एक छोटी सी आदत को भी एक छोटे से समुदाय से केवल एक शक्तिशाली शासक और बहुत प्रयास से ही स्थायी रूप से हटाया जा सकता है। फिर, देखें कि कैसे उस व्यक्ति ने, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, इतने कम समय में बहुत ही जुनूनी, अत्यधिक घमंडी और जिद्दी समुदायों से बहुत सी जड़ जमाई हुई आदतों को, बहुत कम बाहरी शक्ति या प्रयास का उपयोग करके, हटा दिया, उनकी जगह ऐसे उत्कृष्ट गुणों को स्थापित किया जो उनके अस्तित्व में अंतर्निहित हो गए, उन्हें इतिहास के सबसे शानदार, प्रसिद्ध, अनुकरणीय समुदाय के पद पर पहुंचा दिया। इसलिए, यदि आप इस बात की पुष्टि नहीं करते हैं कि यह व्यक्ति कितना अद्वितीय व्यक्ति रहा होगा, तो मुझे आपको कुतर्कवादियों में दर्ज करना होगा।

दूसरा बिंदु: राज्य एक ऐसी इकाई है जिसका एक सामूहिक व्यक्तित्व होता है जिसके निर्माण के लिए एक लंबी प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। शक्तिशाली पर विजय पाना,

दीर्घकालिक रूप से स्थापित राज्यों का निर्माण आसान नहीं है, तथा इसके लिए लम्बा समय और महान संघर्ष की आवश्यकता होती है।
ऐसे राज्य के प्रति समर्पण उसके नागरिकों में एक दूसरी, अंतर्निहित प्रकृति बन गई है। इस तथ्य के बावजूद, उस व्यक्ति ने, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, छोटे-छोटे बिखरे हुए कबीलों से एक सुव्यवस्थित समुदाय का निर्माण किया, जो लगातार एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते रहे थे, और बीस साल के संक्षिप्त समय में एक अत्यंत शक्तिशाली, सुस्थापित राज्य की स्थापना की। यह छोटा सा दिखने वाला राज्य अपनी स्थापना के दस साल के भीतर एक ही झटके में उस समय की दो महाशक्तियों पर विजय प्राप्त कर गया, एक को हमेशा के लिए नष्ट कर दिया, और दूसरे को इतनी निर्णायक रूप से पराजित किया कि वह अपने पतन तक संभल नहीं पाया। यदि आप इस व्यक्ति की उपलब्धियों में असाधारणता नहीं देख सकते हैं, तो आप अंधों में दर्ज किए जाएँगे।

तीसरी बात: बल से केवल सतही प्रभुत्व प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन मन और हृदय को जीतना, आत्माओं का प्रिय होना, आदतों और स्वभावों को बदलना, तथा लोगों की अंतरात्मा पर स्थायी प्रभुत्व स्थापित करना सत्य की विशेषता है, जो कोई अन्य चीज नहीं कर सकती। (इस तथ्य का निर्विवाद साक्ष्य कि ऐसे व्यक्ति की विजय मूलतः सत्य, प्रेम, करुणा, ज्ञान और विश्वास की विजय है, असंख्य बाधाओं के बावजूद मन, हृदय, आत्मा और अंतरात्मा पर उसका बढ़ता प्रभुत्व है, तथा यह तथ्य कि उसने जो धर्म प्रसारित किया है, उसे मन, हृदय या जिस देश में वह प्रवेश कर गया है, वहां से हटाया नहीं जा सकता।)

यदि आप इस तथ्य को नहीं जानते तो आप सत्य से अपरिचित हैं।

चौथा बिंदु: प्रचार केवल सतही प्रभाव पैदा कर सकता है और तर्क के रास्ते बंद कर सकता है। लेकिन दिल की गहराई में प्रवेश करना, सूक्ष्मतम भावनाओं को झकझोरना, खिलते हुए गुलाब की तरह क्षमताओं का विकास करना, छिपी हुई या सुप्त विशेषताओं को जगाना और मानवता के मूल सार को प्रस्फुटित और पुष्पित करना केवल सत्य के प्रकाश से ही प्राप्त किया जा सकता है।

वास्तव में यह एक ऐसी बेमिसाल क्रांति थी कि इस व्यक्ति ने उन कठोर हृदयों को शुद्ध किया जो बच्चियों को जीवित ही धरती में दफना रहे थे; उसने ऐसे लोगों को लिया और उन्हें सभी प्राणियों, यहाँ तक कि चींटियों के प्रति भी प्रेम और करुणा जैसी श्रेष्ठतम भावनाओं से सुसज्जित किया। उसने यह क्रांति बेडौइन रेगिस्तानी समुदाय में साकार की, जिसे केवल शक्ति या कानून के बल पर साकार करना असंभव था। प्रत्येक व्यक्ति, कुछ हद तक विवेक के साथ, इस उपलब्धि की असाधारणता की पुष्टि करेगा। यदि आपके पास थोड़ा विवेक है, तो आप भी इसकी पुष्टि करेंगे।

निष्कर्ष: विश्व इतिहास गवाह है कि जो व्यक्ति एक या दो भावनाओं, विशेषताओं या क्षमताओं को जगाने और विकसित करने में सक्षम है, उसे माना जाता है

प्रतिभाशाली बनो। क्योंकि, यदि कुछ भावनाएँ, विशेषताएँ या क्षमताएँ जागृत या विकसित नहीं की जातीं, तो प्राप्त की गई कोई भी सफलता अस्थिर और क्षणभंगुर होगी। इसलिए, सत्य के सूर्य के चमकते प्रकाश के माध्यम से ही यह संभव हुआ कि तेरह (अब चौदह) शताब्दियों पहले अरब प्रायद्वीप के विशाल रेगिस्तान में रहने वाले बेडौइन समुदायों में स्वतंत्रता, भक्ति, प्रेम, आत्म-बलिदान और वीरता जैसी सैकड़ों भावनाएँ, विशेषताएँ और क्षमताएँ जागृत, प्रेरित और विकसित हुईं। मैं अरब प्रायद्वीप को उन लोगों की आँखों के सामने रखूँगा जो इस सत्य को अपने दिमाग में नहीं रखते। अरब प्रायद्वीप को देखो। तेरह (अब चौदह) शताब्दियों के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के बाद, वहाँ (या आधुनिक, सभ्य दुनिया के किसी भी हिस्से में) सौ सबसे प्रसिद्ध दार्शनिकों, शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों को भेजें। उन्हें वहाँ सौ साल तक प्रयास करने दें, और देखें कि क्या वे इस व्यक्ति, शांति और आशीर्वाद, ने तेईस वर्षों में जो हासिल किया है उसका सौवां हिस्सा हासिल करने में सक्षम हैं।

एक संकेत

जो कोई भी स्थायी सफलता चाहता है, उसे ईश्वर द्वारा स्थापित मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, और उसके कार्य करने के तरीके को जानना चाहिए। अन्यथा, ईश्वर का कार्य करने का तरीका जो "प्रकृति" में खुद को प्रकट करता है, किसी भी प्रयास को बर्बाद करके जवाब देगा, और जो लोग इसका विरोध करते हैं उन्हें शून्यता के रेगिस्तान में विलुप्त होने की निंदा करेगा। इसलिए, इस तथ्य के आधार पर देखें और विचार करें कि कौन से सूक्ष्म, वास्तविक और संवेदनशील सत्य और वास्तविकताएँ हैं जिन पर शरीयत के नियम लागू होते हैं

यह कितना असंभव है कि मानवीय तर्क के लिए इन्हें समझ पाना संभव हो, तथा शरिया कितनी संवेदनशीलता से सृष्टि के मौजूदा नियमों और ब्रह्मांड के संचालन के बीच संतुलन बनाए रखता है।

शरिया ने मानव इतिहास में कई शताब्दियों और क्रांतियों, विकासों और संघर्षों के माध्यम से अपनी वास्तविकता और वैधता को संरक्षित किया है। यह दर्शाता है कि ईश्वर के महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, का मार्ग शाश्वत सत्य पर आधारित है।

उपरोक्त सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए, ध्यानपूर्वक, तर्कपूर्ण मन से सुनें: अशिक्षित होने, कोई भौतिक बल न होने और कभी भी शासन या प्रभुत्व का लक्ष्य न रखने के बावजूद, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने सबसे खतरनाक अवसरों पर भी अडिग तरीके से काम किया; उन्होंने दिमागों पर विजय प्राप्त की; उन्होंने अपने आप को दिलों का प्रिय बना दिया; उन्होंने विवेक और स्वभाव पर प्रभुत्व स्थापित किया; उन्होंने कई स्थापित बुराइयों को उखाड़ फेंका।

बुरी आदतों और विशेषताओं को नष्ट कर दिया और उनके स्थान पर सबसे प्रशंसनीय गुण, नैतिक उत्कृष्टता और प्रशंसनीय विशेषताओं को स्थापित किया; उन्होंने हृदयों से कठोरता को दूर किया और सबसे उत्कृष्ट भावनाओं को जगाया; उन्होंने अपने अनुयायियों में सच्ची मानवता का मूल विकसित किया, और उन्हें मानव इतिहास में सबसे महान, सबसे प्रसिद्ध अनुकरणीय समुदाय बनाया; उन्होंने बीस साल जैसे कम समय में एक दुर्जेय राज्य की स्थापना की, जो बाद में अगले बीस वर्षों में दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बन गई, और जो लगभग बारह शताब्दियों तक बनी रही। ये सभी बातें उन लोगों को दिखाती हैं जो अंधे नहीं हैं कि उनकी सच्चाई क्या है।

उनके दावे, उनकी पैगम्बरी होने और सत्य के प्रति उनकी भक्ति पर विचार किया।

चौथा रास्ता

यह समय के भविष्य के पृष्ठ और विशेषकर शरीयत के बारे में है।

आपको अपने विचार में निम्नलिखित चार बिंदुओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए-

क्रियाएँ:

पहला बिन्दु: कोई व्यक्ति चाहे कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, वह विशेष नहीं हो सकता।
विज्ञान के दो या तीन से अधिक क्षेत्रों में विशेषज्ञ।

दूसरा बिंदु: दो व्यक्ति एक विषय प्रस्तुत करते हैं। एक व्यक्ति इसे सबसे उचित अवसर पर इसके सभी आयामों और अन्य प्रासंगिक विषयों के साथ इसके संबंधों के साथ प्रस्तुत करता है। इससे उस व्यक्ति की इस विषय में विशेषज्ञता का पता चलता है। दूसरा व्यक्ति इसे सतही रूप से और दूसरों की नकल में प्रस्तुत करता है।

भले ही आप अपने मन से दोनों प्रस्तुतियों के बीच अंतर नहीं समझ पाएं, परंतु आपकी आत्मा इसे महसूस कर लेती है।

तीसरा बिन्दु: जैसा कि इस पुस्तक के प्रथम भाग में प्रथम आधार में बताया गया है, यदि कुछ शताब्दियों पूर्व असाधारण मानी जाने वाली खोज आज तक छिपी रही होती, तो एक बच्चा भी उसे कर सकता था, क्योंकि सभी प्रारंभिक ज्ञान और परिस्थितियाँ पहले से ही मौजूद थीं। इसे ध्यान में रखते हुए, तेरह (अब चौदह) शताब्दियों पूर्व के अरब प्रायद्वीप में जाएँ, और चारों ओर देखें। आप देखेंगे कि किसी भी भौतिक सहायता से वंचित एक अशिक्षित व्यक्ति ने सच्चे ज्ञान के नियमों के आधार पर न्याय का एक उच्च मानक स्थापित किया, जिसे कई शताब्दियों बाद कई शताब्दियों के अनुसंधान, विकास और खोजों के परिणामस्वरूप ही अच्छी तरह से तैयार किया जा सका; आप देखेंगे कि उस न्याय के सिद्धांतों से युक्त शरीयत में अंतिम दिन तक भविष्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता है। इसमें ऐसे बुनियादी सिद्धांत हैं कि यह समय के साथ उठने वाले सभी प्रश्नों का विस्तार और समाधान कर सकता है। यह घोषणा करता है कि यह शाश्वत ईश्वर से निकलता है

शब्द और दोनों दुनिया में खुशी सुनिश्चित करता है। यदि आप पर्याप्त रूप से निष्पक्ष हैं, तो आप समझेंगे कि शरिया किसी भी मानव मन का उत्पाद नहीं हो सकता है। यह ईश्वरीय ज्ञान से उत्पन्न होता है और मानवता के लिए ईश्वर के एक दूत, जो पैगंबर मुहम्मद हैं, के माध्यम से लाया गया था, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

चौथा बिंदु: जैसा कि दसवें आधार में बताया गया है, शरिया हर व्यक्ति को उसके मन और हृदय की क्षमता के अनुसार मार्गदर्शन देता है। यह इस प्रकार है:

अधिकांश लोग अमूर्त सत्य को तब तक नहीं समझ पाते जब तक कि उन्हें उनके परिचित रूपों में प्रस्तुत न किया जाए। इसलिए, अमूर्त सत्य को प्रस्तुत करने में तुलना, उपमा, रूपक, दृष्टांत या रूपक का उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, अधिकांश लोग अपनी पाँच बाहरी इंद्रियों से जो कुछ भी सत्य समझते हैं, उसे सत्य मान लेते हैं। इस कारण से, चूँकि भौतिक विज्ञानों से संबंधित प्रारंभिक सत्य और बुनियादी नियम भी इसकी स्थापना के आरंभिक काल में स्थापित नहीं हुए थे, इसलिए शरिया ने लोगों को भ्रमित न करने के लिए इन विज्ञानों में संक्षिप्त रहना पसंद किया। हालाँकि, इसने उनके बारे में कुछ बुनियादी सत्यों पर संकेत देने से परहेज नहीं किया।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

ईश्वर के महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का हर कार्य, हर शब्द और हर स्थिति उनकी सच्चाई को सूर्य की रोशनी की तरह स्पष्ट रूप से दर्शाती है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि उनका हर कार्य या हर स्थिति असाधारण हो। किसी असाधारण चीज़ का प्रदर्शन सिर्फ़ किसी दावे को साबित करने का काम करता है। इस कारण से, जब ऐसी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती है, तो एक पैग़म्बर अपने सामान्य जीवन को ईश्वर के नियमों के अनुसार व्यतीत करता है जो रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर लागू होते हैं। उसे ऐसा करना चाहिए क्योंकि वह रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अपने समुदाय का नेता है।

हे भाइयों और बहनों! धार्मिक जीवन और उसे नियंत्रित करने वाली शरीयत, दोनों ही अनिवार्य रूप से विज्ञान और तर्कसंगत सत्य के मूल तत्वों के अनुरूप हैं - अनिवार्य रूप से इसलिए, क्योंकि विज्ञान ईश्वर की सृष्टि की सार्वभौमिक पुस्तक की भाषाएँ हैं, जबकि शरीयत धार्मिक जीवन के लिए उनके नियमों का संग्रह है - ज्ञान के लगभग सभी अलग-अलग क्षेत्रों को शामिल करती है। कुछ उदाहरणों का हवाला देते हुए, नैतिक प्रशिक्षण, आत्मा की शुद्धि, शरीर की देखभाल, घर का प्रबंधन, नागरिक कानून, सामाजिक व्यवस्था, सामान्य कानून, इत्यादि। शरीयत ने इन विषयों पर विस्तृत नियम स्थापित किए हैं

कुछ मामलों को इन और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में शामिल किया गया, जबकि अन्य में इसने सामान्य सिद्धांतों को प्रख्यापित किया और उन पर आधारित आवश्यक कानूनों की अवधारणा को मानवीय तर्क पर छोड़ दिया। सभी विज्ञानों और ज्ञान की शाखाओं के विशेषज्ञ, यदि निष्पक्ष और न्यायप्रिय हों, तो निश्चित रूप से स्वीकार करेंगे कि इस्लाम के धार्मिक नियम और कानून और उसके शरीयत के आदेश, जो तेरह (अब चौदह) शताब्दियों पहले दिए गए थे, किसी इंसान की उपज नहीं हो सकते। आधुनिक दुनिया के प्रसिद्ध विचारकों में से एक थॉमस कार्लाइल ने एक बुद्धिमान जर्मन राजनीतिज्ञ का उद्धरण दिया कि इस्लाम के बारे में अपने शोध के बाद, उन्होंने खुद से पूछा कि क्या आधुनिक सभ्यता खुद को इस्लाम के अनुकूल बना सकती है और जीवित रह सकती है। उस राजनीतिज्ञ ने उनके प्रश्न का सकारात्मक उत्तर दिया। कार्लाइल खुद भी स्वीकार करते हैं कि जब इस्लाम की सच्चाइयाँ एक चमकदार जलती हुई आग की तरह प्रकट हुईं, तो उन्होंने अन्य विचार प्रणालियों और धर्मों को आत्मसात कर लिया, जो लकड़ी के टुकड़ों की तरह थे।56 उनका निर्णय सही है क्योंकि कोई भी भ्रांति सत्य के सामने जीवित नहीं रह सकती।

इस्लाम पर हर तरफ से होने वाले हमलों और उसे विकृत करने की कोशिशों के बावजूद भी उसने अपनी सच्चाई को बचाए रखा है। यह भी कहा जा सकता है कि उन सभी हमलों और कोशिशों की वजह से इस्लाम पर जमी गंदगी की परत पतली होती जा रही है (क्योंकि इंसानियत में सच्चाई के लिए प्यार और शोध के लिए जोश पैदा होता है)। दुनिया की मौजूदा हालत इसकी गवाह है। इस किताब के पहले हिस्से में दिए गए आधारों पर गौर किया जाना चाहिए।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

यदि आप दावा करते हैं कि किसी व्यक्ति को सभी विज्ञानों के कुछ बुनियादी सिद्धांतों और नियमों का ज्ञान हो सकता है, तो मैं इस प्रकार उत्तर दूंगा:

आप सही भी हैं और गलत भी। सिद्धांत रूप में, यह संभव प्रतीत होता है।

लेकिन किसी चीज़ को जानने का मतलब उसे सैद्धांतिक और सतही तौर पर जानना नहीं है।

---

56 थॉमस कार्लाइल (1795-1881), एक स्कॉटिश निबंधकार और इतिहासकार, ने 1841 में पैगंबर मुहम्मद पर एक व्याख्यान दिया, जिसका शीर्षक था "पैगंबर के रूप में नायक" और उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक, ऑन हीरोज, हीरो-वरशिप एंड द हीरोइक इन हिस्ट्री लिखी। समकालीन लेखिका और धर्म की इतिहासकार, कैरन आर्मस्ट्रांग, थॉमस कार्लाइल के व्याख्यान का मूल्यांकन यूरोप में मुहम्मद को एक सच्चे धार्मिक व्यक्ति के रूप में देखने के पहले प्रयास के रूप में करती हैं। (मुहम्मद: पैगंबर की जीवनी, सैन फ्रांसिस्को, 1993, पृष्ठ 38.) हालांकि, कई पश्चिमी विचारकों ने, जो पिछली शताब्दियों के पूर्वाग्रहों से आंशिक रूप से मुक्त हो गए थे, बाद में इस्लाम और पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के वास्तविक मूल्य को स्वीकार किया है। देखें, अबुल-फ़ज़ल इज़्ज़ती, इस्लाम के प्रसार के इतिहास का एक परिचय, लंदन, न्यूज़ एंड मीडिया लिमिटेड, 1978. (अनुवाद)

विशेष रूप से। कुछ सिद्धांत और नियम ऐसे हैं जिन्हें उनके सभी पहलुओं में जानना चाहिए; ये सभी समय, परिस्थितियों और लोगों से संबंधित हैं, और वे एक दूसरे से भिन्न हैं। वे इस तरह के भी हैं कि उनमें अन्य विज्ञानों के कई नियम और सिद्धांत प्रतिबिंबित होते हैं। इसके अलावा, किसी को उन्हें हर स्थिति और समय के खंड में उपयोग की इष्टतम डिग्री के लिए उनकी व्यावहारिकता के साथ समझना चाहिए। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, इन नियमों और सिद्धांतों की खोज या स्थापना नहीं कर सकता। एक ही शब्द दो व्यक्तियों द्वारा बोला जा सकता है। लेकिन ऐसा करके एक अपनी अज्ञानता प्रदर्शित कर सकता है, जबकि दूसरा ज्ञान प्रदर्शित करता है।

एक संकेत, मार्गदर्शन और अनुस्मारक

हे भाइयों और बहनों, जो इस पुस्तक की शुरुआत से ही मेरे साथ यात्रा करते रहे हैं! एक व्यापक दृष्टिकोण से देखें और चिंतन करें, और उचित रूप से तर्क करने के लिए अपने मन में एक उच्च परिषद बनाएं। फिर इस पुस्तक के पहले भाग में दिए गए बारह आधारों में से जो भी आप परामर्श करना चाहते हैं, उसे बुलाएँ। आप निम्नलिखित सिद्धांतों से भी परामर्श कर सकते हैं:

एक व्यक्ति एक, दो या तीन से अधिक विज्ञानों का विशेषज्ञ नहीं हो सकता। दो व्यक्तियों द्वारा बोले गए एक ही शब्द का उद्देश्य, अर्थ, विषय-वस्तु तथा अन्य कई पहलुओं में अंतर हो सकता है। विज्ञान अध्ययन और अनुसंधान के माध्यम से विकसित होते हैं; वे समय के साथ एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। आज जो बात सभी को तथ्य के रूप में ज्ञात है, वह अतीत में केवल एक सिद्धांत रही होगी, और सभ्य लोगों को ज्ञात बात असभ्य लोगों को अज्ञात रही होगी। अतीत की तुलना वर्तमान और भविष्य से करना भ्रामक है। रेगिस्तानी लोगों की सरलता सभ्य व्यक्ति की चालाकी और धोखेबाजी को बर्दाश्त नहीं कर सकती। सभ्यता के आवरण में धोखा छिपा रह सकता है। रीति-रिवाज और घटनाएँ ऐसी बातें सुझाती और संकेत करती हैं कि वे ज्ञान की कई शाखाओं का निर्माण कर सकती हैं। मानव दृष्टि भविष्य को नहीं देख सकती। मानवता द्वारा बनाए गए नियम लंबे समय तक नहीं चलते; उनका एक "प्राकृतिक" जीवनकाल होता है। समय और स्थान से बने वातावरण का मनुष्यों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। कई चीजें जो अतीत में असाधारण थीं, वे वर्तमान में सामान्य हो सकती हैं, क्योंकि उनकी समझ के लिए प्रारंभिक स्थितियाँ और आधार बहुत पहले से तैयार किए जा चुके हैं। कोई भी बुद्धि, चाहे वह कितनी भी तीक्ष्ण क्यों न हो, विज्ञान की एक शाखा के निर्माण और पूर्णता के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती, तो वह एक से अधिक विज्ञानों के निर्माण के लिए कैसे पर्याप्त हो सकती है?

इसलिए, हे भाईयों और बहनों! इन सिद्धांतों पर विचार करें और फिर अपनी आत्मा को त्याग दें जो आसानी से सत्य के सामने झुक नहीं सकती। वर्तमान समय और परिस्थितियों ने आपके मन में जो सनक, धारणाएँ, झूठे दावे और निराधार आपत्तियाँ डाल दी हैं, उन्हें उतार फेंकें। वर्तमान के तट से समय के असीम सागर में प्रवेश करें और सुख के युग के द्वीप पर उतरें। सबसे पहले जो चीज़ आपकी नज़र और ध्यान को आकर्षित करेगी, वह इस प्रकार है:

किसी भी तरह की मदद और औपचारिक अधिकार से रहित एक अकेला व्यक्ति पूरी दुनिया का सामना करता है और उसे संबोधित करता है। वह अपने कंधों पर एक भारी सच्चाई ढोता है

पृथ्वी से भी अधिक, और ऐसे नियमों की एक सभा का उपदेश देता है जो दोनों लोकों में मानवता की खुशी की गारंटी देता है। नियमों की वह सभा, जिसमें ईश्वरीय और मानवीय ज्ञान की सभी शाखाओं के सार तत्व समाहित हैं, समय के साथ मानवीय क्षमता के विकास के साथ-साथ विकसित होने की क्षमता रखती है, जो दुनिया और परलोक दोनों में फल देती है। यह न्याय की ऐसी व्यवस्था स्थापित करती है जिसमें व्यक्तिगत विशेषताओं और मानवीय व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन दोनों में संतुलन स्थापित करने और उसे बनाए रखने के सभी सिद्धांत समाहित हैं। यदि आप उस कानून की सभा (शरीयत) के सिद्धांतों से पूछें कि वे कहाँ से आते हैं और कहाँ जा रहे हैं, तो वे उत्तर देंगे, "हम ईश्वरीय शाश्वत वाणी से आते हैं, और मानवता के साथ उसके अनंत काल की ओर उसके सुख को सुरक्षित रखने के लिए चलते हैं। जब मानवता का इस दुनिया से संबंध टूट जाएगा, तब भी हम उसके साथ चलते रहेंगे। हम उसे दूसरी दुनिया के दायरे में मार्गदर्शन और संतुष्ट करना जारी रखेंगे।"

निष्कर्ष

संदेह तीन स्रोतों से उत्पन्न होता है। यदि आप शरीयत के स्वामी के उद्देश्यों से अनभिज्ञ हैं और यह नहीं समझ पा रहे हैं कि ईश्वरीय मार्गदर्शन मानवता की विभिन्न क्षमताओं पर विचार करता है, तो आप एक ऐसे भ्रमजाल में फंस जाते हैं, जो भ्रामक संदेहों और अनुमानों का एक घोंसला है, तो आपकी आपत्तियाँ निम्नलिखित तीन बिंदुओं से उत्पन्न होंगी:

पहला यह कि आप कुरान के रूपकात्मक और अस्पष्ट प्रतीत होने वाले कथनों को उसकी अद्वितीय वाक्पटुता के साथ असंगत मान सकते हैं, जो उसकी शैलीगत विशिष्टता, कथन की स्पष्टता और भाषाई शुद्धता और प्रवाह पर आधारित है।

दूसरा यह है कि आप भौतिक विज्ञान द्वारा अध्ययन किए गए "प्राकृतिक" तथ्यों में कुरान की संक्षिप्तता और मायावीता को उसके मार्गदर्शन और शिक्षण और शिक्षा के तरीकों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

तीसरा यह है कि आप कुरान के कुछ कथनों को कुछ तर्कसंगत और प्रत्यक्ष वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं देख पाएंगे, और इसे मार्गदर्शन और सत्य की स्थापना के उद्देश्यों के लिए अनुपयुक्त मान सकते हैं।

ऐ भाईयों और बहनों! मदद और कामयाबी अल्लाह की तरफ से है। मैं कहता हूँ कि ये तीन बातें जो तुम्हें कमियाँ लगती हैं, वो वैसी नहीं हैं जैसा तुम समझते हो। बल्कि ये इस बात के सबूत हैं कि क़ुरआन वाक्पटुता का चमत्कार है। तो सुनो!

पहली आपत्ति के लिए स्पष्टीकरण: लोगों का भारी बहुमत आम जनता से बना है। कुरान का प्रकटकर्ता बहुमत के स्तर पर विचार करता है, शिक्षाविदों या बुद्धिजीवियों की कभी उपेक्षा नहीं करता। ये बाद वाले आम जनता को संबोधित किसी भी चीज़ को आसानी से समझ सकते हैं, और इसलिए उन्हें कुरान के संबोधन में अपना पूरा हिस्सा मिलेगा। यदि प्रकटकर्ता ने अभिजात वर्ग के स्तर पर विचार किया होता, तो लोगों का भारी बहुमत उसके संदेश से वंचित रह जाता। आम जनता अमूर्त सत्य को उनकी अमूर्तता में आसानी से नहीं समझ सकती, इसलिए उन सत्यों को उन्हें ठोस रूपों में बताया जाना चाहिए। इसके लिए कुछ साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जैसे तुलना, उपमा, मानवीकरण और रूपक, जो हमें कुरान के रूपक कथनों में निहित मिलते हैं। कुरान ने उन्हें आम जनता के लिए द्विनेत्रिक बनाया है ताकि वे अमूर्त सत्यों को देख सकें।

हालाँकि कुछ लोगों के लिए इस प्रयोग और उनमें शामिल आयतों के स्पष्ट अर्थों में उलझ जाना संभव है, और इस प्रकार कुछ दिव्य सत्यों को गलत समझना—जैसे कि दिव्य सत्ता को एक शरीर, समय और स्थान देना, और उसकी तुलना सृजित से करना—सावधानीपूर्वक अवलोकन इस प्रयोग के पीछे की सच्चाई को आसानी से समझ सकता है। उदाहरण के लिए, जब इस आयत पर विचार किया जाता है, कि दयालु ने खुद को सर्वोच्च सिंहासन पर स्थापित किया है (20: 5), तो एक व्यक्ति इस सत्य को देख सकता है कि ईश्वर ही ब्रह्मांड का एकमात्र शासक है। यह आयत हमारे मन में ईश्वर के सर्वोच्च अधिकार और प्रभुत्व को स्थापित करती है, और यह कि ईश्वर न केवल ब्रह्मांड का निर्माता है, बल्कि इसका पूर्ण संप्रभु और शासक भी है। ब्रह्मांड का निर्माण करने के बाद, उसने खुद को इससे अलग नहीं किया है, और अपनी रचना के प्रति उदासीन नहीं हुआ है।

इसके विपरीत, वह पूरे ब्रह्मांड पर प्रभावी रूप से शासन करता है, साथ ही इसके हर छोटे हिस्से को नियंत्रित करता है। सारी शक्ति और संप्रभुता उसके पास है।
ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु पूर्णतः उसकी मुट्ठी में है और उसके अधीन है।

इच्छा और शक्ति। इस सत्य को हमारे मन में स्थापित करने के लिए, कुरान आम जनता के स्तर पर बोलता है और उनके सामने एक संप्रभु का अपने देश पर अपने सिंहासन से शासन करने का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। कुरान की इस शैली को "ईश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक कम करना" के रूप में वर्णित किया गया है। आप इस पुस्तक के पहले भाग में दसवें आधार को भी देख सकते हैं।

अमूर्त सत्य को उस स्तर पर प्रस्तुत करना जिस स्तर पर मानव समझ सके-
साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करते हुए खड़े होना वाक्पटुता की आवश्यकता है।

दूसरी आपत्ति के लिए स्पष्टीकरण: दूसरे आधार में इस पर विस्तार से चर्चा की गई है। सृष्टि में पूर्णता की प्रवृत्ति होती है, और मानव जाति में प्रगति की। विज्ञान इसी प्रवृत्ति का फल है, और वे अनुभवों और शोध के माध्यम से अस्तित्व में आए हैं, समय के साथ एक दूसरे का समर्थन और आधार प्रदान करते हैं। वे अचानक अस्तित्व में नहीं आए हैं, न ही वे एक दूसरे से स्वतंत्र हैं। विलक्षण और संकेंद्रित वृत्तों की तरह, वे एक दूसरे के भीतर एक दूसरे को काटते और ओवरलैप करते हैं।

निकाले गए निष्कर्ष पहले रखी गई नींव पर आधारित हैं।

इसका अर्थ यह है कि जो विज्ञान अभी निर्माण की अवस्था में है, वह भविष्य में विकसित होगा तथा नए विकास और नए विज्ञानों के जन्म के लिए आधार प्रदान करेगा।

इस कारण, मान लीजिए कि अगर किसी ने दस शताब्दियों पहले एक विज्ञान या उसके स्थापित तथ्यों को पढ़ाने का प्रयास किया होता, जो अभी हाल ही में बने हैं, तो वे कई गलतियाँ करने या अपने छात्रों को भ्रांतियों और भ्रम में ले जाने से नहीं बच पाते। उदाहरण के लिए, अगर छात्रों को बताया जाता कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, न कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर, और एक पानी की बूंद में दस लाख से अधिक जीवित जीव हैं, जो हमें सृष्टिकर्ता की महानता की एक झलक देता है, तो अधिकांश छात्रों ने अपने शिक्षक को नकार दिया होता और सत्य को चुनौती दी होती। क्योंकि वे पानी की एक बूंद में दस लाख से अधिक जीवित जीवों के अस्तित्व को नहीं समझ सकते थे, और जब उनकी आँखें स्पष्ट रूप से पृथ्वी को स्थिर और सूर्य को गतिमान देख रही थीं, तो उन्हें आत्म-विरोधाभास का सामना करना पड़ता।

कई शताब्दियों तक मन को भ्रमित रखना एक गंभीर गलती होती और लोगों के मार्गदर्शन में बाधा उत्पन्न करती।

एक अनुस्मारक

किसी भी तरह से किसी चीज़ को पहले से जानने के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि हम अपने वर्तमान कार्यों को उस ज्ञान पर आधारित करें, और वर्तमान में जो हो रहा है उसे नज़रअंदाज़ करें।

भविष्य के लोगों के मार्गदर्शन के लिए, वर्तमान में जीने वालों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस कारण, वाक्पटुता और मार्गदर्शन दोनों के लिए यह आवश्यक है कि जो सत्य वर्तमान में लोगों के सामने प्रकट हैं और जो विचार मार्गदर्शन का काम करते हैं, उनका स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाए, लेकिन जो सत्य वर्तमान में अज्ञात हैं और जो भविष्य में प्रकाश में आएंगे, उन्हें या तो अनदेखा कर दिया जाए या, यदि हमें लगता है कि हमें उनका उल्लेख करना चाहिए, तो उन्हें व्यापक रूप से और संकेतात्मक रूप से उल्लेख किया जाए। उनके लिए मन को तैयार और तैयार रखा जाना चाहिए, उन्हें जांचने के लिए आमंत्रित किया जाना चाहिए। कुरान यही करता है।

मन को ऐसी बातों से भ्रमित करना जो वे सहन नहीं कर सकते, वाक्पटुता और मार्गदर्शन के बिलकुल विपरीत है। "लोगों से उनकी मानसिक क्षमता के अनुसार बात करें!" यह बुद्धिमत्ता का सिद्धांत है।

आप पहले भाग में सभी आधारों पर विचार कर सकते हैं, विशेष रूप से पहले भाग पर।

जहाँ तक तीसरी आपत्ति का सवाल है, जो यह है कि कुरान के कुछ कथनों के स्पष्ट अर्थों को कुछ तर्कसंगत या प्रत्यक्ष वास्तविकताओं के साथ संगत नहीं माना जा सकता है, तो पहले आधार पर विचार करने के बाद, आपको इस पर विचार करना चाहिए: कुरान के चार बुनियादी उद्देश्य हैं मन में ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व, पैगम्बरत्व, शारीरिक पुनरुत्थान, तथा न्याय और उपासना की स्थापना करना। इसलिए, कुरान सृष्टि के तथ्यों का उल्लेख करता है, जो भौतिक विज्ञान का विषय है और जिसे केवल वैज्ञानिक अध्ययन के माध्यम से ही जाना जा सकता है, इसके बुनियादी उद्देश्यों के लिए।

प्रत्येक युग में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा देखे जा सकने वाले तथ्यों का स्पष्ट उल्लेख करते हुए, यह अन्य तथ्यों को संकेतात्मक रूप से तथा व्यापक रूप में संदर्भित करता है, तथा उनके स्पष्टीकरण को समय के साथ वैज्ञानिक अध्ययनों पर छोड़ देता है तथा मानवजाति को उनका अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

एक अनुस्मारक

वाक्पटुता और मार्गदर्शन दोनों का नियम है कि प्रमाण थीसिस से अधिक स्पष्ट होना चाहिए और उससे पहले से ज्ञात होना चाहिए। इस कारण से, कुरान की कुछ आयतों के स्पष्ट अर्थ बहुसंख्यक लोगों द्वारा महसूस किए गए प्रभावों से संबंधित हैं। हालाँकि, इन आयतों का उद्देश्य उन प्रभावों के लिए सबूत प्रदान करना नहीं है। कुरान के मार्गदर्शन के चार बुनियादी उद्देश्यों को लोगों के मन में स्थापित करने के साथ-साथ, उनमें ऐसी सूक्ष्म सच्चाइयाँ निहित हैं जो शोधकर्ताओं और सत्य की खोज करने वाले लोगों का ध्यान आकर्षित करती हैं। कुरान की आयतें अपने आप में स्पष्ट और स्पष्ट हैं।

मूल सत्य को स्पष्ट रूप से दर्शाते हुए, एक दूसरे की व्याख्या करते हैं; कुछ आयतें अपने भाई-बहनों में निहित अर्थों के रत्नों को उजागर करती हैं। इसलिए, हमें उन अधिक महत्वपूर्ण अर्थों को देखने का प्रयास करना चाहिए जो उनके स्पष्ट, शाब्दिक अर्थों के अंतर्गत निहित हैं।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

यदि ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए कुरान ने स्पष्ट रूप से बिजली, गुरुत्वाकर्षण के नियम, पृथ्वी की दैनिक या वार्षिक गति, खोजे जा चुके सत्तर (अब सौ से अधिक) तत्वों से रासायनिक संरचना के निर्माण, तथा सूर्य की स्पष्ट गति के बावजूद उसकी स्थिरता का उल्लेख किया होता, तो प्रमाण स्वयं थीसिस से कहीं अधिक छिपे हुए होते और स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती।

इस कारण से, कुरान ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो हर स्तर की समझ के लिए समझने योग्य है और अपने पाठकों को कभी भी भ्रम में नहीं डालता है, बल्कि अभिजात वर्ग की उपेक्षा किए बिना बहुसंख्यक लोगों के स्तर को ध्यान में रखता है, और कुछ सूक्ष्म वास्तविकताओं का उल्लेख करता है जिन्हें समय के साथ रूपकों, तुलनाओं और उपमाओं के माध्यम से खोजा जाएगा।

हे भाइयो और बहनो! कुरान के कुछ कथनों पर आपत्ति जताने के लिए कुछ लोगों ने जो तीन बिंदु रखे हैं, वे वास्तव में कुरान और उसकी शैलियों के चमत्कारी पहलू हैं। यह केवल कुरान के लिए ही विशेष है कि यह समझ के सभी स्तरों को संबोधित करने और उन्हें बिना किसी विरोधाभास या मिथ्याकरण के हर समय संतुष्ट करने में सक्षम है।

> मैं उस व्यक्ति की कसम खाता हूँ जिसने चमत्कारी क़ुरआन प्रदान किया है कि चेतावनी देने वाले की दृष्टि और मनुष्य जाति में सबसे अधिक सावधान व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि, जिस पर शांति और आशीर्वाद हो, धोखे से या सत्य को झूठ से या वास्तविकता को भ्रम से भ्रमित करने से बिल्कुल श्रेष्ठ है; उसका मार्ग पवित्र है और धोखे या झूठ की ओर ले जाने से परे है।

पांचवां रास्ता

यह ईश्वर के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की असाधारण अवस्थाओं और अनुभवों तथा उनके चमत्कारों का तरीका है। उनकी जीवनी और इतिहास की पुस्तकें ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी हैं। प्रसिद्ध विद्वानों ने इसमें शामिल किया है-

इसलिए, जो पहले से ज्ञात है उसे दोबारा पढ़ाने से बचने के लिए, मैं यहाँ उनके बारे में विस्तार से नहीं बताऊँगा।

एक संकेत

इनमें से सभी चमत्कार विश्वसनीय माध्यमों से वर्णित नहीं किए गए हैं, लेकिन चूंकि एक या एक से अधिक विश्वसनीय माध्यमों से अनेक उदाहरण और विविधताएं वर्णित की गई हैं, इसलिए उन सभी को प्रामाणिक माना जा सकता है।

ऐसी ही एक असाधारण अनुभूतियाँ रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जन्म से पहले और उसके दौरान तथा उनकी नबूवत के एलान से पहले की घटनाओं में देखने को मिलती है। ऐसा लगता है कि वह युग महानुभावों के कारण असाधारणता से धन्य और संपन्न था।

पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के आगमन का पहले से ही एहसास हो गया था और इसकी खबर कुछ असाधारण घटनाओं के माध्यम से दी गई थी।

दूसरी तरह की जानकारी वह है जो पैगम्बर ने कुछ भूतकाल की घटनाओं के बारे में सही जानकारी दी, तथा निकट और दूर के भविष्य के बारे में उनकी अनेक भविष्यवाणियाँ। ऐसा लगता है मानो उनकी मुक्त आत्मा समय और स्थान की सीमाओं से बचकर अतीत और भविष्य की सीमाओं से परे उड़ गई हो, सभी समय और स्थान को देख रही हो तथा हमें इस बारे में जानकारी दे रही हो कि क्या हो चुका है और क्या होने वाला है।

दूसरा प्रकार वह असाधारण चमत्कार है जो उसने ज़रूरत के समय में किया, जैसे कि भोजन की थोड़ी सी मात्रा कई लोगों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त थी, पानी में चमत्कारिक वृद्धि, भोजन में ऊपर बताए गए वृद्धि की तरह, अपनी सांस से बीमार और घायलों को ठीक करना, अपने हाथ के स्पर्श से कुछ चेहरों को अद्वितीय रूप से सुंदर और उज्ज्वल बनाना, इत्यादि। इस तरह के सैकड़ों उदाहरण हैं।

दूसरा प्रकार है उनकी आशीर्वादित उंगलियों से पानी का बहना। उनके आशीर्वादित हाथ की उंगलियों से पानी का प्रचुर मात्रा में बहना - जो जीवन का मूल घटक है - जो उदारता का स्रोत था, मार्गदर्शन के पानी के उनके जीभ से बहने वाले तेज प्रवाह को याद दिलाता है, जो आत्माओं को जीवन देता है।

---

57 बेदीउज्जमां सईद नूरसी ने पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के चमत्कारों पर चर्चा की और द लेटर्स के " 19वें पत्र" में उनमें से लगभग तीन सौ का उल्लेख किया। देखें, द लेटर्स (अनुवाद), द लाइट, न्यू जर्सी, 2007, पृष्ठ 117-236। (अनुवाद)

दूसरा प्रकार है पेड़, चट्टानें और जानवर उससे बात करते हैं। ऐसा लगता है कि उनके द्वारा लाए गए मार्गदर्शन की पुनर्जीवित करने वाली गुणवत्ता ने सभी चीजों पर प्रभाव डाला, चाहे वे सजीव हों या निर्जीव, और उन्हें बोलने के लिए मजबूर कर दिया।

दूसरा उदाहरण है अपनी तर्जनी उंगली के इशारे से चाँद को दो भागों में बाँटना। ऐसा लगता है मानो चाँद, जो वास्तव में आकाश का हृदय है, ने दो भागों में बाँटकर पैगम्बर के पवित्र हृदय से जुड़ने की इच्छा की और उनकी पवित्र उंगली के इशारे पर उत्कट प्रतिक्रिया में अपना हृदय ही दो भागों में बाँट दिया।

एक अनुस्मारक

चाँद के फटने की घटना विश्वसनीय माध्यमों से बताई गई है और कुरान की एक आयत में इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है: चाँद फट गया है
(54: 1) जो लोग कुरान पर विश्वास नहीं करते थे, वे कुरान की इस घोषणा का खंडन करने में सक्षम नहीं थे, और कुछ महत्वहीन, अस्वीकार्य टिप्पणियों को छोड़कर, इसकी किसी भी तरह से व्याख्या नहीं की गई है जिससे पता चलता है कि इस चमत्कार का खंडन किया गया था।

एक गलत धारणा और एक अनुस्मारक

चाँद का फटना एक बादल वाली रात में सोते समय तुरन्त हुआ, और उस समय जब आसमान को आज की तरह आसानी से नहीं देखा जा सकता था। इसे मक्का में पैगम्बर की पैगम्बरी को चुनौती देने वालों को चमत्कार के रूप में दिखाया गया था, और इसलिए यह अन्य लोगों के लिए नहीं था। साथ ही, जैसा कि ज्ञात है, चाँद पूरी दुनिया में एक ही समय पर नहीं उगता है। इसलिए, हालाँकि दुनिया के पड़ोसी हिस्सों में कुछ लोगों ने इसे देखा होगा, लेकिन इसे मुख्य रूप से उन लोगों ने देखा था जिनकी उपस्थिति में यह चमत्कार हुआ था। इसके अलावा, कुरान में इसका उल्लेख है, और इसे चुनौती नहीं दी गई है।

निष्कर्ष

हे भाईयों और बहनों, जो मेरी इस किताब का अध्ययन कर रहे हैं! कृपया ऊपर वर्णित पाँच तरीकों का अध्ययन करें, जो कि महान पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की नबूवत के सम्बन्ध में हैं, एक जागृत मन, एक व्यापक दृष्टिकोण और संतुलित अंतर्दृष्टि के साथ। उन्हें ऐसे समझो जैसे कि वे एक गोलाकार दीवार हों, जहाँ से कोई उस महान व्यक्ति की नबूवत को देख सकता है, या उन्हें ऐसे समझो जैसे कि वे सम्राट को घेरने वाले सैनिक हों, और अपने मन में उठने वाले किसी भी संदेह को दूर करें।

अंत में, कुछ जापानी लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में कि, "जिसके नाम से आप हमें पुकारते हैं, उसके अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण क्या है?", मैं कहता हूँ: यहाँ पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) एक स्पष्ट प्रमाण के रूप में मौजूद हैं!

एक संकेत, मार्गदर्शन और अनुस्मारक

ज्ञान के विज्ञान ने सृष्टि की सरकार के पास एक प्रश्नकर्ता और पूछताछकर्ता को भेजा और भविष्य की ओर बढ़ रहे मानव जाति के अग्रिम सैनिकों के पास पहुंचा, और उनसे पूछा, "हे मानवता के बच्चों! तुम कहाँ से आ रहे हो? किसके आदेश से तुम आ रहे हो? तुम्हारा यहाँ क्या काम है? तुम्हारा गंतव्य क्या है?" मानवता के नेता, मार्गदर्शक और प्रवक्ता के रूप में, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने इन सवालों के निम्नलिखित उत्तर दिए:

> प्रिय प्रश्नकर्ता! हम सभी अस्तित्व के समुदाय हैं और हमें शाश्वत प्रभु के राजसी कार्यालय से उनकी आज्ञा से आज्ञाकारी अधिकारी बनाकर भेजा गया है। जिसने हमें यह वस्त्र पहनाया है,
>
> अस्तित्व के समृद्ध रूप से कशीदाकारी वाले वस्त्र को पहनाया है और हमें इन क्षमताओं से सुसज्जित किया है क्योंकि खुशी की पूंजी शाश्वत शासक है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है, और पूर्णता के सभी गुण रखता है।
>
> हम, मानव जाति के समुदाय, यहाँ शाश्वत सुख की पूंजी अर्जित करने में सक्षम होने के लिए हैं। हम इस दुनिया से एक अज्ञात समय और स्थान पर प्रस्थान करेंगे, और शारीरिक पुनरुत्थान की ओर बढ़ेंगे जो अमरता का क्षेत्र है।

हे बुद्धि! जैसा तुझे बताया गया है, वैसा ही बिना किसी संशय के सबको बता दे!

तीसरा उद्देश्य

यह शारीरिक पुनरुत्थान के बारे में है। शारीरिक पुनरुत्थान के बिना सृष्टि निरर्थक होगी। पुनरुत्थान एक महत्वपूर्ण सत्य है, और इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण पैगंबर मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

परिचय

कुरान, जो अपने आप में स्पष्ट है और सच्चाई को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, ने शारीरिक पुनरुत्थान के मामले को इस हद तक स्पष्ट कर दिया है कि इसमें किसी भी प्रकार के संदेह की अनुमति नहीं दी गई है।

किसी भी संदेह की गुंजाइश नहीं है। मैं कुरान द्वारा प्रस्तुत किए गए कुछ प्रमाणों का ही उल्लेख करने का प्रयास करूंगा।

सबसे सामान्य प्रमाणों का सारांश

सृष्टि में पूर्ण सार्वभौमिक व्यवस्था और बुद्धि; अस्तित्व की सटीक उद्देश्यपूर्णता जो व्यर्थता के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ती; यह तथ्य कि सार्वभौमिक व्यवस्था में कोई बर्बादी नहीं है और सभी विज्ञान उस सामंजस्य की ओर संकेत करते हैं जो ब्रह्मांड के एकसमान संचालन में स्थापित है और जिसके आधार पर वे सार्वभौमिक नियमों का निष्कर्ष निकालते हैं; "प्रकृति" में जीवन के पुनरुत्थान के दैनिक, मौसमी और वार्षिक उदाहरणों की निरंतर पुनरावृत्ति; मानवता की क्षमताएं और महत्वाकांक्षाएं जिन्हें सांसारिक जीवन पूरी तरह से संतुष्ट करने में असमर्थ है; सर्वज्ञ निर्माता की असीम दया; ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सच्ची वाणी; और चमत्कारिक व्याख्या के साथ कुरान की स्पष्ट घोषणाएं, ये सभी शारीरिक पुनरुत्थान के निर्विवाद प्रमाण हैं।

स्पष्टीकरण

1. लेकिन अनंत जीवन के लिए, ब्रह्मांड की शानदार व्यवस्था पूरी तरह से महत्वहीन होगी और इसके सभी अर्थ, संबंध और रिश्ते खो जाएंगे। इस व्यवस्था की नींव अनंत जीवन है।

2. शाश्वत दिव्य बुद्धि, जो ईश्वरीय शाश्वत अनुग्रह का सार्वभौमिक प्रतिनिधित्व है, ने सृष्टि से अनेक उद्देश्य जोड़े हैं।

   अनन्त जीवन के बिना, ये सभी उद्देश्य व्यर्थ हो जायेंगे, और परिणामस्वरूप अस्तित्व में मौजूद सारा ज्ञान भी व्यर्थ हो जायेगा।

3. जैसा कि अवलोकनों और ब्रह्मांड के जीवन द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है और निगमनात्मक तर्क द्वारा पुष्टि की गई है, अस्तित्व में कुछ भी अर्थहीन या बेकार नहीं है। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि शाश्वत जीवन शारीरिक पुनरुत्थान के बाद होगा। पूर्ण अस्तित्वहीनता में जाने से सारा अस्तित्व अर्थहीन और बेकार हो जाएगा।

4. सृष्टि में कोई बर्बादी नहीं है। उदाहरण के लिए, शरीर रचना विज्ञान यह दर्शाता है कि मानव शरीर में कुछ भी बेकार या बेकार नहीं है। इसी तरह, मानवता की मानसिक और आध्यात्मिक क्षमताएँ, साथ ही उसकी लगभग अप्रतिबंधित महत्वाकांक्षाएँ, विचार और प्रवृत्तियाँ उसे व्यर्थ नहीं दी गई हैं। मानवता का यह आवश्यक चरित्र दर्शाता है कि उसे अनंत काल के लिए बनाया गया है।

5. लेकिन अनंत जीवन के लिए, मानवता की क्षमताएं, महत्वाकांक्षाएं, विचार और प्रवृत्तियां व्यर्थ होंगी। जबकि आवरण - शरीर -

उस रत्न को, जो संसार के लिए मूल्यवान है, असीम देखभाल दी जाती है तथा धूल के कण के गिरने से भी उसकी रक्षा की जाती है, तो जिसने उस रत्न को बनाया है, वह उसे कैसे तोड़ सकता है तथा सदा के लिए नष्ट कर सकता है?

बिल्कुल नहीं! कवर पर दिखाई गई सावधानी गहने के असाधारण मूल्य के कारण है।

6. सभी "प्राकृतिक" विज्ञान ब्रह्मांड की शानदार, स्थिर व्यवस्था में उत्पन्न होते हैं। इस व्यवस्था की पूर्णता और संरक्षण का वास्तविक उद्देश्य शाश्वत जीवन है जो शारीरिक पुनरुत्थान के बाद होगा।

7. जिस तरह घड़ी की घण्टा, मिनट और सेकण्ड की सुइयाँ एक दिन पूरा होने तक एक दूसरे का अनुसरण करती हैं, उसी तरह समय की घण्टा, महीना और वर्ष की सुइयाँ एक दूसरे का अनुसरण करती हैं; इस प्रकार समय एक निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ता है। यह स्वतः-स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जिस तरह रात के बाद सुबह आती है, और सर्दी के बाद वसंत आता है, उसी तरह दुनिया की रात परलोक के अनन्त जीवन की सुबह का परिणाम होगी।

मानवता का प्रत्येक सदस्य अन्य विद्यमान प्राणियों की एक प्रजाति के समान है।

विचार के प्रकाश ने अपनी महत्वाकांक्षाओं का दायरा इतना बढ़ा दिया है कि यदि वह सारा समय भी निगल जाए तो भी पूरा नहीं हो सकेगा।

अन्य प्रजातियों के सदस्यों की प्रकृति, मूल्य, दृष्टिकोण, पूर्णता, सुख और दुख सीमित हैं, जबकि मानवता के सुख और दुख निरंतर, सार्वभौमिक और अप्रतिबंधित हैं। कई अन्य प्रजातियों के जीवन में एक तरह की मृत्यु और पुनरुत्थान के दैनिक, मौसमी और वार्षिक चक्र देखे जा सकते हैं, और ये सभी प्रत्येक मानव और वास्तव में पूरी मानवता के पुनरुत्थान की ओर इशारा करते हैं।

8. मानवता के सार को जो क्षमताएँ प्रदान की गई हैं, वे अनंत क्षमताओं के स्रोत हैं। इन क्षमताओं से ऐसी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं जो असीमित विचारों और अवधारणाओं को जन्म देती हैं। ये विचार और अवधारणाएँ मूलतः उस शाश्वत सुख की ओर निर्देशित हैं जो शारीरिक पुनरुत्थान के बाद प्राप्त होगा।

9. सर्वज्ञ निर्माता, सर्व दयालु और करुणामय की दया, जो किसी उपकार को उसका वास्तविक स्वरूप प्रदान करती है, तथा उसे दुख का कारण बनने से बचाती है, तथा ब्रह्मांड को उन विलापों से बचाती है जो अन्यथा अनन्त वियोग से उत्पन्न होते, मानवता को अनन्त जीवन प्रदान करेगी। यदि यह प्रदान न की जाती, तो यह सभी ईश्वरीय उपकारों में सबसे बड़ा उपकार होता,

तब दुनिया में आने वाले सभी उपकार दुख और प्रतिशोध में बदल जाएंगे। इसका मतलब होगा ईश्वरीय दया का इनकार, जिसका अस्तित्व पूरे अस्तित्व में निर्णायक रूप से साबित होता है।

हे भाइयों और बहनों! प्रेम और करुणा के बारे में सोचो, जो ईश्वरीय कृपा के अनंत प्रकारों में से केवल दो हैं। फिर, शाश्वत वियोग और उससे उत्पन्न होने वाली अंतहीन पीड़ाओं पर विचार करो! प्रेम कितनी बड़ी पीड़ा में बदल जाएगा! इसका मतलब है कि शाश्वत वियोग की पीड़ा प्रेम के साथ नहीं रह सकती। इसलिए, शाश्वत जीवन, विशेष रूप से खुशी का शाश्वत जीवन, शाश्वत वियोग पर ऐसा प्रहार करेगा कि वह उसे शाश्वत अस्तित्वहीनता में डाल देगा।

10. हमारे पैगम्बर -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की सच्ची वाणी, जिसकी पूर्ण सत्यता को उपरोक्त पाँच तरीकों में स्पष्ट किया गया है, उस शाश्वत खुशी की कुंजी है जो शारीरिक पुनरुत्थान के खजाने में निहित है।

11. चमत्कारपूर्ण व्याख्या वाला कुरान, जो तेरह (अब चौदह) शताब्दियों से चालीस पहलुओं में चमत्कारी और अद्वितीय सिद्ध और पुष्ट होता रहा है, शारीरिक पुनरुत्थान के द्वार खोलता है और उसे उसकी समस्त विषय-वस्तु और आयामों के साथ लोगों के सामने प्रस्तुत करता है।

दो अन्य सामान्य प्रमाणों का दूसरा सारांश

यह पुनरुत्थान के दो प्रमाणों की व्याख्या करता है, जिन्हें कुरान ने इंगित किया है-

कैट्स.

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।58

---

५८ बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी ने "द नाइंथ रे" (द नाइंथ रे में शामिल) की शुरुआत में लिखा है रेज़) जिसे उन्होंने इस पुस्तक के 30 वर्ष बाद लिखा था:

> यह एक सूक्ष्म ईश्वरीय कृपा है कि द रीजनिंग्स के अंत में , जिसे मैंने कुरान की टिप्पणी के परिचय के रूप में लिखा था, मैंने लिखा, "दो अन्य सामान्य प्रमाणों का दूसरा सारांश: यह पुनरुत्थान के दो प्रमाणों को स्पष्ट करता है जो कुरान इंगित करता है। ईश्वर के नाम पर, जो दयालु और दयालु है," और रुक गया। मैं आगे नहीं लिख पाया। शारीरिक पुनरुत्थान के संकेतों और प्रमाणों की संख्या के लिए मेरे दयालु निर्माता का धन्यवाद, उन्होंने पुनरुत्थान के प्रमाणों की संख्या को और अधिक विस्तार से लिखने के लिए मुझ पर कृपा की।

अनुक्रमणिका

ए

'अब्द अल-काहिर अल-जुरजानी, 70

अब्दुल्ला इब्न अब्बास, 17, 23

अमूर्त सत्य, 137, 141, 142

अबू बक्र, 70, 71, 131

अबू तैयब अहमद इब्न अल-हुसैन अल-
लोग, 90

'अधब, 86

खुशी की उम्र, 34, 63, 130, 133, 140; पैगंबर की, 63

सिकंदर महान, 61

संकेत, 57, 86

शरीर रचना विज्ञान, 148

देवदूत, 54, 55, 61; पहाड़ों का देवदूत, 55; वर्षा का देवदूत,
55;
समुद्र के दूत, 55; दिव्य सिंहासन के वाहक, 54

उदासीनता, x, 4

साक्ष्य, कारण और परामर्श का प्रयोग, 34

अरब, 18, 55, 80, 90, 131

अरब प्रायद्वीप, 128, 135, 136

अरबी भाषा, 18, 66, 71, 81, 90; अरबी वाक्पटुता, 88; मुदार
बोली
अरबी, 18, 79

सृजन या उत्पत्ति का तर्क, 112

आरोहण, 2

खगोल विज्ञान, 7, 15, 51, 56

पूर्णता, सौंदर्य और
ग्रेस, 120

दर्शक, 91, 98, 99, 104, 144

अवांट-गार्डे-इस्ट, viii

बी

बुनियादी सार्वभौमिक तत्व, 74

बाइबल, 61, 128

अंधा अनुकरण, 4, 25

सृष्टि की पुस्तक, 1; ब्रह्माण्ड की पुस्तक, 107, 119

उधार, पहले के भ्रष्ट धर्मों से, 48; इस्राएली आख्यानों से, 17;
इस्राएली स्रोतों से, 17, 18, 57

वनस्पति विज्ञान, 109

तो, 83

सी

मुख्य सत्य, 104

कार्लाइल, थॉमस, 138

कारण और प्रभाव, 122

थावर की गुफा, 131

निश्चय, विश्वास, 106; ज्ञान, 69

संभावना, 107, 110, 111

ईसाई दार्शनिक, 15

मौलवी, 35

संयोग, 81, 107, 110

कोलंबस, 15

साथी, 17, 23, 131

तुलना, 30, 72, 83, 114, 115, 137, 141, 144

अर्थों की रचना, 80
संवैधानिक व्यवस्था, 21, 40
सामग्री, 22, 23, 26, 30, 31, 37, 51, 66, 89, 117, 124, 139
ईश्वरीय सत्ता के साथ सामीप्य, 116, 117
सृष्टि, xi, 1, 2, 11, 12, 13, 14, 15, 23, 27, 30, 36, 37, 38, 45, 48, 53, 55, 64, 65, 73, 74, 80, 88, 92, 109, 110, 112, 114, 115, 116, 117, 119, 120, 122, 125, 127, 135, 137, 141, 143, 147, 148; अस्तित्वहीनता से सृष्टि, 114, 115, 116
इस्लाम का पंथ, 61

डी

दाऊद, भविष्यवक्ता, 61
धोखा, 139
धार्मिक शिक्षा का पतन, 48
निरंकुशता, 4, 33
भाग्य, हाथ, 1
ज़ुल-क़रनैन, 28, 50, 59, 60, 61, 63, 64, 67; बाधा, 50
मतभेद, राय, 33, 61; दृष्टिकोण, 43
प्रवचन, x, 2, 25
सृष्टि का दिव्य गुण, 118
ईश्वरीय नियम, 1, 12, 27, 37, 38, 47, 48, 53, 56, 88, 96, 113; सृष्टि और जीवन के, 12, 48; सृष्टि और ब्रह्मांड के संचालन के, 27; अस्तित्व के, 37; संग्रह के, 113
दिव्यता, 103, 104, 117, 118, 119; में- दाखलता ज्ञान, 114, 137; दिव्य पावर, 30, 55, 68, 73, 112, 115, 116; दिव्य भाषण, 63, 95; दिव्य बुद्धि, 37, 47, 56, 148; सत्य दिव्यता, 118
श्रम विभाजन, 27, 28, 48
सत्य का प्रभुत्व, 34
विचार का प्रभुत्व, 34

और

अहंकार, 31, 44
देशांतरों की अण्डाकार आकृतियाँ, ५२
वाक्पटुता, 7, 13, 19, 63, 66, 68, 70, 71, 73, 75, 79, 80, 81, 88, 92, 93, 94, 96, 99, 107, 140, 141, 142, 143; "प्राकृतिक" पार्क, 80
मदीना प्रवास, 131
गूढ़ व्याख्या, 24
परलोक का अनन्त जीवन, 149
यूरोप, 30, 39, 138
अतिशयोक्ति, 29
ब्रह्मांड का अस्तित्व, १०७
बाह्य व्याख्या, 24
विशेषज्ञ, 27
स्पष्ट निर्णय, 60
असाधारणता, 45, 47, 134, 145
असाधारण चमत्कार, 145

एफ

फ़ख़र अल-दीन अल-रज़ी, 51
फ़ख़र अल-इस्लाम, 52
गलत अनुमान, 68, 126
भूख, xi, 21
कट्टरता, 4, 33, 34, 44
न्यायविद्, 25
भाग्यवाद, 42
अलंकार, 66, 73; रूपक, 23, 24, 63, 70, 71; रूपकात्मक अभिव्यक्ति, xi, 23; उपमा, 23, 24, 67, 81
फ़िक़्ह, इस्लामी न्यायशास्त्र देखें
प्रवाह, 96
आकर्षण और प्रतिकर्षण बल, 108
प्रकृति की शक्तियां, 112
फॉर्म, 1, 4, 11, 17, 21, 25, 26, 41, 54, 66, 72, 74, 81, 83, 84, 89, 92, 98, 105, 108, 111, 112, 114, 115, 119, 122, 127, 128, 139
स्वतंत्रता, 38, 40, 73, 128, 135

जी

गैलीलियो, 108

सामान्य अर्थ, 28, 60, 89

भूविज्ञान, 7, 65, 109

अल-ग़ज़ाली, इमाम, 30, 51

ईश्वर, परम इच्छा, 42; अस्तित्व और एकता, 103, 104, 143, 144; निर्माता का अस्तित्व और एकता, xi, 11, 12; अनिवार्य रूप से विद्यमान एक का अस्तित्व, 118; ज्ञान, 16, 106, 118, 120; अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता, 113, 114, 118, 147; निर्माता के अस्तित्व के प्रमाण, 119, 127; मान्यता, 106

परमेश्वर का अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक गिराना, 142

गोग और मागोग, 60, 61, 62, 63

सुसमाचार, 17

व्याकरण, 50, 92, 93

चीन की महान दीवार, 62

यूनानी दर्शन, 16, 18, 19, 88; स्टू-डेंट्स ऑफ़, 18

एच

अल-हरीरी, 81

हृदय, भरोसे का स्थान, 106; मदद के लिए सहज आग्रह, 106

नरक, x, 38, 50, 64, 65; नरक की गर्मी, 65; नरक की सजा, 85; जक्कुम का पेड़, 65

हिमालय, 58

नींद, 84

निराशा, 4, 32, 46

मानव क्षमताएं, 126

हुसैन अल-जिस्री, 51

मैं

इब्न अब्बास, 57

इब्न फ़रीद, 90

इब्न हुमाम, 52

इब्न सिना (एविसेना), 15, 98

एरज़ुरम के इब्राहिम हक्की, 51

अज्ञान, xi, 4, 16, 23, 24, 25, 27, 45, 46, 48, 74, 108, 122, 139

कल्पना, 19, 22, 29, 45, 46, 53, 58, 59, 67, 69, 71, 81, 82, 83, 84, 87, 89, 92, 96, 123, 124; क्षमता, 46, 123, 124; शक्ति, 59, 71, 81, 96

अपूर्ण कारण, 45

निहित रहस्योद्घाटन, 93

अवतार, 116, 117

संकेत, 57, 65, 87, 123

धर्म के प्रति उदासीनता, 39

अप्रत्यक्ष संदर्भ, 86

प्रेरण, सिद्धांत, 36, 37

जड़त्व, 73

अद्वितीयता, 13, 66

आंतरिक अवलोकन, 107

लेखक या वक्ता का इरादा, 40

कुरान की व्याख्या, xi, 18, 19, 20, 21, 27, 85; कुरान के व्याख्याकार कुरान, 27, 61, 66, 68, 85

जांच, 4, 16, 33, 34

'इकाब, 86

ईरानी, 22

इस्लामी न्यायशास्त्र, 25

जे

जापानी, 7, 104, 147

यहूदी विद्वान, 17

निर्णय, 4, 11, 30, 37, 42, 43, 44, 51, 64, 110, 130, 138

न्यायशास्त्र, 25, 27, 28, 49, 50, 52, 57, 93

क

काबा की ओर मुड़ना, 52

काब अल-अहबर, 17

कुर्द, 20

एल

टू-इन, 86

लेक वैन, 69

भाषा, ix, xii, 2, 18, 23, 24, 31, 42, 52, 63, 66, 70, 71, 75, 79, 80, 81, 83, 90, 93, 100, 129, 144; भाषाविज्ञान, 24, 49, 98

अंतिम दिन, उससे पहले बड़ी अराजकता, 62

पूर्णता की ओर विकास का नियम, 27

प्रकृति के नियम, 36, 112

ली-मुस्ताकार्रिन, 73

श्रोता, 40, 45, 84

शाब्दिक, विवरण, xi, 23; अर्थ, 24, 26, 31, 45, 67, 73, 117; कुरान के शब्दों का अर्थ, 26

साहित्यिक कलाएँ, ix, 86; साहित्यिक उपकरण, 99, 141, 142

तर्क, 80

लूत, पैगम्बर, 61

खुद से प्यार, 44

सत्य का प्रेम, 33

हृदय का चमकदार मानचित्र, 103

एम

मदीना अल-मुनव्वरा, 120

वाणी का जादू, 81, 82

मुख्य विषय, 26, 28, 97

Ma'mun, Caliph, 18

अभिव्यक्तियाँ; ईश्वर के आवश्यक गुण, गुण और नाम, 118; ईश्वरीय गुण और नाम, 117; अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता, 118; ईश्वरीय तीव्रता, 105

मास, 86

गणित, 51, 65, 98

मेरिक, सेमिल, vii

मध्य युग, 5, 50

मोल्ला नसरुद्दीन एफेंदी, 22

मंगोल और मंचूरियन जनजातियाँ, 62

अद्वैतवाद, 58, 116, 118

मूसा, पैगम्बर, 95

मस्तूल के रूप में पहाड़, 50, 66

आर्मेनिया और अज़रबैजान के पहाड़, 28

माउंट काफ़, 50, 57

माउंट सुफान, 69

सूर्य की गति, 73

मुहम्मद, पैगम्बर; सृष्टि के स्वामी, 2; ईश्वर के महान् दूत, 135, 137; ईश्वर का दूत, 2, 137; मुहम्मद भरोसेमंद, 131; शरीयत का स्वामी, 140; सृष्टि का गौरव, 55, 56; मानवता का गौरव, 127; इस दुनिया के लिए गौरव और सम्मान का स्रोत, 2; उदात्त चरित्र, 129

मुहयी अल-दीन इब्न अल-अरबी, 58

बहुस्तरीय अज्ञानता, 45

मुसैलिमा झूठा, 131

मुताज़िलियों, 114

आपसी सहयोग, 15

मिथक, 18, 22, 45

एन

नफ़हतून, 86

शरारती, 86

नर-ए बयदा, 65

नासिर अल-दीन अल-तुसी, 98

प्रकृतिवादी, 114

नबूवत की संस्था की आवश्यकता, 122; नबूवत का मिशन और संस्था, 127; नबूवत के मार्गदर्शन की आवश्यकता, 122

नई दुनिया, vii, 15

नवीनता, 45

हठ, 108, 112, 132
अंतरिक्ष महासागर, 66; आकाश, 72
विपक्ष, 32, 105, 108, 110, 111, 121
वक्तृत्व शैली, 98
अस्तित्व का क्रम, 37, 45
उत्पत्ति, 109, 112
दिखावा, 27
अर्थ का बाह्य और आंतरिक आयाम, ४२

पी

शाश्वत खुशी का महल, 103; पूर्णता का महल, 26

अनंत वियोग की पीड़ा, 150
सर्वेश्वरवाद, 58, 116, 118
दृष्टांत, 30
स्वर्ग, टुबा वृक्ष, 64; जहाजों, 71
कोष्ठकीय अर्थ, 89
ज्ञान की कलम, १
अंतर्दृष्टि वाले लोग, 35
किताब के लोग, 17
पूर्णता, xi, 1, 14, 27, 30, 34, 36, 37, 45, 95, 111, 116, 119, 123, 125, 142, 147, 149; सार्वभौमिक व्यवस्था में, 107, 148; सृष्टि में सार्वभौमिक व्यवस्था और बुद्धि में, 148

व्यापक दिव्यता, 117
व्यापक जीवन, 117
भौतिक विज्ञान, 7, 15, 137, 141, 143
प्लेटो, 108
प्लीएडेस, 19, 117
पुनर्जागरण के बाद, viii
गवाही की घोषणा, 120
रोकथाम का सबूत, 119
प्रचार, 134

पैगम्बरत्व, x, xi, 2, 11, 29, 30, 43, 47, 104, 113, 120, 121, 122, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 132, 133, 136, 143, 145, 146

प्रोसोडिक विशेषताएँ, x
सार्वजनिक हित, 33
आत्मा की शुद्धि, 107, 137
उद्देश्य, स्पष्टता, 96
अस्तित्व की उद्देश्यपूर्णता, १४८; शुद्ध-अस्तित्व की मुद्रा, 107
भाषण के उद्देश्य, 89

क्यू

कादी बयादावी, 28
अल-क़राफ़ी, 57
शीबा की रानी, 84
कुरान, रूपक कथन, 141; शाश्वत ईश्वरीय वचन, 136; ईश्वर की शाश्वत वाणी, 31; मुख्य उद्देश्य, 12, 104, 143; कुरान की आयतों की चमत्कारिकता, 88; वाक्पटुता का चमत्कार, 141; प्रकट पुस्तक, 72; अलंकारिक शैली, x

कुरान की व्याख्या, 25, 26, 28, 49, 99
क़ुरआन की संक्षिप्तता और मायावीता, 141

आर

दुर्लभता, 45
वास्तविकता, आठ, 13, 22, 23, 24, 25, 26, 29, 34, 47, 56, 58, 60, 64, 65, 71, 72, 74, 82, 93, 99, 105, 122, 123, 128, 144

कारण, 3, 11, 13, 15, 16, 23, 24, 25, 29, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 41, 42, 43, 45, 48, 53, 54, 60, 64, 66, 68, 69, 70, 72, 73, 80, 87, 91, 92, 93, 99, 100, 105, 106, 108, 110, 111, 113, 116, 117, 118, 122, 125, 134, 135, 137, 138, 139, 142, 143, 144;

तर्कसंगतता, 29; कारण के पैमाने, 23, 24; ठोस कारण, 45, 111
हृदय का परिष्कार, 107
दैवी कृत्यों के नियम, 113
परमेश्वर पर भरोसा, 42
रिपोर्ट किया गया ज्ञान, 19, 25
प्रजनन, 115, 127
पुनरुत्थान, xi, 11, 65, 72, 85, 95, 104, 120, 123, 124, 143, 147, 148, 149, 150
क़ुरआन का अवतरणकर्ता, 141
पृथ्वी की परिक्रमा, 73
बयानबाजी, के तत्व, x; के विज्ञान, 24; बयानबाजी वाक्पटुता, 63
तुकबंदी, 81

लिखने और बोलने की कला के नियम, 40
अल-रूमी, जलाल अल-दीन, 40

एस

साद अल-दीन अल-तफ्ताज़ानी, 50
सादी अल-शिराज़ी, 40
अल-सक्काकी, 71, 98
सैय्यद शरीफ़ अल-जुरजानी, 50, 98
बुद्धि का तराज़ू, 29
गूढ़ विद्या का स्कूल, 24
शास्त्र, भविष्यवाणियाँ, 2
आत्म-केंद्रितता, 31, 105; आत्म-महत्व, 44

दुनिया के सात अजूबे, 62
अल-शफ़ीई, इमाम, 52
शरीयत, 1, 4, 11, 24, 25, 26, 27, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 48, 52, 54, 55, 57, 74, 135, 136, 137, 138, 140

भविष्यद्वक्ताओं की पापहीनता, 61
सामाजिक विज्ञान, 7
सुलैमान, पैगंबर, 84
वक्ता, 40, 58, 87, 89, 91, 94, 97, 98, 99
विशेषज्ञता, 25
भाषण, 33, 66, 70, 73, 81, 82, 83, 84, 86, 88, 89, 91, 92, 93, 94, 95, 97, 98, 99, 105, 142

पृथ्वी का गोलाकार आकार, 51, 53; अक्षांशों का गोलाकार आकार, 52

आध्यात्मिक, परमानंद, 117; यात्रा, 49
चाँद को विभाजित करना, चमत्कार, 29, 146 सीधा रास्ता, xi, 4, 5, 44
शैली, x, 13, 14, 42, 63, 66, 71, 72, 75, 80, 81, 83, 84, 86, 87, 94, 98, 99, 100, 142; तत्व, 66; भव्य, 98; अलंकृत, 98; सीधा, 98

सुझाव, 86
अंधविश्वास, 18, 24, 45
संदेह, 34, 107, 108

टी

तफ़रिक आसा, 96
तहसीन, होजा, 119
प्रतिभा, 48
धर्मशास्त्र, 28, 50, 51, 55, 57, 98, 99
थीसिस, 13, 21, 33, 36, 97, 132, 143, 144
टोरा, 17
परम्पराएँ, प्रामाणिक, 23; मनगढ़ंत, 23
सृष्टि का वृक्ष, 56
ट्रिनिटी, 35
सत्यनिष्ठा, 44, 47, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 137, 150

टर्की, vii, 40, 46, 51, 52

में

क्षितिज, 59
अस्तित्व की एकता, ११७, ११८; साक्षी की एकता, ११७, ११८; भौतिकवादियों का सिद्धांत, ११८; सूफियों का सिद्धांत

साक्षियों की एकता, 118
सार्वभौमिक सत्य, xi, 11
अदृश्य, 2, 103, 105; अदृश्य दुनिया, 59

वी

पर्दा, 31, 50, 53, 55, 64, 71, 139 वाचालता, 31

में

वाहब इब्न मुनब्बिह, 17 सनक, 108

बुद्धि, ix, 1, 18, 25, 37, 47, 56, 105, 125, 148 शब्द रचना,

कलात्मकता,

81; लगाव, 80 काल्पनिक रूपों की दुनिया, 58; प्रतीकों की, 58, 59; आश्चर्यों की, 58

उपासना और न्याय, 104

और

याफास, 62

साथ

ज़लोग्लू रुस्तम, 21

ज़माख़शरी, 85, 98 राशि चक्र, 56

प्राणि विज्ञान, 109

पारसी, 114

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

ए

सर्व दयालु, 1, 37, 79, 103, 121, 150

अत्यंत प्रभावशाली, (अल-जब्बार), 86, 119

सर्व-गौरवशाली, 55

सर्व-पवित्र प्राणी, 116

सब-बस, 37

सर्वज्ञ, 55, 113

सर्व-महान सृष्टिकर्ता, 105

ऑल-मैजेस्टिक मेकर, 12, 110, 114

दयालु, 1, 37, 49, 79, 95, 103, 121, 141, 149, 150

सर्वव्यापक, (अल-क़हर), 86

सर्वशक्तिमान, 113

सर्व-इच्छुक, 113

सर्वज्ञ, 1, 37, 49, 106, 109, 119, 148, 149

और

अनन्त कढ़ाई करनेवाला, 106

शाश्वत शासक, 147

अनन्त प्रभु, 1, 2, 103, 147

क

अनंत काल का राजा, 103

एल

हे प्रभु, 86

हे जगत के स्वामी, 113

आर

ब्रह्माण्ड का शासक, 141